विष्णु याग प्रयोगः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदाचार्य पं० दौलतराम गौड़ स्मारक ग्रंथमाला की २४ वीं पुष्पलता

वेद प्रकाश गौड़ प्रणीत—

विष्णु याग प्रयोगः

[सावित्री टीका व प्रकाश टिप्पणी से विभूषित]

लेखक–टीकाकार

स्व० पं० वेद प्रकाश गौड़

ग्रंथपूर्ति कर्ता

अशोक कुमार गौड़

प्रकाशक—

ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार

कचौड़ीगली, वाराणसी–२२१००१

जुलाई १९८३

प्रथम संस्करण]

मूल्य २००, रुपये

[redacted]

वि० १

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक—
ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार
कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१
दूरभाष-६६४२०

[सर्वाधिकार-सुरक्षित-प्रकाशकाधीन]

प्रथम संस्करण—१९८३
संवत्—२०४०

मुद्रक—
विष्णु प्रेस
कतुआपुरा, वाराणसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वर्गीय श्री दीनानाथ मिश्र

समर्पित

जो पत्रकारिता जगत के गौरव पुंज थे
जो स्वस्थ्य पत्रकारिता के प्रेरणा श्रोत थे
जो निष्पक्ष, निर्भीक व आत्मसंमानीपत्रकार थे
ऐसे
मेरे-पितृव्य
स्व० श्री दीनानाथ मिश्र
की
पावन-स्मृति में

—अशोक कुमार गौड़

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

श्रद्धा के प्रसून

स्वर्गीय पं० दौलतराम गौड़ वेदाचार्य

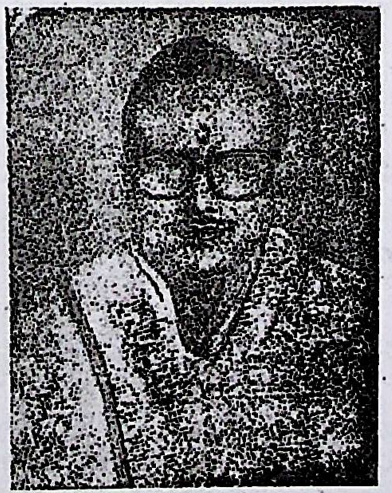

स्वर्गीय पं० वेदप्रकाश गौड़

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्तावना

यज्ञेषु देवास्तुष्यन्ति यज्ञे सर्वं प्रतिष्ठितम् ।
यज्ञेन ध्रियते पृथ्वी यज्ञस्तारयति प्रजाः ।।
अन्नेन भूता जीवन्ति यज्ञे सर्वं प्रतिष्ठितम् ।
पर्जन्यो जायते यज्ञात् सर्वं यज्ञमयं ततः ।।

(कालिका पुराण ३२।७।८)

उपरोक्त श्लोक से पूर्णतः यज्ञ के महत्त्व का बोध होता है साथ ही साथ यह भी सिद्ध होता है कि—यह सम्पूर्ण जगत् यज्ञमय है। विभिन्न प्रकार के यज्ञों में – विष्णुयज्ञ भी सम्मिलित है। विष्णुयज्ञ के विषय में विष्णु-सिद्धान्त में इस प्रकार वर्णित है—

विष्णुयागसमं नान्यत् साधनं ब्रह्मगोलके ।
विद्यते सर्वथा ब्रह्मन् तस्मात्कार्यो मखोत्तमः ।।

अनेकानेक ग्रथों में विष्णु-याग की महत्ता का वर्णन प्राप्त होता है। क्योंकि विष्णु-याग के अनुष्ठान को विधि-विधान से करावने से—ब्रह्म-हत्या-बन्ध्यात्व जैसे दोषों की पूर्णतः निवृत्ति होती है तथा सब अमङ्गलों का विनाश होता है।

क्योंकि—

यज्ञो वै विष्णुः (श० ब्रा० १।१।१।२)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथवा—

विष्णुर्वै यज्ञः (मै० शा० ४।६।२)

अर्थात्—यज्ञ ही विष्णु है और विष्णु ही यज्ञ है।

क्योंकि विष्णुयाग में विष्णुपूजन, पुरुषसूक्त से न्यास होता है तथा पुरुषसूक्तके ही सोलह मन्त्रों से तथा विष्णुसहस्रनामावली द्वारा हविष्यान्न से हवन होता है। जिससे भगवान् विष्णु निःसन्देह प्रसन्न होकर अपने भक्तों की मनोवांछित मनोकामना को पूर्ण करते हैं क्योंकि—विष्णुयाग से ही समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण हो सकती हैं।

इस पुस्तक का प्रकाशन १० फरवरी १९७७ से प्रारम्भ हुआ, लगभग १४ फर्मे प्रकाशित ही हुए थे, कि इस ग्रन्थ के लेखक मेरे ज्येष्ठभ्राता श्री वेद प्रकाश शास्त्री गौड़ का २ सितम्बर १९७७ को कैंसररोग से सैंतिसवर्ष की अल्पआयु में निधन हो गया, लगभग ३ वर्षों के पश्चात् ही इस ग्रन्थ को पूर्ण करने का कार्य मुझपर सौंपा गया, अतः विष्णुयाग से सम्बन्धित सभी लिखित व हस्तलिखित तथा कर्मकांड से सम्बन्धित पांडुलिपियों को अपने निवासस्थान पर प्राचीनपुस्तकालय में देखने का अवसर प्राप्त हुआ उसके पश्चात् ही मैंने इस ग्रन्थ के लेखनादि का कार्य प्रारम्भ किया, आज यह 'विष्णुयाग प्रयोग' सावित्री टीका तथा प्रकाश टिप्पणी से अलंकृत हो आपके समक्ष है।

भाईसाहब के जीवनकाल में यह प्रकाशित न हो सका, जबकि इसको प्रकाशित देखने की उनकी उत्कट अभिलाषा थी।

कतिपय प्रकाशकों के द्वारा इसके पूर्व भी विष्णुयाग से सम्बन्धित पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। किन्तु आज तक किसी में भी प्रारम्भ से इति पर्यन्त तक के विषयों का तथा हिन्दी का समावेश नहीं किया गया, जबकि इस प्रकार के विष्णुयाग की नितान्त आवश्यकता थी।

कागज में बढ़ती हुई मूल्य वृद्धि होने के उपरांत भी इस विष्णुयाग प्रयोग में प्रारम्भ से इति पर्यन्त तक के विषयों के समावेश के साथ ही साथ हिन्दी व टिप्पणी का भी समावेश है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे ज्येष्ठभ्राता के प्रियमित्र तथा मेरे ज्येष्ठभ्राता तुल्य श्री देवकी नन्दन जी शास्त्री ज्यौतिषाचार्य (स्वर्ण-पदक) प्राप्त को ही इस ग्रंथ को पूर्ण करवाने का वास्तविक श्रेय है। जिसके लिए मैं उनका अत्यधिक आभारी हूँ।

इस ग्रंथ को पूर्ण करने में मुझे जिन-जिन ग्रंथों से सहायता मिली है। तदर्थ मैं उन सभी विद्वान् लेखकों का आभारी हूँ।

आज स्मृति ही जिनकी अवशेष बची है, ऐसे अपने पितृव्य स्वर्गीय दीनानाथ मिश्र की पावन-स्मृति में इस ग्रंथ को श्रद्धा सहित समर्पित करता हूँ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशक श्री द्वारिका प्रसाद गुप्त संचालक—ठाकुरप्रसाद पुस्तक भण्डार ने लगभग सात वर्षों में कर्मकाण्ड से सम्बन्धित उन अद्वितीय ग्रथों का प्रकाशन किया है। जिनके प्रकाशन की आवश्यकता काफी समय से बनीहुई थी, भगवान से से मेरी प्रार्थना है कि—श्री गुप्त को दीर्घायु प्रदान करे, जिससे वे इस प्रकार के ग्रंथों का प्रकाशन सदैव करते रहें।

ग्रन्थ का प्रथम संस्करण होने से कुछ अशुद्धियों का होना स्वाभाविक ही है। अतः यदि आप मुझे सूचित करेंगे, तो द्वितीय संस्करण में मैं उनको दूर करने का प्रयास करूँगा।

अशुद्धियों और त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी है।

भवदीय
अशोक कुमार गौड़

भारतीय कर्मकाण्ड मंडल
महामहोपाध्याय-विद्याधर गौड़ लेन
डी ७/१५ सकरकंद गली
वाराणसी-२२१००१ उत्तर प्रदेश (भारत)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'विष्णुयागविषयानुक्रमणिका'

विषय	पृ०	विषय	पृ०	विषय	पृ०
यज्ञ और विष्णुयाग का महत्त्व	१	अथ जलयात्राः	४६	मण्डप द्वारपूजा	१७८
यज्ञ करने से लाभ	२	गणेशाम्बिका पूजनादि कर्म	५५	सर्वतोभद्र पूजनम्	२२४
विष्णु सिद्धान्त से विष्णुयाग की महत्ता	३	स्वस्तिपुण्याह वाचन	७४	अथ विष्णु प्रतिमायामग्न्युतारणम्	२४३
महाभारत के वनपर्व से ,, ,, ,,	४	अथाभिषेकः	८८	लक्ष्मीनारायण गरुडादि पूजनम्	२४८
विष्णुयाग का मूहूर्त	५	सप्तघृतमातृकापूजनम्	९३	अथाग्निस्थापनम्	२७४
विष्णुयाग योग्य प्रदेश	६	आयुष्य मंत्र पाठः	१०४	ग्रहस्थापनम्	२७६
,, ,, में वन्हिवास विचार अनावश्यक	६	सांकल्पिक नान्दी श्राद्ध :	१०६	अथ ग्रहदक्षिणपार्श्वे अधिदेवता स्थापनम्	२७८
हवन चक्र विचार	६	आचार्या ब्राह्मणादीनां वरणम्	१११	,, ग्रहवामपार्श्वे प्रत्यधिदेवतास्थापनम्	२७९
विष्णुयज्ञ विषये विशेष विचार	७	मधुपर्क पूजनम्	११६	,, पंचलोकपाल स्थापनम्	२८०
अथ विष्णुयाग प्रारभ्यते	८	ब्राह्मण प्रार्थनाः	१२१	,, दसदिक्पाल स्थापनम्	२८१
भूमि पूजनम्	८	अथ मंडप प्रवेश प्रारम्भः	१२४	,, असंख्यात रुद्र स्थापनम्	२८३
प्रायश्चित प्रयोगः	१०	पंचगव्यादिकरणम्	१३१	,, चतुषष्टी योगिनी पूजनम्	२८४
अथ दशदानानि	३३	नैरृत्यकोणे मण्डपांग वास्तुपूजनम्	१३२	,, वायव्यकोणे क्षेत्रपाल पूजनम्	३०७
अथ मंगल स्नानः	४२	मण्डप तोरणादि पूजनम्	१७३		

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय	पृ०
कुशकण्डिका प्रारम्भः	३२३
ग्रहादि होमः	३३२
प्रधान होमः	३४१
विष्णुसहस्रनामावली होमः	३४८
अग्नि पूजनम्	३७६
स्विष्टकृत	३७६
नवाहुति	,,
बलिदानम्	,,
अथ क्षेत्रपाल बलिदानम्	३८२

विषय	पृ०
पूर्णाहुतिः	३८४
अथ वसोर्धारा होमः	३८७
अग्नि प्रदक्षिणा एवं भस्म धारणम्	४०६
पूर्णपात्रदानम्	,,
अथ श्रेयोदानादि कर्मः	४१०
अथाभिषेकः	४१४
उत्तरपूजनम्	४२१
विष्णुयाग की पूर्णता के निमित्त विभिन्न संकल्पः	४२४

विषय	पृ०
प्रार्थनादि	४२६
विष्णुजी की आरती	४२८
परिशिष्ट	४२६
शुक्लयजुर्वेद संहिता तृतीय अध्याय-	४३१
'अरणी मंथन' सहित कुण्ड पूजन पूर्वक अग्निस्थापन	४४०
विष्णवादि प्रतिष्ठा मूर्ति न्यासः	४४५
कुण्डविधान, प्रधान वेदी, आहुति, हवनीय सामग्री	४७२
विष्णुयाग सामग्री	४७४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मङ्गलाचरणम्

स्मृत्वेष्टं विष्णुदेवं निजकुल कमलान् तात पादाब्ज नत्वा
तेषामालोच्य रम्यां विविध विषय युतां पद्धतिं प्राक्प्रणीताम् ।
पूर्वं अग्रजो मे बहुतरश्रमतोऽशोधयद्वेद प्रकाशः
धाणौ होमात्मकोऽयं विलसतु भवतां विष्णुयागः प्रयोगः ॥

श्रीमदशोक गौड़ः तनयो श्रीदौलतरामस्य ।
प्रारभते टीकायुक्तं होमात्मकं विष्णुयागं हि ॥

—अशोक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

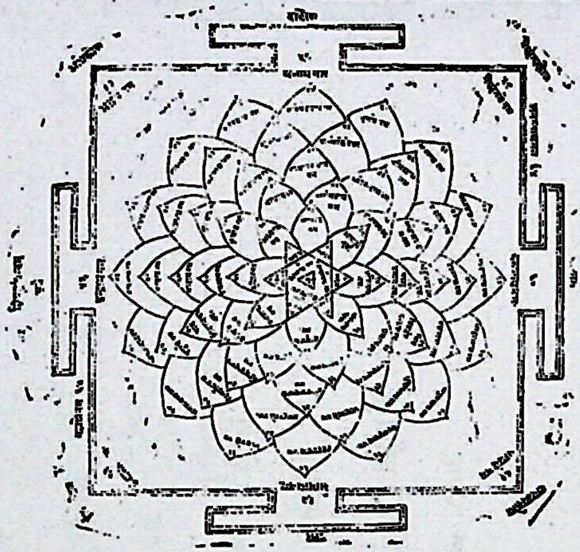

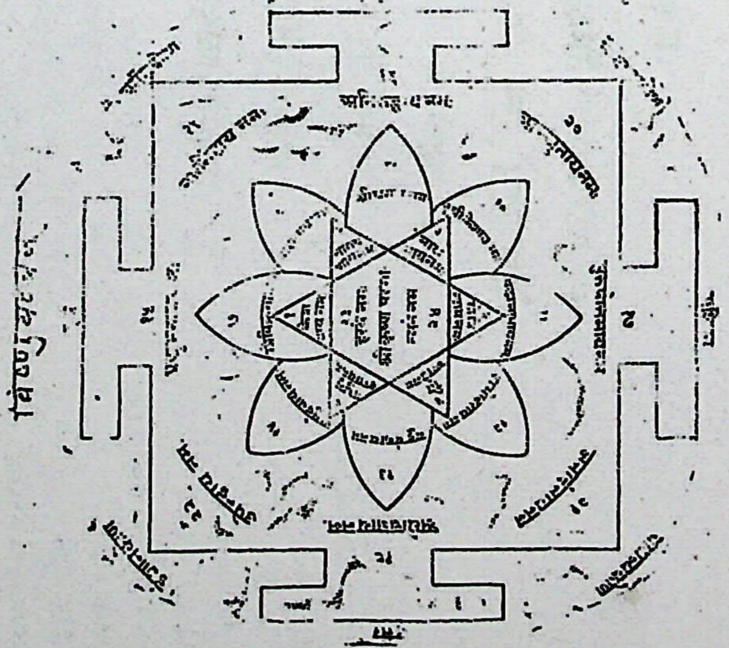

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

यज्ञ और विष्णु याग का महत्व

समस्त हिन्दू वर्ग का प्रमुख धर्म ग्रन्थ वेद ही है। वेदों में ही कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड और उपासना काण्ड का विस्तृत विवरण मिलता है। इस पवित्र भारत भूमि पर यज्ञ आज से नहीं अपितु प्राचीन काल से होते चले आ रहे हैं। यज्ञ के द्वारा ही मनुष्य अपने उद्देश्यों को पूर्ण करता है।

जिस प्रकार से यज्ञ हिन्दू जाति का अति प्राचीन कर्म है। उसी प्रकार मनुष्य जाति भी अत्यन्त प्राचीन है। पूर्व समय के मनुष्य यज्ञ के वास्तविक स्वरूप को अच्छी प्रकार से जानते थे। अतः वे समय-२ पर यज्ञादि धार्मिक कार्य किया करते थे।

इसी भारत भूमि में सभी त्रैवर्णिक श्रद्धा भक्ति पूर्वक अनेक श्रौत, स्मार्त यज्ञों का आयोजन किया करते थे क्योंकि वह यज्ञ को ही श्रेष्ठ कर्म मानते थे। वेदों में विभिन्न प्रकार के श्रेष्ठ कर्म कहे गए हैं किन्तु उन समस्त श्रेष्ठ कर्मों की अपेक्षा यज्ञ को ही श्रेष्ठतम कर्म कहा गया उदाहरणार्थ -

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म (शतपथ ब्राह्मण) १।७।१।५

श्रुति स्मृति ग्रन्थों में तथा उपनिषदों में यज्ञ को ही मनुष्य का प्रधान कर्म कहा गया है। यज्ञ न करने वाले पुरुष पारलौकिक सुखों से तो वंचित रहते ही हैं। किन्तु ऐहिक कल्याणों की भी प्राप्ति नहीं कर सकते अतः यज्ञ न करने वाला प्राणी आत्म-पवित्रता के अभाव से छिन्न-भिन्न पत्रों की तरह नष्ट हो जाता है।

गीता में भी कहा है–नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरु सत्तम।

अर्थात् हे अर्जुन यज्ञ न करने वाले को यह मृत्युलोक भी प्राप्त नहीं हो सकता फिर अन्य सुन्दर लोक की बात ही क्या है। वेदों में भी इसका यह प्रमाण है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयज्ञियो हतवर्चा भवति (अथर्ववेद)

अर्थात् यज्ञ से हीन पुरुष का तेज नष्ट हो जाता है। प्राचीन समय पर यज्ञ करना ही मनुष्य का सबसे बड़ा कर्म था। यज्ञ के द्वारा ही उस समय मनुष्य सर्वकामनाओं को प्राप्त करते थे। वे यज्ञ के महत्व और उससे होने वाले लाभ को जानते थे कि—यज्ञ से ही देवों ने भी स्वर्ग को प्राप्त किया तथा समस्त राक्षसों को पराजित कर सौ यज्ञ करने के कारण ही इन्द्रदेव को देवराज इन्द्र के पद की प्राप्ति हुवी थी।

यज्ञ करने से लाभ

(१) यज्ञ से ही संक्रामक रोग नष्ट होते हैं।
(२) यज्ञ से ही असाध्य कार्य भी साध्य हो जाते हैं।
(३) यज्ञ से प्राणी मात्र का ही नहीं समस्त चराचर जगत का कल्याण होता है।
(४) यज्ञ से ही आयु, आरोग्यता, पवित्रता, विद्या, यश, पराक्रम, वंशवृद्धि, धन धान्यादि अनेक प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं।

यज्ञ के महत्व का वर्णन हमारे शास्त्रों में भी है। जो क्रमशः इस प्रकार से है—

(१) यज्ञेन देवा त्रिमला विमान्ति यज्ञेन देवा अमृतत्व माप्नुयुः।
यज्ञेन पापैर्बहुभिर्विमुक्तः प्राप्नोति लोकान् परमस्य विष्णोः ॥ (महर्षि हारीत)

(२) यज्ञैराप्यायिता देवा वृष्ट्युत्सर्गेण वै प्रजाः।
आप्यायन्ते तु धर्मज्ञ यज्ञाः कल्याणहेतवः। (विष्णुपुराण)

उपर्युक्त प्रमाणों से यज्ञ का महत्व पूर्णरूप से प्रमाणित होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राचीन समय में भी और वर्तमान समय में अनेक स्थानों पर रुद्रयज्ञ, सूर्ययज्ञ, गणेशयज्ञ, लक्ष्मीयज्ञ, शतचण्डीयज्ञ, भागवत सप्ताह यज्ञादि हो रहे हैं। उपर्युक्त यज्ञों से भी उत्तम यज्ञ विष्णु यज्ञ है।

विष्णु सिद्धान्त में इसकी महत्ता का वर्णन इस प्रकार है—

विष्णु सिद्धान्त से विष्णु याग की महत्ता

विष्णुयागसमोयागो जगत्स्वपि न विद्यते। अनेनाराधितो विष्णुः प्रसीदत्येव सत्वरम् ॥ १ ॥

सर्वं पापानि नश्यन्ति ब्रह्महत्या समानि च। नेदृशं मुनिशार्दूल पावनं सर्वं देहिनाम् ॥ २ ॥

विष्णुयाग समं नान्यत् साधनं ब्रह्मगोलके। विद्यते सर्वथा ब्रह्मन् तस्मात्कार्यो मखोत्तमः ॥ ३ ॥

(विष्णु सिद्धान्त)

विष्णु याग के सदृश उत्तम याग तीनों लोकों में कोई भी नहीं है, यदि विष्णु याग के द्वारा भगवान् श्री विष्णु की आराधना की जाये तो भगवान श्री विष्णु निश्चित ही प्रसन्न होते हैं ॥ १ ॥

हे मुनि नायक ! विष्णु याग के अनुष्ठान से ब्रह्महत्या के सदृश महान् पाप नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार से सभी प्राणियों को पवित्र करने वाला दूसरा याग नहीं है ॥ २ ॥

अतः केवल इस लोक में क्या तीनों लोकों में विष्णु याग के सदृश दूसरा कल्याण कारी साधन नहीं है। इसलिये, हे ब्रह्मन् ! इस सर्वश्रेष्ठ याग का अनुष्ठान अवश्य ही करना चाहिए ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाभारत के वन पर्व से विष्णु याग की महत्ता

एष ते वैष्णवो नाम यज्ञः सत्पुरुषोचितः। एतेन नेष्टवान् कश्चिद्दते विष्णुं पुरातनम् ॥
राजसूयं क्रतुं श्रेष्ठं स्पर्धत्येष महाक्रतुः। अस्माकं रोचते श्रेयश्च तत्र भारत ॥
निर्विघ्नश्च भवत्येष सफला स्यात् स्पृहा तव। (महाभारत वन पर्व अ० २५६)

सत्पुरुषोचित विष्णुयाग नाम का महायज्ञ अत्यन्त प्राचीन है। जो कि राजसूय यज्ञ की अपेक्षा अवश्यमेव श्रेष्ठ है। उससे तुम्हारी स्पृहा अवश्य सफल होगी।

उपर्युक्त अर्थ से स्पष्ट होता है कि राजसूय-यज्ञ के समान ही विष्णु याग है। धर्मावतार युधिष्ठिर के द्वारा जब राजसूय यज्ञ सम्पन्न हुआ, उसी समय से दुर्योधन के हृदय में ईर्षा हो रही थी। अतः उसके हृदय में राजसूय यज्ञ से भी बड़ा यज्ञ करने की इच्छा उत्पन्न हुई। अतः उसने अपने आचार्यो-गुरुओं पर अपना मत प्रकट किया। दुर्योधन की बातों को सुनकर आचार्य वर्ग ने उसे विष्णु महा-याग करने को कहा। विष्णु याग की महानता के विषय में जो मत आचार्यों ने प्रकट किया—वह उपर्युक्त श्लोक से प्रमाणित होता है।

वेदों और भागवत में भी विष्णु याग का महत्व मिलता है जैसे—

यज्ञो वै विष्णु (श० ब्रा० १।१।१।२)
विष्णुर्वै यज्ञः (मै० शा० ४।६ २.)
वासुदेव परा मखाः (भागवत १।३ २८)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णु याग की महत्ता के विषय में अन्य प्रमाण—

विष्णुयज्ञः प्रधानं च सर्वं यज्ञेषु सुन्दरी। ब्रह्मणा च कृतः पूर्वं महा संभार संयुतः ॥

विष्णु यज्ञस्तथा वत्स यज्ञेषु च महानिति। (ब्रह्मवैवर्त पुराण)

उपर्युक्त सभी प्रमाणों से विष्णु याग की महानता पूर्णरूप से सिद्ध हो चुकी है। भारत भूमि में यज्ञों का अत्यधिक सम्मान है। इनकी मर्यादा तथा पौराणिकता प्रसिद्ध है। अनेक यागों के बीच विष्णु याग ही अत्यधिक श्रेष्ठ और कल्याणकारी है। अतः अधिक से अधिक प्राणियों को विष्णु याग ही करना चाहिए।

विष्णु याग का मुहूर्त्त

कामदेव कृत विष्णुयाग पद्धति में कार्तिक, मार्गशीर्ष, श्रावण और वैशाख मासों का नामोल्लेख करते हुए भी उत्तरायण सूर्य (मकर से मिथुन संक्रान्ति तक का काल) और शुक्लपक्ष को यज्ञ योग्य कहकर 'अथवा जब श्रद्धा हो तभी सुनक्षत्र एवं गोचर गत शुभत्व देखकर विष्णुयाग कर लेना चाहिए' ऐसा स्पष्ट लिखा है—

कार्तिके मार्गशीर्षे वा श्रावणे माधवे तथा। विष्णुयागः प्रकर्त्तव्यः सर्वपापप्रणुत्तये ॥

उत्तरायणे शुक्ले वाऽथवा श्रद्धा यदा भवेत्। शुक्लपक्षे शुभेवारे सुनक्षत्रे सुगोचरे ॥

अतः यजमान के मन में जब भी श्रद्धा उत्पन्न हो जाय सुयोग्य ज्योतिर्विद् के पास फलपुष्प दक्षिणा सहित जाकर उत्तम यज्ञ काल जानकर विष्णु याग सम्पन्न करें। वह काल दक्षिणायन में हो तो भी कोई अनिष्ट नहीं है क्योंकि, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष ये महीने दक्षिणायन में ही होते हैं। अतः दक्षिणायन निषेध नहीं हैं। कृष्णपक्ष की पञ्चमी पर्यन्त तिथियाँ शुक्लपक्षवत् शुभ कार्यों में ग्राह्य होती हैं। शरीर अस्थिर है। अतः अनियत जीवन वाले प्राणी के मन में जब श्रद्धा हो जाय धार्मिक कृत्य कर लें। मुहूर्त्त की प्रतीक्षा न करें, ऐसा परशुराम कारिका रुद्रकल्पद्रुमकारादि को अभिप्रेत है। यह भी एक मत है। देखें–गा० पु० पद्धति पृ० २८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णु याग योग्य प्रदेश

विष्णु याग के लिए काशी, प्रयागादि तीर्थों के अतिरिक्त विष्णु क्षेत्र का विशेष महत्त्व होते हुए भी किसी भी पवित्र भूमि में जहाँ विष्णु भक्त हों विष्णु याग किया जा सकता है। 'भक्ति प्रियो माधवः' भगवान् विष्णु को भक्ति ही प्रिय हैं। 'मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः' के अनुसार जहाँ भगवन्नाम स्मरण होता हो, वही विष्णु क्षेत्र है अतः भारतेतर देशों में भी विष्णु याग हो सकता है।

विष्णु याग में वन्हिवास विचार अनावश्यक है

बृहज्ज्योतिषसारादि ग्रन्थों में लिखा है—

व्रतबन्धे विवाहे च नवरात्रे च नित्यके। कुलदेवार्चने धीमान्नो कुर्यादग्नि चिन्तनम् ॥
संस्कारेषु विचारोऽस्य न कार्ये नापि वैष्णवे। नित्ये नैमित्तिके कार्ये न चाब्दे मुनिभिः स्मृतः ॥

(बृहद्दैवज्ञरञ्जनेऽपि)

यज्ञोपवीत विवाह आदि संस्कार नवरात्र नित्य होम कुल देव पूजा विष्णु सम्बन्धि यागादि पूजन कर्म तथा नित्य और नैमेत्तिक तथा प्रति वर्ष होने वाले कार्यों में वह्निवास का विचार नहीं करना चाहिये।

❀ हवन चक्र विचार ❀

सूर्यं भात्त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्र पङ्गवः। चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥

पूर्णाहुति के समय सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने और तीन, तीन नक्षत्र सूर्यादि ग्रह लिखकर उनमें स्थापित करें, ग्रह लिखने का क्रम इस प्रकार है—सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चंद्र, मंगल, गुरु, राहु, केतु। इनमें क्रमशः अशुभ, शुभ, शुभ, अशुभ, शुभ, अशुभ, शुभ, अशुभ, अशुभ, फल समझे क्रूर ग्रह में पड़ने वाले नक्षत्र की आहुति का फल अशुभ और शुभ ग्रह में शुभ होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रिष्णुयज्ञ विषये विशेषविचारः

(१) यज्ञ विषम दिन में हो सकता है। इसका निषेध अभी तक देखने में नहीं आया।

(२) त्रिष्णुयाग में वह्निवास नहीं देखा जाता।

(३) पूर्णाहुति में संख्या की योजना संकल्प में की हो तो उसी दिन पूर्णाहुति होगी अन्यथा संकल्प व्यर्थ होगा।

(४) सग्रहमखं त्रिष्णु यागं करिष्ये। ऐसा संकल्प पढ़ा जाता है। इस तरह के संकल्पों का जहाँ उल्लेख किया जाता है। वहाँ विष्णु याग को प्रधान माना जाता है। ग्रहयज्ञगौण है। क्योंकि लोक में विष्णु महायज्ञ समिति आदि का उल्लेख वाली नोटिस देखने में आती है। यदि ग्रहमखं कृत्वा विष्णु यागं कुर्यात् ऐसी विधि का उल्लेख मिलता तो वह्निवास का विचार किया जाता। ऐसा प्रकृत में है नहीं।

दूसरी बात—ग्रहयाग जो शान्ति मयूखादि ने द्वैत निर्णय, हैमाद्रि, शान्ति रत्न, निर्णयसिन्धु की कृष्णं भट्टी ने लिखा है। उसकी विधि भिन्न है। उसका प्रकार अलग है। उसमें वह्निवास देखना कि नहीं यह विवादास्पद ही है। फिर भी देश की शुभकामना शान्त्यर्थं वह्निवास न भी देखे तो कथमपि हानि नहीं है।

-दौलतराम गौड़ वेदाचार्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री विष्णु यागः प्रारभ्यते

अथ भूमि पूजनम्

चिकीर्षिते कुण्डमण्डपादौ—आदौ स्वस्तिवाचनपूर्वकं भूमिकूर्मानन्तवराहाणां पूजनं कार्यमितियजमानः सपत्नीकः प्रसादाग्रे उत्तरे ईशान्यां वा ज्योतिर्विदा दिष्टे सुमुहूर्ते भूमौ गत्वा कुशहस्तः–कुशेषुपविश्य देशकालौ स्मृत्वा–करिष्यमाण विष्णुयागोपयोगि मण्डपायतनादि निर्मातुं भूमिकूर्मानन्तवराहाणां विश्वकर्मणां पूजनं करिष्ये। तदंगत्वेन स्वस्ति पुण्याहवाचनादिकं च करिष्ये। तत्रादौ-निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणेशांबिकयोः पूजनं च करिष्ये। गणपति पूजनस्वस्तिवाचनादिकं विधाय भूम्यादिपूजा–चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठो परिस्थिताम। शंख पद्म धरां चक्र शूल युक्तां धरां भजे। आगच्छ मवं कल्याणि वसुधे लोकधारिणि पृथिवि ब्रह्मदत्तासि कश्यपेपिनाभिवन्दिता॥ इत्यावाहनम्। स्योना पृथवि तिपूजनम्। भूरसीति भूम्यै सफल पुष्पाञ्जलदानम्। उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन—शतबाहुना। दंष्ट्राग्रैर्लोलया देवि यज्ञार्थं प्रणामाम्यहम्। इतिदण्डवत्प्रणम्य ताम्रादिपात्रे क्षारतोय कुशाग्रयवतिल तण्डुल सर्षप पुष्प सुवर्णादि गृहीत्वा जानुभ्यां धारणीं गत्वां ब्राह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च। पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्द वै श्रवणेन च। यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगाषया। सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च मनं रुपं च पूजिते॥ उद्धृतासि वराहेण सशैलवन कानने। मण्डपं कारयामद्यत्वदूर्ध्वं शुभलक्षणम्। गृहाणार्घममं देवि प्रसन्ना वरदा भव॥ इत्यनेनार्घंदत्वा बद्धाञ्जलिः प्रार्थयेत्–उपचाराणि मां स्तुभ्यं ददामि परमेश्वरि। भक्त्या गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः। इति पूजानिवेदनम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ सपरिवारायै भूम्यै नमः—इमं महाबलिं समर्पयामिति गन्ध पुष्पपायसत्सक्तुलाजैः—सघृतैः सदीपैर्महाबलिं दत्वा प्रार्थयेत—नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह। जय भार्गवदायादे-प्रजानाम जयमावह॥ पूर्णे गिरिशदायादे पूर्णकामं कुरुष्व मे। भद्रे काश्यप दायादे कुरु—भद्रामतिं मम। सर्वजयसमायुक्ते सर्वरत्नौषधावृते। रुचिरे नन्दने नन्दे वासिष्ठे रम्यतामिह। प्रजापति सुते देवि चतुरस्रमहियसि। सुभगे सुव्रते देवि गृहे कश्यपि रम्यताम्। पूजितेपरमाचार्यै-र्गन्धमाल्यैरलङ्कृते। भवभूतिकरी देवी गृहे भार्गवि रम्यताम्। अव्यक्ते चाहतेपूर्णे शुभे चांगिरसः सुते। इष्टदे त्वं प्रयच्छेष्टम त्वं प्रतिष्ठापयाम्यहम्॥ देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामिपरिग्रहे। मनुष्यधनहस्त्यश्वपशुवृद्धिकरि भव॥ इति॥ इति मन्त्रेण गन्धादिभिः पञ्चोपचारैः—कूर्मपूजा। ॐ स्योना पृथिवीतिमन्त्रेणानन्तपूजा। ॐ यस्यं कूर्मो गृहे हविस्तमग्नेवर्धया-त्वम्। तस्मैदेवाऽधिब्रवन्नयञ्चब्रह्मणस्पतिः॥ कूर्माय नमः। ॐ विश्वकर्मन्हविष वर्द्धनेन। त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्॥ तस्मै विशः समनमन्तपुर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत॥ विश्वकर्माणं च पूजयेत्। ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वाकृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्तेरक्षसामिन्द्राय सूकरः सिंहो०मारुत कृरामः पिप्पकाशकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषानन्देवानःस्पृषतः। इति मन्त्रेण वाराहं पूजयेत्—समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनमण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं भूमिदेव नमोऽस्तुते॥ इति प्रार्थयेत पृथिवि कूर्मानन्तादि पूजाविधौ यन्न्यूनातिरिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु। आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि। यस्य स्मृत्या० प्रमादादितिपठेत्। एवं प्रासाद भवनादौ च तत्तद मन्त्रेणार्घदानं कार्यमिति-विशेषः। वापीकूपतडागादौ त—वापीं च कारयाम्यद्य अन्तरे तव शोभने—इति विशेषः। अथान्यदपि च कर्मणि तत्तदूहे-नार्घ्यदानम्॥ इति।

अथ प्रायश्चित्तप्रयोगः प्रारभ्यते

तत्र विष्णुयागं चिकीर्षुः आरम्भदिनात् पूर्वं कस्मिंश्चित् सुदिने यज्ञाधिकारसिद्ध्यर्थं षडब्दं त्र्यब्दं सार्द्धाब्दं वा यथाक्रमं अशीत्यधिकशतनवति-पञ्च चत्वारिंशत् संख्यानां गवां मूल्यं पुरतो निधाय प्रायश्चित्तं कुर्यात्। शक्तिश्चेत् [illegible]श्चतुरः, सप्त, द्वादश, अष्टादश, चतुर्विंशतिरष्टाविंशतिर्वा धर्माधिकारिणः सभ्यान् प्रदक्षिणीकुर्यात्। इमान् श्लोकान् पठेत् आचारात्—

ॐ समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः। अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥ आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः। समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥ विप्रौघदर्शनात्सद्यः क्षीयन्ते पापराशयः। वन्दनान्मङ्गलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदम्॥ आधिव्याधिहरं नृणां मृत्युदारिद्र्यनाशनम्। श्रीपुष्टिकीर्तिदं वन्दे विप्रश्रीपादपङ्कजम्॥

ततो द्विजास्तं पृच्छेयुः—किन्ते कार्यं वदास्माकं किं वा मृगयसे द्विज। तत्त्वतो ब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्येन द्योतते सूर्यः सत्येन द्योतते शशी। सत्येन द्योतते वह्निः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥ अस्माकं चैव सर्वेषां (सत्यमेव परागतिः) सत्यमेव परं बलम्। यदि चेद्वक्ष्यसे सत्यं नियतं प्राप्स्यसे (सुखम्) शुभम्। यथागतोऽस्यसत्येन न त्वं शुद्धयसि कर्हिचित्। स्वल्पं वाऽथ प्रभूतं वा धर्मविद्भ्यो निवेदयेत्। रहस्यकृतपापानि उपांशु न च संस्मरेत्। इति पृष्टो गन्धाक्षत-पुष्पैः सभ्यान् सम्पूज्य गोवृषयोर्मूल्यं तेषां पुरतो निधाय सङ्कल्पयेत्—ॐ तत्सत् 'करिष्यमाण-प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन इदं गोवृषनिष्क्रयद्रव्यं सभ्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृज्ये।' सभ्याश्च तद् द्रव्य विभज्य गृह्णीयुः।

ततः प्रायश्चित्ती ब्रूयात्—'अमुकस्य मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञात-कामाकाम-सकृदसकृत्कृत-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकलपातकाति-पातकोपपातक-लघुपातक-सङ्करीकरण-मलिनीकरणापात्रीकरण-जातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थमनुगृह्य प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः। पुत्रादिश्चेदाचरति तदा ममास्य पित्रादेः' इति वाच्यम्।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ब्राह्मणप्रार्थना'—'आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं भवद्भ्रशामिदं जगत् । यक्षरक्षःपिशाचादिसदेवासुरमानुषम् ॥ सर्वे धर्मविवेक्तारो गाप्तारः सकला द्विजाः । मम देहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः ॥ मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम् । प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छत ॥ पूज्यैः कृतः पवित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमैः ॥' इति । पुत्रादिश्चेत्प्रायश्चित्तकर्ता तदा अस्मच्छब्दस्थाने 'अस्य' 'एतत्कृतम्' 'प्रसादः क्रियतामस्य' 'पवित्रोऽयं भवेच्च' इत्यादिवाच्यम्) ततः 'मामनुगृह्णन्तु भवन्तः' इत्युक्त्वा पुनः प्रणमेत् । मामित्यत्र 'एतम्' इत्यन्यकर्तृके ततो गन्धाक्षतपुष्पैः पुस्तकं सम्पूज्य गोमूल्यं निम्बन्धपूजात्वेन निवेदयेदित्याचारः । ततोऽनुवादकं सम्पूज्य तस्मै दक्षिणां दद्यात् । ततः—अनुवादकस्याग्रे—"अमुकशर्मणस्तव" जन्मप्रभृत्यद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञातकामाकाम-सकृदसकृत्कृतकायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकलपातकातिपातकोपपातक-लघुपातक-सङ्करीकरण-मलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थं सभ्यैरुपदिष्टं षडब्द-त्र्यब्द-सार्द्धाब्दान्यतमं सर्वप्रायश्चित्तं गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नायद्वारा पूर्वाङ्गोत्तराङ्गयुतं त्वयाऽऽचरितव्यं तेन तव पित्रादेः शुद्धि-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

भविष्यति तेन त्वं कृतार्थो भविष्यसि तव पित्रादिः कृतार्थो भविष्यति इति ब्रूहि इति वदेत् ततः सभ्येन प्रेरितोऽनुवादकः—इत्येनमुपदेशं प्रायश्चित्तिनं प्रति त्रिर्ब्रूयादिति मयूखे "भवदनुग्रहः" इति वदेत् पर्षदं विसृजेच्च ।

फिर हाथ में जल, यव, कुश, तिल लेकर पढ़ें ।

ततः कुशयवतिलजलान्यादाय—श्रीमदनन्तवीर्यस्य आदिनारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणानामनेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमे अव्यक्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डयोर्मध्ये आधारशक्तिवाराहकूर्मानन्ताद्यष्टदिग्गजोपरि प्रतिष्ठिते सप्तपातालोपरिभागे सप्तान्तलोकषट्कस्याधोभागे महाकालायमानशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डिते दिग्दन्तिदन्तशुण्डादण्डोत्तम्भिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बूप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौञ्चशाकपुष्करसप्तद्वीपमण्डिते कांस्यताम्रगभस्तिनागगन्धर्वचारणभरतादिनवखण्डखण्डिते भारतवर्षे भरतखण्डे अयोध्या—मथुरा—माया—काशी—काञ्च्यवन्ती—द्वारवती—कुरुक्षेत्रपुष्करादिनानातीर्थयुक्तकर्मभूमौ मध्यरेखायाः पूर्वदिग्भागे भागीरथ्याः पश्चिमे जगत्स्रष्टुः परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये

पराद्धें तस्य प्रथमवर्षे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अन्हो द्वितीययामे तृतीयमुहूर्ते प्रथमघटिकायां सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे विक्रमशके वर्तमानेऽमुकनाम्नि सम्वत्सरे उत्तरायणे वसन्तऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थे सवितरि अमुकराशिस्थे देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशिष्टे देशे काले च अमुकशर्मणो मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञात-कामाकाम सकृदसकृत्-कृत-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट—भुक्ताभुक्तपीतापीत—सकलपातकातिपातकोपपातक—लघुपातकसङ्करीकरण—मलिनीकरणापात्रीकरण—जातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितानां पापानां क्षयद्वारा होमात्मक विष्णुयाग कर्माधिकारार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पर्षदुपदिष्टं षडब्द-त्र्यब्द-सार्द्धाब्दान्यतमं प्रायश्चित्तं पूर्वोत्तराङ्गयुतं गोमूल्यदानरूपप्रत्याम्नायद्वाराऽहमाचरिष्ये, इति प्रधानप्रतिज्ञा सङ्कल्पं कृत्वा—

अर्थात् इस प्रकार प्रधान प्रतिज्ञा संकल्प को करके—

प्रारोप्सितप्रायश्चित्तस्याङ्गत्वेन केशश्मश्रुनखानि वापयिष्ये (वप्स्ये) इति सङ्कल्प्य—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ।
केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशान्वपाम्यहम् ॥

इस मंत्र को पढ़कर शिखा को त्याग करके, उसके नीचे केश समूह को काटें :—इसके बाद

ततः—ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुवसूनि च ।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥
ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वꣳ सोमो राजाऽयमागमत् ।
स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च ॥

इति द्वादशाङ्गुलप्रमाणेन अपामार्गादिकाष्ठेन प्राङ्मुखो वा दुर्गन्धिनाशाय दन्तधावनं कृत्वा तूष्णीं मार्जनात्मकं स्नानं कुर्यात् ।

बारह अंगुल के अपामार्गादि की लकड़ी से पूर्वाभिमुख बैठकर दन्तुवन करके चुपचाप मार्जनात्मक स्नान करे फिर यह संकल्प करे :—

ततः—'करिष्यमाणप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन यजमानशरीर-सम्बन्धसमस्तपापक्षयार्थं भस्मादिभिः दशविधस्नानानि करिष्ये'—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इति संकल्प्य तत्र प्रथमं भस्मस्नानम् श्रौतं स्मार्तं वा तंदभावेऽन्यद्वा भस्म आदाय वामपाणौ गृहीत्वा दक्षिणहस्तेनाच्छाद्य—'ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वँ ह वा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि' इति मन्त्रेण भस्म अभिमन्त्र्य—ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति-र्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् इति शिरसि। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्र प्रचोदयात्—इति मुखे। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः शर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः—इति हृदये। ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः—इति गुह्ये। ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवेनाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः—इति पादयोः ॐ इति प्रणवेन सर्वाङ्गे मस्तकादिपादान्तं भस्म विलिम्पेत्। ततः शुद्ध-गोमयमादाय—ॐअग्रमग्रचरन्तीनामोषधीनां रसं वने। तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यन्मे रोगं च शोकं च नुद गोमय सर्वदा। इत्यभिमन्त्र्य सूर्याय प्रदर्श्य—ॐ मा नंस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषुरीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे। इति मन्त्रेण दक्षिणहस्तगृहीतगोमयेन शिरस्तो नाभ्यन्तं, वामहस्तगृहीतेन नाभितः पादान्तं विलेपनम्। देशभेदान्मन्त्रावृत्तिः। ततो मृत्तिकां गृहीत्वा—

ॐ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
शिरसा धारयिष्यामि रक्ष मां त्वं पदे पदे॥

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिके ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता॥
मृत्तिके हर मे पापं यद्दैवं यच्चमानुषम्। मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्॥
त्वया हतेन पापेन जीवामि शरदां शतम्॥

निम्न मंत्रों का पढ़े :—

ॐ नमो मित्रस्य व्वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतꣳ सपर्यत॥ दूरे दृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शꣳसत॥ इति सूर्याय प्रदर्श्य, ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

पदम् । समूढमस्यपाᳪसुरे स्वाहा ॥ इति गोमयवदनु मन्त्रावृत्तिः लिम्पेत् अपि ।

शुद्ध जलस्नानम्—ॐ आपो ऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वᳪहि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीः ॥ इति मन्त्रेण नद्यादौ निमज्ज्य—ॐ उदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि ॥ इत्युन्मज्जेत् । नद्याद्यभावे—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाᳪसुरे स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण स्नायात् । शक्त्यभावे—ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ॥ उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा ऽअरङ्ग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥ आपो जनयथा चनः ॥ इति तिसृभिर्मार्जयेत् । गायत्र्या गोमयवद् गोमूत्रमनुलिप्य, गोमयं पुनः पूर्ववदनु लिम्पेत् । ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ इति दध्यनुलिप्य ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ॥ सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽआयूᳪषि तारिषत् ॥ इति दध्यनुलिप्य—ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥ इति घृतमनुलिप्य ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ आभिषिञ्चामि इति कुशोदकेन स्नायात् । ततो नाभिमात्रजले तिष्ठन् स्नानाङ्गतर्पणं कुर्यात्—यज्ञोपवीती प्राङ्मुखः साक्षताभिरद्भिः—ॐब्रह्मादिदेवांस्तर्पयामि । ॐभूर्देवांस्त० । ॐभुवर्देवांस्त० । ॐस्वर्देवांस्त० ॐभूर्भुवः स्वर्देवांस्त० । इति एकैकमञ्जलिं देवतीर्थेन दत्वा, उदङ्मुखो निवीती सयवाभिरद्भिः प्राजापत्यतीर्थेन—ॐकृष्णद्वैपायनादिऋषीं स्त० । ॐ भूऋषींस्त० । ॐ भुवः ऋषींस्त० । ॐ स्वर्ऋषींस्त० । ॐ भूर्भुवः स्वर्ऋषींस्त० इति द्वौद्वावञ्जली दत्वा दक्षिणामुख प्राचीनावीती पितृतीर्थेन सतिलाभिरद्भिः—सोमं, पितृमन्तं, यमम्, अग्निष्वात्तं कव्यवाहनादींस्त० । भूः पितॄँस्त० । भुवः पितॄँ स्त० । स्वः पितॄंस्त० । भूर्भुवः स्वः पितॄंस्त० । इति तर्पयित्वा तीरमागत्य "ॐअग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाःकुले मम । भूमौ दत्तेन तोयेन तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम् ॥ इति मन्त्रेण तटेऽञ्जलि प्रक्षिप्य ॐये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः । ते गृह्णन्तु मयादत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥ इति तीरे वस्त्रं निष्पीड्य उपवीती ।

ॐ यन्मया दूषितं तोयं शरीरमलसंभवात् ।
तद्दोष परिहारार्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम् ॥

इस प्रकार यक्ष्म तर्पण करे :—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मया दुष्कृतं कृतम् ।
तत्क्षमस्वाखिलं देवि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥

इति नदीं क्षमापयेत् । ततो धौते वाससी परिधाय द्विराचम्य भस्मना त्रिपुण्ड्रं चन्दनादिनोर्ध्वपुड्रं वा पार्वणेन विधिना विष्णुश्राद्धं साङ्कल्पिकं कुर्यात् । अथवा शालिग्रामशिलायां श्वेतचंदनादिभिर्विष्णुं षोडशोपचारैः सम्पूज्य ब्राह्मणचतुष्टयं च सम्पूज्य ब्राह्मणचतुष्टयं विष्णूद्देशेन भोजयिष्ये—ब्राह्मणचतुष्टयपर्याप्तं भोजनमिष्टलड्डुकादिकम् आमान्नं तन्निष्क्रयं वा दास्ये—

इति तेन श्रीभगवान् पापापहा महाविष्णुः प्रीयताम् । इदमेव प्रायश्चित्ताङ्गं विष्णुश्राद्धमित्यभिधीयते । ततः प्रायश्चित्ताधिकारसिद्ध्यर्थं प्रारीप्सितप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया विहित गोदानप्रत्याम्नायत्वेन यथाशक्ति गोमूल्यं सुवर्णादिद्रव्यं वह्न्यादि दैवतं तुभ्यमहं संप्रददे इतिदत्वा महाव्याहृतिभिराज्येनाष्टोत्तरशतमष्टाविंशति वा होमं करिष्ये—

उपर्युक्त संकल्प करें—

स्थण्डिले त्रिभिर्दर्भैस्त्रिः परिसमूहनम् । गोमयोदके त्रिवारमुपलेपनम् । स्फ्येन स्रुवेण

वा उदक्संस्थाः प्रागग्रास्तिस्रो रेखाः स्थण्डिलप्रमाणा प्रादेशमात्रा वा कृत्वा अनामिकाङ्गुष्ठेन यथोल्लेखनक्रमं रेखाभ्यस्त्रिः पांसूमुद्धृत्य–ईशानकोणे निक्षिपेत् । मणिकपात्रसत्वे तदुदकेन तदभावे कमण्डलूदकेन न्युब्जहस्तेनाभ्युक्षेत् इति पञ्चभूसंस्कारान् कृत्वा ताम्रपात्रस्थं विधिनामानं लौकिकाग्निं वेद्यां स्थापयेत् ।

तत्र मन्त्रः—ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२ऽआसादयादिह ॥

इति मन्त्रेण अग्निं संस्थाप्य अग्नेरुत्तरत आचार्यब्रह्मणोर्वरणं कुर्यात् ।

निम्न संकल्प करें—

अद्य अमुकोऽहं प्रायश्चित्तहोमकर्मणि आचार्यब्रह्मणोः पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये—

इति सङ्कल्प्य गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य वरणसामग्रीं गृहीत्वा एभिर्गन्धाक्षतपुष्पपूगीफलद्रव्य-यज्ञोपवीतपुष्पमालालङ्करणादिभिः करिष्यमाणामुकहोमकर्मणि आचार्यकर्म कर्तुमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोस्मीति प्रत्युक्तिर्ब्रह्मणः ।

आचार्य की प्रार्थना करे :—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पति । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत ॥

तथा—प्रायश्चित्तहोमकर्मणि कृताकृतवेक्षणादिब्रह्मकर्मकर्तुं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे वृतोऽस्मीति-प्रतिवचनम् ।

ब्रह्मा की प्रार्थना करे :—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरो विभुः । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिम् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया । सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं यज्ञोयं विधिपूर्वकम् ॥
अस्मिन् होमकर्मणि त्वं मे आचार्यो भव । अहं भवानीति प्रत्युक्तिः, त्वं मे ब्रह्मा भव ॥

भवानीति प्रत्युक्तिः । इति वरणं विधाय अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनं पीठं कुशैराच्छाद्य अग्नेरुत्तरतः पूर्वं वृत्तं ब्रह्माणं तत्रोपवेश्य प्रतिनिधिभूत आचार्य आत्मासनमग्नेः पश्चात्, यजमानासनञ्चाग्नेरुत्तरतः प्रागग्रैः कुशैः सम्पाद्य अग्नेरुत्तरतः पश्चिमभागे एकमासनं पूर्वभागे द्वितीयमासनं प्रागग्रैः कुशैः कल्पयित्वा प्रणोतापात्रं द्वादशाङ्गुलदीर्घं चतुरङ्गुलखातं सव्यहस्ते कृत्वा दक्षिण हस्तोद्धृतपात्रस्थजलेनापूर्य दर्भैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य पश्चिमासने निधाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

आलभ्य पूर्वासने निदध्यात् । पूर्वादिदिक्षु प्रागग्रैरुदगग्रैश्च त्रिभिस्त्रिभिश्चतुर्भिश्चतुर्भिर्वा कुशैरग्निं परिस्तरेत् । पुरस्ताद्दक्षिणतः पश्चादुत्तरतः । तत्र पुरस्तात् पश्चाच्च उदगग्रैः, दक्षिणत उत्तरतश्च प्रागग्रैः । ततः अर्थवन्ति वस्तूनो अग्नेः पश्चिमतः प्राक्संस्थानि प्राग्बिलान्युदगग्राणि, उत्तरतश्चेत् उदक्संस्थानि उदग्बिलानि प्रागग्राणि कार्यक्रमेण द्वन्द्वमासादयेत् । पवित्रच्छेदनानि त्रीणि कुशतरुणानि, द्वे पवित्रे साग्ने अनन्तर्गर्भे, प्रोक्षणीपात्रम्, आज्यस्थाली, सम्मार्जनकुशाः त्रयः पञ्च वा, उपयमन कुशास्त्रिप्रभृतयस्त्रयोदशपर्यन्ताः, समिधस्तिस्रः पालाश्यः प्रादेशमात्र्यः, स्रुवः खादिरः, गव्यमाज्यम्, पूर्णपात्रं षट्पञ्चाशदधिकमुष्टिशतद्वयं तण्डुलपूरितं वा, बहुभोक्तुः पुरुषाहार परिमितं वा, कर्मोपयोगिनी दक्षिणा, गौर्ब्राह्मणस्य वरः, इत्युक्तो वरो वा । एतानि वस्तूनि अग्नेः पश्चात् प्राक्संस्थानि स्थापयेत् ।

पात्रासादनानन्तरमुपकल्पनीयानि—सुवर्ण-रजत-ताम्र-पद्म - पलाशादिपात्रं, यज्ञियकाष्ठम्, हरितानि सप्ताधिकानि कुशपत्राणि, पञ्चगव्यं च, गोमूत्रादि पृथक् पृथगिति । तत्र पात्राणि प्रा बिलान्युदगग्राणि स्थापयेत् । त्रिभिर्दर्भैः द्वे प्रच्छिद्य प्रादेशमात्रे पवित्रे कुर्यात् ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकमासिच्य पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय दक्षिणेन हस्तेन प्रोक्षणीपात्रमुत्थाप्य सव्ये कृत्वा तदुदकं दक्षिणेनोच्छाल्य (दक्षिणहस्तमुत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकाङ्गुल्योर्मध्यपर्वभ्यां जलस्योच्छालनं कृत्वा) प्रणीतोदकेन प्रोक्षेदिति प्रोक्षणीसंस्कारः। पवित्राभ्यां प्रोक्षणीभिरद्भिः आज्यस्थालीमुत्तानहस्तेन देवतीर्थेन संप्रोक्ष्य, सम्मार्जनकुशान्, उपयमनकुशान्, समिधः तिस्रः, स्रुवम्, आज्यम्, पूर्णपात्रम्, दक्षिणाश्च सादनक्रमेणैकैकशः संप्रोक्ष्य, असञ्चरे अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं सपवित्रं स्थापयेत्। आसादितमग्नेः पश्चान्निहितायामाज्यस्थाल्यामाज्यं गृहीत्वा अग्नावारोपयेत्। अधिश्रिते आज्ये ज्वलदुल्मुकमाज्यस्य समन्ताद् भ्रामयेत्। दक्षिणेन स्रुवमधोमुखं प्राञ्चं प्रतप्य सव्ये कृत्वा सम्मार्जनकुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तम्, कुशमूलैः अधस्ताद्भागे अग्रमारभ्य मूलपर्यन्तम् सम्मार्जनकुशान् अग्नौ प्रहरेत्। ततः प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य कराभ्यां सम्मार्ज्य आत्मनो दक्षिणतः कुशोपरि निदध्यात्। आज्यमुत्तार्य उत्तरतः स्थापयित्वा अग्नेः पश्चात् आनयेत्। अङ्गुष्ठाभ्याम् अनामिकाभ्यां च धृताभ्याम् उदगग्राभ्याम् पूर्वपवित्राभ्याम् आज्यं उत्पूय अवेक्ष्य अपद्रव्यनिरसनं कृत्वा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रोक्षणीश्च पूर्वपवित्राभ्याम् उत्पूय तासु पवित्रे निदध्यात् उपयमनकुशान् दक्षिणेनादाय वामहस्ते कृत्वा पवित्रे प्रणीतासु निदध्यात् । ततः विट्नामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव इति प्रतिष्ठाप्य ध्यायेत्—

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम् ॥
सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षि शिरोमुखः ।
विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु ॥

विट्नाम्ने अग्नये नमः । इति संपूज्य रेखाः पूजयेत्—पूर्वरेखायाम्, ॐ ब्रह्मणे नमः । मध्यरेखायाम्—ॐ विष्णवे नमः । उत्तररेखायाम्—ॐ रुद्राय नमः ।

ततो अग्निजिह्वापूजनम्—ॐ कराल्यै नमः—ॐ धूमिन्यै नमः—ॐ श्वेतायै नमः—ॐ लोहितायै नमः—ॐ महालोहितायै नमः—ॐ सुवर्णायै नमः—ॐ पद्मरागायै नमः ।

इति सप्त जिह्वाः सम्पूज्य दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणाऽन्वारब्धः समिद्धतमेग्नौ मौनी स्रुवेण जुहुयात्—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

ॐ प्रजापतये स्वाहा इति मनसा ध्यायन् हविर्द्रव्यमग्नौ प्रक्षिप्य इदं प्रजापतये न मम इति त्यागं मनसा कृत्वा हुतशेषं प्रोक्षणीपात्रे क्षिपेत्, एवं सर्वत्र ।

ततः ॐ इन्द्राय स्वाहा—इदमिन्द्राय न मम । इत्याघारौ ।

ॐ अग्नये स्वाहा—इदमग्नये न मम ।

ॐ सोमाय स्वाहा—इदं सोमाय न मम—इत्याज्यभागौ च हुत्वा ।

ततः—अष्टोत्तरशतमष्टाविंशति वाऽऽज्याहुतीनां व्यस्तसमस्ताभिर्महाव्याहृतिभिर्होमः ।

ॐ भूः स्वाहा—इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम ।

ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा—इदं प्रजापतये न मम ।

एवं सप्तवारं कृते अष्टाविंशतिराहुतयः । अथ ब्रह्मकूर्चहोमः—सुवर्णादिपात्रे गायत्र्या गोमूत्रम् ।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति गोमयम् ।

ॐ आप्यायस्वसमेतु ते व्विश्वतः सोम व्वृष्ण्यम् ॥ भवा व्वाजस्य सङ्गथे ॥ इति दुग्धम् ॥

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः ॥ सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽआयूᳪषि तारिषत् ॥ इति दधि ॥

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि । इति घृतम् ।

ॐ देवस्य त्वा स० हस्ताभ्याम् ॥ इति कुशोदकं सङ्गृह्य प्रणवेनालोड्य यज्ञियकाष्ठेन निर्मथ्य प्रणवेनाभिमन्त्र्य सप्ताधिकहरितदर्भपत्रैः पञ्चगव्यहोमं कुर्यात् ।

मन्त्राश्च–ॐ इरावती धेनुमती हि भूतᳪ सूयवसिनी मनवे दशस्या ॥ व्यस्कभ्ना रोदसी व्विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा ॥ इदं पृथिव्यै न मम । ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाᳪसुरे स्वाहा ॥ इदं विष्णवे न मम ॥ ॐ मानस्तोके० ॥ इदं रुद्राय न मम । ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शं योरभिस्रवन्तु नः स्वाहा ॥ इदमद्भ्यो न मम ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ अग्नये स्वाहा—इदमग्नये न मम।

ॐ सोमाय स्वाहा—इदं सोमाय न मम।

ॐ तत्सवितुर्व० स्वाहा—इदं सवित्रे न मम।

ॐ स्वाहा—इदं परमेष्ठिने न मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा—इदं प्रजापतये न मम। इति हुत्वा पञ्चगव्यमिश्राज्येन—

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा—इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। इति स्विष्टकृद्धोमः। ततः—भो विप्रा व्रतग्रहणं करिष्ये—इति ब्राह्मणान् प्रार्थ्य ॐ कुरुस्व—इति तैरनुज्ञातो हुतशेष्य पञ्चगव्यं प्रणवेन शब्दमकुर्वन् पिबेत्। अस्मिन् दिने आहारान्तरं परित्यजेत् अशक्तौ दुग्धाद्याहारी भवेत्। ततो निशामतिवाह्य दिनान्तरे तद्दिने एव वा देयद्रव्यं सम्पूज्य कुशयवतिलान्यादाय—

देशकालौ स्मृत्वा मम (पित्रादेः) जन्मप्रभृत्यद्य यावत् इत्यादि निरासार्थम् इत्यन्तमुल्लिख्य इमानि अशीत्यधिकनवतिपञ्चचत्वारिंशत् अन्यतमसङ्ख्याककृच्छ्रप्रत्यम्नायभूतानां गवां मूल्यभूतानि पूर्वोक्तान्यतमसङ्ख्याकानि सुवर्णनिष्काणि, तदर्धानि, तदर्धार्धानि वा चन्द्रदैवतानि पणद्वात्रिंशत्कानि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

वा सूर्यदैवतानि कार्षापणानि वा ब्राह्मणेभ्यो यथाकालं दास्ये । ॐ तत्सत् न मम—इति सङ्कल्प्य दद्यात् ।

ततः—

भू स्वाहा-इदमग्नये न मम ।
ॐ भुवः स्वाहा-इदं वायवे न मम ।

ॐ स्वः स्वाहा-इदं सूर्याय न मम ।

ॐ त्वन्नोऽ अग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽ अव यासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुंचानो व्विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्युस्मत्स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।

ॐ स त्वन्नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्याऽ उषसो व्युष्टौ ॥ अव यक्ष्व नो

(१) भवन्ति चास्मिन् भूतानि स्थावराणि चराणि च । तस्माद् भूरिति विज्ञेया प्रथमा व्याहृतिः स्मृता ॥ भवन्ति भूतानि उपभोगक्षये पुनः । कल्पान्ते उपभोगाय भुवस्तस्मात्प्रकीर्तिता ॥ शीतोष्णवृष्टितेजांसि जायन्ते तानि वै सदा । आलयः सुकृतीनां च स्वर्लोकः स उदाहृतः ॥ इति योगियाज्ञवल्क्यः ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्वरुणठं० रराणो व्वीहि मृडीकठं० सुहवो नऽएधि स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽ असि अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा ।। इदमग्नये अयसे न मम ।

ॐ ये ते शतं व्वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । ते भिर्नोऽ अद्य सवितोत व्विष्णु विंश्वेमुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमꣳ श्रथाय ॥ अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये न मम ॥

ततः—बर्हिर्होमं स्वाहा—इति मन्त्रेण कुर्यात् । इदं प्रजापतये न मम ।

ततः संस्रवप्राशनमवघ्राणं वा कृत्वा द्विराचम्य अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिं स्वाहा इति कुर्यात् ।

ततः प्रणीताविमोकमग्नेः पश्चिमतः कुर्यात् । ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्—प्रायश्चित्तहोकर्मणः साङ्गफलप्राप्तये सादृगुण्यार्थमपूर्णपूरणार्थं च इदं पूर्णपात्रं सद्रव्यं ब्रह्मणे तुभ्यं संप्रददे । ॐ तत्सत् न मम ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

तत अग्निं प्रार्थयेत्—ॐसदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ॥ सनिं मेधामया सिषꣳ स्वाहा ॥ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ॥ तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ॥ मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥

ततः—प्रायश्चित्तोत्तराङ्गत्रिषणुश्राद्धसंपत्तये ब्राह्मणचतुष्टयाय पक्वान्नम्-आमान्नं तन्निष्क्रयं वा दास्ये । इति त्रिषणुश्राद्धानुकल्पभूतमन्नादि दत्वा, प्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गत्वेन विहितिगोदानप्रत्याम्नायत्वेन यथाशक्तिगोमूल्यं तुभ्यं संप्रददे—इति उत्तरगोदानं कृत्वा—

वायव्याम् उत्तराङ्गभूतमग्निपूजनम्—ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽ अस्मान्विश्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान् ॥ युयोद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽ उक्तिं व्विधेम ॥ इति मन्त्रेण ।

ॐ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं बलं श्रियम् ।
आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इत्यनेन च कुर्यात् । ततस्त्र्यायुषकरणमनामिकया [1]स्रुवलग्नसघृतभस्मना—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः—इति ललाटे ।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—इति ग्रीवायाम् ।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्—इति दक्षिणबाहुमूले ।

ॐ तन्नोऽ अस्तु त्र्यायुषम् इति हृदि ।

फिर होम के अंग की दक्षिणा का संकल्प करे ।

प्रायश्चित्तहोमकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं साद्गुण्यार्थं च इमां दक्षिणामाचार्याय तुभ्यं संप्रददे । (ब्रह्म-दक्षिणापेक्षयाऽऽचार्यदक्षिणा द्विगुणा) । कृतस्य प्रायश्चित्तकर्मणः साद्गुण्यार्थं पञ्चदश ब्राह्मणान् यथोपपन्नेन भोजयिष्यामि । अस्मिन् प्रायश्चित्तकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं भूयसीं दक्षिणा-मन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये । ततोऽग्निं विसृजेत्—

(१) ततोऽनामिकया कुर्याद्बिन्दु स घृतभस्मना । हृदयमध्यर्ललाटे च त्र्यायुषेति पदैः क्रमादिति वचनं प्रमाणयन्ति तत्र । ऐशान्याम हरेद्भस्म चा वाऽथ स्रुवेण वा । अङ्कनं कारयेत्तेन शिरः कण्ठां सहृत्सुचेति कमलाकरस्थं वचनं च ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठस्व स्थाने परमेश्वर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥

भो भो वन्हे महाशक्ते सर्वकर्म प्रसाधक । कर्मान्तरेऽपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम् । इष्टकामसमृध्यर्थं पुनरागमनाय च ।

ॐ यज्ञं यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ॥ एष ते यज्ञपते सहसूक्त वाकः सर्व्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ॥ सचेतसा विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥ ततस्तिलकं रक्षाबन्धनं घृतच्छायादर्शनमाशीर्वादमन्त्रपाठादिकं च कारयेदिति । इति प्रायश्चित्तप्रयोगः समाप्तः ।

अथ दशदानानि प्रयोगः

स्वर्णशृङ्गरौप्यखुरताम्रपृष्ठमुक्तापुच्छकांस्यदोहनवस्त्रादिभिरभ्यर्च्य गन्धादिना संपूज्य—सवत्सायै गवे नमः—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति नाममन्त्रेण गां संपूज्य—इरावती धेनुमतानि मन्त्रेण संप्रार्थ्य ब्राह्मणवरणम् । करिष्यमाणगोदानकर्मणि एभिः वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गोदानप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ।

ततः—ॐ व्रतेन दीक्षा० । यदाबध्नन्०—इति मन्त्रद्वयं पठित्वा स्वस्तीति प्रतिवचनम् । अत्र गोपुच्छोदकतर्पणं केचित्कुर्वन्ति ।

संकल्प करे :—

हस्ते त्रिकुशजलाक्षतद्रव्यं गोपुच्छं च गृहीत्वा—देशकालौ० गोत्रः शर्मा कृतानेकपापक्षयपूर्वकं मम गृहे उत्तरोत्तरशुभफलप्राप्त्यर्थं च इमां सवत्सां गां रुद्रदैवत्यां स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठां मुक्तालाङ्गूलयुतां कांस्यदोहनवस्त्रयुगच्छन्नां गोरोमसङ्ख्यसहस्रावच्छिन्नगोलोकवासकामः गोत्राय शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे ।

निम्न प्रार्थना करें—

यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याघौघनाशिनी ।
विश्वरूपधरा देवः प्रीयतामनया गवा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ।
गावो मे हृदये सन्तु गावांमध्ये वसाम्यहम् ॥

ततः—ॐ कौदात्कस्मा ऽअदात्कामौदात्कामायादात् ॥ कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता-कामैतत्ते ॥ इति कामस्तुतिं पठेत् । ॐ स्वस्ति ।

ततो दानप्रतिष्ठां कुर्यात्—कृतैतत् गोदानकर्मणः साङ्गतासंपत्तये गोत्राय शर्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे !

पश्चात् प्रदक्षिणा कर यह मंत्र पढ़ें—

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेष्वयवस्थिता ।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥

अथ भूदानम्—पूर्ववद्वरणादिकं कृत्वा—अद्येत्यादि गोत्रः शर्मा गोत्राय शर्मणे सालङ्कृताय षष्टिसहस्रवर्षमितं वैकुण्ठे विष्णुलोकावाप्तिकामः इमां भूमिं सस्योद्भवां सवृक्षफलपुष्पाद्युपेतां विष्णु-दैवतां तुभ्यमहं संप्रददे—द्विजहस्ते दद्यात् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ब्राह्मणस्तु भूप्रदक्षिणां कुर्वन्प्रतिगृह्णीयात् । देवस्यत्वेति पठित्वा स्वस्तीति पठेत् ।

ततः प्रार्थना—

सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता । अनन्तसस्यफलदा अतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

यस्यां रोहन्ति वीजानि वर्षाकाले महीतले । भूमेः प्रदानात्सकला मम सन्तु मनोरथाः ॥

ततो दक्षिणां दद्यात् ।

तिलदानम्—आचमनादिभूतोत्सादनान्तं कृत्वा द्रोणत्रयपरिमितान् वा (पलाधिकपादोनत्रयोदशसेटकमितान्) यथाशक्ति वा तिलान् पुरतः कस्मिंश्चित् पात्रे वस्त्रे वा संस्थाप्य कुशयवादिकमादाय मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा श्रीविष्णुप्रीतये तिलदानं करिष्ये—इति प्रतिज्ञाय ब्राह्मणं सम्पूज्य तिलान् संप्रोक्ष्य—

विष्णोर्देहसमुद्भूताः कुशाः कृष्णतिलास्तथा । धर्मस्य रक्षणायार्थमेतत्प्राहुर्दिवौकसः ॥

इति सम्पूज्य विष्णुप्रीतये इत्यन्तं पूर्वोक्तमुल्लिख्य इमान् द्रोणत्रय-द्रोणद्वय-एकद्रोणान्यतमपरिमितान् तिलान् प्रजापतिदेवताकान् सुपुजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ तत्सत्

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न मम—इति जलादिकं ब्राह्मणहस्ते प्रक्षिप्य—

महर्षेगोत्रसंभूताः काश्यपस्य तिलाः स्मृताः । तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ॥

इति पठित्वा तिलद्रोणं स्पर्शयेत् । तिलपात्रदानं तु षोडशपलनिर्मिते यथाशक्ति परिमाणनिर्मिते वा ताम्रपात्रे तिलान् निधाय हिरण्यं च यथाशक्ति तत्र धृत्वा पूर्वोक्तविधिना ।

ॐ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ।
तिलपात्रप्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा ॥

इति मन्त्रविशेषं पठन् कुर्यात् यथाशक्ति सुवर्णं तन्मूल्यं वा दक्षिणादानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं दद्यात् । तिलमूल्यं तिलपरिमाणानुसारेण कल्प्यम् ।

हिरण्यदानम्—दाता आचमनादिभूतोत्सादनान्तं गोदानवत् कृत्वा कुशयवतिलजलपाणिः देशकालौ सङ्कीर्त्य-'अक्षयस्वर्गकामः, पापक्षयकामः, पितृतारणकामः, ईश्वरप्रीतिकामो वा सुवर्णदानं करिष्ये—इति प्रतिज्ञाय तदङ्गत्वेन ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणं सुवर्णस्य पूजनं च करिष्ये—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इति संकल्प्य गन्धादि ब्राह्मणं सम्पूज्य पूर्ववत् वृत्वा सुवर्णं संप्रोक्ष्य—

ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

यह कहें—

इति सम्पूज्य पूर्वद्देशकालौ फलं च सङ्कीर्त्य ब्राह्मणस्य गोत्रनामनी उल्लिख्य इदं कर्षमात्र सुवर्णमग्निदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ तत्सत् न मम ।

ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

इस प्रकार निम्न दान वाक्य को पढ़ ब्राह्मण के हाथ में कुशोदक और सुवर्ण देवें—

ततः—सुवर्णदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे—

उपर्युक्त वाक्य का उच्चारण कर दक्षिणा देवें—

ब्राह्मणश्च—ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ इति यजुः पठित्वा ॐ स्वस्ति । अग्निदैवतायै सुवर्णं प्रतिगृह्णामि, इत्युच्चार्य प्रतिगृह्य—ॐकोदात्कस्मा ऽअदात्कामोदात्कामायादात् ॥ कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामै तत्ते ॥

उपर्युक्त मंत्र का उच्चारण कर काम स्तुति पढ़े ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ आज्यदानम्—सेटकचतुष्टयमितं, तद्द्वयमितं, सेटकमात्रं वा आज्यं पुरतो निधाय पूर्ववद्दानप्रतिज्ञां कृत्वा ब्राह्मणं सम्पूज्य वृत्वा आज्यं संप्रोक्ष्य संपूज्य मम (पित्रादेः) सकल-पापक्षयद्वाराविष्णुप्रीतये इदमाज्यं विष्णुदैवतं (मृत्युञ्जयदैवम्) तुभ्यमहं संप्रददे ।

ॐ तत्सत् न मम इति सङ्कल्प्य ।

ॐ कामधेनोः समुद्भूतं देवानामुत्तमं हविः ।
आयुर्वृद्धिकरं दातुराज्यं पातु सदैव माम् ॥

इति पठित्वा दद्यात् । सुवर्णं दक्षिणां तन्मूल्यं वा दानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं दद्यात् ।

अथ वस्त्रदानम्—सूक्ष्मतन्तुनिर्मितं वस्त्रद्वयमष्टहस्तायतं हस्तद्वयान्यूनविशालं प्रान्त-योरच्छिन्नं नूतनं पुरतो निधाय पूर्ववत् दान-प्रतिज्ञा-ब्राह्मणपूजन-वरण-वस्त्रप्रोक्षणपूजनानि विधाय मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वाराविष्णुप्रीतये इदं वासोयुग्मं बृहस्पतिदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ तत्सत् न मम । इति संकल्प्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह पढ़कर देवें—

ॐ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

सुवर्ण तन्मूल्यं वा दक्षिणां दानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं दद्यात् ।

अथ धान्यदानम्—[१६] पलाधिक [७७] सप्तसप्ततिसेटकमितं धान्यम् । व्रीह्यादिकं पुरतो निधाय दानप्रतिज्ञादिकं पूर्ववत् कृत्वा धान्यं संप्रोक्ष्य- संपूज्य-मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा-विष्णुप्रीतये इदं धान्यं प्रजापतिदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे । ॐ तत्सत् न मम—इति सङ्कल्प्य—

यह पढ़कर देवें—

सर्वदेवमयं धान्यं सर्वोत्पत्तिकरं महत् । प्राणिनो जीवनो पायमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

दानप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं सुवर्णं तन्मूल्यं वा दक्षिणां दद्यात् । धान्यमूल्यं परिमाणानुसारेण कल्प्यम् ।

अथ गुडदानम्—सेटकत्रयमितं यथाशक्ति वा गुडं पुरतो निधाय दानप्रतिज्ञादि विधाय गुडं संप्रोक्ष्य संपूज्य मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वाराविष्णुप्रीतये इमं गुडं सोमदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे । ॐ तत्सत् न मम—इति सङ्कल्प्य—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

यह पढ़कर देवें—

ॐ यथा देवेषु विश्वात्मा प्रवरश्च जनार्दनः। सामवेदस्तु वेदानां महादेवस्तु योगिनाम् ॥

प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा।
तथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षु रसो मतः।
मम तस्मात्परालक्ष्मीं ददस्वगुडसर्वदा ॥

यह पढ़कर देवें—

दानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं तन्मूयं वा दक्षिणां दद्यात्।

अथ रजतदानम्—पलत्रयमितं पलमितं यथाशक्ति वा रजतं पुरतो निधाय दानप्रतिष्ठादि विधाय रजतं सम्प्रोक्ष्य सम्पूज्य—मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं रजतं चन्द्रदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम—इति संकल्प्य

ॐ प्रीतिर्यतः पितॄणां च विष्णुशङ्करयोः सदा।
शिवनेत्रोद्भवं रौप्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह पढ़कर देवें—

दानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं सुवर्णं तन्मूल्य वा दक्षिणां दद्यात् ।

लवणदानम्—[१६] पलाधिक [७७] सप्तसप्ततिसेटकमितं यथाशक्ति वा लवण पुरतो निधाय दानप्रतिज्ञादि विधाय लवणं संप्रोक्ष्य संपूज्य—मम (पित्रादेः) सङ्कल्प्य पापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं लवणं सोमदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ तत्सत् न मम ।

ॐ यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टा लवणं विना ।
शंभोः प्रीतिकरं यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

यह पढ़कर देवें—

दानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं सुवर्णं तन्मूल्यं वा दक्षिणां दद्यात् ।

इति दशदानप्रयोगः समाप्तः

❀ अथ मंगलस्नानप्रयोगः प्रारम्भः ❀

महत्सु कर्मसु पूर्वेद्युरल्पेसु—तद्दिने कृतनित्यक्रियः कृतोपवासो यजमानो निर्णेजनान्त वैश्वदेवं विधा मङ्गलस्नानं कुर्यात् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकल्प करें—

तद्यथा—देशकालौ सङ्कीर्त्य-करिष्यमाण विष्णु याग निमित्तं सपत्नीको ऽहं मङ्गलस्नानं करिष्ये—

इति सङ्कल्प्य यथाचारं सर्वौषध्यादिसुगन्धचूर्णैरामलकादिना सुगन्धतैलेन शरीरमुद्वर्त्य स्नात्वाऽऽचम्य समन्त्रं नूतने अधरोत्तरीये वस्त्रे (आभरणं च) धारयेत् ।

तत्र मन्त्रः—ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि ।
शतं च जीवामि शरदः पुरूचो रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये ॥

इत्यधोवस्त्रं परिधाय द्विराचामेत् । ततः—

ॐयशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती ।
यशो भगश्च माऽविदद्यशो मा प्रति पद्यताम् ॥

इत्युत्तरीयं धृत्वा द्विराचामेत् । नूतनवस्त्राधारणे न मन्त्रः । पत्न्या अपि वस्त्रपरिधानं कंचुक्यादिधारणं च तूष्णीम् । प्रतिवस्त्रं सर्वेषां द्विराचमनम् । सौभाग्यकुङ्कुमादिना तिलककरणम् ।

ततो गोमयोपलिते रङ्गवल्लिस्वस्तिकाद्यलङ्कृते शुचौ देशे शुभवस्त्राच्छादिते श्रीपर्ण्यादि-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

प्रशस्तकाष्ठपीठे कम्बलकुशाद्यासने वा स्वयं प्राङ्मुख उपविश्य तादृशपीठयोः स्वदक्षिणतः पत्नीं, चोपवेशयेत्। ततः सर्वेषां कर्मणां प्रारम्भे करिष्यमाणकर्मणो निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं यथाकुलाचारं गणेशं गणेशाम्बिके वा पूजयेत्। तद्यथा–बद्धशिखो बद्धकच्छो दर्भपाणिः–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इत्युपकरणानि आत्मानं च संप्रोक्ष्य–

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्रं पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥ इति यजुर्द्वयेन दक्षिणवामहस्तनामिकयोर्मूले मध्यपर्वणि वा क्रमेण पवित्रं धृत्वा स्मार्तविधिनाऽऽचामेत्।

तद्यथा–आचमनार्थं विहितपात्रे जलमादाय मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठेन संहतान्यङ्गुलिना करेण माषमज्जनपरिमितं जलं त्रिः पिबेत्।

ततो हस्तं प्रक्षाल्य खान्युपस्पृशेत्। तद्यथा–अङ्गुष्ठमूलेन वारद्वयं मुखं संस्पृश्य संसहताभि-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रिभिरङ्गुलीभिरास्यम्, अङ्गुष्ठेन प्रदेशिन्या च घ्राणद्वयम्, अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां चक्षुर्द्वयम्, ताभ्यामेव श्रोत्रद्वयम्, कनिष्ठाङ्गुष्ठाभ्यां नाभिम्, करतलेन हृदयम्, सर्वाङ्गुलीभिः, शिरः, कराग्रेण अंशौ स्पृशेत्। एकमेकवारमाचम्य पुनर्द्वितीयवारं त्रिराचम्य तथैव खान्युपस्पृशेत्--इति स्मार्ताचनम्।

पौराणिकाचमने तु--केशवादि चतुर्विंशतिनामोच्चारम्। ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ मधुसूदनाय नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ वामनाय नमः ॐ श्रीधराय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ नारसिंहाय नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ उपेन्द्राय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ततः प्राणायामः—ॐ भूः ॐ भुवः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं भूर्भुवः स्वरो३म्--इति मन्त्रं नव कृत्वा पठेत्।

तत्र प्रथमाङ्गुष्ठेन दक्षिणनासां स्पृष्ट्वा मौनी नेत्रे निमील्य नाभौ स्थितं चतुर्भुजं विष्णु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ध्यायन् वामनासिकया शनैः श्वासं कर्षन् वारत्रयं मन्त्रं पठन् पूरकाख्यं प्राणायामं कुर्यात् ।

ततोऽङ्गुष्ठेन दक्षिणनासाम्, अनामाकनिष्ठाभ्यां वामनासां स्पृष्ट्वा श्वासं नियम्य ब्राह्मणं ध्यायन् त्रिवारं मन्त्रं पठन् कुम्भकं कुर्यात् ।

ततोऽङ्गुष्ठमपसार्य अनामाकनिष्ठाभ्यां वामनासां स्पृशन् श्वासं शनैर्विमुञ्चन् ललाटे शङ्करं ध्यायन् मन्त्रं त्रिवारं पठन् रेचकं कुर्यात् । ततो रक्षादीपं प्रज्वलय्य यजमान-आचार्यादयश्चाचारात् आ नो भद्रा इत्यादीन्मङ्गलमन्त्रान् पठेयुः । मन्त्रं पठताऽऽचार्यादिना तिलकं कारयेद्यजमानः ।

इति मङ्गलस्नानप्रयोगः समाप्तः

❋ अथ जलयात्राप्रयोगः प्रारम्भः ❋

विप्रानुज्ञातो सपत्नीको यजमानः अष्टौ नव वा कलशांश्च आचार्येण ऋत्विग्भिश्च सहितः सुवासिनीपुरःसरः शान्तिपाठं पठन् मङ्गलगीतवाद्यसमन्वितो जलाशयं गच्छेत् । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य स्वासने उपविश्य प्राणायामादिकं च कृत्वा सङ्कल्पं कुर्यात् ।

निम्न संकल्प करें—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देशकालौ सङ्कीर्त्य--करिष्यमाण विष्णुयागाङ्गत्वेन जलयात्रां करिष्ये। तदङ्गत्वेन गणेशा-वरुणादीन् षोडशोपचारैः पूजयेत्। ततो मण्डलादक्षिणस्यां प्रतीच्यामुदीच्यां च पूर्ववत् काण्डानुसमयेन त्रयाणां कलशानां स्थापनं पूजनम्। एवमीशानादिवायव्यान्तेषु चतुर्षु कोणेषु चतुर्णां कलशानां च तन्मध्ये वरुणं च पूजयेत्।

निम्न प्रार्थना करें—

एह्येहि यादोगणवारिधिनां गणेन पर्जन्यसहाप्सरोभिः।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमानः पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते॥
तीक्ष्णायुधं तीक्ष्णगतिं दिगीशं चराचरेशं वरुणं महान्तम्।
प्रचण्डपाशाङ्कुशवज्रहस्तं भजामि देवं कुलवृद्धिहेतोः॥

आवाहयाम्यहं देवं वरुणं यादसां पतिम्।
प्रतीचीशं जगत्प्राणसेवितं पाशहस्तकम्॥

इति मन्त्रैः कलशे वरुणमावाह्य पूजयेत्। ततः जलमातॄ पूजयेत्--तद्यथा आग्नेयकोणे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वस्त्रास्तृते कृतसप्ताक्षतपुञ्जेषु उदकूसंस्थेषु ।—

ॐ समुद्रायंशिशुमारानालंभतेपर्ज्जन्न्यांयमण्डूकानदभ्योमत्स्यान्मित्रायंकुलीपयुन्वरुणायना-क्रान् ।। मत्स्यै नमः मत्सीमा० ।

ॐ सुपर्ण्णः पार्ज्जन्यऽ आतिर्वाहसो दर्विदाते व्वायवे बृहस्पतये व्वाचस्पतये पैङ्गराजोऽलज ऽआन्तरिक्षः प्लवो मद्गुर्म्मत्स्युस्ते नदीपतये द्यावापृथिवीयः कूर्म्मः ।। कूर्म्यै नमः । कूर्मिमा० ।

ॐ देवीद्यावा पृथिवी मुखस्य वा मद्य शिरोराद्ध्यासन् देवयजने पृथिव्व्याः ।। मुखायत्वा मुखस्यं त्वा शीर्ष्णे ।। वाराह्यै नमः । वाराहीमा० ।

ॐ इन्दुर्दक्षः श्येन ऽऋतावाहिरण्यपक्षः शकुनोभुरण्युः ।। महान्त्सधस्थे ध्रुवऽआनिषत्तो नमस्तेऽ अस्तुमामाहिꣳसीः ।। वाराह्यै नमः । वाराहीमा० ।

ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसोगोधाकालकादार्व्वाघाटस्ते व्वनस्पतीनाङ्कृकवाकुः सावित्रोहꣳस सो व्वातंस्य नाक्रोमकरः कुलीपयुस्ते कूपारस्य ह्रियै शल्यकः ।। दर्दुर्यै नमः । दर्दुरीमा० ।।

ॐ व्वातं प्राणेनापानेननासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तरमनूकाशेन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

वाह्यन्निवेष्पं मूर्ध्नास्तनयित्नुंर्वाधेनाशनिं मस्तिष्कैण विद्युतङ्कनीकाभ्याङ्कर्ण्णाभ्याछं श्रोत्रछं श्रोत्राभ्याङ्कर्ण्णौ ते दुनीमधरकुण्ठेनापः शुष्ककुण्ठेनं चित्तं मन्याभिरदितिर्ठ० शीर्ष्णानिर्ऋतिन्निर्ज्जल्येन शीर्ष्णा सङ्क्रोशैः प्राणान्नेष्माणंॅं स्तुपेन ॥ मकर्यै नमः । मकरीमा० ।

ॐ सम्वक्ष्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा ॥ माम ऽ आयुः प्रमौषीर्म्मोऽअहन्तव व्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि ॥ जलूक्यै० जलूकीमा० ।

ॐ व्वृष्ण्णऽ ऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा व्वृष्ण्णऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि व्वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा व्वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ॥ तन्तूक्यै० तन्तुकीमा० ।

ततः जीवमातृकापूजनम् । तत्रैव पुरतः सप्ताक्षतपुञ्जान् कृत्वा—

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्व्यात्तम् ॥ इष्ण्णन्निषाणामुम्मऽ इषाण सर्व्वलोकं मऽ इषाण ॥ ऊर्म्यै० ऊर्मिमा० ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ सोमाय कुलुङ्गऽआरण्योजोनंकुलः शकाते पौष्णाः क्रोष्टामायोरिन्द्रस्यगौरमृगः-पिद्वोन्न्यङ्कु÷ कुक्कुटस्तेनुमत्यैप्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः ॥ लक्ष्म्यै० लक्ष्मीमा० ।

ॐ प्राणश्चमे पानश्च मे व्यानश्च मे सुश्च मे चित्तं चमऽ आधीतञ्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ महामायायै० महामायामा० ।

ॐ स नऽ इन्द्राय यज्ज्यवे व्वरुणाय मरुद्भ्यः÷ । व्वरिवोवित्परिस्त्रव ॥ पानदेव्यै० पानदेवीमा० । ॐ इदमापः प्रवहतावद्य ञ्चमलं च यत् ॥ यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपऽ अभीरुणम् ॥ वारुण्यै० वारुणीमा० ।

ॐ नियुत्वान्वाय वागह्यपः शुक्रोऽअयामिते । गन्तासि सुन्वतो गृहम् ॥ निर्मलायै० निर्मलामा० ।

ॐ पुरुष मृगश्चन्द्रमसा गोधा कालकादार्व्वाघाटस्ते व्वनस्पतीनाङ्कृकवाकु÷ सावित्रोहठं० सोव्वातस्य नाक्को मकरः कुलीपयस्य कूपारस्य ह्रियै शल्यकः ॥ गोधायै नमः गोधामा० इत्यावाह्य पूजयेत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अत्रावसरे केचित् सप्तसागरस्य पूजनमिच्छन्ति–तद्यथा–अक्षतपुञ्जेषु—

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपांशुना सममृतत्वमानट् ॥ घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥

इति मन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत्—ततः इन्द्रादिदशदिक्पालान् आवाह्य पूजयेत् । अत्रावसरे केचित् दिक्पालेभ्यो बलिमिच्छन्ति । ततः जलाशयस्थितवरुणपूजनम्—

ॐ उरुꣳहि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ ॥

अपदे पादा प्रतिधातवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित् ॥ नमो वरुणायाभिष्ठितो वरुणस्य पाशः ॥

इति मन्त्रेण वरुणाय नमः इति नाममन्त्रेण वा षोडशोपचारैः पूजनं कृत्वा ततः वैदिकमन्त्रेण नाममन्त्रेण वा स्रुवेण द्वादशाहुतीर्जुहुयात्—

तद्यथा—ॐ अद्भ्यः स्वाहा वार्भ्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्रवन्तीभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः

स्वाहार्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा ॥

नाममन्त्रपक्षे तु—ॐ अद्भ्यः स्वाहा । ॐ वार्भ्यः स्वाहा । ॐ उदकाय स्वाहा । ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा । ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा । ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा । ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा । ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा । ॐ धार्ष्याभ्यः स्वाहा । ॐ अर्णवाय स्वाहा । ॐ समुद्राय स्वाहा । ॐ सरिराय स्वाहा । इति वा जुहुयात् ।

ततः—ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥

निम्नश्लोक का उच्चारण कर वरुणदेव को नमस्कार कर निम्न प्रार्थना करें—

ॐ प्रतीचोश नमस्तुभ्यं सर्वाघौघनिषूदन ।
पवित्रं कुरु मां देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यावान्विधिरनुष्ठितः ।
ससर्वस्त्वत्प्रसादेन पूर्णो भवत्वपांपते ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः—सुवासिनीभ्यो हरिद्रासौभाग्यद्रव्यं ताम्बूलानि चणकांश्च दद्यात्। ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति दक्षिणां दद्यात्।

ततः—ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा शचा॥ इति पठित्वा कलशान् उत्थाप्य सुवासिनीनां हस्ते दद्युः।

ब्राह्मणाः—ॐ यथे मां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः॥

ब्रह्मराजन्याभ्याꣳ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च॥ प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु॥

आ नो भद्रा०—इति सूक्तं पठन् गीतवाद्यादियुक्तः सुवासिनीपुरःसरो यज्ञमण्डपं प्रत्यागच्छेत्—

अर्धमार्गे आगते सति तदा किञ्चिद्भूमिमुपलिप्य क्षेत्रपालपूजनं कृत्वा बलिं संपूज्य दद्यात्—

ततः मन्त्रः—ॐ नमो भगवते क्षेत्रपालाय भासुराय त्रिनेत्रज्वालामुख अवतर २ कपिल पिङ्गल ऊर्ध्व केश–जिह्वा लालन छिन्दि २ भिन्धि २ कुरु २ चल २ हां हीं हूं हैं बलिं गृहाण स्वाहा।

उपर्युक्त वाक्य का उच्चारण करे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ततः सपत्नीको यजमानः बन्धुज्ञातिसमन्वितेन प्रतिगमनं मण्डपद्वारसमीपे शिष्टाचारात्। पूर्ववत् सर्वदोषप्रशमनार्थं क्षेत्रपालाय बलिं दद्यात्। ततः प्रत्यागतं मण्डपस्य पश्चिमद्वारस्थितं यजमानं सुवासिन्यो नीराज्य पश्चिमेनैव द्वारेण मण्डपमध्ये नयेयुः।

इति शिष्टाचारप्राप्तजलयात्राप्रयोगः समाप्तः।

---

१) शान्तिकं पौष्टिकं वापि जलयात्रां विना बुधः। कुरुते यदि वा मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम् ॥ तडागादिप्रतिष्ठासु देवतायतनादिषु। लक्षहोमे कोटिहोमेयुतहोमे तथैव च ॥ व्रतोत्सर्गे महादाने यज्ञे वा वितते शुभे। व्रतोत्सर्गे-व्रतोद्यापने इत्यर्थः॥ जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठं कर्म समाचरेत्। अथातः सम्प्रवक्ष्यामि जलयात्राविधिं शुभम् ॥ यज्ञशालामतिक्रम्य ऋत्विग्भिर्ब्राह्मणैः सह ॥ यजमानः सपत्नीकः सुहृद्बन्धुजनैर्युतः ॥ अश्वारुढो गजारुढो वस्त्रालङ्कारभूषितः। गृहीत्वोपस्करं सर्वं गन्धपुष्पाक्षतादिकम् ॥ जलाशयं ततो गच्छेद् गीतवादित्रनिःस्वनैः। अनिन्द्यं च ह्रदं गच्छेन्नदीं वा समुद्रगाम्। सुवासिन्योग्रतः कृत्वा सर्वालङ्कारभूषिताः। हैमराजतताम्रान्वा मृन्मयान् कलशान् शुभान् ॥ गृहीत्वा गन्धपुष्पाद्यैरर्चितान् सुदृढान्नवान्। जलाशयं समासाद्य तीरे गोमयलेपिते ॥ चतुरस्रे कृते क्षेत्रे तत्र स्वस्तिकमालिखेत्। गर्वैर्वा तण्डुलैर्वापि पद्ममष्टदलं लिखेत् ॥ चत्वारः कलशा स्थाप्या। कोणेषु च समाहितैः। तत्र पूजयेद्देवं वरुणं यादसां पतिम् ॥ जलमातृस्तु संपूज्य जवमातृस्तथैव च: कलशाग्नेयकोणे तु स्वस्तिकादिकमण्डले ॥ मत्सी कूर्मी च वाराही दर्दुरी मकरी तथा। जलूकी तन्तुकी चैव सप्तैता जलमातरः ॥ कुमारी धनदा नन्दा विमला मङ्गला बला। पद्माचेति सुविख्याताः सप्तैता जीवमातृकाः ॥ ऊर्मी लक्ष्मीमहामाया पानदेवी तथैव च। वारुणी नर्मदा गोघा सप्तैताः स्थलमातृकाः ॥ एता अपि सम्पूज्याथ दिक्पालान्दिक्षु चार्चयेत्। दीपान्समन्तात्प्रज्वाल्य देवतानां विसर्जनम् ॥ घृतेन वाथ दध्ना वा जलं दद्यात्ततो बलिम्। अदस्यः संभृतेत्यादि मन्त्रैर्द्वादशश्च स्रुवेण तु ॥ गृहीत्वा तु ततः कुंभान्गन्धपल्लवसंयुतान्। कृत्वा सुवासिनीश्चाग्रे गीतवादित्रनिःस्वनैः ॥ यागभूमिं समागच्छन्मध्यमार्गे बलिं हरेत्। उपलिप्य तथा भूमिं श्रुतेनानेन वाऽथवा ॥ यज्ञमण्डपद्वारे कुर्यात्तारीं निरञ्जनम्। यज्ञमण्डपमध्येऽत्र स्थापयेद्वेदिकोपरि ॥ कुम्भानिति शेषः ॥ द्वारेण पश्चिमेनैव प्रवेशोनेतरेण तु।

* गणेशाम्बिकापूजनं प्रारम्भः *

पत्न्या सह यजमानः शुभमुहूर्ते कृतनित्यक्रियः रङ्गवल्लिकादिविभूषिते शुभासने प्राङ्मुख-उत्तरमुखो वा उपविष्य स्वपत्नीं स्वदक्षिणतः—चोपवेश्य रक्षादीपं प्रज्वाल्य पुरोहितादि-द्वारा ग्रन्थिबन्धनं तिलकं च-कारायित्वा आचमनं कुर्यात् :—

ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः ।

पवित्र करण मन्त्र—

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्व्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः॥
तस्यं ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

उपर्युक्त मंत्र एवं श्लोक का उच्चारण कर पूजन-सामग्री एवं अपने शरीर पर जल छिड़के, अष्टदल पर गणेश-गौरी को स्थापित कर शांतिपाठ करे—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust: Funding IKS-MoE-Grant-2

शांति पाठ :—

ॐ आनोभद्द्राः क्रतवोयन्तुव्विश्वतो दब्धासोऽ अपरीतास ऽउद्भिदः ॥ देवानोयथा-
सदमिद्वृधे ऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥१॥

देवानांभद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाᳬरातिरभिनो निवर्त्ततताम् ॥ देवानाᳬसख्यमुपसेदि-
माव्वयन्देवान्ऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥

तान्पूर्व्वयानिविदाहूमेमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षम्स्त्रिधम् ॥ अर्य्यमणं व्वरुणः सोम-
मश्विना सरस्वतीनः सुभगामयस्करत् ॥३॥

तन्नो व्वातोमयोभुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिताद्यौः ॥ तद्ग्रावाणः सोमसुतो
मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्यायुवम् ॥४॥

तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानो यथाव्वेदसामसद्-
वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥

स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनःपूषा व्विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः ॥ अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा ऽ अवसागमन्निह ॥७॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳬ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥८॥

शतमिन्नु शरदो ऽ अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम ॥ पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मद्ध्या रीरिषता युर्गन्तोः ॥९॥

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता सपिता सपुत्रः ॥ विश्वेदेवा ऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ॥१०॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ᳬ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ᳬ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥११॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यतौयतः समीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु । शन्नः कुरुप्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ॥१२॥

गणानांत्वागणपतिꣳहवामहे प्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳहवामहे निधिनान्त्वानिधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥१३॥

अम्बेऽ अम्बिकेम्बालिके नमानयतिकश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥१४॥

ततः——ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः ।
ॐ वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः । ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः ।
ॐमातृपितृ चरणकमलेभ्यो नमः । ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः ।
ॐ कुलदेवताभ्यो नमः । ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः ।
ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः । ॐ स्थान देवताभ्यो नमः ।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । इति प्रणम्य ततः—

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्तितेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनं हरिः ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥
अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते । पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुनेश्वराः । देवादिशन्तु नः सिद्धिंब्रह्मेशान जनार्दनाः ॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् । वन्दे काशीं गुह्यां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥

इस प्रकार नमस्कार करके निम्न [1]संकल्प करें :—

ॐ विष्णुः ३ ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत श्रीमद्भगवतो महा-पुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य—श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे द्वितीययामे तृतीयमुहूर्ते श्रीश्वेत-वाराहनाम्नि प्रथमकल्पे स्वायंभुवस्वारोचिसोत्तमतामसरैवतचाक्षुषेति षण्मनूनामतिक्रम्यमाणे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे निखलजन पावने आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकानाम्नि संत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ महामंगल्य प्रदमासोत्तमो मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे

१. संकल्पंच नरः कुर्यात् स्नान-दान-व्रतादिके । अन्यथा/पुण्यकर्माणि निष्फलानि भवन्ति वै ॥ (बृहद्यमस्मृतौ)
संकल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः । व्रतं नियम धर्मौ च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः ॥ (मार्कण्डेय-पुराणे)
संकल्पेन विना विप्र यत्किञ्चित कुरुते नरः । फलं चास्याल्पकं तस्य धर्मस्यार्धक्षयो भवेत् ॥ (भविष्य पुराणे)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेण यथा-यथा राशि स्थानस्थितेषु एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक शर्मा (क्षत्रियश्चेत्वर्मा, वैश्यश्चेत्गुप्तः) सपत्नीकोऽहं ममात्मनः कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक चतुर्विध पापक्षय पूर्वकं आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक-त्रिविध-तापोपशान्ति-सकल-दुःख-अशेष निवृति परम वैष्णव पदेष्टवस्तुप्राप्ति व्याध्याधि जरामृतारोगभयशोकाद्युपसर्ग मुक्ति-धनधान्यसुत सात्विक-धार्मिक-सुतप्राप्ति दीर्घायुष्ट्व बल नैरूज्य कीर्ति-लाभ-शत्रुपराजय-सद्विद्योपार्जनक्षेमस्थैर्यैश्वर्य-स्थिरलक्ष्मी-हस्त्यश्व गवाजादि संपत्-सनातनधर्माभिरुचिविद्योन्नत्यादि वृद्धये राजसभासु समयोचितवाक् स्फुर्त्यादि सकलाभीष्ट सिद्धये जन्मवर्षमासकुण्डलीस्थ विषम-स्थानस्थित सूर्याद्यन्यतम ग्रहसूचित सूचयिष्यमाण सकलपीडा नानाविधोपद्रव निवृत्तये च पुरुषसूक्तेन प्रत्यृचं षष्टिसहस्राधिकैक लक्षसङ्ख्य होमात्मकं ग्रहमखं विष्णुयागं च करिष्ये। "विंशत्यधिक लक्षत्रयसंख्याकहोमात्कंसग्रहमखं महाविष्णुयागं करिष्ये। अशीत्युत्तरचतुर्लक्ष संख्याकहोमात्मकं सग्रहमखमति विष्णुयागं करिष्ये" इति वा यथायथं संकल्पः। एव मन्येष्वपिपक्षेषु

"सहस्रसंख्याहोमात्मकम्, अयुतहोमात्मकम्, 'लक्षहोमात्मकम्, प्रयुतहोमात्मकम्, कोटिहोमात्मकम्, सग्रहमखंविष्णुयागं करिष्ये" इति सङ्कल्पवाक्ययमूहनीयम्, पुरुषसूक्तेनसहविष्णुसहस्रनाम समुच्चय-पक्षे-विष्णुयागफल समृद्धये दशावृतेन वा शतावृतेन वा विष्णुसहस्रनामस्तोत्रेण च हवनं करिष्ये। इति संकल्पः। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्धये गणेशाम्बिकयोः पूजनं तथा पुण्याहवाचनादि, आचार्य वरणान्तं कर्म करिष्ये ॥

इति सङ्कल्प्य हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा गणेशाम्बिके आवाहयेत्—

ॐ हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज। सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभकयोः पितः ॥

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्। भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः ॥

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः। इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागञ्च रक्ष मे ॥

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳ हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम ॥ आहमंजानिगर्भधमात्वमजासिगर्भधम् ॥ सिद्धिबुद्धि सहिताय महागणाधिपतये नमः। महागणाधिपतिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम् ॥ लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ अम्बे ऽ अम्बिके ऽम्बालिके नमानयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः शुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥
गौर्यै नमः गौरीं मावाहयामि स्थापयामि ।
अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥
ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो३म् प्रतिष्ठ ॥ गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भववेताम् ।
विचित्ररत्न खचितं दिव्यास्तरणसंयुतम् ॥ स्वर्णसिंहासनं चारु गृहीष्व सुरपूजित ॥
ॐ पुरुष ऽएवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥
आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि ।
सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम् । विघ्नराज गृहाणेदं भगवन्भक्तवत्सल ॥
ॐ एतावानस्य महिमातोज्यायाँश्च पूरुषः ॥ पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥
पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर । अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गंधमाल्याक्षतैर्युतम् ।

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः । ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥ हस्तोरर्घ्यंसमर्पयामि ॥

विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित । गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो ॥

ॐ ततो विराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ अर्घाङ्गमाचमनीयं समर्पयामि ।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्याग्राम्याश्च ये ॥ स्नानीयं जलं समर्पयामि । स्नानान्ते पुनराचमनीयं समर्पयामि ।

(अथवा गणेशाम्बिकाभ्यां नमः—एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि)

ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् पयः स्नानं समर्पयामि । स्नानांते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । एवं सर्वत्र ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्यवाजिनः ॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयुꣳषितारिषत् ॥ दधिस्नानं समर्पयामि ।

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम ॥ अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतम्वृषभवक्षिहव्यम् ॥ घृतस्नानं समर्पयामि ।

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः ॥ माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥ ॐ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः ॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता ॥ ॐ मधुमान्नोव्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ऽ अस्तु सूर्य्यः ॥ माध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः ॥ मधुस्नानं समर्पयामि ।

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम् ॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तम्वोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टङ्गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥ शर्करास्नानं समर्पयामि ।

पंचामृतंमयाऽऽनीतं पयोदधि घृतं मधु । शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित् ॥ पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कावेरी नर्मदा वेणी तुङ्गभद्रा सरस्वती । गङ्गा च यमुना तोयं मया स्नानार्थमर्पितम् ॥

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

युवा सुवासाः परिवीतऽ आगात्सऽ उ श्रेयान् भवति जायमानः ।
तन्धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥

ॐ सुजातोज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः ॥ व्वासोऽग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसो ॥ अधोवस्त्रं समर्पयामी । वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि ।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरः ॥

यज्ञोपवीतम् परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥ यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम् । देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
उपवस्त्रं समर्पयामि ।

श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअंखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधेसोमोराजा विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्यत ॥ गन्धं समर्पयामि ।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत ॥ अस्तोषतस्वभानवो व्विप्रानविष्ठया मतीयोजान्विन्द्रतेहरी ॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ॥ अश्वाऽइवसजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः ॥
पुष्पमालां समर्पयामि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितानमृतान्ममङ्गलप्रदान् । आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥
ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्परि ॥ एवानोदूर्व्वे प्रतनुसहस्रेणशतेनच ॥
गणेशाय नमः । दूर्वाङ्कुरान्समर्पयामि ।

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम् । अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम् ॥
ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुञ्ज्यायाहेतिम्परिबाधमानः ॥ हस्तघ्नोविश्वाव्वयुनानि-
व्विद्वान्पुमान्पुमा ᳪ सम्परिपातुव्विश्वतः ॥ नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम् । शुभदं कामदश्चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।
ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वने शूघनासोव्वातप्रमियः पतयन्तियह्वाः ॥ घृतस्यधाराऽ अरुषोन-
व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥ सिन्दूरं समर्पयामि । नैवेद्यं पुरतो निधाय—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धः उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।
ॐ धूरसिधूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्वतं योऽस्मान्धूर्व्वतितन्धूर्व्वयंवयन्धूर्व्वामः ॥ देवानामसिव्वह्नि-
तमᳪ सस्नितमम्पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥ धूपं समर्पयामि ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवायपरमात्मने । त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा ॥ अग्निर्व्वर्च्चो-ज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहा सूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ दीपं समर्पयामि ॥ हस्तौ प्रक्षाल्य—

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु । ईप्सितं मे परं देहि परत्र च पराङ्गतिम् ॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च । आहारो भक्ष्यभोज्यञ्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्य शुष्मिणः ॥ प्रप्रदातारन्तारिषऽ उर्ज्जन्नोधेहिद्विपदे चतुष्पदे ॥ नैवेद्यं निवेदयामि ॥ नैवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि । मध्ये पानीयं समर्पयामि । उत्तरापोशनं समर्पयामि ।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ ऋतुफलानि समर्पयामि ।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादि समन्वितम् । करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ अंशुना ते अंशुः पृच्यतां परुषा परुः ॥ गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः ॥ करोद्वर्तनार्थे गन्धानुलेपनं समर्पयामि ।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् । एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलपत्रं पूगीफलादिकं च समर्पयामि ॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ॥ स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ।

कदली गर्भसंभूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् । आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ आरान्त्रिपार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायिधामभिः ॥ दिवः सदाꣳसिबृहतीव्वितिष्ठस ऽ आत्त्वेषं-
वर्त्ततेतमः ॥

ॐ इदꣳहविः प्रजननम्मेऽ अस्तुदशवीरꣳ सर्व्वगणꣳस्वस्तये ॥ आत्मसनिप्रजा पशु-
सनिलोकसन्न्यभयसनि ॥ अग्निःप्रजाम्बहुलाम्मेकरोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त ॥ कर्पूरनीराजनं
समर्पयामि ॥

नानासुगन्धि पुष्पाणि ऋतुकालोद्भवानि च । पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्म्माणिप्रथमान्न्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्र-
पूर्व्वेसाध्याः सन्तिदेवाः ॥

ॐराजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ।
स मे कामान्कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणे ददातु ॥

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः । तैत्तिरीयाण्यक ॥ १ । ४ ॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यंभोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधि पत्यमयं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमरसार्व्वायुष आन्तादापरार्धात्पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया ऽ एकराडिति तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे। आविक्षि तस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ८।४ १५ ऐतरेय ब्राह्मण

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुतव्विश्वतोमुखोव्विश्वतोबाहुरुतव्विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः ॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलि समर्पयामि ॥

पदे पदेभ्यः परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदेपदे ॥

ॐ येतीर्थानिप्रचरन्तिसृकाहस्तानिषङ्गिणः ॥ तेषांᳪसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥

एक सुन्दर पात्र में जल, गंध, पुष्प, दूर्वा, फलादि, रख दोनों हाथ में लेकर निम्न श्लोक पढ़े :—

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो । वरद त्वं वरं देहि देहि वाञ्छितार्थ फलप्रद ॥

अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम । विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवदाय नमो नमस्ते ॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः । नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रियाय । अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति । भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति ॥
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति । तेभ्यो गणेश वरदोभव नित्यमेव ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम् । तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम । अनया पूजया गणेशाम्बिकेप्रीयेतां न मम ।

॥ इति गणेशाम्बिका पूजनम् ॥

* स्वस्तिपुण्याहवाचन प्रयोगः *

संकल्प के पश्चात् निम्न क्रम से कलश स्थापित करें—

ॐ महीद्यौः पृथिवीचंनऽइमंयज्ञं मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नो भरीमभिः ॥ इति कलशाधारस्थलं संस्पृश्य तत्र रङ्गवल्लीपद्मं विधाय भूमिं स्पृशेत् ।

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सहराज्ञा ॥ यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि ॥ इतिपृष्ठदेशे प्रस्थपरिमितं सप्तधान्य पुञ्जं निकिरेत् ।

ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः ॥ पुनरूर्ज्जानिवर्त्तस्वसानः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा-पयस्वती पुनर्म्माविशताद्रयिः ॥ इति तत्र सुमार्जितं कलशं संस्थापयेत् ।

ॐ व्वरुणस्य त्तम्भनमसिव्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद ॥ इति तस्मिन् जलं पूरयेत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँ सत्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधे सोमो राजाव्विद्वान्न्यक्ष्माद-मुच्च्यत ॥ इति कलशे गन्धं प्रक्षिपेत् ।

ॐ याऽ ओषधीः पूर्व्वाजाताद्देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ॥ मनैनुबभ्रूणामहर्ठ० शतन्धामानिसप्तचं ॥ इति सर्वौषधीः निक्षिपेत् ।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्व्वे प्रतनुसहस्रेणशतेनच ॥ इति तत्र दूर्वाः प्रक्षिपेत् ।

ॐ अश्वत्थेवोनिषदनम्पर्णेवोव्वसतिष्कृता । गोभाजऽ इत्किलासथ यत्सनवथपूरुषम् ॥ इति पञ्चपल्लवान् प्रक्षिपेत् ॥

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे ॥ इति पञ्चरत्नानि प्रक्षिपेत् ।

ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत् । सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम ॥ इति हिरण्य प्रक्षिपेत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0: In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ सुजातोज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः ॥ वासोऽ अग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो ।। इति वस्त्रयुग्मेन कलशं संवेष्टयेत् ।

ॐ पूर्णादर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्जꣳ शतक्रतो ॥ इति नारिकेल सहितं धान्यपूर्णपात्रेकलशोपरि संस्थाप्य ।

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणे ह बोध्युरुशꣳस मान ऽआयुः प्रमोषीः ॥ इति वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ अप्पतये वरुणाय नमः इत्यावाह्य तत्रैव देवता आवाहयेत्—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्येमातृगणाः स्मृताः ।
कुक्षौ तु सागरा सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी ।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥

Kirti Kant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदो ।
तापो गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥
नदाश्च विविधाजाता नद्यः सर्वास्तथा पराः ।
पृथिव्यां यनि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारिकाः ॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
अङ्गश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारिकाः ॥

इस प्रकार आवाहन कर [1]मनोजूतिः इस मंत्र से प्राणस्थापन कर सोलह उपचारों से वरुण का अर्चन करे ।

---

१. मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु विश्वेदेवास इह मादयन्तामोꣳ३॥ प्रतिष्ठ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* कलश प्रार्थना *

निम्न प्रार्थना करे।

देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापति। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।
पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥

अवनिकृत जानु मण्डलः कमलमुकुल सदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना सुवर्ण:

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्णकलशं धारयित्वा स्वमूर्ध्ना संयोज्य आशिषः प्रार्थयेत्—दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च । तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु 'अस्तु' दीर्घमायु—इति विप्राः प्रति ब्रूयुः ।

तत्रः—ॐ त्रीणिपदाविचक्रमेविष्णुर्गोपा ऽ अदाभ्यः ।। अतो धर्माणि धारयन ।। तेनायुः—प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु—इति यजमानो ब्रूयात् । अस्तु । अस्तुः दीर्घमायुः—इतिः विप्राः प्रतिब्रूयुः । इतिवारत्रयं पठेत् ।

ॐ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणानां करे न्यस्ता शिवा आपो भवन्तु ते ।।

शिवा आपः सन्तुः—इति विप्रहस्तेषु जलं दद्यात् । सन्तु शिवा आपः—इति ब्राह्मणाः प्रतिवचनं दद्युः ।

ॐ लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे । सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथास्तु नः ।।

सौमनस्ययस्तु—इति पुष्पं दद्यात अस्तुसौमनस्यं' इति विप्रा ।

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।

यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अक्षञ्चारिष्टञ्चास्तु—इत्यक्षतान् दद्यात्। अस्त्वक्षतमरिष्टञ्च इति द्विजाः। गन्धा पातु—इति गन्ध दद्यात्। सुमङ्गल्यञ्चास्तु—इति विप्राः प्रतिब्रूयुः। पुनरक्षताः पान्तु—इत्यक्षतान् दद्यात्। विप्रोक्तिः—आयुष्यमस्तु।

पुनः—पुष्पाणि पान्तु—इति पुष्पाणि दद्यात्। सौश्रियमस्तु विप्राः। सफलताम्बूलानि पान्तु इति ताम्बूलानि दद्यात्॥ ऐश्वर्यमस्तु द्विजा। दक्षिणाः पान्तु—इति दक्षिणा—दद्यात्। बहुदेयं [बहुलेयं] चास्तु विप्राः। पुनरत्रापः पान्तु—इति जलं दद्यात्। द्विजोक्तिः—स्वर्चितमस्तु। दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टि :—

श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु इति विप्रान् प्रार्थयेत्। 'अस्तु' इति द्विजा—प्रतिब्रूयुः। तत—यद्कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमाङ्काकरमादिङ्कृत्वा ऋग्यजुः-सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिमतं संविज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यंपुण्याहं वाचयिष्ये—इति वदेते। ॐ वाच्यताम् इति विप्राः—प्रति ब्रूयुः॥

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत । नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥ १ ॥

सा॒ तात्वा सन्नानां सुव्रतामग्निर्गृहपतीनां सोमो वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतीर्वाच ऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ॥ २ ॥

न तद्रक्षांसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजं ह्येतत् ॥ यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ ३ ॥

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्यादंदे ॥ उग्रं शर्म महि श्रवः ॥ ४ ॥

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँ ॥ २ ॥ ऽइयक्षते ॥ ५ ॥

उपर्युक्त मंत्रों का पाठ करें ।

ततः—व्रतजपनियमतपः स्वाध्यायक्रतुशमदयादानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्—इति विप्रान प्रार्थयेत् । समाहितमनसः स्मः—इति द्विजाः । यजमानः—प्रसादन्तु भवन्तः—इति वदेत् । प्रसन्नाः स्मः—इति विप्राः प्रति ब्रूयुः । ॐ शान्तिरस्तु । तुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । शिवमस्तु ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शिवङ्कर्मास्तु । कर्मसमृद्धिरस्तु । धर्मसमृद्धिरस्तु । वेदसमृद्धिरस्तु । शास्त्रसमृद्धिरस्तु । धनधान्य-समृद्धिरस्तु । पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु । इष्टसम्पदस्तु । बहिः—अरिष्टनिरसनमस्तु । यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तत् दूरे प्रतिहतमस्तु । अन्तः—अन्तः यच्छ्रेयस्तदस्तु । उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु । उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्, तिथिकरणमुहूर्त-नक्षत्रग्रहनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु । तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् । तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे-सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम् । दुर्गापाञ्चालौ प्रीयेताम् । अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणा—प्रीयन्ताम् । ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयन्ताम् । माहेश्वरीपुरोगाः—उमामातरः प्रीयन्ताम् । वासिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् । अरुधन्तीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् । ब्रह्म च ब्राह्मणाः—प्रीयन्ताम् । श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् । श्रद्धामेधे प्रीयेताम् । भगवती कात्यायनी प्रीयेताम् । भगवती माहेश्वरी प्रीयेताम् । भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् । सर्वाः कुलदेवताः—प्रीयन्ताम् । सर्वाः ग्रामदेवताः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रीयन्ताम् । सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् । बहिः—हताश्च ब्रह्मद्विषः । हताश्च परिपन्थिनः । हताश्च विघ्नकर्तारः । शत्रवः पराभवं यान्तु । शाम्यन्तु घोराणि शाम्यन्तु पापानि । शाम्यन्त्वीतयः । शाम्यन्तुपद्रवाः [अन्तः] शुभानि वर्द्धन्ताम् । शिवा आपः सन्तु । शिवा ऋतवः सन्तु । शिवा अग्नयः सन्तु । शिवा औषधयः सन्तु । शिवा अतिथयः सन्तु । अहोरात्रे शिवे स्याताम् ।

ॐ निकामेनिकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योन ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पति शनैश्चरराहुकेतुसोम सहिता—आदित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम् । भगवान्नारायणः—प्रीयताम् । भगवान पर्जन्यः प्रीयताम् । भगवान् स्वामीमहासेनः सपत्नीकः ससुतः सपार्षदः सर्वस्थानगत —प्रीयताम । पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु । याज्यया-यत्पुण्य तदस्तु । वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु । प्रातः सूर्योदयेयत्पुण्यं तदस्तु । ततः—'एतत्कल्याण युक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये' इति प्रार्थयेत् । वाच्यताम इति विप्राः ब्रूयुः ।

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम् ।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

भो ब्राह्मणाः । मम सकुटुम्बस्य सपरिवास्य गृहे विष्णुयाग कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिर्ब्रूयात् ॥ पुण्याहं इति तथैव—त्रिर्विप्राः ब्रूयुः ।

निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः ॥ पुनन्तुव्विश्वाभूतानिजातवेदः पुनीहिमा ॥

पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुरा कृतम् ।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः । मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे विष्णुयाग कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु- इति त्रिब्रुयात् । कल्याणम् इति—तथैव त्रिर्विप्राः ब्रूयुः ।

ॐ यथे मां व्वाचङ्कल्याणिमावदानि जनेभ्यः ॥ ब्रह्मराजन्याभ्याः शूद्रायचार्य्याय चस्वायचारणाय च ॥ प्रियोदेवानान्दक्षिणायै दातुरिहभूंया सम्यम्मेकामः समृद्धयतामुपमादो- नमतु ॥ इति पठेयुः ।

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभि कृता ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धि ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे विष्णुयाग कर्मणः ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु– इति त्रिब्रूयात् । कर्म ऋध्यताम्–इति त्रिर्विप्राः ब्रूयुः ।

ॐ स॒त्रस्य॒ऽऋद्धि॑र॒स्यग॑न्म॒ ज्योति॑र॒मृता॑ऽ अभूम ॥ दिवं॑पृथि॒व्याऽअध्या॑रुहा॒मावि॑दाम- दे॒वान्त्स्व॒र्ज्योति॑ः ॥

इस मन्त्र को पढ़े ।

स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्य कल्याणवृद्धिदा । विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ! मम सुकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे–विष्णुयाग कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु– आयुष्मते स्वस्ति–इति-त्रिर्विप्रास्तथैव ब्रूयुः । ॐ स्व॒स्तिन॒ऽइन्द्रो॑वृ॒द्धश्र॑वाः स्व॒स्तिन॑ः पू॒षा वि॒श्ववे॑दाः ॥ स्व॒स्तिन॒स्तार्क्ष्यो॒ऽ अरि॑ष्टनेमिः स्व॒स्तिनो॒ बृह॒स्पति॑र्दधातु ॥

इस मन्त्र को पढ़े ।

समुद्रमथनाज्जातांजगदानन्दकारिका । 'हरिप्रिया च माङ्गल्यां तां श्रियं च ब्रूवन्तु नः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य-सपरिवारस्य गृहे विष्णुयाग कर्मणः श्री रस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्त–इति त्रिब्रूयात् । अस्तु श्रीः–इति त्रिर्विप्रास्तथैव ब्रूयुः ।

ॐ श्रीश्चंते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मं-ऽइषाण सर्व्वलोकम्मंऽ इषाण ॥

इस मन्त्र को पढ़े ।

मृकण्डसुसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा । आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥ शतञ्जीवन्तु भवन्तः—इति ब्राह्मणाः ब्रूयुः ।

ॐ शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानो-मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥ इति पठेयुः ॥

शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे ।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि ॥ अस्तु श्रीः—इति विप्राः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय ॥ पशूनाᳬं रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥ इति पठेयुः ।

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् । भगवाञ्छाश्वतो नित्यं स नो रक्षतु सर्वतः ॥

भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम् । इति ब्राह्मणाः ।

तत्पश्चात् एक अन्य पात्र में एक आचमनीय जल गेरे ।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयᳬं स्याम पतयो रयीणाᳬं स्वाहा ॥ इति पठेयुः ॥

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे । श्रिये रत्नाशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥

देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे । एकलिङ्गे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम ॥

आयुष्मते स्वस्ति—इति विप्राः ब्रूयुः ।

ॐ प्रतिपन्थामपद्महि स्वस्ति गामनेहसम् ॥ येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु—इति च ब्रूयुः ॥

कर्ता—अस्मिन्पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु । 'अस्तु परिपूर्णः' इति द्विजाः ॥

स्वस्तिवाचनकर्मणः समृद्धिरस्तु' इति यजमानः । 'अस्तु' इति द्विजाः प्रति ब्रूयुः ।

दक्षिणादानम्—स्वस्तिवाचनकर्मणः समृध्यर्थं दक्षिणां स्वस्तिवाचकेभ्यो विप्रेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये—इति दद्यात् ।

इति स्वस्ति पुण्याहवाचन ।

* अथाभिषेक प्रारम्भः *

तदनन्तर यजमान पत्नी बायें भाग में बैठ जाय । अविधुर (जिनके विवाहित पत्नी जीवित हों) ब्राह्मण हाथ में कुशा आदि लेकर कलश के जल को किसी अन्य पात्र में गिराकर दूर्वा—पल्लव सहित उस जल से उत्तरमुख बैठे हुए या खड़े हुए यजमान और परिवार के लोगों का निम्न वैदिक मंत्रों का उच्चारण कर अभिषेक करे :—

अभिषेक मन्त्राः—ॐ देवस्यंत्वासवितुःप्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्यन्त्रियेदधामिबृहस्पतेष्ट्वासाम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यैवाचो यन्तुर्यन्त्रे-
णाग्नेःसाम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥ २ ॥

देवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ अश्विनोर्भैषज्येनतेजसेब्रह्मवर्च-
सायाभिषिञ्चामिसरस्वत्यै भैषज्येनवीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेणबलायश्रियैयशसेऽभि-
षिञ्चामि ॥ ३ ॥

आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ ४ ॥

योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः ॥ उशतीरिवमातरः ॥ ५ ॥

तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ ॥ आपोजनयथाचनः ॥ ६ ॥

पुनन्तुमापितरःसोम्यासःपुनन्तुमापितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेणशतायुषा ॥
पुनन्तुमापितामहाः पुनन्तुप्रपितामहाः ॥ पवित्रेणशतायुषाविश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ ७ ॥

अग्नऽआयूंषिपवसऽआसुवोर्ज्जमिषञ्चनः ॥ आरेबाधस्वदुच्छुनाम् ॥ ८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः ॥ पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदः पुनीहिमा ॥९॥
पवित्रेण पुनीहिमाशुक्रेणदेवदीद्यत् ॥ अग्नेक्रत्वाक्रतूँ १॥रनु ॥ १० ॥
यत्तेपवित्रमर्चिष्यग्नेवितंतमन्तरा ॥ ब्रह्मतेनपुनातुमा ॥ ११ ॥
पवमानःसोऽअद्यनः पवित्रेणविचर्षणिः ॥ यःपोतासपुनातुमा ॥ १२ ॥
उभाभ्यान्देवसवितःपवित्रेणसवेनच ॥ माम्पुनीहिविश्वतः ॥ १३ ॥
वैश्वदेवीपुनतीदेव्यागाद्यस्यामिमाबह्व्यस्तन्वोवीतपृष्ठाः ॥ तयामदन्तःसधमादेषुवयं
स्यामपतयोरयीणाम् ॥ १४ ॥
कोऽसिकतमोऽसिकस्यासिकोनामासि ॥ सुश्लोकसुमङ्गलसत्यराजन् ॥ १५ ॥
शिरोमेश्रीर्यशोमुखन्त्विषिःकेशाश्चश्मश्रूणि ॥ राजामेप्राणोऽअमृतंसम्राट्चक्षुर्विराट्-
श्रोत्रम् ॥ १६ ॥
जिह्वामेभद्रंवाङ्महोमनोमन्युःस्वराड्भामः ॥ मोदाःप्रमोदाऽअङ्गुलीरङ्गानिमित्रम्मे-
सहः ॥ १७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

बाहूमेबलमिन्द्रियꣳहस्तौमेकर्म्मवीर्य्यम् ॥ आत्माक्षत्रमुरोमम ॥ १८ ॥

पृष्ठीर्म्मेराष्ट्रमुदरमꣳसौग्ग्रीवाश्चश्रोणी ॥ ऊरूऽअरत्नीजानुनीव्विशोमेङ्गानिसर्व्वतः ॥ १९ ॥

नाभिर्म्मेचित्तंव्विज्ञानम्पायुर्म्मेऽपचितिर्भसत् ॥ आनन्दनन्दावाण्डौमेभगःसौभाग्ग्यम्पसः ॥

जङ्घाभ्याम्पद्भ्यान्धर्मोऽस्मिव्विशिराजाप्प्रतिष्ठितः ॥ २० ॥

प्रतिक्षत्रेप्रतितिष्ठामिराष्ट्रेप्रत्यश्वेषुप्रतितिष्ठामिपुष्टेप्रतिद्यावापृथिव्व्योःप्रतितिष्ठामियज्ञे ॥ २१ ॥

त्रयादेवाऽएकादशत्रयस्त्रिꣳशाःसुराधसः ॥ बृहस्पतिपुरोहितादेवस्यसवितुःसवे ॥ देवादेवैर-
वन्तुमा ॥ २२ ॥

प्रथमाद्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाःसत्येन सत्यंय्यज्ञेनयज्ञोयजुर्भिर्य्यजूꣳषिसामभिः सामा-
न्यृग्भिर्ऋचः पुरोनुवाक्याभिःपुरोनुवाक्यायाज्याभिर्याज्याव्वषट्काराऽआहुतिभिराहुतयोमेका-
मान्त्समर्द्धयन्तुभूःस्वाहा ॥ २३ ॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

प्रद्युम्नोऽथानिरुद्धश्च भवन्तु विभवाय ते ।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षतस्था शिवः ।
ब्रह्मणा सहिता ह्येते दिक्पालाः पान्तु वः सदा ॥ ३ ॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिर्माया निद्रा च भावना ॥ ४ ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु पुष्टिः क्षान्तिः क्षमा तथा ।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधो जीवः सितोऽर्कजः ॥ ५ ॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च पूजिताः ।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ६ ॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो ध्रुवा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवायश्च ये ॥ ८ ॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥

इत्यभिषिच्य—'अमृताभिषेकोऽस्तु' इति पठेयुः ॥

निम्न संकल्प करे—

कृतस्याभिषेककर्मणः समृद्ध्यर्थं दक्षिणां दातुमहमुसृज्ये इति दद्यात् । ततो द्विराचामेत् । पत्नी च सकृदाचम्य दक्षिणत उपविशेत् । इति अथाभिषेक ।

* अथ षोडशमातृकापूजनम् *

आदि में चौबीस अंगुल विस्तार में और अठाइस अंगुल लंबाई में—छ अंगुल ऊँचे लाल वस्त्र बिछे काष्ठ के पीठ पर उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम की तरफ पांच-पांच रेखा करने से सोलह कोष्ठ बनाकर उसमें पहले कोष्ठ का दो भाग करे । इस प्रकार सत्रह कोष्ठ में सुवर्ण, रजत आदि प्रतिमाओं में, या, पट्टादिलिखित मूर्तियों में, पूगफलों में या अक्षतपुजों में गणेश पूर्वक सोलह माताओं का निम्न क्रम से पूजन करे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

एह्येहि विघ्नेश्वर विघ्नशान्त्यै पाशाङ्कुशाब्जान् वरदं दधान ।
शूर्पाक्षसूत्रावरमन्दमूर्ते रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

द्वितीयकोष्ठादौ क्रमेण—एह्येहि नीलोत्पलतुल्यनेत्रे श्वेताम्बरे प्रोज्ज्वलशूलहस्ते ।
नागेन्द्रकन्ये भुवनेश्वरि त्वं पूजां ग्रहीतुं मम देवि गौरि ॥

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्रयन्त्स्वः ॥ गौर्यै० गौरीम्० ॥२[1]॥

एह्येहि पद्मे शशितुल्यनेत्रे पङ्केरुहाभे शुभचक्रहस्ते ।
सुरासुरेन्द्रैरभिवन्दिते त्वं पूजां ग्रहीतुं मम यज्ञभूमौ ॥

---

१. 'आवाहयामि स्थापयामि' इस वाक्य को प्रति देवी में जोड़ दे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ हिरण्यरूपाऽउषसो विरोकऽउभाविन्द्राऽ उदिथः सूर्य्यश्च ॥ आरोहतं वरुणमित्र-गर्त्तन्ततश्चक्षाथामदितिन्दितिञ्च मित्रोसि वरुणोसि ॥ पद्मायै० पद्माम्० ॥ ३ ॥

एह्येहि कार्तस्वरतुल्यवर्णे, गजाधिरूढे जलजाभिनेत्रे ।
शक्रप्रिये प्रोज्ज्वलवज्रहस्ते पूजां ग्रहीतुं शचि देवि शीघ्रम् ॥

ॐ निवेशनः सङ्गमनो वसूनां विश्वारूपाभिचष्टे शचीभिः ॥ देवऽइव सविता सत्यधर्म्मेन्द्रो न-तस्थौ समरे पथीनाम् ॥ शच्यै० शचीम् ॥ ४ ॥

एह्येहि मेधे शुभभूरिवस्त्रे पीताम्बरे पुस्तकपात्रहस्ते ।
बुद्धिप्रदे हंस समाधिरूढे पूजां ग्रहीतुं मखमस्मदीयम् ॥

ॐ मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ॥ मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥ मेधायै० मेधाम्० ॥ ५ ॥

एह्येहि सावित्री जगद्विधात्रि ब्रह्मप्रिये स्रुक्स्रुवपात्रहस्ते ।
प्रतप्तजाम्बूनदतुल्यवर्णे पूजां ग्रहीतुं निजयागभूमौ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ सविता त्वा सवानां ँ सुवतामग्निर्गृहपतीनाᳫं सोमो वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्म्मपतीनाम् ॥ सावित्र्यै० सावित्रीम्० ॥ ६ ॥

एह्येहि शस्त्रास्त्रधरे कुमारि सुरासुराणां विजयप्रदात्रि ।
त्रैलोक्यवन्द्ये शुभरत्नभूषे गृहाण पूजां विजये नमस्ते ॥

ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत ॥ अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥ विजयायै० विजयाम्० ॥ ७ ॥

एह्येहि पद्मे रुचलोलनेत्रे जयप्रदे प्रोज्ज्वलशक्ति हस्ते ।
ब्रह्मादिदेवैरभिवन्द्यमाने जये सुसिद्धिं कुरु सर्वदा मे ॥

ॐ बह्वीनाम्पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनागत्य ॥ इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥ जयायै० जयाम्० ॥ ८ ॥

एह्येहि चापासिधरे कुमारि मयूरवाहे कमलायताक्षि ।
इन्द्रादिदेवैरपिपूज्यमाने प्रयच्छसि त्वं मम देवसेने ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुरऽ एतु सोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीना-
ञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम् ॥ देवसेनायै० देवसेनाम्० ॥ ९ ॥

एह्येहि वैश्वानरवल्लभे त्वं कव्यं पितृभ्यः सततं वहन्ती।
स्वर्गाधिवासे शुभशक्तिहस्ते स्वधे तु नः पाहि मखं नमस्ते ॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधा-
यिभ्यः स्वधानमः ॥ अक्षन्पितरो मीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥
स्वधायै० स्वधाम्० ॥ १० ॥

एह्येहि वैश्वानरतुल्यदेहे तडित्प्रभे शक्तिधरे कुमारि।
हविर्गृहीत्वा सुरतृप्तिहेतोः स्वाहे च शीघ्रं मखमस्मदीयम् ॥

ॐ स्वाहाप्राणेभ्यःसाधिपतिकेभ्यःपृथिव्यैस्वाहाग्नयेस्वाहान्तरिक्षायस्वाहावायवेस्वाहा ॥
स्वाहायै० स्वाहाम्० ॥ ११ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

उपैत हे मातर आदिकर्त्र्यः सर्वस्य भूतस्य चराचरस्य ।
देव्यस्त्रिलोक्यर्चितदिव्यरूपा मखं मदीयं सकलं विधत्त ॥

ॐ आपोऽ अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वꣳहि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि ॥ दीक्षातपसोस्तनूरसि तान्त्वा शिवाꣳ शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन् ॥ मातृभ्यो० मातृः० ॥ १२ ॥

समाह्वयेसत्कृतलोकमातरः समस्तलोकैकविधानदक्षिणाः ।
सुरेन्द्रवन्द्याम्बुरुहाङ्घ्रिमञ्जुलाः कुरुध्वमेतन्मम कर्ममङ्गलम् ॥

ॐ रयिश्च मेरायश्चमे पुष्टञ्च मेपुष्टिश्च मे विभुचमेप्रभुचमेपूर्णञ्चमेपूर्णतरञ्च मेकुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नञ्चमेक्षुच्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ लोकमातृभ्यो० लोकमातृः० ॥ १३ ॥

एह्येहि भक्ताभयदे कुमारि समस्तलोकप्रियहेतुमूर्ते ।
प्रोत्फुल्लपङ्केरुहलोचनेत्रे धृते मखं पाहि शिवस्वरूपे ॥

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्म क्रियतेतन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ धृत्यै० धृतिम्० ॥ १४ ॥

एह्येहि पुष्टे शुभरत्नभूषे रक्ताम्बरे रक्तविशालनेत्रे ।
भक्तप्रिये पुष्टिकरि त्रिलोके गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ पुष्ट्यै० पुष्टिम्० ॥ १५ ॥

एह्येहि तुष्टेऽखिललोकवन्द्ये त्रैलोक्यसन्तोषविधानदक्षे ।
पीताम्बरे शक्तिगदाब्जहस्ते वरप्रदे पाहि मखं नमस्ते ॥

ॐ अङ्गान्न्यात्मन्भिषजातदश्विनात्मानमङ्गैः समंधात्सरस्वती ॥ इन्द्रस्यरूपᳬ शतमानमायुश्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतन्दधानाः ॥ तुष्ट्यै० तुष्टिम्० ॥१६॥

उपैतमान्याः कुलदेवता मम लोकैकमङ्गल्यविधानदीक्षिताः ।
पापाचलध्वंसवरिष्ठशक्तिभृद्दम्भोलिदम्भाः करुणारुणेक्षणाः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥ आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनःकुलदेवताम्० ॥ १७ ॥

इति पीठे गणेशपूर्वक षोडशमातृः संस्थाप्य षोडशोपचारैर्यथोपचारैवा पूजनं कुर्यात् ।

निम्न क्रमानुसार प्रार्थना करे—

ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्य्यं ददध्वं मातरो मम । निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुष्वं सगणाधिपाः ॥

इति मन्त्रेण नारिकेलादिफलं समर्प्य कृताञ्जलिः गणेशपूर्वकगौर्यादिषोडशमातृणामर्चनविधौयत् न्यूनतातिरिक्तं वा तत् सर्वं मातृणां प्रसादात्परिपूर्णमस्तु ।

ततः—अनया पूजया गणेशपूर्वकगौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् ।

॥ इति षोडशमातृका पूजनम् ॥

* सप्तघृतमातृका पूजनम् *

आचार्य निम्न संकल्प करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य—करिष्यमाणाविष्णुयज्ञकर्माङ्गत्वेन वसोर्धारापूजनं करिष्ये ।

उपरोक्त संकल्प कर कुंड अथवा वस्त्राछन्न पीठादि में ऊपर 'श्रीः' यह अक्षर लिखकर उसके नीचे रोली आदि से एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिन्दु उसके नीचे दक्षिणोत्तर दो बिन्दु, उसके नीचे दक्षिणोत्तर तीन, उसके नीचे चार, उसके नीचे पाँच, उसके नीचे छः और उसके नीचे सात बिन्दु क्रम से निर्माण कर नीचे वाले सात बिन्दुओं में घृत या दुग्धादि से सात धारा उदक् संस्थ प्रादेश मात्र करे।

तत्रमन्त्राः

ॐ व्वसोः॒ प॒वित्र॑मसि श॒तधा॑रं॒ व्वसोः॑ प॒वित्र॑मसि स॒हस्र॑धारम् ॥ दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता पु॑नातु॒ व्वसोः॑ प॒वि॒त्रेण श॒तधा॑रेण सु॒प्वा काम॑धुक्षः ॥

इति सकृन्मन्त्रपाठः। ततस्तेनैव मन्त्रेण पुनः पठितेन ताः धारा सप्तबिन्दून् ऊर्ध्वभागे गुडादिना मिथः कुर्यात्। तत्र क्रमेणोदकसंस्थदेवता आवाहयेत्—

आगच्छ मातर्भुवनैकभूषे श्रीमोदमाङ्गल्यमनोरथाढ्ये।
कल्याणकोषं वितरन्त्यमन्दं मखेऽत्र वञ्चत्सुषमासुवृध्यै ॥

ॐ मन॑सः॒ काम॒माकू॑तिं॒ व्वा॒चः स॒त्यम॑शीय ॥ प॒शू॒नां रू॒पमन्न॑स्य॒ रसो॒ यशः॒ श्रीः श्र॑यतां॒ मयि॒ स्वाहा॑ ॥ श्रियै० श्रियमावाहयामि स्था० ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्द्रादिदेवगणमौलिकिरीट कोटिरत्नाङ्कुरैः सततरञ्जितपादपीठम् ।
दुःखाभिभूतजनदुर्गतिनाशिनीं त्वामावाहयामि कृपया भव संमुखीना ॥

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्म-ऽइषाणासर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ लक्ष्म्यै० लक्ष्मीम्० ॥ २ ॥

एह्येहि भक्ताभयदे कुमारि समस्तलोकप्रियहेतुमूर्ते ।
प्रोत्फुलपङ्केरुहलोलनेत्रे धृते मखं पाहि शिवस्वरूपे ॥

ॐ भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳪंसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः ॥ धृत्यै० धृतिम्० ॥ ३ ॥

एह्येहि मेधे शुभभूरिवस्त्रे पीताम्बरे पुस्तकपात्रहस्ते ।
बुद्धिप्रदे हंससमाधिरूपे पूजां ग्रहीतुं मखमस्मदीयम् ॥

ॐ मेधाम्मे व्वरुणोददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ॥ मेधामिन्द्रश्चवायुश्चमेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥ मेधायै० मेधाम्० ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

एह्येहि वैश्वानरतुल्यदेहे तडित्प्रभे शक्तिधरे कुमारि ।
हविर्गृहीत्वा सुरतृप्तिहेतोः स्वाहे च शीघ्रं मखमस्मदीयम् ॥

ॐ प्राणायस्वाहापानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहाचक्षुषेस्वाहाश्रोत्रायस्वाहाव्वाचेस्वाहामनसेस्वाहा ॥
स्वाहायै० स्वाहाम्० ॥ ५ ॥

पवित्रचित्ते प्रतिमाप्रमाद्रे लब्धुं मनोज्ञामामितः सपर्याम् ।
प्रज्ञेऽत्र यज्ञेऽखिलविघ्नहन्त्रि एह्येहि देवाधिपवन्दनीये ॥

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ प्रज्ञायै० प्रज्ञाम्० ॥६॥

मुनीन्द्रवृन्दारकवृन्दवन्द्ये विद्वज्जनाराधितपादयुग्मे ।
श्रीशारदे शारदकान्तियुक्ते आवाहये त्वां भव संमुखीना ॥

ॐ पावकानः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती ॥ यज्ञं व्वष्टुधियावसुः ॥ सरस्वत्यै०
सरस्वतीम्० ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection,, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इत्यावाह्य प्राणस्थापनपूर्वकमर्चनं समाप्य—

ॐयदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः ।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥

इति प्रार्थ्य अनया पूजया श्र्यादिसप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम् ।

॥ इति सप्तघृमातृका पूजनम् ॥

* आयुष्यमन्त्रपाठः *

निम्न वैदिक मंत्रों एवं पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करे —

ॐ आयुष्यंवर्चस्यꣳरायस्पोषमौद्भिदम् ॥ इदꣳहिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादुमाम् ॥१॥

नतद्रक्षाꣳसिनपिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳह्येतत् ॥ यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ सदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुः समनुष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः ॥ २ ॥

यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः । तन्मऽआबध्नामिशतशारदाया-युष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् । ३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अश्वत्थामादि ऋषयो वसिष्ठप्रमुखास्तथा ।
मार्कण्डेयप्रभृतयः सर्वे सन्तु शिवावार्चकाः ॥ १ ॥
जमदग्निः कश्यपश्च दीर्घमायुः करोतु मे ।
अन्ये ऋषिगणा देवा इन्द्राद्याश्च सशक्तिकाः ॥ २ ॥
भूसुराः सुतपोनिष्ठाः सत्यव्रतपरायणाः ।
दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु सर्वकामस्य सिद्धये ॥ ३ ॥
यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु ।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥ ४ ॥
दीर्घा नागा तथा नद्यः समुद्रा गिरयो दिशः ।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम् ॥ ५ ॥
सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च ।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम् ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकल्प कर दक्षिणा देवें—

ततः कर्ता—कृतैतत्—आयुष्यमन्त्रपाठकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं विप्रेभ्यो दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये । इति ।

* सांकल्पिक नान्दीश्राद्ध प्रयोगः *

कर्ता—सत्यवसुसंज्ञका: विश्वेदेवाः नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं (पादावनेजनं पाद प्रक्षालनंवृद्धिः) । मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं (पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः) । पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं (पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः) । मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं (पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः) ।

इत्युक्त्वा सर्वत्र पात्रे सकुशयवाक्षतजलं क्षिपेत् ।

ततः आसनदानम्—सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वदेवा नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमः । मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमः । मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमः ।

गन्धादिदानम्—अत्रापः पान्तु । इमे वाससी, इमानि यज्ञोपवीतानि, एष वो गन्धः, इमे अक्षताः, इमानि पुष्पाणि, अयं धूपः, अयं दीपः, इदं नैवेद्यम्, इमानि ऋतुफलानि, इदं ताम्बूलम्, इदं पूगीफलम्, सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । पितृपितामहप्रपितामहा नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहा सपत्नीका नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

भोजननिष्क्रयं दानम्—सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण-भोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पद्यतां वृद्धिः । पितृपितामहप्रपितामहा नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्तमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

ततः सक्षीरयवकुशजलानि दद्यात्—सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम् । पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ।

प्रार्थना—

गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च ।
श्रद्धा च नो माव्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि ।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ।
एताः सत्या आशिषः सन्तु । द्विजाः—सन्त्वेताः सत्या आशिषः । ततः सकुशयवं जलं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दक्षिणां चादाय—सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य विष्णुयागफल सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये ।

मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः भूर्भुवःस्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य विष्णुयागफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूल–निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये । पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य विष्णुयागफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये ।

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य विष्णुयागफलसिध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये ।

इस श्लोक का उच्चारण करें—

माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही । पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकस्तथा ।
एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करे—

ॐइडामग्नेपुरुदꣳसꣳसनिङ्गोः शश्वत्तमꣳ हवमानायसाध ॥ स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ १ ॥

उपास्मैगायतानरः पवमानायेन्दवे ॥ अभिदेवाँ२इयक्षते ॥ २ ॥

इत्यनेन नान्दीश्राद्धं संपन्नम् । सुसंपन्नमिति द्विजाः ।

तत्पश्चात् इन वैदिक मंत्रों का उच्चारण करे—

ॐ वाजेवाजेवतवाजिनोनोधनेषुविप्रा ऽअमृता ऽऋतज्ञाः ॥ अस्यमद्ध्वः पिबतमादयध्वंतृप्तायातपथिभिर्देवयानैः ॥ १ ॥

आमावाजस्यप्रसवोजगम्यादेमेद्यावापृथिवीविश्वरूपे ॥ आमागन्तांपितरामातराचामासोमो ऽअमृतत्वेनगम्यात् ॥

मया ऽऽचरिते आभ्युदयिके श्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीगणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णो ऽस्तु इति वदेत् ।

अस्तु परिपूर्णः—इति ब्राह्मणाः । ॥ इति नान्दीश्राद्धम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

❀ अथ आचार्यब्राह्मणादीनां वरणम् ❀

निम्न वाक्य का उच्चारण करे—

"अस्मिन् कर्मणि त्वमाचार्यो भव—"भवामि' इति प्रयुक्ते कृताञ्जलिः—

स्वागतं भो द्विजश्रेष्ठाः मदनुग्रहकारकाः । इदमर्घ्यमिदं पाद्यं भवद्भिः प्रतिगृह्यताम् ॥

इत्युक्त्वा 'अस्मिन् कर्मणि एतत्तेऽर्घ्यम् । 'अस्मिन् कर्मणि एतत्ते पाद्यम् । इति पादप्रक्षालनं कृत्वा तज्जलमभिवन्द्य द्विराचामेत् । विप्राश्च पादप्रक्षालनोत्तरं द्विर्द्विराचामेयुः ।

ततो विप्रस्य दक्षिणं जान्वालभ्य ऋत्विग्वरणनिमित्तमर्चयिष्ये—इत्युक्त्वा चन्दनाक्षतपुष्पमालादिभिरभ्यर्च्य साक्षतहस्तः कराभ्यां वरणसामग्रीमादाय—

अमुकगोत्रोऽमुकप्रवरोऽमुकशाखाध्यायी अमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तः) यजमानोऽहं (सपत्नीकोऽहम्) अमुकगोत्रममुकप्रवरं यजुर्वेदाध्यायिनममुकशर्माणं अस्मिन् विष्णुयज्ञ कर्मणि आचार्यं त्वामहं वृणे ।

आचार्योऽपि-वृतोस्मिइत्युक्त्वा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निम्न वैकद् मंत्र का उच्चारण करे—

ॐ व्रतेनदीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोतिदक्षिणाम् ॥ दक्षिणाश्रद्धामाप्नोतिश्रद्धयासत्यमाप्यते ॥

निम्न वैदिक मंत्र का उच्चारण कर रक्षा बन्धन करे—

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यꣳ शतानीकायसुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआबध्नामिशतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥

निम्न प्रार्थना करे—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत ॥ १ ॥
मन्त्रमूर्तिर्भवान्नाथ संसाराघौघनाशन ।
विष्णुयज्ञ विधावस्मिन् कुरु कर्म यथोदितम् ॥ २ ॥
त्वत्प्रसादाच्च पूर्तस्य समग्रं फलमाप्नुयात् ।
संसारभयभीतेन अयं यज्ञः सुभक्तितः ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

प्रारब्धस्त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं मे भवत्विति ।
यथा शक्रस्य वागीश आचार्यः सर्वकर्मसु ।
तथा मया त्वमाचार्यो वृतोऽस्मिन् यज्ञकर्मणि ।। ४ ।।

निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करे—

ॐ बृहस्पते॒ऽ अति॒यद॒र्य्यो॑ऽ अर्हा॑द्द्युमद्वि॒भाति॒क्रतु॑म॒ज्जने॑षु ।। यद्दी॒दय॒च्छव॑स॒ऽऋतप्रजात॒ तद॒स्मासु॒द्द्रवि॑णन्धेहि चि॒त्रम् ।।

इति पृथक्-पृथक् वरणं कुर्यात् ।

अथवा—'सर्वेषां गोत्रादीन्' पृथक् पृथगुच्चार्य ऋत्विजो युष्मान् अहं वृणे-इति युगपत् सर्वान् वृणुयात् ।

ततो ब्रह्मवरणे—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः ॥ सबुध्न्याऽउपमाऽ अस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः ॥

सदस्यवरणे–

त्वन्नो गुरुः पिता माता त्वं प्रभुस्त्वं परायणम् ।
त्वत्प्रसादाच्च विप्रर्षे सर्वं मे स्यान्मनोगतम् ।
आपद्विमोक्षणार्थाय सदस्यो भव सुव्रत ॥

ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्म्यम् । सनिम्मेधा मयासिषꣳस्वाहा ॥

गाणपत्यवरणे—

प्रारीप्सितस्य यज्ञस्य जपस्य हवनस्य च ।
निर्विघ्नेन समाप्त्यर्थं गणपं त्वामहं वृणे ॥

ॐ [1]गणानां त्वा० ॥ उपद्रष्टृवरणे–

सम्प्रदायागतसर्वोपद्रष्टृवरणे च भगवन्

१. 'गणानांत्वा' इस मंत्र को गणेशाम्बिका पूजन में देखें ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवन् सर्वं कर्मज्ञ सर्वधर्मभृतांवर ।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज ॥

ॐ ऋतयैस्तेन हृदयं व्वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यैक्षत्तारमौपद्रष्टयायानुक्षत्तारम्बलायानुचरम्भूम्नेपरिष्कन्दम्प्रियायंप्रियवादिनमरिष्टयाऽअश्वसादꣳस्वर्ग्गायंलोकायंभागदुघंव्वर्षिष्ठायनाकायपरिवेष्टारम् ॥

भगवन् सर्वकर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर । वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज ॥

ऋत्विग्वरणे—भगवन्सर्वकर्मज्ञ सर्वधर्मभृताम्बर ।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥

ॐ ब्राह्मणासःपितरःसोम्म्यासःशिवेनोद्यावापृथिवीऽअनेहसा ॥ पूषानःपातुदुरिताद्दृतावृधोरक्षामकिर्नोऽअघशꣳसऽईशत ॥

मण्डपपक्षे—

'ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षो गायत्रः सोमदैवतः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥
कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रैष्टुभो विष्णुदैवतः ।
काश्यपेयस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥
'सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जाग्रतः शक्रदैवतः ।
भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥
'बृहन्नेत्रोऽथर्ववेदो ऽनुष्टुभो रुद्रदैवतः ।
वैशम्पायन विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥

इति क्रमेण वेदपारायणे-द्वापालवरणे वा मन्त्राः ।

॥ इति आचार्यब्राह्मणादिनां वरणम् ॥

* अथ मधुपर्कपूजनम् *

निम्न संकल्प करावें—

करिष्यमाण—विष्णुयज्ञकर्मणि वृतान् ऋत्विजो मधुपर्केणार्चयिष्ये ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इति सङ्कल्प्य यजमानशाखयाऽर्हणम् । तद्यथा—

सर्वेषां ब्राह्मणानां पङ्क्त्याकारेणोपवेशनम् । "साधु भवन्तः आसतामर्चयिष्यामो भवतः इत्यर्घ्यान्प्रत्याह—

'ॐ अर्चय' इति सर्वे प्रतिब्रूयुः ।

वेण्याकारं पञ्चविंशतिदर्भमयमुष्टिं विष्टरापरपर्यायं गृहीत्वा "विष्टरा विष्टरा विष्टराः—इति दातुरन्येनोक्ते—प्रतिगृह्यन्ताम्—इति पात्रोक्ते ॐ प्रतिगृह्णीमः—इति । ऋत्विग्भिः सम्यक्तया तं प्रतिगृह्य उत्तराग्रं निधाय—

ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः ।
इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ॥

इति मन्त्रेण तदुपरिउपविशेयुः ।

ततो दाता पाद्यपात्रं गृहीत्वा 'पाद्यानि पाद्यानि पाद्यानि'—प्रतिगृह्यन्ताम्—इति प्रतिगृह्णीम इत्युक्त्वा ऋत्विजः प्रतिगृह्य—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ विराजो दोहोऽसि विराजोदोहमसीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ॥
इति मन्त्रेण दक्षिणवामपादयोर्युगपन्निनयेयुः ।

दाता च क्रमेण दक्षिणवामपादौ प्रक्षालयेत् । ततोऽर्घपात्रमादाय "अर्घा अर्घा अर्घाः" इत्यनेनोक्ते "प्रतिगृह्यन्ताम्" इति दात्राऽऽवेदिते "प्रतिगृह्णीमः" इत्युक्त्वा—

"ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानि" इति तत्प्रतिगृह्य ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत । अरिष्टास्माकं वीरामापराचेति मत्पयः ॥ इति निनयन्नभिमन्त्रयेत् ॥

ततो दात्रा आचमनीयपात्रे गृहीते "आचमनीयान्याचमनीयान्याचमनीयानि इत्यनेनोदीरिते—प्रतिगृह्यन्ताम्—इति दात्रोक्ते तत्पात्रं प्रतिगृह्य—

"ॐ आमागन्यसा सꣳ सृजवर्चसा । तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम् ॥
इतिसकृन्मन्त्रेण द्विस्तूष्णीमाचामेयुः ॥

ततो दात्रा मधुपर्कं समादाय 'मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः' इत्यनेनोदीरिते "प्रतिगृह्यन्ताम्" इति प्रतीक्ष्य—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥

इति प्रतिगृह्य तत्पात्रं सव्यहस्ते कृत्वा अपिधानमपनीय दक्षिणहस्तस्यानामिकया सकृन्मिश्रीकृत्य अङ्गुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यां किञ्चिन्मधुपर्कं गृहीत्वा ॐ नमः श्यावास्यावास्यायान्नशने यत्तऽआविद्धं तत्ते निष्कृन्तामीति मन्त्रेण बहिः प्रक्षिपेत्। एवमेव पुनरपि वारद्वयं मिश्रणं निरसनं च कार्यम्। ततः पात्रं भूमौ निधाय अनामिकाङ्गुष्ठेन—

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमठं रूपमन्नाद्यम्।

तेनाहंमधुनो मधव्येनपरमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोसानि ॥ इति मन्त्रावृत्त्या त्रिः प्रश्नाति। मन्त्रवत्प्राशनमनुच्छिष्टत्वात्। शेषं शिष्यादिभ्यो दद्यादनुच्छिष्टत्वात्। अथवा स्वयमेव सर्वं पात्रेणैव पिबेत्। जले प्रक्षिपेद्वा। ततः शुद्ध्यर्थमाचमनम्।

ततः—"ॐ वाङ्मऽ आस्ये अस्तु—इति तर्जनीयमध्यमाऽनामिकाभिर्मुखं स्पृशेत्। जलं स्पृष्ट्वा

"ॐ नसोर्मे प्राणः अस्तु—इति नासिके युगपत् तर्जन्यङ्गुष्ठेन स्पृशेत्।

"ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुः अस्तु" इति अनामिकाङ्गुष्ठेन युगपच्चक्षुषी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु" इति मन्त्रावृत्त्या तथैव दक्षिणोत्तरौ कर्णौ।

"ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु" इति अङ्गुल्यग्रैर्मन्त्रावृत्त्या बाहू।

"ॐ ऊर्वोर्मे ओजः अस्तु" इति पाणिभ्यां युगपदूरू।

"ॐ अरिष्टाऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु" इति शिरः प्रभृत्यङ्गानि पाणिभ्यामालभेत्।

ततो द्विराचामेत्। ततः "गावो गावो गावः" इति दाता वदेत्। ऋत्विजश्च—

"ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनाᳪ स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः। प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट। मम चाऽमुष्य च पाप्माहतः।

ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु—इति पठेयुः।

ततः आचारात्—"इमानि माधुपर्किकाणि पात्राणि नानादेवतानि इमानि मधुपर्किकोर्गाश्च ऋत्विग्भ्योऽहं संप्रददे इति दद्यात्। अस्य मधुपर्ककर्मणो यन्न्यूनमतिरिक्तं च तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु। अस्तु परिपूर्णम्।

॥ इति मधुपर्कः पूजनम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* अथ ब्राह्मण-प्रार्थना: *

ब्राह्मणाः सन्तु शास्तारः पापात्पान्तु समाहिताः । वेदानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनाम् ॥ १ ॥
जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः पुनः । देवानां च ऋषीणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः ॥ २ ॥
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम् । रक्षन्तु सततं ते मां जपयज्ञे व्यवस्थिताः ॥ ३ ॥
ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् । तेषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिना जना ॥ ४ ॥
पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः । सर्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥ ५ ॥
श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा । यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नरद्रुमाः ॥ ६ ॥
अङ्गीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषः । यथोक्तनियमैर्युक्ता मन्त्रार्थे स्थिरबुद्धयः ॥ ७ ॥
यत्कृपालोचनात्सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः । भक्तिभाजां च मे पूज्याः सन्तु ते नियमान्विताः ॥ ८ ॥
उपवीती बद्धशिखो धीरो मौनी दृढव्रतः । धौतवासाः पञ्चकच्छो द्विराचामः कृताह्निकः ॥ ९ ॥
नैकवस्त्रो नान्तराले न द्वीपे नार्द्रवाससा । न कुर्यात्कस्यचित्पीडां कण्डून्मीलनवर्जितः ॥ १० ॥
अवैधं नाभ्यधः स्पर्शं कर्मकाले न कारयेत् । न पदा पादमाक्रम्य न चैव हि तथा करौ ॥ ११ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जपकाले न भाषेत नान्यानि प्रेक्षयेद्बुधः । न कम्पयेच्छिरो ग्रीवं दन्तान्नैव प्रकाशयेत् ॥१२॥
निरर्थकं न संलापो नाङ्गानां चालनं मुधा । आचार्यकथने स्थेयान्न प्रतिग्रहमाचरेत् ॥१३॥
हविष्याशी मिताहारी लोभदम्भविवर्जितः । अत्वरः सकलान् मन्त्रान् जपे होमे प्रयोजयेत् ॥१४॥
दूरतः सन्त्यजेत्सर्वं मादकद्रव्यसेवनम् । न यज्ञमण्डपे हस्तपादप्रक्षालनं क्वचित् ॥१५॥
नान्यं प्रतिनिधिं कुर्यान्न पर्युषितभुग्भवेत् । वर्तमाने जपादौ च लघुशङ्कादिकं त्यजेत् ॥१६॥
पवित्रपाणिस्तिलको ताम्बूलपरिवर्जनम् । मञ्चखट्वादिशयनप्रातराहारवर्जनम् ॥१७॥
परस्परमनिन्दां च न क्षौरं नातिभोजनम् । मृगीमुद्रामुपाश्रित्य यथार्थं हुतमाचरेत् ॥१८॥
अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिण । देवध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥१९॥
(यूयं वै ब्राह्मणा सृष्टा मित्रत्वे नानुगृह्णता । सौख्ये नैवेह भवता भवत्पूतो नरः स्वयम् ॥
भवतां प्रीतियोगेन स्वयं प्रीतः पितामहः ।)
अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः । ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥२०॥
ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन् । यूयं तथा मे भवत ऋत्विजोऽर्हणसत्तमा ॥२१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोभ्यर्थिता मया। सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ॥२२॥

ब्राह्मणा ब्रूयुः—वयं नियमसंयुक्तास्तव कर्तव्यतत्पराः।
कार्यं तव करिष्यामो विधिपूर्वं संशयः॥
कर्तव्या नो क्रियाशंका वेदाज्ञा हि गरीयसी।
वैदिका नहि वेदाज्ञां लंघयन्ति कदाचन॥
त्वदधीनं त्वया कार्यं निःशंकं श्रद्धान्वितम्।
वयं सर्वं करिष्यामस्तवकार्यं न संशयः।

यजमानो ब्रूयात्—धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं सौभाग्योऽहं धरातले।
प्रसादाद्भवतां विप्राः पवित्रोऽहं कृतोऽधुना॥
शक्त्या सर्वं करिष्यामि वचनाद्भवतां ततः।
आशीर्वादस्य सिद्धानां पूर्णं सर्वं भविष्यति॥
यथाविहितं कर्म कुरुत। यथाज्ञानं कारयामः।

॥ इति ब्राह्मण प्रार्थना: ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

* अथ मण्डपप्रवेशप्रारम्भः *

तदनन्तर सपत्नीक पुत्र-पौत्रादियुक्त यजमान, आचार्य और ऋत्विजों के साथ मंगलघोष[1] बाजे आदि द्वारा तथा 'आ नो भद्रा' इत्यादि मन्त्रघोष से युक्त हो कलश हाथ में लेकर सुवासिनी स्त्रियों को आगे कर गणेश, अम्बिका, वरुणकलश, मातृपीठादियों से युक्त हो महामण्डप[3] और प्रासादादि[4] की प्रदक्षिणा कर पश्चिमद्वार पर प्राङ्मुख खड़े होकर इन पौराणिक श्लोकों से ध्यान करे।

"ॐ चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
शङ्खपद्मधरां चक्रशूलहस्तां धरां भजे॥
पृथिवि ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता॥

इस प्रकार ध्यान करे और प्रणाम कर अर्घ्य देवें—

१— प्रवेशसमये मण्डपालङ्करणमुक्तमिति सिद्धान्तशेखरे। पताकाध्वजसंयुक्तं पुष्पमालाविराजितम्। चूतपल्लवशोभाढ्यं वितानैरुपशोभितम्। विचित्रवस्त्रसंच्छन्नं तुल्यसाङ्गविभूषितम्। सफलं कदलीस्तम्भैः क्रमुकैर्नारिकेलकैः। फलैर्नानाविधैर्भक्ष्यैर्दर्पणैश्चामरैरपि। भूषितं मण्डपं कुर्याद्रत्नपुष्पस्रगुज्ज्वलम्। सर्वासामेव पताकानामादौ बन्धनमात्रं कृत्वा पूजासमये निवेदनं कुर्यादित्याहुः।

२— मात्स्ये—मङ्गलशब्देन-भेरीणां निःस्नेवन च। शुक्लमाल्यांबरधरः शुक्लगन्धानुलेपनः। यजमानः सत्नीकः पुत्रपौत्रसमन्वितः। पश्चिमद्वारमण्डपम्।

३—"पश्चिमं द्वारमाश्रित्य प्रविशेद्यागमण्डपम् इत्यादिना मात्स्योक्तेः। प्रतिष्ठातिलकेऽपि।

४—"प्रासादस्य तु पूर्वेण ह्युत्तरेणऽथवा पुनः। दश द्वादश हस्तं वा मण्डपं कारयेच्छुभमिति मात्स्ये।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ भूम्यै नमः—इत्युक्त्वा

ॐ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ।
दंष्ट्राग्रैर्लीलया देवि यज्ञार्थं प्रणमाम्यहम् ॥

इस प्रकार प्रणाम कर अर्घ देवें—

ॐ ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शङ्करेण च ।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दवैश्रवणेन च ॥
यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया ।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता ॥
गृहाणार्घमिमं देवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे ॥
ॐ भूम्यै नमः अर्घं समर्पयामि ।

ततो गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यैर्भूमिं सम्पूज्य—

ॐ उपचारानिमां तुभ्यं ददामि परमेश्वरि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त्या गृह्याण देवेशि त्वामहं शरणं गतः ॥

उपर्युक्त श्लोक का उच्चारण कर पूजा करे व निवेदन करें ।

ॐ नन्दे नन्दस्य वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह ।
जय भार्गवदायादे प्रजानां जयमावह ॥
पूर्णे गिरिश दायादे पूर्णं कामं कुरुष्व मे ।
भद्रे काश्यपदायादे कुरु भद्रां मतिं मम ॥
सर्वबीजसमायुक्ते सर्वरत्नौषधीवृते ।
रुचिरे नन्दने नन्दे वासिष्ठे रम्यतामिह ॥
प्रजापतिसुते देवि चतुरस्रे महीयसि ।
सुभगे सुव्रते देवि यज्ञे भार्गवि रम्यताम् ॥
देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे ।
मनुष्यधनहस्त्यश्वपशुवृद्धिकरो भव ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

पूजिते परमाचार्यैर्गन्धमाल्यैरलङ्कृते ।
भवभूतिकरी देवि यज्ञे काश्यपि रम्यताम् ॥
अव्यक्ते चाहृते पूर्णे शुभे चाङ्गिरसः सुरे ।
इष्टदे त्वं प्रयच्छेष्टं त्वामहं शरणं गतः ॥
आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणि ॥ इति ॥

तदनन्तर ऋत्विजों के साथ पश्चिमद्वार से और पत्नी दक्षिणद्वार से मण्डप का प्रवेश करे । तदनन्तर अग्न्यायतन की प्रदक्षिणा कर अग्निकोण में गोधूम गेहूँ की राशि पर कुम्भ का स्थापन करे ।

अत्र होमद्रव्यानयनं पूर्वद्वारेण, दानद्रव्यानयनं दक्षिणद्वारेण, पूजार्थद्रव्यानयनमुत्तरद्वारेण कर्तव्यम् ।

तद्यथा ईशान्यां विधना कलशं संस्थाप्य तत्र पूर्णपात्रे अष्टदले मध्ये सूर्यं पूर्वाद्यष्टदलेषु सोमादीन् संपूज्य पूजिताकलशेन मण्डपस्य परितः धारां दद्यादिति । ततः कृताञ्जलिः स्वस्ति न- इति मन्त्रं पठित्वा—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्षस्व इति वदेत् ।

ततः साचार्यो यजमानोऽग्न्यायतनान् महावेदेर्वा पश्चिमत उपविश्य—

इन दो वैदिक मंत्रों का उच्चारण करे—

ॐ इयंव्वेदिः परोऽअन्तः पृथिव्याऽअयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ॥ अयꣳ सोमो व्वृष्णोऽअश्वस्य रेतो ब्रह्मायं व्वाचः परमं व्व्योम ॥ १ ॥

ॐ सुभूःस्वयंभूः प्रथमोन्तर्म्महत्यर्णवे । दधेहगर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापतिः ॥ २ ॥

बाये हाथ में सफेद सरसों और लावा लेकर निम्न मंत्रों का उच्चारण करे—

ॐ रक्षोहणंव्वलगहनंव्वैष्णवीमिदमहन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मेनिष्ट्योयममात्योनिचखानेद-
महन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मेसमानोयमसमानोनिचखानेदमहन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मेसबन्धुर्य्यमसब-
न्धुर्न्निचखानेदमहन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मेसजातोयमसजातोनिचखानोत्कृत्याङ्किरामि ॥ १ ॥

रक्षोहणोवोव्वलगहनः प्रोक्षामिव्वैष्णवान्रक्षोहणोव्वोव्वलग हनोवनयामिव्वैष्णवान् रक्षो-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हणौवोव्वलगहनोऽवस्तृणामिव्वैष्णवान्न क्षोहणौबांव्वलगहनाऽउपदधामिव्वैष्णवीरं क्षोहणौवांव्वल-
गहनौपऊषूद्यामिव्वैष्णवीव्वैष्णवमसिव्वैष्णवास्त्थ ॥ २ ॥

रक्षसां भागोऽसिनिरस्तह्ँ रक्षऽ इदमहह्ँ रक्षोभितिष्ठामीदमहह्ँ रक्षोऽवबाधऽइदमहह्ँ
रक्षोऽधमन्तमोनयामि ॥ घृतेन द्यावापृथिवीप्रोर्णुवाथांव्वायोव्वेस्तोकानामग्निराज्ज्यस्यव्वेतु स्वाहा-
स्वाहाकृतेऽऊर्ध्वं नभसम्मारुतङ्गच्छतम् ॥ ३ ॥

रक्षोहा व्विश्वचर्षणिरभियोनिमयोहते ॥ द्रुणेसधस्थमासदत् ॥ ४ ॥

कृणुष्वपाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं यह्याहि राजवामवाँऽइभेन ॥ तृष्वीमनु प्रसितिन्द्रूणा-
नोस्तासि व्विध्यरक्षसस्तपिष्ठैः ॥ ५ ॥

तवभ्रमासऽआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः ॥ तपूंष्यग्नेजुह्वा पतङ्गानसन्दितो व्विसृज
व्विष्वगुल्काः ॥ ६ ॥

प्रतिस्पशो व्विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशोऽअस्याऽ अदब्धः ॥ यो नो दूरेऽअघशंसो
योऽअन्त्यग्नेमा किष्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥ ७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

उदग्नेतिष्ठ प्रत्यातंनुष्वन्न्यमित्रौं२।।ऽओषतातिग्ग्महेते ।। यो नो ऽअरातिꣳसमिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् ।। ८ ।।

ऊर्ध्वोभव प्रतिविध्या ध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्व्यान्न्यग्ने ।। अवं स्थिरातंनुहि यातुजूनां जामिमजामि प्रमृणीहि शत्रून् ।। अग्ग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि ।। ९ ।।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तास्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।१।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् । सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभे ।। २ ।।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।।३।।
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन । ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु शान्तिकं तु करोम्यहम् ।।४।।

इति मन्त्रैः सर्षपान् विकिरेत् ।

।। इति मण्डप प्रवेशः ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❋ अथ पञ्चगव्यादिकरणम् ❋

तदनन्तर—एक पात्र में पञ्चगव्य का सम्पादन करें। उसका क्रम यों है—

'गायत्री'[1] मन्त्र को पढ़कर गोमूत्र, 'गन्धद्वाराम्'[2] से गोबर, 'आप्यायस्व'[3] से दूध, 'दधिक्राव्णः'[4] से दही, 'तेजोऽसि'[5] से घृत और 'देवस्य त्वा'[6] से कुशोदक को एक पात्र में प्रमाण के द्वारा रख 'ॐ' इस प्रणव द्वारा किसी भी यज्ञिय प्रादेशमात्र लकड़ी से सबको मिलाकर आपो हिष्ठा की निम्न तीन ऋचाओं का उच्चारण कर कुशाओं द्वारा कर्म भूमि (जिस स्थान पर यज्ञादि करना हो) उसका प्रोक्षण करे—

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जे दधातन ॥ महे रणाय चक्षसे ॥
योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेह नः ॥ उशतीरिव मातरः ॥
तस्माऽ अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥ आ पो जनयथा च नः ॥

इन तीन मंत्रों से यज्ञभूमि का प्रोक्षण करे।

१—तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो नः प्रचोदयात् ॥ (ऋ० ३।६२।१०)

२—गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ (ऋपरि० ११ म० ६)

३—आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे ॥ (ऋ० १।९१।१६)

४—दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत् प्रण आयूंषि तारिषत् ॥ (ऋ० ४।३९।६)

५—तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियन्देवयजनमसि (शु. यजुर्वेद)

६—देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ (तैत्त० सं० १।१।६)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❀ नैर्ऋत्ये कोणेमंडपाङ्गवास्तुपूजनम् प्रारम्भः ❀

अथ सपत्नीको यजमानः—गुरुर्मण्डपनैर्ऋत्ये हस्तमात्रे वेदीसमीपे आगत्य स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य—"अस्मिन् कर्मणि कुण्डमण्डपादिषु हीनाधिकाङ्गतादिवास्तुदोषसूचितसर्वारिष्टनिबर्हणार्थं। विष्णुयागाङ्गभूतं मण्डपाङ्गवास्तुपूजनं करिष्ये।

उपरोक्त संकल्प करे।

"ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः। मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा॥

इति मन्त्रावृत्त्या आग्नेयादितश्चतुरः शङ्कून् संरोप्य ततः—

ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥१॥
ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥३॥
ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥४॥

ॐ इतिमन्त्रैस्तत्क्रमेण तत्पार्श्वे माषभक्तबलिं दद्यात् ।

ततो वेद्युपरिवस्त्रे सुवर्णशलाकया प्रागग्रा उदक्संस्था द्व्यङ्गुलान्तरा नव रेखाः कुर्यादेभिर्मन्त्रैः—तद्यथा—

ॐ लक्ष्म्यै नमः १ ॐ यशोवत्यै नमः २ ॐ कान्तायै नमः ३ ॐ सुप्रियायै नमः ४ ॐ विमलायै नमः ५ ॐ शिवायै नमः ६ ॐ सुभगायै नमः ७ ॐ सुमत्यै नमः ८ ॐ इडायै० ९ तत उदगग्राः प्राक्संस्था नवरेखाकार्याः—ॐ धान्यायै नमः १ ॐ प्राणायै नमः २ ॐ दिशालायै नमः ३ ॐ स्थिरायै नमः ४ ॐ भद्रायै नमः ५ ॐ जयायै नमः ६ ॐ निशायै नमः ७ ॐ विरजायै नमः ८ ॐ विभवायै नमः ९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(अत्र—ॐ रेखादिभ्यो नमः—इति पञ्चोपचारैः पूजयेदिति प्रतिष्ठासरणौ विशेषः ।)
ततो मध्यपदचतुष्टयमेकीकृत्य कोणेषु रेखा दत्वा वक्ष्यमाणवर्णैः पदानि वर्णयित्वा देवानावाहयेत् ।

बाह्यपंक्तौ ईशानपदस्य दक्षिणेऽर्द्धपदे प्रथमकोष्ठे रक्तवर्णे वास्तोः शिरसि—

समाह्वयन्तं शिखिनं महोज्वलं मेषाधिरूढं सुरराज वन्दितम् ।
त्रिशूलहस्तं वरदे महेशं भजामि देवं स्वकुलाभिवृद्ध्यै ॥

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसाम-संदवृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

शिखिने नमः शिखिनमावाहयामि स्थापयामि । तद्दक्षिणे सार्धपदे पीतवर्णे द्वितीयकोष्ठके दक्षिणनेत्रे—

एह्येहि जीमूतसुधाप्रसृष्टे चराचरैः सेवितधर्ममूर्ते ।
पवित्रदेवेश गृहाण पूजां ममाध्वरं पाहि भवन्नमस्ते ॥

ॐ शन्नो वातः पवताᳬ शन्नस्तपतु सूर्यः ॥ शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो ऽअभिवर्षतु ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्जन्याय० पर्जन्यमावा० स्था० । तद्दक्षिणे द्विपदे पीतवर्णे तृतीयकोष्ठके दक्षिणश्रोत्रे–

एह्येहि देवेश जयन्तसूनो शच्याः सदा सर्वसुरैश्च सेव्य ।
पीठेऽत्र यज्ञेश गृहाण पूजां शिवाय नः पाहि भवन्नमस्ते ॥

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु ॥ जयन्ताय० जयन्तमा० ।

तद्दक्षिणे द्विपदे पीतवर्णे चतुर्थे दक्षिणांसे–

एह्येहि वृत्रघ्न गजाधिरूढ सहस्रनेत्र त्रिदशैकराज ।
शचीपते शक्र सुरेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ आयात्विन्द्रो वस उपन इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः ॥
व्वावृधानस्तविषीर्य्यस्य पूर्व्वीर्द्यौर्न्न क्षत्रमभि भूति पुष्यात् ॥
कुलिशायुधाय० कुलिशायुधमा० ।
तद्दक्षिणे द्विपदे रक्तवर्णे पञ्चमे दक्षिणबाहौ–

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाह्वयन्तं द्विभुजं विनेशं ससाश्ववाहं द्युमणिं ग्रहेशम् ।
सिन्दूरवर्णं प्रतिभावसंभवं भजामि सूर्यं स्वकुलाभिवृद्ध्यै ॥

ॐ बण्ण्महाँ ऽअसि सूर्य्य बडादित्य महाँ ऽअसि ॥ महस्ते सतो महिमा पंनस्य ऽत्तेद्धादेव महाँ ऽअसि ॥ सूर्याय० सूर्यमा० ।

तद्दक्षिणे द्विपदे शुक्लवर्णे षष्ठे दक्षिणबाहावेव–

एह्येहि सत्येश महामहेश दुष्टान्तकृत्स्वच्छसुधर्ममूर्ते ।
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां ममाध्वरं पाहि भवन्नमस्ते ॥

ॐ व्व्रतेनं दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ॥
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ सत्याय० सत्यमा० । तद्दक्षिणे सार्द्धपदे कृष्णवर्णे सप्तमे दक्षिणकूर्परे–

समाह्वयन्तं द्विभुजं भृशं हि नीलोत्पलाभासविशालनेत्रम् ।
नीलाद्रिवर्णं प्रतिभावभासं भजामि देवं कुलवृद्धिहेतोः ॥

प्र० १३६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ आत्वाहार्षमन्तरंभूदध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः ॥
विशस्त्वा सर्वा व्वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् ॥ भृशाय० भृशमा० ।

तद्दक्षिणे अर्द्धपदे कृष्णवर्णे अष्टमे दक्षिणबाहौ–

समाह्वयन्तं गगनं दिवौकसां निवासभूतं सुविनिर्मलं च ।
आरक्तहीनं रुचिरं पुराणं भजामि नाकं स्वकुलाभिवृद्ध्यै ॥

ॐ वाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥ तया यज्ञं मिमिक्षतम् ॥ आकाशाय० आकाशमा० ।

तत्पश्चिमे अर्द्धपदे धूम्रवर्णे नवमे दक्षिणबाहावेव–

धूम्राह्वयं गन्धवहं सुरम्यं मृगाधिरूढं त्रिदशैकवन्द्यम् ।
सुपूजकानन्दकरं पुराणं भजामि वायुं स्वकुलाभिवृद्ध्यै ॥

ॐ व्वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्सोमपीतये ॥ वायवे० वायुमा० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्पश्चिमे सार्द्धपदे रक्तवर्णे दशमे दक्षिणमणिबन्धे—

एह्येहि पूषन् सुविचारदक्ष हयाधिरूढाखिलधर्ममूर्ते ।
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां शिवाय नः पाहि भवन्नमस्ते ॥

ॐ पूषन्तव्व्रते व्वयन्न रिष्येम कदाचन । स्तोतारस्त ऽइह स्म्मसि ॥ पूष्णे० पूषणमा० ।

तत्पश्चिमे द्विपदे शुक्लवर्णे एकादशे दक्षिणपार्श्वे—

समाह्वयन्तं वितथं विशालं सुपूजकानन्दकरं वरेण्यम् ।
त्रिशूलहस्तं मकराधिरूढं भजामि देवं कमलायताक्षम् ॥

ॐ तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महित्वं मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततं सञ्जभार ॥
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री व्वासस्तनुते सिमस्मै ॥ वितथाय० वितथमा० ।

तत्पश्चिमे द्विपदे पीतवर्णे द्वादशे दक्षिणापार्श्वे एव—

एह्येहि लोकेश्वरदिव्यमूर्ते गृहक्षत त्वं कनकाद्रिरूपम् ।
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां रक्षाध्वरं नो भवन्नमस्ते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत ।।
अस्तौषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ।।

गृहक्षताय० गृहक्षतमा० । तत्पश्चिमे द्विपदे कृष्णवर्णे त्रयोदशे दक्षिणोरौ—

एह्येहि दण्डायुध धर्मराज कालाञ्जनाभासविशालनेत्र ।
विशालवक्षःस्थलरौद्ररूपं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ।।
स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ।। यमाय० ः यमभा० ।
तत्पश्चिमे द्विपदे रक्तवर्णे चतुर्दशे दक्षिणजानौ—

एह्येहि गन्धर्वसुरप्रियेश रक्तोत्पलाभाससुधात्ममूर्ते ।
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां ममाध्वरं पाहि भगवन्नमस्ते ।।

ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽईडितः ।। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः ।।

मित्त्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तान्ध्रुवेण धर्म्मणा विश्श्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड इडितः ॥ गन्धर्वाय० गन्धर्वमा० ।

तत्पश्चिमे सार्द्धपदे कृष्णवर्णे पञ्चदशे दक्षिणजङ्घायाम्—

समाह्वयन्तं शिखिपृष्ठसंस्थं श्रीभृङ्गराजं जगतः शरण्यम् ।
खट्वाङ्गहस्तं वरदं जनेशं यजामि देवं स्वकुलाभिवृद्ध्यै ॥

ॐ सौरी बलाका शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक्श्श्वाविद्भौमी-शार्दूलोव्वृकः पृदाकुस्ते मन्न्यवे सरस्वते शुकः पुरुषवाक् ॥ भृङ्गराजाय० भृङ्गराजमा० ।

तत्पश्चिमे अर्द्धपदे पीते षोडशे दक्षिणस्फिचि—

एह्येहि गोरोचनदिव्यमूर्ते मृगप्रकृष्टार्तिहरासुरारे ।
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां ममाध्वरं पाहि भवन्नमस्ते ॥

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावतऽआजगन्था परस्याः ॥ सृकꣳ सꣳशाय पविमिन्द्रतिग्मं विशत्रून्ताढि विमृधो नुदस्व ॥ मृगाय० मृगमा० ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तदुत्तरे अर्द्धपदे रक्ते सप्तदशे पादयोः—

समाह्वयान् दिव्यपितॄन् कुलेशान् रक्तोत्पलाभानिह रक्तनेत्रान् ।
सुरक्तमाल्याम्बरभूषितांश्च नमामि पीठे कुलवृद्धिहेतोः ॥

ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तः समिधीमहि ॥ उशन्नुशत ऽआवहपितॄन्हविषे ऽअत्तवे ॥
पितृगणेभ्यो० पितृगणान् आवा० ।

तदुत्तरे सार्द्धपदे रक्ते अष्टादशे वामस्फिचि—

एह्येहि दौवारिकदण्डपाणे विशालपङ्केरुहलोचनेत्र ।
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां शिवाय नः पाहि भवन्नमस्ते ॥

ॐ द्वेविरूपे चरतः स्वर्थे ऽअन्यान्या वत्समुप धापयेते ॥
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो ऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः ॥ दौवारिकाय०
दौवारिकमा० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तदुत्तरे द्विपदे शुक्ले एकोनविंशे वामजङ्घायाम्—

एह्येहि सुग्रीव सुरेशपूज्य दशाश्ववाहत्रिगुणात्ममूर्ते ।
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां मनोरमां त्वं भगवन्नमस्ते ॥

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्नमसि ॥
सुग्रीवाय० सुग्रीवमा० ।

तदुत्तरे द्विपदे रक्ते विंशे वामजानौ—

एह्येहि विघ्नाधिपते सुरेन्द्र ब्रह्मादिदेवैरभिवन्द्यपाद ।
देवेश विद्यालय पुष्पदन्त गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥ पुष्पदन्ताय० पुष्पदन्तमा० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

तदुत्तरे द्विपदे शुक्ले एकविंशे वामोरौ—

एह्येहि लोकेश्वर पाशपाणे यादोगणैर्वन्दितपादपद्म ॥
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥

ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ वरुणाय० वरुणमा० ।

तदुत्तरे द्विपदे पीते द्वाविंशे वामपार्श्वे—

एह्येहि देवेश जगत्प्रताप महोग्ररूपासुरविश्वमूर्ते ।
महाबलः खड्गगदास्त्रपाणे पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥

ॐ यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनो दिन्द्रियाय ॥ इमन्तᳪ शुक्रम्मधुमन्तमिन्दुᳪ सोमᳪ राजानमिह भक्षयामि ॥ असुराय० असुरमा० ।

तदुत्तरे सार्द्धपदे कृष्णे त्रयोविंशे वामपार्श्वे एव—

एह्येहि कीला बलिलीढ विश्वयज्ञेऽत्र देवर्षभसंघसेव्य ।
गृहाण पूजां विधिना प्रदत्तां शोषे सुदक्षाय नमोऽस्तु शोष ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ॥
शं य्योरभिस्रवन्तु नः ॥ शोषाय० शोषमा० ।
तदुत्तरे अर्द्धपदे पीते चतुर्विंशे वाममणिबन्धे—

एहीति पापेन सदा विजेन देवासुराणां सचराचराणाम् ।
मां पाहि नित्यं सकलत्र पुत्रं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ एतत्ते रुद्राऽवसन्तेन परो मूजवतोऽतीहि ॥
अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा ऽअहिंसन्नः शिवोतीहि ॥ पापाय० पापमा० ।
तत्पूर्वे अर्द्धपदे रक्ते पञ्चविंशे वामबाहौ—

एह्येहि रोगाधिपतेऽमरेश नानाविधैश्वर्य हयादिमुक्त ।
ब्रह्मादिदेवैरभिवन्दनीय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ॥ आसां प्रजानामेषां पशूनाम्माभेर्म्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोगाय० रोगमा० । तत्पूर्वे सार्द्धपदे रक्ते षड्विंशे बामबाहावेव—

समाह्वयन्तं फणिराजमग्र्यं नानाफणामण्डलराजमानम् ।
भक्तैकगम्यं जनताशरण्यं यजाम्यहं नः स्वकुलाभिवृद्ध्यै ॥

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः ॥ हस्तग्घ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमाᳬं सम्परि पातु व्विश्वतः ॥ अहये० अहिमावा० ।

तत्पूर्वे द्विपदे रक्ते सप्तविंशे—

आवाहयेऽहं सुरदेवसेवितं जीमूतसंकाशमुमाधिनाथम् ।
मुख्याभिधं देवमिहार्थतायैः पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वᳬं सहस्राक्ष शतेषुधे ॥ निशीर्य्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव ॥ मुख्याय० मुख्यमावा० ।

तत्पूर्वे द्विपदे कृष्णे अष्टाविंशे वामप्रवाहौ—

एह्येहि भल्लाटशशाङ्कमूर्त्ते सुरासुरैरर्चितपादपद्म ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देदीप्यमानोऽप्सररसां गणेन गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः ॥ यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टङ्ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ भल्लाटाय० भल्लाटमावा० ।

तत्पूर्वे द्विपदे शुक्ले ऊनत्रिंशे वामप्रवाहावेव—

एह्येहि ताराधिपते सुरेश श्वेतोत्पलाभाससुधाकरेश ।
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥

ॐ सोमꣳ राजानमवसे ग्निमन्न्वारभामहे ॥ आदित्यान्न्विष्णुꣳ सूर्य्यम्ब्रह्माणञ्च बृहस्पतिꣳ स्वाहा ॥ सोमाय० सोममा० ।

तत्पूर्वे द्विपदे कृष्णे त्रिंशे वामांसे—

आगच्छतागच्छत सर्पदेवाः संसारभीतिप्रमुखा वरेण्याः ।
धराधरा रत्नविभूषिताश्च गृहीत पूजां वरदा नमो वः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ सर्पेभ्यो० सर्पान्० आ० ।

तत्पूर्वे सार्द्धपदे पीते एकत्रिंशे वामश्रोत्रे—

एह्येहि मातरदिते शुभप्रदे यज्ञाधिपे सर्वजगत्प्रिये शुभे ।
सुरप्रिये नो भव विश्वधात्रि यजामि देवीं प्रकृतिं पुराणीम् ॥

ॐ इड ऽएह्यदित ऽएहि काम्या ऽएत ॥ मयि वः कामधरणम्भूयात् ॥ अदित्यै० । अदितिमा० ।

तत्पूर्वे अर्द्धपदे पीते द्वात्रिंशे वामनेत्रे—

एह्येहि देवि त्वमिहात्रयज्ञे प्रसीद मातर्दमनुजान्वयस्थे ।
दिते ! महामोहकरी त्वमस्मान्पाहीन्द्रवन्दे प्रणता वयं ते ॥

ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः ॥ विश्वे देवा ऽअदितिः पञ्चजना अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ॥ दित्यै० दितिमा० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

मध्यमपदेषु ईशानपदोत्तरार्द्धे पदे शुक्ले-त्रयस्त्रिंशे मुखे तृतीयपङ्क्तिस्थे—

समाह्वयाः श्वेतसुपावनेशीरापस्वरूपाः प्रबलप्रपन्नाः ॥
सुपाशहस्ता वरदा अपोऽत्र यजामि देवीः कुलवृद्धिः हेतोः ॥

ॐ अप्स्वग्ग्नेसधिष्ट्व सौषधीरनु रुध्यसे ॥ गर्भे सञ्जायसे पुनः ॥ अद्भ्यो०अप आवा० ।

आग्नेयपदोत्तरार्द्धे शुक्ले चतुस्त्रिंशे दक्षिणहस्ते तृतीयपङ्क्तिस्थे—

समाह्वयं दिव्यमुदारकीर्तिं कलाकलाभिस्तु महाग्ररूपम् ।
सावित्रमग्र्यं सुविशालमूर्तिं यजामि देवं स्वकुलाभिवृद्ध्यै ॥

ॐ हस्तऽ आधाय सविताब्भ्रदब्भ्रिंठं० हिरण्ययीम् ॥ अग्ग्नेर्ज्योतिर्न्निचाय्य पृथिव्या ऽअद्ध्या भरदानुष्टुभेन च्छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥ सावित्राय० सावित्रमा० ।

नैर्ऋत्यपदोत्तरार्द्धे शुक्ले पञ्चत्रिंशे मेढ्रे तृतीयपङ्क्तिस्थे—

एह्येहि सर्वायुधशोभमानसुरासुराणां जयकृन्महोग्र ।
जयाभिदत्वं भव नो जयाय नानाविधालङ्कृतिमन्नमस्ते ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अषांढं युत्सु पृतंनासु पप्रिंᳬ स्वर्षामप्सां वृजनंस्य गोपाम् ॥ भरेषुजाᳬ सुंक्षितिᳬ सुश्रवंसञ्जयंन्तन्त्वामनुंमदेम सोम ॥ जयाय० जयमा० ।

वायव्यपदोत्तरार्द्धे रक्ते षट्त्रिंशे वामहस्ते तृतीयपङ्क्तिस्थे—

एह्येहि सर्वज्ञ पिनाकपाणे सुरासुरैर्वन्दितपादपद्म ।
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥

ॐ नमंस्ते रुद्रमुन्यवंऽ उतोत ऽइषंवे नमंः ॥ बाहुभ्यांमुत ते नमंः ॥ रुद्राय० रुद्रमा० ।

पूर्वपदद्वये कृष्णे सप्तत्रिंशे दक्षिणस्तने तृतीयपङ्क्तिस्थे—

आवाहये अर्यमणं महेशं सुरासुरैरर्चितपादपद्मम् ।
नीलाम्बुजाभासमयेश गृण्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ यदद्य सूरऽ उदिते नागा मित्रो ऽअर्यमा ॥ सुवाति सविता भगंः ॥ अर्यम्णे० अर्यमणमा० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

आग्नेयपदर्दाक्षणार्द्धे रक्ते अष्टत्रिंशो दक्षिणहस्ते तृतीयपङ्क्तिस्थे—

एह्येहि पीठे सवितर्दिनेश सप्ताश्वसंयुक्तरथाधिरूढ ।
रक्तोत्पलाभासविशालनेत्र गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ व्विश्श्वानि देव सवितर्द्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रं तन्नऽ आसुव ॥ सवित्रे० सवितारमा० ।

तत् पश्चिमे पदद्वये शुक्ले ऊनचत्वारिंशो जठरे दक्षिणे तृतीयपङ्क्तिस्थे—

एह्येहि रक्ताम्बर रक्तदेह संवैर्नसोनाशनरं गहर्तः ।
अरोग्यदातः सकलार्थनेत्रे विवस्वस्ते तुभ्यमहं नमामि ॥

ॐ व्विवंस्वन्नादित्यैष तेसोमपीथस्तस्मिन्न्मत्स्व ॥ श्रदस्मै नरो व्वचसे दधातन यदाशीर्द्दा दम्पती व्वाममश्नुतः ॥ पुमान्पुत्रो जायते व्विन्दते व्वस्वधा व्विश्श्वाहारप एधते गृहे ॥ विवस्वते० विवस्वतमा० ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

नैर्ऋत्यपदपूर्वार्द्धे रक्ते चत्वारिंशे वृषणयोः तृतीयपङ्क्तिस्थे—

आवाहयेऽहं विबुधाधिपं त्वां चतुर्दतं पर्वतसन्निभं प्रभुम्।
गजाधिरूढं सकलाप्तिदोहं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ सबोधि सूरिर्म्मघवा व्वसुपते व्वसुदावन् ॥ युयोध्यस्मद्द्वेषाᳫं सि विश्श्वकर्म्मणे स्वाहा ॥ विबुधाधिपाय० विबुधाधिपमा० ।

उत्तरे पदद्वये शुक्ले एकचत्वारिंशे जठरे वामे तृतीयपङ्क्तिस्थे—

एह्येहि रक्ताम्बरधारिमित्र सप्ताश्ववाहस्त्रिदशैकनाथ ।
श्वेतोत्पलाभास विशालनेत्र गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोवो देवस्य सानसि । द्युम्नञ्चित्रश्रवस्तमम् मित्राय० मित्रमा० ।

वायव्यपददक्षिणार्द्धे रक्ते द्विचत्वारिंशे वामहस्ते तृतीयपङ्क्तिस्थे—

एह्येहि सर्वायुधशोभमान श्रीराजयक्ष्मन् त्रिगुणात्ममूर्ते ।
पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां देवाधिदेवेश भवन्नमस्ते ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ नाशयित्रो बलासस्यार्शसऽ उपचितामसि ॥ अथो शतस्य यक्ष्माणाम्पाकारोरसि नाशनी ॥ राजयक्ष्मणे० राजयक्ष्माणमा० ।

तत्प्राक्पदद्वये रक्ते—

एह्येहि पृथ्वीधरशार्ङ्गपाणे उदारकीर्ते सुविशालमूर्ते ।
चतुर्भुजत्वमिह पूजयामि वरिष्ठदेवं स्वकुलाभिवृध्द्यै ॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ पृथ्वीधराय० पृथ्वीधरमा० ।

तत्प्राग् ईशानकोणदक्षिणार्धपदे एकपदे वा उरसि—

एह्येहि यज्ञेश्वर आवत्सं महाबलस्त्वं प्रथितः सुरेश ।
मयूरवाट् त्रिदशैकवन्द्य गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ आर्ते व्वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात् ॥ अग्ग्ने त्वाङ्कामयागिरा ॥ आपवत्साय० आपवत्समा० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततो मध्यपदचतुष्टये वास्तोः हृदये पीते—

एह्येहि विप्रेन्द्र पितामहेश हंसाधिरूढ त्रिदिशैकवन्द्य ।

श्वेतोत्पलाभास कुशाब्जहस्त गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेनऽ आवः ॥ स बुध्न्याऽउपमाऽ अस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ।

ब्रह्मोत्तरे एह्येति पातालतलाधिवासन् वास्तोष्पते स्वच्छ सुधर्ममूर्ते ।

गृहाधि देवेश परेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशोऽ अनमीवो भवानः । यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ वास्तोष्पतये० वास्तोष्पतिमा० ।

ततो मण्डलाद्बहिः ईशान्यां धूम्रे—

आवाहयेऽहं चरकीमिह त्वां सुरारताक्षीं गुरुशङ्खधारिणीम् ।

ईशानकोणस्थितितिमत्र कृत्य गृहाण पूजां वरदे नमस्ते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ यन्ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम् । तन्ते विष्याम्यायुषो न मध्यादथैतम्पितुमद्धि प्रसूतः ॥ नमो भूत्यै येदं चकार ॥ चरक्यै० चरकीमा० ।

आग्नेय्यां रक्तं—

एह्येहि दैत्ये मम वास्तुयज्ञे मार्जारतुल्याननहस्तजे त्वम् ।
चापासि खट्वाङ्गधरे विदारि गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

अक्षराजाय कितवं कृताया दिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुम्मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गाव्विकृन्तन्तं भिक्षमाण उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने शैलगम् ॥ विदार्य्यै० विदारीमा० ।

नैर्ऋत्यां पीते—

एह्येहि दैत्येऽसुरसङ्घमुक्ते सुपूतने मे मखकर्मणि त्वम् ।
पाहि त्वमस्मान् सततं शिवाय गृहाण मेऽर्चां वरदे नमस्ते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यन्दिशाञ्जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षम्पुरीतता नभऽ उदर्य्येण चक्रवाकौ मतं स्नाभ्यान्दिवं वृक्काभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्ना वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्ती र्हृदान्कुक्षिभ्याँ समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ॥ पूतनायै० पूतनामा० ।

वायव्यां कृष्णे—

आवाहये त्वामध्वरचारुसिद्ध्यै पापे तथा राक्षसि धूम्रवस्त्रे ।
रक्तानने शस्त्रधरे महेशि गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते ॥

ॐ यस्यास्ते घोरऽ आसञ्जुहोम्येषाम्बन्धानामवसर्ज्जनाय ॥ यान्त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिन्त्वाहम्परिवेद विश्वतः ॥ पापराक्षस्यै० पापराक्षसीमा० ।
स्कन्दादीन्स्थापयेत् ।

ततः पूर्वादिदिक्षु पूर्वे रक्ते—

एह्येहि देवेशि षडानन त्वं कपर्दितेजोऽशसमुद्भवो हि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मयूरवाहो जितकामदेवो गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽ उपस्तुत्यम्महि जातन्तेऽ अर्वन् ॥ स्कन्दाय० स्कन्द० ।

दक्षिणे कृष्णे—आवाहयेऽन्नार्यमणं महेशं सुरासुरैरर्चितपादपद्म ।
नीलाम्बुजाभास महेशकीर्ति गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ यदद्य सूरऽ उदिते नागा मित्रोऽ ऽअर्य्यमा ॥ सुवाति सविता भर्गः ॥ अर्यम्णे० अर्यमण० ।

पश्चिमे रक्ते—आवाहये त्वां प्रहरं च मुख्यं जृम्भायमाणं वरखड्गहस्तम् ।
प्रत्यग्दिशायां च सुरक्षणीयमत्राधिवासं कुरु जृम्भक त्वम् ॥

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सर्ठ० हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥ जृम्भकाय० जृम्भकमा० ।

उत्तरे पीते—आवाहये तं पिलिपिच्छिकं च मयूरपिच्छानि विधारयन्तम् ।
वामे तु हस्ते धनुरादधानं बाणं दधानं त्वितरे तु हस्ते ॥

१५७ ॐ का स्विदासीत्पूर्व्वचित्तिः किᳫंस्विदासीद् बृहद्वयंः ॥ का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला ॥ पिलिपिच्छाय० पिलिपिच्छ० ।

ततः पूर्वादिदिक्षु इन्द्रादीन् दशदिक्पालानावाहयेत ।

पूर्वे पीते—एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश ।
संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेश रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥ १५६

१४ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳫंस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ इन्द्राय० इन्द्र० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आग्नेये रक्ते—एह्येहि सर्वामर हव्यवाह मुनिप्रवीरैरभितोऽभिजुष्टम् ।
तेजोवतालोकगणेन सार्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते ॥

ॐ त्वन्नोऽ अग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽ अवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषांᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ अग्नये० अग्निं० ।

याम्ये कृष्णे—एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चितधर्ममूर्ते ।
शुभाशुभानन्द शुचामधीश शिवाय नः पाहि भगवन्नमस्ते ॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥ यमाय० यममावा० ।

नैर्ऋत्ये नीले—एह्येहि रक्षोगणनायक त्वं विशालवेतालपिशाचसङ्घैः ।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छ सातऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ निर्ऋतये० निर्ऋतिं० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पश्चिमे श्वेते—एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः ।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो व्वरुण हबोध्युरुशᳬ समानुऽ आयुः प्रमोषीः ॥ वरुणाय० वरुणमा० ।

वायव्ये धूम्रे—एह्येहि यज्ञेश समीरण त्वं मृगाधिरूढः सह सिद्धसङ्घैः ।
प्राणस्वरूपिन्सुखतासहायः गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरᳬ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । व्वायोऽ अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ वायवे० वायुमा० ।

उत्तरे श्वेते—एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्धम् ।
सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ व्वयᳬ सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ सोमा० सोम० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ऐशान्यां श्वेते—एह्येहि यज्ञेश्वर नस्त्रिशूल कपालखट्वाङ्गधरेण साकम् ।
लोकेन यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसेहूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ईशानाय० ईशानमा० ।

ईशानेन्द्रयोर्मध्ये ब्रह्मणि श्वेते—

एह्येहि सर्वाधिपते सुरेन्द्र लोकेन सार्धं पितृदेवताभिः ।
सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाध्वरं नः सततं शिवाय ॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ॥ यः सꣳ संते स्तुवते धायि पज्रऽ इन्द्रज्ज्येष्ठाऽ अस्माँ२ ॥ऽ अवन्तु देवाः ॥ ब्रह्मणे० ब्रह्माण० ।

निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये अनन्तं कृष्णम्—

एह्येहि पातालधरामरेन्द्र नागाङ्गनाकिन्नरगीयमानः ।
यक्षोरगेन्द्रामरलोकसार्धमनन्तरक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरानिवेशनि ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ अनन्ताय० अनन्त० ।

आवाहनम्--समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशकाः श्रीप्रदवास्तुदेवाः ।
आवाहनं वो वितनोमि भक्त्या शिख्यादिका भव्यकरा भवन्तु ॥

आसन--चित्रप्रभाभासुरमच्छशोभं मयार्पितं शोभितमासनं च ।
शिख्यादिका भव्यकरा भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सहाङ्गैः ॥

पाद्यम्--कस्तूरिकासुरभिचन्दनयुक्तमेलाचम्पालवङ्गघनसारसुवासितं च ।
पाद्यं ददामि जगदेकनिवास्तु देवाः सदा सुखकराः प्रतिमानयन्तु ॥

अर्घ्यम्--सौजन्यसौख्य-जननीजननीजनानां येषां कृपैव वसुधावसुधारिणी मे ।
ते सर्वदेवगुणपूरितवास्तुदेवा अर्घं सुखेन विमलं मम धारयन्तु ॥

आचमनीयम्-जल-कङ्कोलपत्रहरिचन्दनपुष्पयुक्तमेलालवङ्गलवलीघनसारसारम् ।
दत्तं सदैव हृदये करुणाशयेऽस्मिन् देवा भजन्तुशुभमाचमनीयमम्भः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain, Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पञ्चामृतम्-विमलगाङ्गजलेन युतं पयो घृतसितादधिसर्पिरुपान्वितम् ।
प्रियतरं भजतां परिगृह्णत यदि कृपा भवतां मयि सेवके ॥

शुद्धोदकस्नान–जले समादाय विचित्रपुष्पगुच्छानि नव्यानि निपातितानि ।
स्नानं विधेयं विबुधाः समन्तादागत्य युष्माभिरिहाङ्गणे मे ॥

वस्त्रम्–अनर्घ्यरत्नैरतिभासितानि चेतोहराण्यद्भुतप्रतिचिन्तितानि ।
शुभानि वस्त्राणि निवेदितानि गृह्णन्तु हार्देन च वास्तुदेवाः ॥

यज्ञोपवीतम्–कौशेयसूत्रविहितं विमलं सुचारुवेदोक्तरीतिविहितं परिपावनं च ।
साङ्गा निवेदितमिदं लघुवास्तुदेवा यज्ञोपवीतमुररीक्रियतां प्रसन्नाः ॥

उपवस्त्रम्–त्रिविधतापविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम् ।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना ॥

गन्धम्–शिख्यादयो मलयजातसुगन्धराशिं सप्रेम गृह्णत सुशीतलमच्छशोभम् ।
सन्तापविस्तृतिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथपूरकाः स्युः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अक्षतम्—शिख्यादयः केसरकुङ्कुमाक्तान् भक्त्या मया स्नेह समर्पितांश्च ।
गृह्णन्तु देवा द्रुतमक्षतान्मे सर्वान्तरायान् विनिवर्तयध्वम् ॥
पुष्पम्—बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम् ।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयनाञ्जलैः ॥
रक्तचूर्णम्—सौभाग्यसौन्दर्यविवर्द्धनानि शोणश्रियाऽऽनन्दविवर्धनानि ।
श्रीरक्तचूर्णानि मयाऽर्पितानि शिख्यादयो गृह्णत वास्तुदेवाः ॥
धूपम्—लवङ्गपाटीरसुगन्धपूर्णं नरासुराणामपि सौख्यदं च ।
लोकत्रये गन्धमयं मनोज्ञं गृह्णन्तु धूपं मम वास्तुदेवाः ॥
दीपम्—सद्वर्तिको घोरतमोपहन्ता दीपो मया सत्वरमर्पितो वः ।
प्रज्वालितो वह्निशिखासमेतः शिख्यादयो वेदविधानयुक्तः ॥
नैवेद्यम्—सिद्धान्नकर्पूरविराजमानं सौरभ्यसान्द्रेण सुशोभमानम् ।
नैवेद्यमेतत्सरसं पवित्रं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु ॥
ताम्बूलम्—शिख्यादिकाः खलु समेत्य गृहं मदीयं भक्त्यार्पितं परमगन्धयुतं सुरम्यम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एलालवङ्गबहुलं क्रमुकादियुक्तं ताम्बूलकं भजत मण्डपवास्तु देवाः ॥

दक्षिणाः—देवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयमानाः प्रभवः पुराणाः ।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां मे ध्यानेन भक्ते मयि वर्तितव्यम् ॥

नीराजनम्—नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारानपि दूरकर्त्री ।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति म्रियमानवस्य ॥

प्रदक्षिणाः—प्रदक्षिणाः सन्ति प्रदक्षिणास्तथा पदे पदे दुःखविनाशिका अपि ।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्द्धितस्य ॥

पुष्पाञ्जलिम्—शिख्यादिका मे खलु वास्तुदेवा गृह्णन्तु पुष्पाञ्जलिमत्र शीघ्रम् ।
पीडाहरा भव्यकरा विशाला भवन्तु भूपालनतत्पराश्च ॥

स्तुतिः—जानामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं क्षपयन्तु नित्यम् ।
शिख्यादिकाः सुविमलाः सुखमाकिरन्तु कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितान् समन्तात् ॥

उपर्युक्तक्रम से षोडशोपचार पूजनकर उसके ऊपर ताम्रकलश को पूर्वोक्त स्थापनविधि से स्थापन और पूजनकर उस कलश के ऊपर स्वर्ण की वास्तुप्रतिमा का अग्न्युत्तारण पूर्वक स्थापन करे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इस संकल्प को करे—

अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं [सपत्नीकोऽहम्] अस्यां वास्तुमूर्त्तौ अवघातादिदोषपरिहारार्थ-मग्न्युत्तारणं देवतासान्निध्यार्थं च प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥

संकल्प के उपरांत मूर्त्ति को पात्र में रखकर घृत से अंजन कर उसके ऊपर पञ्चामृत की निरन्तर धारा दे। इन वैदिक मंत्रों का उच्चारण कर अग्न्युत्तारण कर्म करे—

तद्यथा—

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यं शिवो भव ॥ हिमस्य त्वा-जरायुणाग्ने परि व्ययामसि ॥

पावकोऽअस्मभ्यं शिवो भव ॥ उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा ॥ अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि-ताभिरागहि सेमन्नो यज्ञम्पावकवर्णं शिवङ्कृधि ॥ अपामिदन्न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम् ॥

अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्यं शिवोभव ॥ अग्नेपावकरोचिषामन्द्रयादेव-जिह्वया ॥

आदेवान्वक्षियक्षिच ॥ सनःपावकदीदिवोग्नेदेवाँ२॥ ऽइहावह ॥ उपयज्ञं हविश्चनः ॥
पावकयायश्चितयन्त्याकृपाक्षामन्रुरुचऽउषसोनभानुना ॥ तूर्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयोघृणेनतं-तृषाणोऽअजरः ॥ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ॥

अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्मभ्यंशिवोभव ॥ नृषदेवेडप्सुषदेवेड्बर्हिषदे-वेड्वनसदेवेड्स्वर्विदेवेट् ॥

येदेवादेवानांयज्ञियायज्ञियानांसंवत्सरीणमुपभागमासते ॥

अहुतादोहविषोयज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयम्पिबन्तुमधुनोघृतस्य ॥ येदेवादेष्वधिदेवत्त्वमायन्न्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽअस्य ॥

येभ्योनऽऋतेपवतेधामकिञ्चननतेदिवोनपृथिव्याऽअधिस्नुषु ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राणदाऽअंपानदाव्यानदाव्वर्च्चोदाव्वरिवोदाः ॥ अन्न्याँस्तेंऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयंः पावकोऽ-
अस्मभ्यं शिवोभव ॥

इन वैदिक मंत्रों से अग्न्युतारण कर मूर्ति को बायें हाथ में रखकर दाहिने हाथ से आच्छादन कर निम्न क्रम से प्राण प्रतिष्ठा करें—

प्राणप्रतिष्ठा क्रमः—

ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ ष सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः प्राणा इह प्राणाः ।

ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः जीव इह स्थितः ।

ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः वाङ्मनस्त्वक्-
चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ततो ॐ मनो जूति० ॥

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मां हेतिति कश्चन ॥

प्राण प्रतिष्ठा के बीज मंत्र व श्लोक का उच्चारण करके वास्तु पुरुष की प्रतिष्ठा का कलश के ऊपर के स्थापन करे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार आवाहन व पूजन करें—

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः ।
यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

वास्तुपुरुषाय नमः वास्तुपुरुषमावाहयामि ।

इस प्रकार अर्घ देवें—

ॐ पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षार्थहेतवे ।
तद्विनार्चनं सिध्यन्ति यज्ञदानान्यनेकशः ॥१॥
अयोने भगवन् भर्ग ललाटस्वेदसम्भव ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तोः स्वामिन्नमोऽस्तु ते ॥२॥

पायस बलिदान क्रमः—

ॐ शिखिने एष पायसबलिर्न मम १ ॐपर्ज्जन्याय० २ ॐजयन्ताय० ३ ॐकुलिशायु० ४ ॐ सूर्याय० ५ ॐ सत्याय० ६ ॐ भृशाय० ७ ॐ आकाशाय० ८ ॐ वायवे ९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ पूषणे० १० ॐ वितथाय० ११ ॐ गृहक्षताय० १२ ॐ यमाय० १३ ॐ गन्धर्वाय० १४ ॐ भृङ्गराजाय० १५ ॐ मृगाय० १६ ॐ पितृभ्यो० १७ ॐ दौवारिकाय० १८ ॐ सुग्रीवाय० १९ ॐ पुष्पदन्ताय० २० ॐ वरुणाय० २१ ॐ असुराय० २२ ॐ शोषाय० २३ ॐ पापाय० २४ ॐ रोगाय० २५ ॐ अहये० २६ ॐ मुख्याय० २७ ॐ भल्लाटाय० २८ ॐ सोमाय० २९ ॐ सर्पेभ्यो० ३० ॐ अदित्यै० ३१ ॐ दित्यै० ३२ ॐ अद्भ्यो० ३३ ॐ सावित्राय० ३४ ॐ जयाय० ३५ ॐ रुद्राय० ३६ ॐ अर्यम्णे० ३७ ॐ सवित्रे० ३८ ॐ विवस्वते० ३९ ॐ विबुधाधिपाय० ४० ॐ मित्राय० ४१ ॐ राजयक्ष्मणे० ४२ ॐ पृथ्वीधराय० ४३ ॐ आपवत्साय० ४४ ॐ ब्रह्मणे० ४५ ॐ वास्तोष्पतये० ४६ ॐ चरक्यै नमः—एष दधिमाषबलिर्न मम ४७ ॐ विदार्यै० ४८ ॐ पूतनायै० ४९ ॐ पापराक्षस्यै० ५० ॐ स्कन्दाय० ५१ ॐ अर्यम्णे ५२ ॐ जृम्भकाय० ५३ ॐ पिलिपिच्छाय० ५४ ॐ इन्द्राय० ५५ ॐ अग्नये० ५६ ॐ यमाय० ५७ ॐ निर्ऋतये० ५८ ॐ वरुणाय० ५९ ॐ वायवे० ६० ॐ सोमाय० ६१ ॐ ईशानाय० ६२ ॐ ब्रह्मणे० ६३ ॐ अनन्ताय० ६४

निम्न क्रम से प्रधान वास्तुपुरुष को बलि देवे—

नानापक्वान्न संयुक्तं नानागन्धसमन्वितम् ।
बलिं गृहाण देवेश वास्तुदोषप्रणाशक ॥

ॐ वास्तुपुरुषाय एष बलिर्न मम ।

इन दो श्लोकों का क्रम से उच्चारण कर वास्तुपुरुष को नारिकेल और स्वर्ण समर्पण कर प्रार्थना करे—

अथ प्रार्थना—

ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धाविवर्जितम् ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
नमस्ते वास्तु देवेश सर्वदोषहरो भव ।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ॥

फिर सपत्नीक यजमान रक्षोघ्न और पवमानसूक्त से जल तथा दूध की धारा अलग-अलग कमण्डलु (ताँबे और पीतल) के पात्र से दे—त्रिसूत्री या वस्त्र से अग्निकोण से मण्डपको चारों ओर से वेष्टन करे—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्रक्रम——

ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ२ऽइभेन ॥ तृष्वीमनु प्रसितिन्द्रूणानोऽस्तासि विद्ध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥ तव भ्रमास ऽआशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः ॥

तपूᳬंष्यग्ग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो विसृज विष्वगुल्काः ॥ प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो ऽअस्याऽ अदब्धः ॥

यो नो दूरे ऽअघशᳪसो यो ऽअन्त्यग्ग्ने माकिष्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥ उदग्ग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्राँ२ ऽओषतात्तिग्महेते ॥

यो नो ऽअरातिᳪ समिधानचक्रेनीचातन्धक्ष्यतसन्नशुष्कम् ॥ ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ग्ने ॥

अव स्थिरा तनुहि यातुजूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणीहि शत्रून् ॥ अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि ॥

ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः । पवित्रेण शतायुषा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ अग्नऽ आयूंषि पवस ऽआसुवोर्जमिषं च नः ॥ आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ॥

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् ॥ अग्ने क्रत्वा क्रतूँरनु ॥ यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने वितितमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनातु मा मा ॥ पवमानः सो ऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः ॥

यः पोता स पुनातु मा ॥ उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च ॥ मां पुनीहि विश्वतः ॥

वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः ॥ तया मदन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

इति मण्डपाङ्गवास्तुपूजनम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

* अथ मण्डप-तोरणादिपूजनम् *

निम्न संकल्प करे—

६२० देशकालौ सङ्कीर्त्य–अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं (सपत्नीकोऽहं) विष्णुयागाङ्ग भूतं मण्डप- प्र
देवानां स्थापनं पूजनं करिष्ये ।

१७३ इति सङ्कल्प्य रक्तवर्णं मध्यवेदीशानस्तम्भे (नन्दायै)–

एह्येहि विप्रेन्द्र पितामहेश हंसादिरूढत्रिदशैकवन्द्य ।
श्वेतोत्पलाभासकुशाम्बुहस्त गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥१॥

हंसपृष्ठसमारूढ देवतागणपूजित ।
ईशानकोणस्थितं स्तम्भमलङ्कुरु जगत्पते ॥२॥

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ॥ स बुध्न्या उपमा अस्य-
विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ १७

ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ सावित्र्यै० सावित्रीमा० । वास्तुदेवतायै० वास्तुदे० । ब्राह्म्यै० ब्राह्मीमी० । गंगायै० गंगामा० ।

ततो गन्धादिभिः सपूज्य प्रार्थना :—

कृष्णाजिनाम्बरधर पद्मासनचतुर्भुज ।
जटाधार जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव ॥

नमस्कारः—वेदाधाराय वेदाय यज्ञगम्याय सूरये ।
कमण्डल्वक्षमालास्रुक्स्रुवहस्ताय ते नमः ॥ स्तम्भमालभेत्—

ॐऊर्द्ध्वऽऊषुणऽऊतयेतिष्ठादेवोनसविताऊर्द्ध्वोव्वाजस्यसनिताबदञ्जिभिर्व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे ॥

स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः ।

शाखाबन्धनम्—ॐआयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्रयन्त्स्वः ॥

अनुमन्त्रणम्—ॐ यतो यतःसमीहसेततो नोऽअभयं कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नःपशुभ्यः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अनेन कृतार्चनेन मध्यवेदीईशाकोणस्थितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्ताम् । एवं सर्वत्र ।

आग्नेयस्तम्भे (वसुदायै) कृष्णवर्णं विष्णुं पूजयेत्—

आवाहयेतं गरुडोपरि स्थितं रमार्धदेहं सुरराजवन्दितम् ।
कंशान्तकं चक्रगदाब्जहस्तं भजामि देवं वसुदेवसूनुम् ॥
पद्मनाभं हृषीकेशं कंसचाणूरमर्दन ।
आगच्छ भगवन्विष्णो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाᳪंसुरे स्वाहा ॥

विष्णवे नमः विष्णुमा० । लक्ष्म्यै० । नन्दायै० । अदित्यायै० । वैष्णव्यै० ।

इस प्रकार पूजन कर नमस्कार करे—

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते पुरुषोत्तम ।
नमस्ते सर्वलोकात्मन् विष्णवे ते नमो नमः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवदेवं जगन्नाथ विष्णो यज्ञपते विभो ।
पाहि दुःखाम्बुधेरस्मान्भक्तानुग्रहकारक ॥

स्यम्भमालभेत्—ॐ उद्धूर्व ऽऊषुणं० । स्तम्भशिरसि—ॐनागमात्रे० । ॐ आयङ्गौरिति-शाखाबन्धनम् ।

ॐ शतौयतः— इति अनुमन्त्रणम् ।

नैर्ऋत्यस्तभे–(भद्रायै) श्वेतं शंकरं पूजयेत्–

एह्येहि गौरीश पिनाकपाण शशांकमौले वृषभाधिरूढ ।
देवादिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥
गंगाधर महादेव पार्वतीप्राणवल्लभ ।
आगच्छ भगवन्नीश स्तम्भेस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गौर्यै नमः । माहेश्वर्यै० । शोभनायै० । भद्रायै० । शंकराय० शंकरमा० ।

नमस्कारः—वृषवाहनाय देवाय पार्वतीपतये नमः ।

वरदायार्द्धकायाय नमश्चन्द्रार्द्धमौलिने ॥

पञ्चवक्त्र वृषारूढ त्रिलोचन सदाशिव ।

चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्तिकरो भव ॥

स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे० । ॐ आयं गौः ।

ॐ ऋतौ यतः । वायव्यस्तम्भे–(अदित्यै) पीतस्तम्भ इन्द्रं पूजयेत्–

ॐ एह्येहि वृत्रघ्न गजाधिरूढ सहस्रनेत्र त्रिदशैकराज ।

शचीपते शक्र सुरेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

शचीपते महाबाहो सर्वाभरणभूषित ।

आगच्छ भगवन्निन्द्र स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ।। ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।। इन्द्राय० इन्द्रमा० । इन्द्राण्यै० । आनन्दायै० । विभूत्यै० ।

पूजन कर नमस्कार करे—

पुरन्दर नमस्तेऽस्तु वज्रहस्त नमोऽस्तु ते ।
शचीपते नमस्तुभ्यं नमस्ते मेघवाहन ।।
देवराज गजारूढ पुरन्दर शतक्रतो ।
वज्रहस्त महाबाहो वाञ्छितार्थप्रदो भव ।

स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्द्ध्व ऊषुणं० ।

स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः । ॐ आयङ्गौः । ॐ यतोयतः ।

ततो बाह्ये मण्डपे ईशानकोणे (भूत्यै) रक्तस्तम्भे सूर्यम्—

आवाहयेत्तं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं द्युमणिं ग्रहेशम् ।
सिन्दूरवर्णं प्रतिभावभासं भजामि सूर्यं कुलवृद्धिहेतोः ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पद्मनाभ महाबाहो सप्तश्वेताश्ववाहन ।
आगच्छ भगवन्भानो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐआकृष्णेन रजंसा वर्त्तमानो निवे॒शयन्नमृतं मर्त्यञ्च ॥ हि॒रण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ सूर्याय० सूर्यमा० सूर्यै० । सावित्र्यै० । मंगलायै० ।

पूजन कर नमस्कार करे—

ॐ नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरिञ्चिनारायणशङ्करात्मने ॥

पद्महस्त रथारूढ पद्मासन सुमङ्गल ।
क्षमां कुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोऽस्तु ते ॥

स्तम्भमालभेत्—ॐऊर्द्ध्वऽऊषुण० ।

ईशानपूर्वयोरन्तराले (सरवस्यै०) श्वेतस्तम्भे गणेशम्—

आवाहयेत्तं गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासमशेषवन्द्यम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या ॥

लम्बोदर महाकाय गजवक्त्र चतुर्भुज। आगच्छ गणनाथस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधिनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम ॥ आहमजानि गर्भधमात्वमजासिगर्भधम् ॥ गणपतये० गणपतिमा० विघ्नहारिण्यै० । जयायै० । नागमात्रे० । ॐआयं गौः । ॐयतोयतः ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।
लम्बोदर महाकाय सततं मोदकप्रिय ।
गौरीसुत गणेश त्वं विघ्नराज प्रसीद मे ॥

स्तम्भमालभेत्—ॐऊर्द्ध्वऊषुण० । नागमात्रे न० । ॐआयं गौः० । ॐयतोयतः ॥

पूर्वाग्नेययोरन्तरालस्तंभे—(पूर्वसन्ध्यायै०) कृष्णवर्णस्तंभेयमम्—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

त्रि० श०

एह्येहि दण्डायुध धर्मराज कालाञ्जनाभास विशालनेत्र ।
विशालवक्षस्थलरुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥
चित्रगुप्तादिसंयुक्तदण्डमुद्गरधारक । आगच्छ भगवन्धर्म सप्तमस्तम्भमाविश ॥

१८१ ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे । देवस्त्वा सविता मध्वा नक्तु पृथिव्याः संᳪ स्पृशस्पाहि । अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥ यमाय० यममा० । अञ्जन्यै० । क्रूरायै० नियन्त्रै० । १८१

पूजन कर नमस्कार करे—

ईषत्पीन नमस्तेऽस्तु दण्डहस्त नमोऽस्तु ते ।
महिषस्थ नमस्तेऽस्तु धर्मराज नमोस्तु ते ॥
धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिपते यम ।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय ॥

१६ स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु णं० । बाह्याग्नेयकोणस्तंभे—(मध्यसंध्यायै०) कृष्णवर्णस्तम्भे—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वन्दितपादपद्म ।
नानाफणामण्डलराजमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥
आशीविषसमोपेत नागकन्या विराजित ।
आगच्छ नागराजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ नागराजाय० नागराजमा० । धरायै० । पद्माय० । महापद्मायै० ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमः खेटक हस्तेभ्यस्त्रिभोगेभ्यो नमो नमः ।
नमो भीषणदेवेभ्यः खड्गघृग्भ्यो नमो नमः ॥
खड्गखेट धराः सर्पाः फणामण्डलमण्डिताः ।
एकभोगाः साक्षसूत्रा वरदाः सन्तु मे सदा ॥

स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० । अग्निदक्षिणयोरन्तरालस्तंभे--(पश्चिमसन्ध्यायै०)
श्वेतस्तम्भे स्कन्दम्—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवाहयामि देवेशं षण्मुखं कृत्तिकासुतम् ।
रुद्रतेजसमुत्पन्न देवसेनासमन्वितम् ॥
मयूरवाहनं शक्तिं पाणि वै ब्रह्मचारिणम् ।
आगच्छ भगवन् स्कन्द स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू-ऽउपस्तुत्यम्महि जातन्तेऽअर्व्वन् ॥ स्कन्दाय स्कन्दमा० । जयायै० । शक्तये० ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमः स्कन्दायदेवाय घण्टाकुक्कुटधारिणे ।
पिनाकशक्तिहस्ताय षण्मुखाय च ते नमः ॥
मयूरवाहनस्कंन्द गौरीसुत षडानन ।
कार्तिकेयमहाबाहो दयांकुरु दयानिधे ॥

ॐ ऊर्ध्वऽऊषुणं० ६ । दक्षिण नैर्ऋत्ययोर्मध्ये—धूम्रस्तम्भे वायुम्—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

आवाहयामि देवेशं भूतानां देहधारिणम् ।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ॥
ध्वजहस्तं गन्धवहं त्रैलोक्यान्तरचारिणाम् ॥
आगच्छ भगवन् वायो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधोभव ॥

ॐ तव व्वायवृहस्पते त्वष्टूर्ज्जामातरद्भुत ॥ अवा॑ᳪ स्यावृणीमहे ॥ वायवे वायुमा० । वायव्यै० । गायत्र्यै० । मध्यमसन्ध्यायै० ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमो धरणिपृष्ठस्थ समीरण नमोऽस्तु ते ।
धूम्रवर्ण नमस्तेऽस्तु शीघ्रगामिन्नमोस्तु ते ॥
धावन्धरणि पृष्ठस्थ ध्वजहस्त समीरण ।
दण्डहस्त मृगारूढ वरं देहि वरप्रद ॥

ॐ ऊर्द्ध्वऽ ऊषुणं इति १० नैर्ऋत्य बाह्यस्तम्भे पीतस्तम्भे सोमम्—

आवाहयामि देवेशं शशांकं रजनीपतिम् ।
क्षीरोदधिसमुद्भूतं हरमौलिविभूषणम् ॥
सुधाकरं द्विजाधीशं त्रैलोक्यप्रीतकारकम् ।
औषध्याप्यायनकरं सोमं कन्दर्पवर्धनम् ॥
आगच्छ भगवन्सोम स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ सोममाय० सोममा०। सावित्र्यै० । अमृतकलायै० । विजयायै० ।

पूजन कर नमस्कार करे—

अत्रिपुत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते शशिलाञ्छन ।
श्वेताम्बर नमस्तेऽस्तु ताराधिप नमोऽस्तु ते ॥
अत्रिपुत्र निशानाथ द्विजराज सुधाकर ।
सोमत्वं सौम्यभावेन ग्रहपीडां निराकुरु ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० । नाग० । आरं० । यतोयतः । ११ नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये—श्वेतस्तम्भे वरुणम्—

आवाहयामि देवेशं सलिलस्याधिपं प्रभुम् ।
शंखपाशधरं सौम्यं वरुणं यादसां पतिम् ॥
कुम्भीरथसमारूढं मणिरत्नसमन्वितम् ।
आगच्छ देव वरुण स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥ वरुणाय० वरुणामा० । वारुण्यै० । पाशधारिण्यै० । बृहत्यै० ।

पूजन कर नमस्कार करे—

वरुणाय नमस्तेऽस्तु नमः स्फटिकदीप्तये ।
नमस्ते श्वेतहाराय जलेशाय नमो नमः ॥
शङ्खस्फटिकवर्णाभ श्वेतहाराम्बरावृत ।
पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्द्ध्वऊषुर्ण १२ पश्चिमवायव्यान्तराले श्वेतस्तम्भे अष्टवसून्—

आवाहयामि देवेशान्वसूनष्टौ महाबलान् ।
सौम्यमूर्तिधरान्देवान्दिव्यायुधकरान्वितान् ॥
शुद्धस्फटिकसंकाशान्नानावस्त्रविराजितान् ।
अश्वारूढान्दिव्यवस्त्रान् सर्वालङ्कारभूषितान् ॥
आवाहयामि स्तम्भेऽस्मिन्वसूनष्टौ सुखावहान् ।

ॐ व्वसुंभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यंस्त्वादित्येभ्यंस्त्वासञ्जानाथान्द्यावपृथिवी मित्रावरुंणौत्त्वावृष्ट्यांवताम् ॥ व्व्यन्तु व्वयोक्त्कठंरिहाणामरुताम्पृषंतीर्गच्छ व्वशापृश्निर्भूत्वा दिवंङ्गच्छ ततों नो व्वृष्टिमावंह ॥ चक्षुष्पाऽअंग्नेऽसि चक्षुंर्म्मे पाहि ॥ अष्ट वसुभ्यो० अष्टवसूनावा० । (अदितये०) अणिमायै० । भूत्यै० । गरिमायै० ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमस्करोमि देवेशान्नानावस्त्रविराजितान् ।
शुद्धस्फटिकसंकाशान्दिव्यायुधधरान्वसून् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहाः पुष्पमालाविभूषिताः ।
वसवोऽष्टौ महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा ॥

स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्वऽऊषुणं० १३ वाव्यकोणे पीतस्तम्भे धनदम्--

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम् ।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतं विभुम् ॥
दिव्यमालाम्बरधरं गदाहस्तं महाभुजम् ।
आगच्छ यक्षराज त्वं यज्ञेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ सोमो धेनुठं० सोमोऽअर्व्वन्तमाशुठं० सोमो व्वीरङ्कर्म्मण्यन्ददाति॥ सादन्यं व्विदत्थ्यठं० सभेयम्पितृश्रवणं ज्योददाशदस्मै ॥ धनदाय न० धनद० अदित्यै०। लघिमायै० ।

पूजन कर नमस्कार करे—

यक्षराज नमस्तेऽस्तु नमस्ते नरयानग ।
पीताम्बर नमस्तेऽस्तु गदापाणेनमोऽस्तु ते ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिव्यदेह धनाध्यक्ष पीताम्बर गदाधर।
उत्तरेश महाबाहो वाञ्छितार्थफलप्रद ॥

स्तम्भमालभेत्--ॐ ऊर्द्ध्वऽ ऊषुण० १४ उत्तरवायव्ययोर० पीतस्तम्भे० गुरुम्--

आवाहयामि देवेशं गुरुं त्रिदशपूजितम् ।
हेमगोरोचनावर्णं पीनस्कन्धं सुवक्षसम् ।
शङ्खं च कलशं चैव पाणिभ्यामिहबिभ्रतम् ॥

ॐ बृहस्पते अतियदर्य्योऽअर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिमा० । पौर्णमास्यै० । सावित्र्यै०

पूजन कर नमस्कार करे—

ब्रह्मपुत्र नमस्तेऽस्तु पीतध्वज नमोऽस्तु ते।
त्रिदशार्चित देवेश सिन्धूद्भव नमोऽस्तु ते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

पूजितोऽसि मया शक्त्या दण्डहस्तबृहस्पते ॥
क्रूरग्रहाभिभूतस्य शान्ति देवगुरो कुरु ॥

स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्वऽऊषुण० १५ उत्तरेशानयोरन्तरे रक्तस्तम्भे विश्व कर्णम्—

आवाहयामि देवेशं विश्वकर्माणमीश्वरम् ।
मूर्तामूर्तकरं देवं सर्वकर्तारमीश्वरम् ॥
त्रैलोक्यसूत्रकर्तारं द्विभुजं विश्वदर्शितम् ।
आगच्छ विश्वकर्मंस्त्वंस्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ विश्वकर्म्मन्न्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम् ॥ तस्म्मै विशः समनमन्त-पूर्व्वीरयमुग्ग्रो व्विहव्व्यो यथासत् ॥ विश्वकर्मणे० विश्वकर्माणमा० । सिनीवाल्यै० । सावित्र्यै० । वास्तुदेवता० ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमामि विश्वकर्माणं द्विभुजं सर्वदर्शिनम् ।
त्रैलोक्यसूत्रकर्तारं महाबलपराक्रमम् ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसीद विश्वकर्मंस्त्वं शिल्पशास्त्रविशारद ।
सदण्डपाणे द्विभुजस्तेजोमूर्ति प्रतापवान् ॥

स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० १६

एतावत्कर्म मण्डपान्तः स्थित्वा कर्तव्यमिति प्रतिष्ठासारिणी इति मण्डपे षोडशस्तम्भपूजा रुद्रकल्पद्रुमप्रतिष्ठाभास्करायुक्ता । स्तम्भशिरसि वल्किासु—ॐ नागमात्रे नमः १

सर्वेषां नागराजानां पातालतलवासिनाम् ।
नागमातर आयान्तु भवन्तु सगणाः स्थिराः ।

ॐ आयङ्गौः०

पूजन कर नमस्कार करे—

नमोऽस्तु वल्किावन्ध सुदृढत्वं शुभास्पिदम् ।
एनं महामण्डपन्तु रक्ष-रक्ष निरन्तरम् ॥

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽ अभयङ्कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निम्न श्लोक से प्रार्थना करें—

शेषादिनागराजनाः समस्ता मम मण्डपे।
पूजाङ्गृह्णन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि॥

इस वैदिक मंत्र व श्लोक का उच्चारण कर भूमि का स्पर्श करे—

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री॥ पृथिवीं यच्छ पृथिवीन्दृंह पृथिवीं माहिंस सोः॥

भूमिर्भूमिमवगान्माता यथा मातरमप्यगात्।
भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स भिद्यताम्॥

पुष्पांजलि लेकर इस श्लोक का उच्चारण करें—

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन। नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज॥

ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल-प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा।

ॐ नमः शिवाय—

उपरांत पुष्पांजलि को मण्डप में फेकें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब प्रचलित सम्प्रदाय के अनुसार अग्निपुराणोक्त तोरणपूजा लिखते हैं—अग्नि पुराणोक्त कलशद्वय स्थापन वर्जित है, कलश एक ही होना चाहिए जैसा कि प्रतिष्ठा रत्नमाला में निर्देश है।

प्रार्थना:—आयाहि वज्रसंघातपूर्वद्वार कृताधिप।
ऋग्वेदाधिपते तुभ्यं सुशोभन नमोऽस्तु ते॥
प्राचीं तु दिशमाश्रित्य सुदृढो नाम तोरणः।
महावीर्यो महाकाय इण्द्रायुध समप्रभः॥

एह्येहि ऋग्वेदाधिष्ठित इन्द्रदेवत्य शान्त अश्वत्थ। सुदृढतोरण एनंयज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान्निवारय॥ ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्। ॐ स्योना पृथिवीति वा। सुदृढतोरणाय नमः। सुदृढतोरणामा०। त्रिशूलशृङ्गेषु शंखादिषु वा ॐ इन्द्राय० इन्द्रमा। ॐ धात्रे न० धातारमा०। भगाय भगमा०॥

इत्यादिनावाह्य तोरणशाखयोः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—
यथा मेरुगिरेः शृङ्गे देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्र कलशविधिना कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशोपरि—

ॐ ध्रुवाय नमः । ॐ अध्वराय नमः । इति वसुद्वयमावाह्य तत्रैव नन्दिने० । महाकालाय० । पुनस्तत्रैव—धात्रे० । विधात्रे नमः । द्वारश्रियै० । गणेशाय० । इत्यूर्ध्वम् ।

वास्तुपुरुषाय नमः—वास्तुमीत्यध आवाह्य पुनर्द्वारशाखयोः—भूर्लोकाय० भूर्लोकमा० भुवर्लोकाय० । तत्रैव-आदित्याय नमः । ॐ मध्ये—मेधापतये नमः ।

इस प्रकार पूजन कर दक्षिण की ओर जाकर आचमन एवं मौली बन्धन करे—

औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम् ।
रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः ॥

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा व्वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायद्ध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघशंस० सो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥

ॐ सुभद्रतोरणाय नमः सुभद्रतोरणमा० ॥ विकटतोरणाय० विकटतोरमा० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इति सम्पूज्य तत्र त्रिशूलभृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन—

ॐ सूर्यपूषाभ्यां० सूर्यपूषाणौ० । मध्ये—ॐ मित्राय० । ॐ वरुणाङ्गारकाभ्यां० ।

पूजन कर प्रार्थना करे—

यथा मेरुगिरेः शृंगं देवानामालयः सदा ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव ॥

तत्र पूर्वविधिना कलशं संस्थाप्य कलशोपरि—ॐ पर्जन्याय नमः । ॐ अशोकाय० । मध्ये—ॐ धरायै० ।

इस प्रकार पूजनकर पश्चिम की ओर जाकर आचमन एवं मौली बंधन करे—

प्लाक्षं च पश्चिमे भीमं तोरणं स्वर्णसन्निभम् ।
रक्षार्थश्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः ॥

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ॥ निहोता सत्सि बर्हिषि ॥

ॐ सुभीमतोरणाय नमः । ॐ सुकर्मतोरणाय नमः ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतिसम्पूज्य तत्र त्रिशूलभृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन—

ॐअर्यमशुक्राभ्यां नमः। अर्यमशुक्रौ०। मध्ये– ॐ अंशवे नमः। अंशुम्०। ॐ विवस्वद्-दुधाभ्यां०। विवस्वद्बुधौ०॥

इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे —

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठान को भव॥

तत्रैकं कलशं संस्थाप्य कलशोपरि—

ॐ अनिलाय०। ॐ अनलाय०। मध्ये—ॐ वाक्पतते नमः। ॐ वाक्पतिमा०।

इस प्रकार पूजन कर उत्तर की ओर जाकर आचमन एवं मौली बंधन करे —

न्यग्रोधतोरणमिव उत्तरे च शशिप्रभम्।
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम्॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तु नः॥ ॐसुहोत्रतोरणाय०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति सम्पूज्य—तत्र त्रिशूलशृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन—ॐ त्वष्टृसोमाभ्यां० । ॐ सवितृकेतुभ्यां० । ॐ विष्णुशानिभ्यां नमः ॥

इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव ॥

तत्र—एकं कलशं संस्थाप्य कलशोपरि—

ॐ प्रत्यूषाय० । ॐ प्रभासाय० । मध्ये—विघ्नेशाय० इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

तोरणाधिष्ठिता देवाः पूजिता भक्तिमार्गतः । ते सर्वे मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षां कुर्वन्तु वः सदा ।

॥ इति तोरणपूजा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अथ मण्डपद्वारपूजा

पूर्वं गत्वा आचम्य प्राणानायम्य ततो देशकालौ सङ्कीर्त्य—

अस्मिन् विष्णुयाग कर्मणि पूर्वादिद्वारपूजाङ्करिष्ये । इति सङ्कल्प्य—

आयाहि वज्रसङ्घात पूर्वद्वारकृपाधिप ।
ऋग्वेदाधिपते तुभ्यं सुशोभन नमोऽस्तुते ॥

उपर्युक्त श्लोक का उच्चारण कर दो कलशों को दरवाजे के दोनों तरफ स्थापित करे—

प्रथमदक्षिणकलशोपरि—ॐ प्रशान्ताय० ।

द्वितीयोत्तरवामकलशोपरि—ॐ शिशिराय० ।

ततो मध्ये तृतीयप्रथमस्थापितकलशोपरि—ॐ ऐरावताय० ।

इति गन्धादिना सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम् ।
सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम् ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ द्वारश्रियै नमः—इति ऊर्ध्वम् । अधः—देहल्यै नमः ।
दक्षिणशाखायाम्—ॐ गणेशाय नमः ।
वामशाखाम्—स्कन्दाय नमः । द्वारकलशयोः—ॐ गङ्गायै नमः । ॐ यमुनायै नमः ।

इति सम्पूज्य ऋग्वेदिनो पूजयामि—

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥

कर्मनिष्ठातपोयुक्ता ब्राह्मण वेदपारगाः ।
जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवत ऋत्विजौ ॥

मध्येकलशोपरि—

एह्येहि सर्वामरसिद्धिसोद्ध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश ।
संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ इन्द्राय नमः इन्द्रमा० ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति सम्पूज्य पीतध्वजपताकामालभ्य जपेत्—

ॐ आशुः शिशानो वृषभो नभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥

इमां पताकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभम् ।
आलभामि सुरेशाय शचीप्रीत्यै नमो नमः ॥

ध्वजपताकयोर्मध्ये—ॐ हेतुकाराय नमः । ॐ क्षेत्रपालाय नमः ।

इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः ।
शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥

ततो बलिदानम्—

माषभक्तबलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकलसुराणामधिपतये सवाहनाय सपरिवारायसशक्तिकाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यः भूतेभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां न मम ।

अग्निकोणमागत्य पूर्वप्रकारेण संस्थाप्य आचम्य कलशोपरि—

ॐ पुण्डरीकाय नम । ॐ अमृताय नमः ।

इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्यैरभितोऽभिजुष्ट ।
तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते ।।

प्रार्थना—सप्तार्चिषं च बिभ्राणमक्षमालां कमण्डलुम् ।
ज्वालमालाकुलं रक्तं शक्तिहस्तमजासनम् ।।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने तवं देवपायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ।। त्राता तो कस्य तनये गवामस्य निमेषठं० रक्षमाणस्तवं व्रते ।। अग्नये नमः अग्निमा० ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति सम्पूज्य ध्वजपताकामलभ्य–

पताकामग्नये रक्तां गन्धमाल्यादिभूषिताम् ।
स्वाहायुक्त देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे ॥

ॐ अग्निदूत पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ २ऽआसादयादिह ॥

ध्वजपताकयोः–

ॐ कुमुदाय नमः १ ॐ क्षेत्रपालाय नमः ।

पूजन कर नमस्कार करे—

आग्नेयपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः ।
धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो. नमः ॥

अथ बलिदानम्–

इमं माषबलिं देव गृहाणग्ने हुताशन ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन अग्निः साङ्गः सपरिवारः सशक्तिकः प्रीयताम्॥

दक्षिणे गत्वा—आचम्य द्वारकलशौ स्थापयेत्—सम्पूज्य नमस्कारः—

नमस्ते धर्मराजाय त्रेतायुगाधिपाय च।
यजुर्वेदादिदेवाय सुभद्रं द्वारदक्षिणे॥

ततः कलशोपरि—ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ अशोकाय नमः। मध्यकलशे—ॐ वामनाख्यदिग्गजाय नमः—

इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम्।
सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्॥

ततो द्वारोर्ध्वे—ॐ द्वारश्रियै नमः। अधः—ॐ देहल्यै नमः।

द्वारशाखयोः—ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ कपर्दिने नमः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारकलशयोः--ॐ गोदावर्यै नमः । ॐ कृष्णायै नमः--

इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करें—

वैवस्वतःमहादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक ।
शिवाज्ञयाऽपिहितो देव दिशं रक्ष भवानिह ॥

ततो यजुर्वेदिनो पूजयेत्---ॐ इषे त्वोर्ज्जेत्वा० ।

ततो मध्यकलशोपरि---

एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चितधर्ममूर्ते ।
शुभाशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते ॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्व तेपितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥ यमाय नमः यमं साङ्गं सपरिवारमावाहयामि स्थापयामि ।

इति सम्पूज्य ध्वजपताकामालभ्य---

कृष्णवर्णा पताकाञ्च कृष्णवर्णध्वजं तथा ।
अन्तकायालभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ यमाय त्वा—

इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादिभूषितम् ।
यमदेव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर ॥

ध्वजपताके सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

यमस्तु महिषारूढो दण्डहस्तो महाबलः ।
धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमो नमः ॥

ततो बलिदानम्—

इमं माषबलिं देव गृहाणान्तक वै यम ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ॐ यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो यम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदा भव अनेन बलिदानेन यमः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिः प्रीयतां न मम ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

नैर्ऋत्ये गत्वा आचम्य कलशं संस्थाप्य--

निर्ऋतिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैकपावनम् ।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥

कलशोपरि—ॐकुमुदाय नमः । ॐ दुर्ज्जयाय नमः ।

इति सम्पूज्य कलशे--

एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसङ्घैः ।
ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते ।
ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य ।
अन्यमस्म दिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥
निर्ऋतिं सपरिवारं सा० आवाहयामि ।

इस प्रकार पूजन करे—

ध्वजपताकामालभ्य पताकानिर्ऋतिश्चैव नीलवर्णं ध्वजं तथा ।
पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाध्वरे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ असुन्वन्तम० सम्पूज्य ध्वजपताकयोः—

ॐ कुमुदाय नमः ॐ क्षेत्रपालाय नमः ।

पूजन कर प्रार्थना करे—

सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋतिर्नीलविग्रहः । करे खड्गधारो नित्यं निर्ऋतये नमो नमः ॥

ततो बलिदानम्—इमं माषबलिं यक्षो गृहाण निर्ऋतिप्रभो ।
यक्षसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता वरदो भव--अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम ।

पश्चिम में जाकर आचमन करे तब कलश स्थापित कर पूजन कर नमस्कार करे—

नमोऽस्तु कामरूपाय पश्चिमद्वाराश्रिताय च ।
सामवेदाधिपस्त्वं हि नाम्ना कल्याणकारक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कलशोपरि--ॐभूतसञ्जीवनाय० । ॐअमृताय० । मध्यकलशे--ॐ अनन्ताख्यदिग्गजाय० ।
द्वारोर्ध्वं--ॐ द्वारश्रियै०। अधः--ॐ देहल्यै० । द्वारशाखयोः--ॐनन्दिन्यै० । ॐचण्डायै० ।
द्वारकलशयोः--ॐ रेवायै०। ॐ ताप्यै० ॥

इति सम्पूज्य--ततः सामवेदिनो पूजयेत्--

ॐअग्नऽ आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ॥ निहोता सत्सि बर्हिषि ॥

इति सम्पूज्य मध्यकलशे--

एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः ।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥
अहेडमानो वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳस मान आयुः प्रमोषीः ॥
वरुणं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि । वरुणाय साङ्गाय सपरिवाय नमः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इति सम्पूज्य–ध्वजपताकामालभ्य--

श्वेतवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम् । वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये ॥

ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमं ᳬश्रथाय ॥ अथाव्वयमादित्य व्व्रते तवानाग-साऽअदितये स्याम ॥

इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना——

पाशहस्तस्तु वरुणः साम्भसाम्पतिरीश्वर ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदे भव ॥

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो वरुण बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन नमो भगवते सकलजलानामधिपतये न मम ॥

वायव्यं गत्वा आचम्य कलशं प्रांतआप्यकलशे--

ॐ पुष्पदन्ताय नमः । ॐ सिद्धार्थाय नमः ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति गन्धादिभिः सम्पूज्य कलशोपरि--

एह्येहि यज्ञे मम रक्षणार्थं मृगाधिरूढः सह सिद्धसङ्घैः ।
प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् ॥ वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ वायवे नमः वायुं० सम्पूज्य ध्वजपताकामालभ्य–

पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णध्वजं तथा ।
आलभाम्यनुरूपाय प्राणदाय हिताय च ॥

ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्सोमपीतये ॥

इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्–

अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्धवहः प्रभुः ।
तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च ॥

ततो बलिदानम्—माषभक्तबलिं वायो मया दत्तं गृहाण भो ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वरुण साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते वायवे। सकलप्राणानामधिपतये प्रीयतां न मम।

उत्तरे गत्वा---आचम्य द्वारकलशौ संस्थाप्य

संपूज्य नमस्कारः—नमस्ते दिव्यरूपत्वमथर्वाधिपते प्रभो।
कलावधिपनिर्नाम्ना मङ्गलश्चोत्तरानन॥

कलशोपरि---

ॐ धनदाय नमः। ॐ श्रीप्रदाय नमः। मध्यकलशे--सार्वभौमदिग्गजाय नमः।

इति सम्पूज्य द्वारोर्ध्वं—

ॐ द्वारश्रियै नमः। अधः--ॐ देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः--महाकालायः नमः। ॐ भृङ्गिणे नमः। द्वारकलशयोः--ॐ नर्मदायै नमः। ॐ ताप्यै नमः।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इति सम्पूज्य अथर्वाणौ पूजयेत्–

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ।। शँय्योरभिस्त्रवन्तु नः ।।

मध्यकलशे–एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्धम् ।

सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

ॐ व्वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ।। प्रजावन्तः सचेमहि ।। सोमाय नमः०सोम० ।।

इति सम्पूज्य ध्वजापताकामालभ्य–

हरितवर्णां पताकां च हरिद्वर्णमयं ध्वजम् ।

कुबेराय लभाम्येव पूजये च सदार्थिना ।।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा व्वाजस्य सङ्गथे ।।

सम्पूज्य प्रार्थना–

गौरोपमपुमान्स्थूलः सर्वौषधिरसादयः । नक्षत्राधिपतिः सोमस्तस्मै नित्यं नमो नमः ।।

ततो बलिदानम्–इमं माषभक्तबलिं देव गृहाण त्वं धनप्रद ।

यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो सोम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन नमो भगवते सोमाय सकलकोशाधिपतये प्रीयतां न मम । ईशाने गत्वा आचम्य कलशं संस्थाप्य–

कलशे–ॐ सुप्रतीकाय नमः । मङ्गलाय नमः । इति सम्पूज्य पुनः कलशोपरि–

एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम् ।
लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसे हूमहे व्वयम् ॥ पूषा नो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

ईशानाय नमः ईशान० ।

इति सम्पूज्य ध्वजपताकामालभ्य–

ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने ॥

ॐ तमीशानम्० ॥

सम्पूज्य प्रार्थना–

सर्वाधिपो महादेवः ईशानः शुक्ल ईश्वरः ।
शूलपाणिर्विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः ॥

ततो बलिदानम्–

इमं माषबलिं देव गृहाणेशानशङ्कर ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो ईशानं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन ईशानः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईशानेन्द्रयोर्मध्येगत्वा आचम्य कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशे—

एह्येहि विष्णवाधिपते सुरेन्द्र लोकेन सार्द्धं पितृदेवताभिः ।
सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाध्वरन्नः सततं शिवाय ॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्व्वता सोव्वृत्रहत्ये भरंहूतौ सुजोषाः ॥ यः शंस संते स्तुवते धायिपज्र ऽइन्द्रं ज्येष्ठा ऽअस्माँ२ ऽअंवन्तु देवाः ॥ ब्रह्मण० ब्रह्माणं० ॥

इति सम्पूज्य ध्वजपताकामालभ्य—

पद्मवर्णां पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा । आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेनन्तशक्तये ॥

ॐ ब्रह्मंयज्ञानम्प्रंथमम्पुरस्ताद्वीसीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः ॥ सबुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

पद्मयोनिश्चतुर्मूर्त्ति वेदव्यासपितामहः ।
यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततो बलिदानम्—

इमं माषबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो ब्रह्मन् मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन नमो भगवते ब्रह्मणे सकलवेदशास्त्रतत्त्वज्ञानाधिपतये प्रीयतां न मम ।

नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये गत्वा आचम्य कलशं प्रतिष्ठाप्य वरुणाय नमः सम्पूज्य पुनः कलशोपरि—

एह्येहि पातालधरामरेन्द्र नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान ।
यक्षोरगेन्द्रामरलोकसङ्घैरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनि ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ अनन्ताय नमः अनन्त० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति सम्पूज्य ध्वजपतामालभ्य—

मेघवर्णां पताकां च मेघवर्णं ध्वजन्तथा । आलभामि ह्यनन्ताय धरिणीधारिणे नमः ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥

इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

घनवर्णां पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम् ।
स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः ॥

ततो बलिदानम्—इमं माषबलिं शेष गृहाणानन्तपन्नग ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो अनन्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव—अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अथ महाध्वजपूजनम् मण्डपमध्ये-

ॐ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञऽआदित्या नां मरुताᳬ शर्द्धऽउग्रम् ॥ महामनसां भुवनच्यवानांघोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥

इति षोडशहस्तवंशे महाध्वजं विचित्रवर्णं प्रान्तः किङ्किण्यादियुतं त्रिहस्तविस्तृतं सप्तहस्तदीर्घं वा पञ्चहस्तविस्तृत दशहस्तदीर्घं संस्थाप्य ॐ ब्रह्म यज्ञानमिति सम्पूज्य मण्डपषोडशस्तम्भेषु-

ॐसर्वेभ्यो देवेभ्यो-देवेभ्यो नमः ।

वंशेषु-ॐकिन्नरेभ्यो नमः । पृष्ठ-ॐ पन्नगेभ्यो नमः ।

मण्डपाद्बहिः प्राच्यामुपलिप्तभूमावुपविश्य सम्पूज्य आलभेत्-

इमं विचित्रवर्णन्तु महाध्वजविनिर्मितम् ।
महाध्वजञ्चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ ब्रह्म यज्ञानं० ।

अमुं महाध्वजं चित्रं सर्वविघ्नविनाशकं ।
महामण्डपमध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने ॥

ॐ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञऽआदित्यानाम्मरुताᳬंशर्द्धऽउग्रम् ॥ महाम्मनसाम्भुवनच्च्यवानां घोषो देवानाञ्जयतामुदस्थात् ॥ अनया पूजया इन्द्रः प्रीयताम् ॥

ततो मण्डपषोडशबलिकासु—

ॐसर्वेभ्यो नमः १ मण्डपपृष्ठे—ॐ पन्नगेभ्यो नमः २ तत्राष्टदलं विरच्य तत्राष्टदलेषु—ॐ नमो गणेभ्योगणपतिभ्यश्च० । सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि ।
ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि वै ॥
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

सर्वे ममाध्वरं रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः ॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालो गणैः सह ।
रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः ॥

इति पठित्वाऽक्षतपुञ्जेषु पूर्वादिक्रमेण–

ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्यः स्थावरेभ्यो नमः । त्रैलोक्यस्थावरानावाहयामि ।
ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्यो नमः । त्रैलोक्यस्थरेभ्यश्चरानावाहयामि ।

ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणमा० । ॐ विष्णवे नमः । विष्णुमा० । ॐ शिवाय नमः । शिवामा० । ॐ देवेभ्यो नमः । देवानावा० । ॐ दानवेभ्यो नमः । दानवानावा० । ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः । गन्धर्वानावा० । ॐ यक्षेभ्यो नमः । यक्षानावा० । ॐ राक्षसेभ्यो नमः । राक्षसानावा० । ॐ पन्नगेभ्यो नमः । पन्नगानावा० । ॐ ऋषिभ्यो नमः । ऋषीनावा० । ॐ मुनिभ्यो नमः । मुनीनावा० । गोभ्यो नमः । गा आवा० । ॐ देवमातृभ्यो नमः । देवमातृः–आ० ।

इत्यावाह्य सम्पूज्य–सर्वेभ्यो बलिं दत्वा तत्रैव गणपतिमावाह्य संपूज्य बलिं दत्वा–

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥

इतिमन्त्रेण दिक्षु विदिक्षु अक्षतपुञ्जेषु रुद्रमावाह्य सम्पूज्य बलिं दत्वा सर्वान् विसृज्य ईशाने सर्वभूतबलिं दद्यात् । तत्र मन्त्राः—

ते च पूर्तकमलाकरोद्योतादावुक्ता उच्यन्ते—

अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः ।
सपत्नीपरिवाराश्च प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥
नक्षत्राधिपतिश्चैव नक्षत्रैः परिवारितः ।
स्थानं चैव पितृणां तु सर्वे गृह्णन्त्विमं बलिम् ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ईशानोत्तरयोर्मध्ये क्षेत्रपालो महाबलः ।
मीननामा महादंष्ट्रः प्रतिगृह्णत्विमं बलिम् ॥

ये केचित्त्विह लोकेषु आगता बलिकाङ्क्षिणः ।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः ॥

बलिं गृह्णन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा ।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥
असुरा यातु धानाश्च पिशाचा मातरो गणाः ।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥
जृम्भका सिद्धगन्धर्वा नागा विद्याधरा नगाः ।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ।
मा विघ्नं मा च ये पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥
सौम्य भवन्तु तृप्ताश्च देवा भूतगणास्तथा
ते गृह्णन्तु मया दत्तं बलिं वै सार्वभौतिकम् ॥

अनेन बलिदानेन अधोलाकादयः प्रीयन्ताम्—

ततः प्रक्षालितपादपाणिः प्राग्द्वारेण मण्डपं प्रविश्य यजमानो दक्षिणत उपविश्य—
यथाविहितं कर्म कुरुध्वमिति प्रेषयेदति कमलाकरादयः ॥

॥ इति मण्डपतोरण-द्वार-पूजन समाप्तः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❀ अथ सर्वतोभद्रपूजनम् प्रारम्भ ❀

तद्यथा नियतमानसो भूत्वा मध्यवेदेः पश्चादुपविश्य ।

'ॐ केशवाय नमः १ ॐ नारायणाय नमः २ ॐ माधवाय नमः ३

इति त्रिराचम्य मध्यमानामिकाभ्यां मुखम्, तर्जन्यङ्गुष्ठेन नासिकाद्वयम्, अनामिकाङ्गुष्ठेन कर्णौ कनिष्ठाङ्गुष्ठेन नाभिम्, दक्षिणहस्तेन हृदयम्, अङ्गुलीभिः शिरोदक्षिणवामौ बाहू च स्पृशेत् इत्येकमाचमनम् । एवमेव केशवाय नमइत्यारभ्य पुनः कुर्यात् । एवं कृते द्विः स्मार्ताचमनं भवति ।

ततः प्राणायाणं कुर्यात् । तद्यथा—"ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्व० ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्" इति मन्त्रं नव कृत्वः पठेत् ।

तत्र अङ्गुष्ठेन दक्षिणनासां स्पृष्ट्वा मौनी नेत्रे संमील्य नाभौ स्थितं चतुर्भुजं विष्णुं ध्यानम् वामनासिकया शनैः शनैः श्वासं कर्षन् वारत्रयं पठन् पूरकप्राणायामं कुर्यात् । ततोऽङ्गुष्ठेन दक्षिण-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नासामनामिकाकनिष्ठाभ्यां वामनासां निपीड्य श्वासं नियम्य मौनी नेत्रे निमील्य हृदयस्थं कमलासनं ब्रह्माणं ध्यायन् त्रिवारं मन्त्रं पठन् कुम्भकं कुर्यात्। ततोऽङ्गुष्ठमपसार्य अनामाकनिष्ठाभ्यां वामनासां स्पृशन् श्वासं शनैर्विमुञ्चन् मौनी अक्षिणी निमील्य ललाटे स्थितं शङ्करं ध्यायन् मन्त्रं त्रिवारं पठन् रेचकं कुर्यात्। तत 'अपवित्रः' इत्यात्मानं पूजासामग्रीञ्च संप्रोक्ष्य 'पवित्रेस्थो०' इति पवित्रं गोपीचन्दनादि मौक्तिकादिमालां च धृत्वा शान्तिपाठं कृत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्।

संकल्प करे—

देशकालौ स्मृत्वा—गोत्रः शर्मा (वर्मा, गुप्तः,) 'अस्मिन् विष्णुयागकर्मणि सूर्य-मण्डलान्तर्वर्तिनारायणपूजां करिष्ये' तदङ्गत्वेन आसनविधिं विघ्नोत्सारणं दिग्बन्धं शिखाबन्ध सर्वतोभद्रदेवतास्थापनं तत्र कलशस्थापनं यन्त्राविलेखनमधः पीठादौ विष्ण्वादिप्रतिमास्थापनम्, मण्डपादिध्यानं द्वारपालपूजां स्वशरीरे पुरुषसूक्तलक्ष्मीसूक्तन्यासं, पूजाकलशार्चनम् शङ्खार्चनं घण्टार्चनं भूम्यर्चा पुरुषसूक्तलक्ष्मीसूक्ताभ्यां स्वशरीरे मार्जनम् अघमर्षणम् उपस्थानं स्वात्मनि भगवत्पूजां पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्कद्रव्याद्यभिमन्त्रणं पूजाद्रव्योपकल्पन पीठपूजामग्न्युत्तारणम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवाहनं प्रतिष्ठापनं देवशरीरे पुरुषसूक्तलक्ष्मीसूक्तयोर्न्यासम् आसनाद्यर्पणं, पुरुषसूक्तलक्ष्मीसूक्ताभ्यां मूर्त्यभिषेकं जलाद्देवं बहिर्निष्काश्य यन्त्रे समुपवेशनं वस्त्राभरणोपवीतोपवस्त्रगन्धाक्षतपुष्पमालातुलसीदलार्पणं गन्धाक्षतपुष्पैरावरणपूजां धूपादिपुष्पाञ्जल्यन्तपूजनं न्यासहितं पुरुषसूक्तलक्ष्मीसूक्तयोर्जपं द्वादशाक्षरमन्त्रजपं प्रसादोदकपानं प्रसादनैवेद्यभक्षणं 'जितं त' इति स्तवनं च करिष्ये ।

ततो गणेशं संपूज्य 'पृथ्वित्वया' इति पठित्वा

ॐ अनन्तासनाय नमः ।

ॐ विमलासनाय नमः ।

ॐ परममुखसनाय नमः । इति आसनं संपूज्य

'तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि' ॥

इति भैरवाज्ञां गृहीत्वा

'ॐ ये भूतानाम्' इति छोटिकया दिग्बन्धनं कृत्वा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ॐ भैरवाय नमः' इति वामपादेन भूमिं त्रिः सन्ताड्य 'ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि०' इति शिखां बध्वा सर्वतोभद्रपीठे देवानावाहयेत् तद्यथा—

ॐ ब्रह्मयज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोव्वेनऽआवः । सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ मध्ये कर्णिकायाम् ब्रह्मणे० ब्रह्माणमावामाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

ॐ व्वयꣳसोमव्रतेवमनस्तनूषुबिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥ उत्तरे वाप्यां सोमाय० सोमा० स्थापयामि ॥ २ ॥

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये ॥ ईशान्यां खण्डेन्दौ ईशानमा० स्थापयामि ॥ ३ ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥ पूर्वे वाप्यां इन्द्राय० इन्द्र० ॥ ४ ॥

ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्न्वश्चवन्द्य ॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्रते । आग्नेय्यां खण्डेन्दौ अग्नये० अग्निमा० ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ दक्षिणे वाप्यां यमाय० यम० ॥ ६ ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ निर्ऋतये० निर्ऋतिमा० ॥ ७ ॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः ॥ पश्चिमे वाप्याम् वरुणाय० वरुणमा० ॥ ८ ॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ॥ वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ वायव्यां खण्डेन्दौ वायवे० वायुमा० ॥ ९ ॥

ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वादित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम् । व्यन्तु वयोक्तꣳ रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह । चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि ॥ वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे अष्टवसु० ॐ अष्टवसूनावाह० ॥ १० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः। बाहुभ्यामुततेनमः॥ सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे एकादशरुद्रेभ्यो० एकादशरुद्राना० ॥ ११ ॥

ॐ यज्ञोदेवानांप्रत्यैतिसुम्नमादित्यासोभवतामृडयन्तः ॥ आवोर्व्वाचीसुमतिर्व्ववृत्यादᳪ होश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासत् ॥ ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे द्वादशादित्येभ्यो० द्वादशादित्याना० ॥१२॥

ॐ अश्विनातेजसाचक्षुःप्प्राणेनसरस्वती व्वीर्य्यम् ॥ व्वाचेन्द्रोबलेनेन्द्रायदधुरिन्द्रियम् ॥ अश्विभ्यां० अश्विनौ आ० ॥ १३ ॥

ॐ व्विश्वेदेवासऽआगतशृणुतामऽइमᳪहवम्। एदम्बर्हिर्न्निषीदत ॥ उपयामगृहीतोऽसि व्विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यऽएषतेयोनिर्व्विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यः॥ अग्नियममध्ये भद्रे सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो० सपैतृकविश्वान्देवाना० ॥ १४ ॥

२० ॐ अभित्यन्देवᳪसवितारमोण्योःकविक्क्रतुमर्च्चामिसत्त्यसवᳪरत्नधामभिप्प्रियम्मतिङ्कविम् ॥ ऊर्द्ध्वायस्यामतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीतसुक्क्रतुःकृपास्वः ॥ प्रजाभ्यस्त्वाप्प्रजा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

स्वानुप्राणन्तुप्रजास्त्वमनुप्राणिहि ॥ यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे सप्तयक्षेभ्यो० सप्तयक्षाना० ॥१५॥

वि० ॐ नमोऽस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिविवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ प्र०

निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये भद्रे अष्टकुलनागेभ्यो० अष्टकुलनागाना० ॥ १६ ॥

२३० ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसोमुदानाम । सनऽइदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातुतस्मै-

स्वाहाव्वाट्ताभ्यःस्वाहा ॥ वरुणवायुमध्ये भद्रे गन्धर्वाप्सरोभ्यो० गन्धर्वाप्सरसः आ० ॥१७॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् । श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तु-

त्यम्महिजातन्तेऽअर्वन् ॥ ब्रह्मसोममध्ये वाप्याम् स्कन्दाय० स्कन्द० ॥ १८ ॥

ॐ आशुःशिशानोवृषभोनभीमोघनाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम् । सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरः

शतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ तदुत्तरे वृषभाय० वृषभा० ॥ १९ ॥

ॐ काषिरसिसमुद्रस्यत्वाक्षित्याऽउन्नयामि । समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः ॥ २३०

तदुत्तरे शूलाय० शूलमा० ॥ २० ॥

पुनश्च अनेनैव मन्त्रेण तदु रेत्तमहाकालाय० महाकाल० ॥ २१ ॥

ॐ शुक्रज्योतिश्चचित्रज्ज्योतिश्चसत्यज्ज्योतिश्चज्ज्योतिष्माँश्च । शुक्रश्चऋतुपाश्चात्यंहाः ॥ ब्रह्मेशानमाध्ये श्रृङ्खलायाम् दक्षादिसप्तगणेभ्यो० दक्षादिसप्तगणानावा० ॥ २२ ॥

ॐ अम्बे अम्बिकेम्बालिकेनमानयतिकश्चन । ससंस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाँपीलवासिनीम् ॥ ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम् दुर्गायै० दुर्गामावा० । २३ ॥

ॐ इदंव्विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपांसुरेस्वाहा ॥ तत्पूर्वे विष्णवे० विष्णुमावाहयामि० ॥ २४ ॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः । अक्षन्नपितरोमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरः शुन्धध्वम् ॥ ब्रह्माग्निमध्ये श्रृङ्खलायाम् स्वधायै० स्वधामा० ॥ २५ ॥

ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थांयस्तेऽअन्यऽइतरोदेवयानात् । चक्षुष्मते श्रृण्वतेतेब्रवीमि-मानः प्रजाठंरीरिषोमोतवीरान् ॥ ब्रह्मयममध्ये वाप्याम्—मृत्युरोगेभ्यो० मृत्युरोगाना० ॥ २६ ॥

२३१

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳ हवामहे-व्वसोमम । आहमंजानि गर्भधमात्वमंजासिगर्भधम् ।। ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्--गणपतये० गणपतिमा० ।। २७ ।।

ॐ अप्स्वग्नेसधिष्टवसोषधीरनुरुध्यसे । गर्भे सञ्जायसेपुनः ।। ब्रह्मवरुणमध्ये वाप्याम्—अद्भ्यो० अपःआवाहयामि० ।। २८ ।।

ॐ मरुतोयस्यहि क्षयेपाथादिवोव्विमहसः । ससुगोपातमोजनः ।। ब्रह्मवायुमध्ये शृङ्खला-याम्—मरुद्भ्यो० मरुतः आवा० ।। २९ ।।

ॐ स्योनापृथिविनोभवान्रृक्षरानिवेशनि । यच्छानःशर्म्मसप्रथाः ।। ब्राह्मणः पादमूले पृथिव्यै० पृथ्वीवीमा० ।। ३० ।।

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः । सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित् ।। तदुत्तरे गङ्गादिनदीभ्यो० गङ्गादिनदीः आ० ।। ३१ ।।

ॐ समुद्रोऽसिनभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्म्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहा मारुतोऽसिमरुतांगणः ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शंभूर्म्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहावस्यूरंसिदुवंस्वाञ्छुम्भूर्म्मयो भूरभिमाव्वाहि स्वाहा ॥ तदुत्तरे सप्तसागरेभ्यो० सप्तसागराना० ॥ ३२ ॥

ॐ प्रपर्व्वतस्यव्वृषभस्यपृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानाः । ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताऽअहिम्बुध्न्यमनुरीयमाणाः । विष्णोर्विक्रमणमसिविष्णोर्विक्रान्तमसिविष्णोःक्रान्तमसि । कर्णिकोपरिधौ ॐमेरवे० मेरमा० ॥ ३३ ॥

अथ सोमादिक्रमेण सत्वलाद्यपरिधौ ॐ गदायै० गदा० ॥ ३४ ॥

ईशान्याम्—ॐ त्रिशूलाय० त्रिशूल० ॥ ३५ ॥

पूर्वे—वज्राय० वज्रमा० ॥ ३६ ॥

आग्नेयाम्—ॐ शक्तये० शक्तिमा ॥ ३७ ॥

दक्षिणे—ॐ दण्डाय० दण्ड० ॥ ३८ ॥

नैर्ऋत्याम्—ॐ खड्गाय० खड्ग० ॥ ३९ ॥

पश्चिमे—ॐ पाशाय०पाश० ॥ ४० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

वायव्याम्–ॐ अङ्कुशाय॰अङ्कुशमा॰ ॥ ४१ ॥
तद्वाह्योत्तरे–रक्तपरिधौ ॐ गौतमाय॰ गौतममा॰ ॥ ४२ ॥
ईशान्याम्–ॐ भरद्वाजाय॰ भरद्वाज॰ ॥ ४३ ॥
पूर्वे–ॐ विश्वामित्राय॰ विश्वामित्रमा॰ ॥ ४४ ॥
आग्नेय्याम्–कश्यपाय॰ कश्यपमा॰ ॥ ४५ ॥
दक्षिणे–ॐ यमदग्नये॰ यमदग्निमावाहयामि॰ ॥ ४६ ॥
नैर्ऋत्याम्–ॐ वसिष्ठाय॰ वसिष्ठमा ॥ ४७ ॥
पश्चिमे–ॐ अत्रये॰ अत्रिमा॰ ॥ ४८ ॥
वायव्याम्–ॐ अरुन्धत्यै॰ अरुन्धतीमा॰ ॥ ४९ ॥
तद्वाह्ये–कृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण—पूर्वे ॐ ऐन्द्र्यै॰ ऐन्द्रीमा॰ ॥ ५० ॥
ॐ कौमार्यै॰ कौमारीमा॰ ॥ ५१ ॥
दक्षिणे–ॐ ब्राह्म्यै॰ ब्राह्मीमा॰ ॥ ५२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

नैऋत्याम्—ॐ वाराह्यै० वाराहीमा० ॥ ५३ ॥

पश्चिमे—ॐ चामुण्डायै० चामुण्डामा० ॥ ५४ ॥

वायव्ये—ॐ वैष्णव्यै० वैष्णवीमा० ॥ ५५ ॥

उत्तरे—ॐ माहेश्वर्यै० माहेश्वरीमावाहयामि ॥ ५६ ॥

ईशान्याम्—ॐ वैनायक्यै नमः एवं वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५७ ॥

इस प्रकार सर्वतोभद्र के देवताओं का पूजनादि कर मध्य में कलश स्थापित कर वहाँ, स्वर्ण, रजत, ताम्र पत्र पर विष्णु यन्त्र लिखे ।

तद्यथा—विष्णोरष्टगन्धेन चन्दनेन वा मध्ये एकं बिन्दुं कृत्वा ततस्त्रिकोणं विरच्य ततः षट्कोणमष्टारं दशारं द्वादशारं चतुर्दशारं षोडशारं चेति क्रमेण कृत्वा परितो रेखात्रयं दिक्षु द्वारयुतं कुर्यात् एवं यन्त्रमालिख्य तत्पुरतः पीठादौ हैमीं विष्णुप्रतिमां चन्दनेन विलिख्य तथैव लक्ष्मीप्रतिमां, गरुडप्रतिमां च प्रत्यङ्मुखीः संस्थाप्य स्वर्णमयं चतुर्द्वारं विमलं सुशोभितं मण्डपं ध्यात्वा तत्र नानारत्नखचितं मुक्ताद्यलङ्कृतं सिंहासनं स्मरेत् ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ततः पूर्वद्वारे—

ॐ भद्राय नमः । ॐ सुभद्राय नमः । ॐ गङ्गायै नमः । ॐ यमुनायै नमः ।

दक्षिद्वारे—ॐ बलाय नमः । ॐ प्रबलाय नमः । ॐ चिच्छत्यै नमः । ॐ श्रियै नमः ।

उत्तरद्वारे—ॐ जयाय नमः । ॐ विजयाय नमः । ॐ शङ्खाय नमः । ॐ पद्मनिधये नमः ।

इस प्रकार द्वारपान् का पूजन कर अपने शरीर में न्यास करे—

तद्यथा—सहस्रशीर्षेति पुरुषसूक्तस्य षोडशर्चस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप्छन्दः अन्त्यायास्त्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीजं पुरुषो देवतान्यासे विनियोगः ।

ॐ सहस्रशीर्षा०—वामकरे	ॐ पुरुष एव०—दक्षिकरे
ॐ एतावानस्य०—वामपादे	ॐ त्रिपादूर्ध्व०—दक्षिणपादे
ॐ ततोविराट्०—वामजानौ	ॐ तस्माद्यज्ञात्०—दक्षिणजानौ
ॐ तस्माद्य० सर्वहुतऋ०—वामकट्याम्	ॐ तस्मादश्वा०—दक्षिणकट्याम्

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ तं यज्ञं०—नाभौ
ॐ ब्राह्मणोऽस्य०—कण्ठे
ॐ नाभ्याऽआसी०—दक्षिणबाहौ
ॐ सप्तास्या०—नेत्रयोः

ॐ यत्पुरुषं०—हृदये
ॐ चन्द्रमामनसो०—वामबाहौ
ॐ यत्पुरुषेण०—मुखे
ॐ यज्ञेनयज्ञ०—मूर्द्धि ।

ततः पञ्चाङ्गन्यासान् कुर्यात्—

ॐ चन्द्रमामनसो०—हृदयाय नमः
ॐ नाभ्याआसी०—शिरसे स्वाहा
ॐ यत्पुरुषेण०—शिखायै वषट्
ॐ सप्तास्या०—कवचायहुम्
ॐ यज्ञेन० अस्त्राय फट् एवं न्यासद्वयं कृत्वा लक्ष्मीसूक्तेन न्यासद्वयं कुर्यात् ।

ॐ हिरण्यवर्णां०—वामकरे
ॐ अश्वपूर्वां०—वामपादे
ॐ चन्द्रां प्रभासां—वामजानौ
ॐ उपैतुमा०—वामकट्याम्

ॐ तां म आवह०—दक्षिणकरे
ॐ कांसोस्मितां०—दक्षिणपादे
ॐ आदित्यवर्णे०—दक्षिणजानौ
ॐ क्षुत्पिपासा०—दक्षिणकट्याम्

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ गन्धद्वारां०—नाभौ०
ॐ मनसःकाम०—हृदये
ॐ कर्दमेनप्र०—कण्ठे
ॐ आपः सृजन्तु०—वामबाहौ
ॐ आर्द्रांपुष्करिणीं०—दक्षिणबाहौ
ॐ आर्द्रां यःकरि०—मुखे
ॐ तांमआवह०—नेत्रयोः
ॐ यः शुचिः प्रयतो०—पञ्चाङ्गन्यासः
ॐ आपः सृजन्तु०—हृदयाय नमः
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीः—शिरसे स्वाहा
ॐ आर्द्रां यष्करिणी०—शिखायै वषट्
ॐ ताम्म आवह० कवचायहुम्
ॐ यः शुचि० अस्त्रायफट्

एवं न्यासद्वयं कृत्वा पूजाकलशार्चनं कुर्यात् ।

तद्यथा—स्ववामभागे पूजाकलशं संस्थाप्य तत्र 'ॐ इमम्मेवरुणेति मन्त्रेण वरुणं संपूज्य गायत्र्यादशवारमभिमन्त्र्य ।

'ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती,
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayū Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदानदाः,
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

इति तीर्थान्यावाह्य 'ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः० इति विष्ण्वादीनामावहयेत् ।

तद्यथा—ॐ विष्णवे नमः । ॐ रुद्राय नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ मातृगणेभ्यो नमः । ॐ सागरेभ्यो नमः । ॐ सप्तद्वीपवसुन्धरायै नमः । ॐ ऋग्वेदाय नमः । ॐ यजुर्वेदाय नमः । ॐ सामवेदाय नमः । ॐ अथर्ववेदाय नमः । ॐ वेदाङ्गेभ्यो नमः । ॐ गायत्र्यै नमः । ॐ सावित्र्यै नमः । ॐ शान्त्यै नमः । ॐ सरस्वत्यै नमः । इत्यावाह्य संपूजयेत् ।

ततः शङ्खं बहिरन्तश्च प्रक्षाल्य कलशोदकेन प्रपूर्य त्रिपादिकायां निधाय गन्धादिभिः सम्पूज्य—

ॐ पुरात्वं सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इति संप्रार्थ्य 'पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्'' इत्यष्टवारमभिमन्त्र्य देववामपार्श्वे निदध्यात् । ततः स्ववामत आधारे घण्टां प्रक्षाल्य निधाय ''ॐ घण्टायै नमः'' इति

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।

कुरु घण्टेरवं तत्र देवावाहन लाञ्छनम् ॥ इति निनाद्य स्थापयेत् । शङ्खोदकेन पूजाद्रव्याणि आत्मानं भूमिं च प्रोक्षेत् । ततः ॐ स्योनापृथिवीति मन्त्रेण भूमिं संपूजयेत् । ततो मार्जयेत्--पुरुषसूक्तस्य षोडर्चस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप्छन्दः पुरुषोदेवता अन्त्यायास्त्रिष्टुप्छन्दः मार्जने अघमर्षणे उपस्थाने च विनियोगः । ततः कुशैः शङ्खजलेन प्रतिमन्त्रं स्वमूर्द्धिमार्जयेत् । ततः कुशैः शङ्खजलेन पुरुषसूक्तेन प्रतिमन्त्रं स्वमूर्द्धिमार्जयेत् । 'ॐ सहस्रशी० दशाङ्गुलं मार्जयामि । पुरुषसूक्तं सर्वं पठित्वा अघमर्षणं कृत्वा तज्जलं वामतः प्रस्तरोपरि क्षिपेत् । तत उत्थाय ऊर्ध्वबाहुः पुरुषसूक्तेनादित्यमुपतिष्ठेत् । एवमेव लक्ष्मीसूक्तेन मार्जनमघमर्षणमुपस्थानं च कुर्यात् । ततः स्वात्मनि पुरुषसूक्तेन विष्णुं संपूजयेत् । ततः पाद्यपात्रं निधाय तत्र गन्धपुष्पाक्षतश्यामाकदूर्वा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णुकान्तातुलसीर्दत्त्वा तदुत्तरतोऽर्घपात्रं निधाय तत्र गन्धपुष्पयवकुशाग्रतिलगौरसर्षपदूर्वातुलसीः
प्रक्षिप्य, तदुत्तरत आचमनीयपात्रे एलालवङ्गकर्पूरकङ्कोलजातीफलोशीराणि प्रक्षिप्य पात्रत्रयेऽपि
त्रि० जलमापूर्य दधिमधुसर्पीषि मधुपर्कपात्रे दत्त्वा गायत्र्या पाद्यद्रव्याणि प्रणवेनार्घ्यम्, व्याहृतिभिरा- प्र
चमनीयम्, गायत्र्या मधुपर्कमभिमन्त्र्य गन्धपुष्पवस्त्राभरणादिपूजाद्रव्याणि गायत्र्याऽभि मृशेत्।
२४१ ततो नवकोष्ठां भूमिं संपाद्य पूर्वादितो मध्ये च दुग्धदधिघृतमधुशर्करेति पञ्चामृतपात्राणि निधाय
विदिक्षु सुगन्धितैलामलकचूर्णसुगन्धिपिष्टोष्णोदकानि विन्यस्य स्थापनक्रमेण नवसु पात्रेषु सद्रव्येषु
नव देवताः पूजयेत्—

१ ओंविद्यायै नमः २ ओंअविद्यायै नमः ३ ओंप्रकृत्यै नमः ४ ओंमायायै नमः ५ ओंतेजस्विन्यै
नमः ६ ओंप्रबोधिन्यै नमः ७ ओं सत्याय नमः ८ ओंरजसे नमः ९ ओंतमसे नमः ॥

२१ इति संपूज्य गायत्र्याऽभिमृशेत्। ततः पीठपूजां सुवर्णरजतताम्रादि पत्रलिखिते यन्त्रे २४७
कलशोपरिस्थिते कुर्यात्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

तद्यथा गन्धाक्षेत पुष्पैः पीठोपरि मध्ये—

ओंआधारशक्तये नमः १ ओंप्रकृत्यै नमः २ ओंकूर्माय नमः ३ ओंअनन्ताय नमः ४ ओंवाराहाय नमः ५ ओंपृथिव्यै ननः ६ ओंक्षीरनिधये नमः ७ ओंश्वेतदीपाय नमः ८ ओंरत्नोज्ज्वलितसुवर्णमण्डपाय नमः ९ ओंकल्पवृक्षाय नमः १० ओंस्वर्णवेदिकायै नमः ११ ओंसिंहासनाय नमः १२।

इति संपूज्य पीठदक्षिणे—ओंगुरुभ्यो नमः १ वामे ओंदुर्गायै नमः २ ओंविघ्नेशाय नमः ३ ओंक्षेत्रपालाय नमः ४। ओंषोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः ५ ओंमंदशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः ६ ओं शक्तिमंडलाय नमः ७ ओंब्रह्मणे नमः ८ ओंविष्णवे नमः ९ ओंईशानाय नमः १० ओंकुवेराय नमः ११ ओंऋग्वेदाय नम १२ ओंयजुर्वेदाय नमः १३ ओंसामवेदाय नमः १४ ओंअथर्ववेदाय ममः १५ ओंआत्मने नमः १६ ओंअंअन्तरात्मने नमः १७ ओपंपरमात्मने नमः १८ ओंह्रींज्ञानात्मने नमः १९ ओंकृताय नमः २० ओंत्रैतायै नमः २१ ओंद्वापराय नमः २२ ओंकलये नमः २३ ओंसंसत्वाय नमः २४ ओंरंरजते नमः २५ ओंतंतमसे नमः २६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओंअणिम्ने नमः २७ ओंमहिम्ने नमः २८ ओंलघिम्ने नमः २९ ओंगरिम्णे नमः ३० ओंप्राप्त्यै नमः ३१ ओंप्राकाम्यै नमः ३२ ओं ईशित्वायै नमः ३३ ओंवशित्वायै नमः ३४ ॥

ततः पूर्वादिपत्रेषु—ओंविमलायै नमः १ ओंउत्कर्षिण्यै नमः २ ओं ज्ञानायै नमः ३ ओंक्रियायै नमः नमः ४ ओंयोगायै नमः ५ ओंप्रह्व्यै नमः ६ ओंसत्यायै नमः ७ ओंईशानायै नमः ८ पुनर्मध्ये अनुग्रहायै नमः १ ततः 'ओं मनोजूतिर्जु०' इति मन्त्रेण 'पीठदेवता सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु' आवाहित पीठदेवताभ्यो नमः ॥

इस प्रकार षोडशोपचार से पूजन कर हाथ में पुष्प लेकर इस वाक्य का उच्चारण करे—

'ओंनमोभगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय योगपीठात्मने इति कर्णिकायां पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । 'सत्यज्ञानानन्दरूपं परं धामैव सकलं पीठम्' इति संचिन्तयेत् ॥ इतिपीठपूजा ॥

अथविष्णुप्रतिमायामग्न्युत्तारणम्

तद्यथा—देवं सुवर्णादिपात्रे निधाय मधुघृताभ्यामभ्यज्य—

ओं अश्मन्नूर्ज्जम्पर्व्वतेशिश्रियाणामद्भ्यऽओषधीभ्योव्वनस्पतिभ्योअधिसम्भृतम्पयः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तान्न ऽइषमूर्ज्जं धत्तमरुतः सठं० रराणा ऽअश्मंस्ते क्षुन्नमयि त ऽऊर्ग्यं द्विष्मस्तन्ते शुगृच्छतु ॥ १ ॥

इमा मे अग्न ऽइष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च दश च शतञ्च शतञ्च सहस्रञ्च सहस्रञ्चायुतञ्चायुतञ्च-
नियुतञ्च नियुतञ्च प्रयुतञ्चार्बुदञ्च न्यर्बुदञ्च समुद्रश्च मध्यञ्चान्तश्च परार्द्धश्चैता मे ऽअग्न ऽइष्टका धेनवः सन्त्व
मुत्रामुष्मिँल्लोके ॥ २ ॥

ऋतवस्स्थ ऽऋतावृध ऽऋतुष्ठास्थ ऽऋतावृधः । घृतश्चुतो मधुश्चुतो विराजो नाम कामदुघा-
ऽअक्षीयमाणाः ॥ ३ ॥

समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि । पावको ऽअस्मभ्यठं० शिवो भव ॥ ४ ॥

हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि । पावको ऽअस्मभ्यठं० शिवो भव ॥ ५ ॥

उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा । अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमन्नो यज्ञम्पावकवर्णठं०
शिवङ्कृधि ॥ ६ ॥

अपामिदन्न्ययनठं० समुद्रस्य निवेशनम् । अन्न्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः । पावको ऽअस्म-
भ्यठं० शिवो भव ॥ ७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अग्नेपावकरोचिषामन्द्रयादेवजिह्वया । आदेवान्न्वक्षियक्षिच ॥ ८ ॥
सनःपावकदीदिवोग्नेदुव.२॥ऽइहावह । उपयज्ञर्ठ०हविश्चनः ॥ ९ ॥
पावकयायश्चितयन्त्याकृपाक्षामन्रुचउषसोनभानुना ।
तूर्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयोघृणेनततृषाणोऽअजरः ॥१०॥
ॐ नम स्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ।
अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥११॥
नृषदेव्वेडप्सुषदेव्वेड्वर्हिषदेव्वेड्वनसदेव्वेट्स्वर्व्विदेव्वे ॥१२॥
ॐयेदेवादेवानाँय्यज्ञियायज्ञियानार्ठ० सम्वत्सरीणमुपभागमासते ।
अहुतादोहविषोयज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयम्पिबन्तुमधुनोघृतस्य ॥१३॥
येदेवादेवेष्वधिदेवत्वमायन्न्येब्रह्मणःपुरऽएतारोऽअस्य ।
येभ्यानऽऋतेपवतेधामकिञ्चननतेदिवोनपृथिव्याऽअधिस्नुषु ॥१४॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राणदाऽअपानदाव्यानदाव्वर्चोदाव्वरिवोदाः ।
अन्न्याँस्तंऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयंःपावकाऽअस्म्मब्भ्यर्ठ० शिवोभव ॥१५॥

उपरांत पुरुषसूक्त व लक्ष्मीसूक्त से अभिषेक कर, जल से देवता को निकाल कर यंत्र पर रखकर प्राण प्रतिष्ठा करे—

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता।

आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं श्रीविष्ण्वादिदेवताप्रीत्यर्थं प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । १ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्यो ऋषिभ्यो नमः शिरसि २ ऋग्यजुः सामच्छन्दोभ्यो नमो मुखे ३ प्राणशक्तिदेवतायै नमः हृदये आं बीजाय नमः गुह्ये ४ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ क्रौं कीलकाय नमः नाभौ ६ प्राणप्रतिष्ठापन विनियोगः सर्वाङ्गे ७ ।

ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः १ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः ५ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ह्रां हृदयाय नमः ।

१ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ ह्रूं शिखायै वषट् ३ ह्रैं कवचायहुम् ४ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ह्रः अस्त्रायफट् ६ । अथ ध्यानं कुर्यात्—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढाकराब्जैः,

पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथगुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान् ।

बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसितापीनवक्षोरुहाढ्या,

देवीबालार्कवर्णा भवतु शुभकरी प्राणविद्या परा नः" ॥

इसप्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजन करे—

तद्यथा—लं पृथिव्यात्मकं प्राणशक्त्यै गन्धं परिकल्पयामि नमः ॥१॥

हं आकाशात्मकं प्राणशक्त्यै पुष्पं परिकल्पयामि नमः ॥२॥

यं वाय्वात्मकं प्राणशक्त्यै धूपं परिकल्पयामि नमः ॥३॥

हं रं अग्न्यात्मकं प्राणशक्त्यै दीपं परिकल्पयामि नमः ॥४॥

वं अमृतात्मकं प्राणशक्त्यै नैवेद्यं परिकल्पयामि नमः ॥५॥

शं शत्यात्मकं प्राणशक्त्यै ताम्बूलादिसर्वोपचारान् परिकल्पयामि नमः ॥६॥

इस प्रकार पूजन कर प्रतिमा के ऊपर हाथ रख कर इन प्राणप्रतिष्ठा बीज मंत्रों को पढ़ें—

तद्यथा—'ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः विष्णोः जीव इह स्थितः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ आं ह्रीं क्रों य० स: विष्णोः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणप्राणपादपायूपस्था इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

ततः पञ्चदशसंस्कारसिद्ध्यर्थं पञ्चदशवारं प्रणवं जपेत् । ततो लक्ष्मीमूर्तेरपि एवं क्रमेण प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । ततो गरुडस्याप्यनेनैव विधिना प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । ततो यन्त्रोपरि मध्यकर्णिकायां विष्णुप्रतिमां तद्वामतो लक्ष्मीप्रतिमां पुरतो गरुडप्रतिमां स्थापयेत् ।

ततः प्रतिमा ध्यानम्—

'ॐ शङ्खचक्रगदापद्मधारिणं वनमालि नम् । लक्ष्म्यधिष्ठितवामाङ्गं स्तनयोर्न्यस्तपाणिनम् ॥
लक्ष्मीमालिङ्ग्य हस्तेन स्थितं मदनसुन्दरम् । पद्मपत्रविशालाक्षं पीतकौशेयवाससम् ॥
केयूरभूषितकरं स्फुरन्मकरकुण्डलम् । किरीटिनं महोरस्कं कौस्तुभोद्भासिवक्षसम् ॥
देवदेवं प्रसन्नास्यं जगत्कारणमव्ययम् । सर्वान्तर्यामिणं साक्षात्साक्षिणं सर्वदेहिनाम् ॥

इस प्रकार ध्यान करके पुष्पांजलि को मूर्ति पर फेकें ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अथावाहनं कुर्यात्—

सहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप्छन्दः अन्त्यायास्त्रिष्टुप्छन्दः पुरुषोदेवता' हिरण्यवर्णामितिपञ्चदशर्चस्य आनन्दकर्म चिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः श्रीरग्निर्देवता आद्यास्तिस्रोऽनुष्टुभश्चतुर्थी कांसोस्मितामिति बृहती उत्तरयोस्त्रिष्टुप् अष्टावनुष्टुभोऽन्त्या प्रस्तारपङ्क्तिर्लक्ष्मी-नारायणपूजने विनियोगः ।

सुपर्णोऽसीत्यस्य श्यावाश्वऋषिः कृतिश्छन्दो गरुत्मान् देवता गरुडपूजने विनियोगः ।

ध्यानम्—

वैकुण्ठे कमनीयरत्नखचिते कल्पद्रुमूले स्थितं, नीलेन्दीवरकान्तिसुन्दरतनु लक्ष्म्यासमालिङ्गितम् ।
गङ्गानीरतरङ्गभूषितपदद्वन्द्वं कृपासागरं, कोटीरीकृतबर्हिपिच्छनिशं लक्ष्मीपतिं भावये ॥

ॐ महाविष्णवे नमः ध्यायामि ।

आवाहनम्—

मायासमेतं शशिनाभमं त्वामावाहये पूजनमन्दिरेऽस्मिन् ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

विलोक्य भक्तिमम किङ्करस्य लक्ष्मीपते सन्निधिमाश्रयस्य ॥
ॐ नमोभगवते जगद्बीजाय महाविष्णवे नमः आवाहयामि ।

आसनम्–

स्फुरत्प्रभं काञ्चनपूरपूरितं शशाङ्कभाबिन्दुसमेतमेतत् ।
हृत्पद्मतुल्यं विधिवन्मयाऽऽहृतं लक्ष्मीपते तुभ्यमिदं वरासनम् ॥
ॐ पुरुष एव० ।
ॐमहाविष्णवे नमः आसनं समर्पयामि ।

पाद्यम्–

औदुम्बरे सुन्दरभाजनेऽमले रेखाङ्किते पद्मदलानुकारिणी ।
संस्थापितपादसुखावहं शुभं मयार्पितं पाद्यमिदं गृहाण ॥
ॐ एतावानस्य०
ॐमहाविष्णवे नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्घ्यम्—

पूर्वस्थापितशंखमादाय तन्मध्ये गन्धपुष्पतिलश्यामाकदूर्वाकुशविष्णुकान्तातुलसीदलानि

प्रक्षिप्य—

'पाटीरपूरितमनेकविधैः शुभैश्च दूर्वादलैश्च परिभूषितमेनमीश ।
लक्ष्मीपते ननु गृहाण करार्घमेहि भक्ताश्च पूरय निकामसकामकामैः ॥

ॐत्रिपादूर्ध्व० ।

ॐमहाविष्णवे नमः । हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनम्—

आनीतमचमानवारिपरं पुनीतं नाथ त्वदर्थमिदमस्ति दयानिधान ।
लक्ष्मीशभक्तजनमोदविधानदक्ष आचम्य पूरय च भक्तजनाभिलाषम् ॥

ॐततोविराट्०

ॐमहाविष्णवे नमः अर्घ्याङ्गमाचमनीयं समर्पयामि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पञ्चामृतम्—

दध्नाघृतेन पयसा मधुनाम्बुमिश्रं गङ्गोदकेन तुलसीसहितेन रम्यम् ।
पञ्चामृत त्रिभुवनाधिपदेहशुद्ध्यै स्नानार्हमेतदतिपूततमं गृहाण ॥
ॐ महाविष्णवे नमः—पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकम्—

एतत्तमालदलमीशकलिन्दजाया आनीतमम्बु नितरां तव मोदकारि ।
हेवैनतेयभुजसंस्थितलक्ष्म्यधीश निर्णेजनाय दयया भगवन् गृहाण ॥
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं० ।
ॐ महाविष्णवे० पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

पश्चात् पुरुषसूक्त से अभिषेक करे ।

वस्त्रम्—

युवासुवासा इति मन्त्रपूर्वकं—तडित्प्रभं नूतनमम्बरं विभो ।
हिरण्मयैस्तन्तुहतैर्विमिश्रितं दशास्तु लक्ष्मीधवते समर्पितम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ तस्माद्य० ऋच० ।

ॐ महाविष्णवे नमः वस्त्रमुपवस्त्रं च समर्पयामि ।

ॐ तद्विष्णोः परमिति आभरणानि च समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम्—

प्रजापतेरेव समं गृहीतजन्मातिपूतं द्विजचिह्नभूतम् ।
यज्ञोपवीतं भवदर्थमीश संपादितं धारय मोदयास्मान् ॥

ॐ तस्मादश्वाऽअजा० । ॐ महाविष्णवे० यज्ञोपवीतं सम० । यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि ।

गन्धम्—

पाटीरसंभूतमभूतपूर्वसौगन्ध्यसंबन्धुरमेतदीश ।
लक्ष्मीपते चन्दनचर्चनं ते मोदाय भालेऽर्पितमस्तुवस्तु ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ तंयज्ञं ब० ।

ॐ महाविष्णवे नमः । कनिष्ठामूलगताङ्गुष्ठयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्श्य अनामिकया गन्धानुलेपनं समर्पयामि ।

पुष्पम्—

बहुविधं—कमलावर सुन्दरं समुचितं मकरन्दसमन्वितम् ।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरु सदा सफलं नयनाञ्चलैः ॥

ॐ यत्पुरुषंव्यद० ।

ॐ महाविष्णवे० तर्जन्योष्ठयोगेन पुष्पमालां समर्पयामि ।

ततः— केशवादिचतुर्विंशतिनामभिः ।

ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः २ ॐ माधवाय नमः ३ ॐ गोविन्दाय नमः ४ ॐ विष्णवे नमः ५ ॐ मधुसूदनाय नमः ६ ॐ त्रिविक्रमाय नमः ७ ॐ वामनाय नमः ८ ॐ श्रीधराय नम ९ ऋषीकेशाय नमः १० ॐ पद्मनाभाय नमः ११ ॐ दामोदराय नमः १२

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ सङ्कर्षणाय नमः १३ ॐ वासुदेवाय नमः १४ ॐ अनिरुद्धाय नमः १५ ॐ पुरुषोत्तमाय नमः १६ ॐ अधोक्षजाय नमः १७ ॐ नारसिंहाय नमः १८ ॐ अच्युताय नमः १९ ॐ जनार्दनाय नमः २० ॐ उपेन्द्राय नमः २१ ॐ हरये नमः २२ ॐ कृष्णाय नमः २३ ॐ प्रणवाय नमः २४ ।

इन चौबीस नामों से क्रम से पूजन कर तुलसी जल फेंके तथा महालक्ष्मी का पूजन करें ।

ध्यानम्—

'या सा पद्मासनस्था विपुलतकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिताहेमकुम्भैर्नित्यं,
सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥

ॐ हिरण्यवर्णां० । ॐ महालक्ष्म्यै नमः ध्यायामि० ।

इन्द्रादिदेव गणमौलिकिरीटकोटिरत्नाङ्कुरैः सततरञ्जितपाठपीठम् ।
दुःखाभिभूतजनदुर्गतिनाशिनीं त्वामावाहयामि कृपया भव सम्मुखीना ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ ताम्मआवह० । ॐ महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीमावा० ।
मुक्ताप्रवालमणिलोहितपद्मराग कान्त्युल्लसद्रुचिररत्नमयं सुरम्यम् ।
राजीवपत्रनयने दयया सुपीठमेन गृहाण कमले विनिवेदितं मे ॥
ॐ अश्वपूर्वां० । ॐ महालक्ष्म्यै नमः आसनं समर्पयामि ।
सन्तापनोदनपरं बहुभक्तिभावचित्तेन हेमकलशे विहितं पवित्रे ।
त्वत्पादपद्मयुगले विनिवेदितं मे पाद्यं गृहाण जगदीश्वरि लोकवन्द्ये ॥
कांसोस्मितां० । ॐ महालक्ष्म्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।
भ्राजिष्णुहाटकविनिर्मितपात्रमध्ये संस्थापितं कुसुमगन्धसुवासितं च ।
भक्त्योपनीतमभिचरेण सुरम्यमेवमर्घ्यं गृहाण कमलेपति तस्य लक्ष्मि ॥
चन्द्रां प्रभासां० । ॐ महालक्ष्म्यै नमः हस्तयोर्घ्यं समर्पयामि ।
समस्तदुःखौघविनाशदक्षं सुगन्धितं फुल्लसुशस्तपुष्पैः ।
अये गृहाणाचमनं सुवन्द्य निवेदनं भक्तियुतः करोमि ॥

आदित्यवर्णे० ओमहालक्ष्म्यै० अर्घाङ्गमाचमनीयं समर्पयामि ।
मार्गश्रमपहमतीवसुगन्धयुक्तं पञ्चामृतस्नपनमम्ब रमे सुरम्यम् ।
दारिद्र दुःखभयहारिणि मामकीनमङ्गीकुरुष्व करुणां कुरु मे सुपूज्ये ॥
उपैतुमां० ।
ओंमहालक्ष्म्यै नमः पञ्चामृतस्नान समर्पयामि ।
काश्मीरचूर्णमृगनाभिर्विर्मिश्रितेन पूतेन हेमकलशस्थसुशीतलेन ।
तीर्थोदकेन शिशुना त्रिनिवेदितेन स्नानं विधेहि सफलं कुरु मे श्रमं च ॥
ओंक्षुत्पिपामा० ।
ओंमहालक्ष्म्यै० नमः पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

लक्ष्मीसूक्त से अभिषेक करे—

ओं सुजातो० ।
ओंमहालक्ष्म्यै० वस्त्रमुपवस्त्रं च समर्पयामि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अम्बेऽअम्बिके' इति आभरणानि च समर्पयामि ।

प्रत्यूषमार्तण्डमयूखतुल्यं सुगन्धमुक्तं मृगनाभिचूर्णैः ।
माणिक्यपात्रस्थितमङ्गकान्ति श्री मम देवी गृहाण कुङ्कुमम् ॥

गन्धद्वारां० ।

ओंमहालक्ष्म्यै नमः गन्धमुद्रां प्रदर्श्य अनामिकया गन्धं समर्पयामि ।

मनसः काममा० । कनिष्ठामूलगताङ्गुष्ठयोगेन ओंमहालक्ष्म्यै नमः तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन पुष्पाणि समर्पयामि ।

अथ गरुडध्यानादिकम्—

पृष्ठेनैव त्रिभुवनपतिं श्रीसमेतं दधानः प्रत्यूहानामथ समुदयं धूनयन् पक्षघातैः ।
देशं यज्ञोपरिरचितमिमं प्रार्थितोऽभ्येतु धीमान् सौपर्णोऽसौ वसतु च भवेत्पूजनं यावदत्र ॥

ओंनमो भगवते जगद्बीजाय सपत्नीकाय सवाहनाय ओंगरुडाय नमः गरुडमावाह० ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ताद्यं त्वदर्थमिदमासनमम्बुजामूर्णामयैर्विरचितंशु भतन्तु जालैः ।
शिल्पिगृहान्तव मुपाहृतमस्ति रम्यं हेवैननेय समुपाविशपक्षिराज ।। ओंसुपर्णोसि ॥

ॐ सुपर्णोसिगरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽआत्माच्छन्दाᳬंस्यङ्गानि यजूᳬंषिनाम । सामंतेतनूर्व्वामदेव्व्यं यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः । सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवङ्गच्छस्वः पत ॥१॥ (शु० य० सं० १२७८)

ओंनमो भगवते० ओंगरुडाय० आसनं समर्पयामि ॥ २ ॥

पाद्यं जलं मलविधूननकर्मदक्षमारक्षितं नवलभाजनकेपुरस्ते ।
आनन्दवर्धनगरुत्मधीश देव संधावयस्व चरणौ शरणायमानौ ॥ सुपर्णोसि० ।

ओंनमोभगवते० गरुडाय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥ ३ ॥

दूर्वादलस्रमुकपुष्पसमेत एष द्रव्यार्चितोर्घ इहनाथपुरः सरन्ते ।
सस्थापितः पतगनायक भक्तरक्षन् रक्षां विधेहि कुरु स्वीकृतिगोचरं च ॥ ओंसुपर्णोसि० ।

नमोभगवते० गरुडाय नमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

गाङ्गं सामाहृतमिदं शुभकारिवारि स्नानाय ते चुलुकनाय च पन्नागारे ।
भक्त्यार्पितं ननु गृहाण शरीरशुद्ध्यै स्नानं समाचर सदाचमनं विधेहि ।। ओंसुपर्णोसि० ।।
नमो भगवते० गरुडाय० अर्घाङ्गमाचमनीयं समर्पयामि ।। ६ ।।

गव्यं पयोदधिसितामधु विष्णुकान्ता गङ्गोदकं च परिमेल्यमुदावहं ते ।
पञ्चामृतं कृतमिदं पतगावतंस स्नानेन पावय विधूनय पङ्कसङ्घम् ।। ओंसुपर्णोसि० ।।
नमोभगवते० गरुडाय० पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं सर्पयामि ।

ततो निर्माल्यं विसृज्य समान्यार्घोदकेन सुपर्णोसीति मन्त्रेण अभिषेकं कुर्यात् । ततोजलाद्-
देवं बहिर्निष्काश्य वस्त्रेण प्रोञ्छ्य पूजापीठे निवेशयेत् ।

वासोऽस्त पट्टमिदमाभरणायमानं चामीकरोतृवचितप्रान्ततटं नवीनम् ।
भक्त्योपनीतमुपनीय दधां स्वचित्ते हेवैनतेय परिधेहि मुदं च देहि ।।
ॐ सुपर्णोसि० नमोभगवते गरुडाय० वस्त्रमुपवस्त्रं च समर्पयामि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यद् ब्रह्मणैव सममाविद भूद्द्विजानां चिन्हायमानमतिपूतसमं त्रिलोक्यम् ।
आनीतमेतदुपवीतमनन्तवाह स्वीकृत्य मोदय चिराय पतत्रिपाल ॥
ओंसुपर्णोसि० गरुडाय यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।
पिष्टं जलैर्मलयजं शुभगन्धयुक्तैः कश्मीरजलेन लसितं बहुशीतलं च ।
अङ्गेषु तेऽद्य विनिवेदनमङ्गभक्तान् नम्रान् पुनीहि दयया स्वरया गरुत्मन् ॥
ओंसुपर्णोसि० नमो भगवते गरुडायन० गन्धं समर्पयामि ।

१–बिन्दौ–ओंलक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीं पूजयामि १

पंचोपचार से पूजा करके—

'ओंदयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

२–त्रिकोणे--ओंबलाय नमः बल पू० १ ओंप्रबलाय नमः प्रबलं पू० २ ओंमहाबलाय नमः महाबलं पू० ३ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओं दयाब्धे त्राहि संसार इति द्वितीयावरणार्चनम् ।। इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

३–षट्कोणेषु–ओंविष्वक्सेनाय नमः विष्वक्सेनं पू० १ ओंचण्डाय नमः चण्डं पू० २ ओंप्रचण्डाय नमः प्रचण्डं पू ३ ओंजयाय नमः जयं पू० ४ ओंविजयाय न० विजयं पू० ५ ॐ शुकाय नमः शुकं पू० ६ । ॐ दयाब्धेत्राहि०तृतीयावरणार्चनम् ।। इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।। ४ अष्टपत्रेषु–ॐ ध्रुवाय न० ध्रुवं पू० १ ॐ अध्वराय न० अध्वरं पू० २ ॐ सोमाय न० सोमं पू० ३ ॐ आपाय न० आपं पू० ४ ॐ अनिलाय न० अनिलं पू० ५ ॐअनलाय न० अनलं पू० ६ ॐ प्रत्यूषाय न० प्रत्यूषं पू० ७ ॐ प्रभासाय न० प्रभासं पू० ८ ओं दयाब्धे० ।। चतुर्थावरणार्चनमिति पुष्पाञ्जलिः ।। ५ दशपत्रेषु–ओंमत्स्याय न० मत्स्यं पू० १ ओंकूर्माय नमः कूर्मं पू० २ ओं वराहाय न० वराहं पू० ३ ओंनारसिंहाय नमः नारसिंहं पू० ४ ओंवामनाय नमः वामनं पू० ५ ओंपरशुरामाय न० परशुरामं पू० ६ ओंरामाय न० रामं पू० ७ ओंकृष्णाय न० कृष्णं पू० ८ ओंबुद्धाय न० बुद्धं पू० ६ ओंकल्किने० कल्किनं १० ।। ओं दयाब्धे त्राहि० पञ्चमावरणार्चनम् ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् । द्वादशपत्रेषु–ओंनन्दाय न० नन्दं० पू० १ ओंसुनन्दय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न० सुनन्दं पू० २ ओंमहानन्दाय न० महानन्दं पू० ३ ओंविमलनन्दाय न० विमलनन्दं पू० ४ ओंअतिनन्दाय न० अतिनन्दं पू० ५ ओंसुधीवनन्दाय न० सुधीवनन्दं पू० ६ ओंशत्रुविमर्दननन्दाय न० शत्रुविमर्दननन्दनं पू० ७ ओंमित्रविवर्द्धननन्दायन० मित्रविवर्द्धननन्दनं पू० ८ ओंघोषनन्दनाय न० घोषनन्दनं पू० ९ ओंशोषनन्दनाय न० शोषनन्दनं पू० १० ओंजीवनन्दानाय न० जीवनन्दनं पू० ११ ओंपरमजीवनन्दनाय न० परमजीवनन्दनं पू० १२ ॥ ओंदयाब्धेत्राहि० सुषष्ठावरणार्चनम्। पुष्पाञ्जलिः ॥ चतुर्दशपत्रेषु—ओंनारदाय न० नारदं पू० १ ओंपराशराय न० पराशरं पू० २ ओंव्यासाय न० व्यासं पू० ३ ओंशुकाय न० शुकं पू० ४ ओंवाल्मीकिने न० वाल्मीकिनं पू० ५ ओंवसिष्ठाय न० वशिष्ठं पू० ६ ओंशंवराय न० शंवरं पू० ७ ओंदेवलाय न० देवलं पू० ८ ओंपर्वताय न० पर्वतं पू० ९ ओंदुर्वासाय न० दुर्वासं पू० १० ओंजाबालये न० जावालिं पू० ११ ओंजमदग्नये न० जमदग्नि पू० १२ ओंविश्वामित्राय न० विश्वामित्रं पू० १३ ओंभृगुरये न० भार्गुरि पू० ॥ ओंदयाब्धे० सप्तमावरणार्चनम् ॥ पुष्पाञ्जलिः। षोडशपत्रेषु—ओंकपिलाय न० कपिलं पू० १ ओंयाज्ञवल्क्याय न० पू० २ ओंदाल्भ्याभय न० दाल्भ्यं पू० ६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओंशौनकाय न० शौनकं पू० ४ ओंमार्कण्डेयाय न० मार्कण्डेयं पू० ५ ओंभृगवे न० भृगुं पू० ओंगौतमाय न० गौतमं पू० ७ ओंगालवाय न० गालवं पू० ८ ओंशाण्डिल्याय न० शाण्डिल्यं पू० ६ ओंभरद्वाजाय न० भरद्वाजं पू० १० ओंमौद्गल्या न० मौद्गल्यं पू० ११ अवेदवाहनाय न० वेदवाहनं पू० १२ ओंबृहदश्वाय न० बृहदश्वं पू० १३ ओंजैमिनये न० जैमिनिं पू० १४ ओंअगस्त्याय न० अगस्त्यं पू० १५ ओंश्वेतनन्दाय न० श्वेतनन्दानं पू० १६ ॥ ओंदयाब्धे त्राहि० अष्टमावरणार्चनमिति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत। ६—भूगृहे पूर्वादितः—ओंइन्द्राय न० इन्द्रं पू० १ ॐअग्नये न० अग्निं पू० २ ओंयमाय न० यमं पू० ३ ओंनिर्ऋतये न० निर्ऋतिं पू० ४ ओंवरुणाय न० वरुणं पू० ओंवायवे न० वायुं पू० ६ ओंसोमाय न० सोमं पू० ७ ओंईशानाय न० ईशानं पू० ८ ओंब्रह्मणे न० ब्रह्माणं पू० ६ ओंअनन्ताय न० अनन्तं पू० ओंदयाब्धे त्राहि० नवमावरणार्चनम् इति।

पुष्पांजलि फेंकें तथा आवरण देवताओं की पूजा कर धूपादि समर्पित करें—

तद्यथा—सौरभ्यमानन्दकरं यदीयं यदीयधूपोपि विधूतधूमः।
एषोऽस्तु धूपो ज्वलते पुरस्ते मोदावहो माधवजिघ्रजिघ्र ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ ब्राह्मणो॰ महाविष्णवे॰ तर्जनीमूलरङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्श्य धूपमाघ्राप॰ ।

सद्वर्तिसंपूरित एषदीप आलोककारीतमसां विदारि ।

प्रज्वालितः स्नेहमये सुपात्रे लक्ष्मीपते चन्द्रमसं गृहाण ।

महाविष्णवे न॰ मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्य दीपं दर्श॰ हस्तप्रक्षालनम् ।

व्यनीतपापं नवनीतमेतद्द्राक्षादिरम्भासितशर्करा च ।

निधाय रम्य कनकस्थपात्रे दत्तं तु नैवेद्यमिदं गृहाण ॥

अनामामूलयोरङ्गुष्ठयोगेन नैवेद्यमुद्रां प्रदर्श्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत् ।

तद्यथा—अङ्गुष्ठप्रदेशिनीमध्यमाभिः—ओंप्राणाय स्वाहा ॥ १ ॥

अङ्गुष्ठमध्यमानामिकाभिः—ओंअपानाय स्वाहा ॥ २ ॥

अङ्गुष्ठानामिकाक निष्ठाभिः ओंव्यानाय स्वाहा ॥ ३ ॥

कनिष्ठातर्जन्युष्ठैः—ओंसमानाय स्वाहा ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साङ्गुष्ठाभिः सर्वाभिः—ओंउदानाय स्वाहा ॥ ५ ॥

इति प्रदर्श्य मध्य पानीयं समर्पयामि । उत्तरापोशन समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि । ॐमहाविष्णवे न० नैवेद्यं न० ।

कर्पूरदेवकुसुमक्रमुकैलिकाभिः संपूरितामतिसुधासुधयासुपूराम ।
ताम्बूलिकां सुरजनेन निषेवणीयां कृत्वाऽऽनेन भवतु मङ्गलमोद दाता ॥

ॐमहाविष्णवे० यत्पुरुषेण० ऋतुफलानि समर्पयामि ।

संवासितं नवलकेतकवारि पूरैः पात्रे धृतञ्च रजतोत्सत्रचित्ते त्वदग्रे ।
पानीयमम्बुसमुपाहृतमेतदीश पीत्वा निभाल्य दृशासततं स्वभक्तान् ॥

आचमनीयं समर्पयामि ।

पूगीसुधैलाघनसारदेवपुष्पैरुपेतं मुखमण्डनं यत् ।
विहारहार्यं नवरङ्गगर्भं गृहाण ताम्बूलमिदं मदर्पितम् ॥

महाविष्णवे न० ताम्बूलं समर्पयामि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ हिरण्यगर्भं० । ॐ महाविष्ण० दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ।
त्वद्देहसंस्थानि जगन्ति देव त्वद्रोमकूपेषु च देवसङ्घाः ।
प्रदक्षिणं दक्षधियोऽत एव कुर्वन्ति पापौघविनाशनाय ॥
महाविष्णवे० प्रदक्षिणां समर्पयामि ।
चराचरं व्याप्तमिदं त्वयैव मासास्तिजगत्सभासम् ।
त्वय्येव पुष्पाञ्जलिरर्पितेयं मोदाय लोकस्य तवापि चास्तु ॥
ॐ यज्ञेनयज्ञ० महाविष्णवे न० पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

इस प्रकार लक्ष्मी के सम्मुख धूपादिक दिखावे—

नानाविधौषधविमिश्रितगन्धमुक्तं श्रीदेवतमनुजदानवसौख्यदं च ।
सौगन्ध्ययुक्तमतुल जलजाधिवासे धूपं गृहाण कृपया च विनिवेदितं च ॥
ॐकर्दमेन० । ओंमहालक्ष्म्यै० धूपमाघ्रापयामि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh.

कर्पूरमिश्रितघृतैः परिपूर्णकण्ठं ध्वान्तौघनाशकरणं जगदेकवन्द्य ।
देदीप्यमानमतुलं स्वदृशाप्रभाभिरङ्गीकुरुष्व कृपया मम दीपमेनम् ॥

ॐआपः० महालक्ष्म्यै दीपं दर्शयामि ।

माणिक्यपात्रपरिवेशितलेह्यचोष्यपेयादिवस्तुमहितं विधिवत्सुपक्वम् ।
नानाविधानपरिवर्तितस्वादुगन्धं नैवेद्यमेतदुररी कुरु सेवकस्य ॥

ॐआर्द्रां पुष्करणीम्० । ॐमहालक्ष्म्यै न० नैवेद्यं निवेदयामि ।

एलालवङ्गघनसारसुगन्धरम्यं पूगादिखण्डयुतमास्यमुखप्रदं च ।
ताम्बूलपक्वदलवर्तितवीटकं मे मातर्गृहाण कृपया करुणार्द्रचित्ते ॥

ॐमहालक्ष्म्यै नमः ताम्बूलं० समर्पयामि ।

ब्रह्माण्डमध्यागतवस्तुतवैव किं दक्षिणां तव कृते प्रददामि मातः ।
तत्रापि भक्तिपरिपूरितचेतसाहमेनां ददामि सफलांकुरु दृष्टिपातैः ॥

ॐ महालक्ष्म्यै० दक्षिणां समर्पयामि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वकीयपाणौ गुरुणाऽऽदरेण वहन्तमत्यन्तसुगन्धिपुष्पम् ।
त्वदङ्घ्रियुग्मे कलितं मयेमं पुष्पाञ्जलिं स्वीकुरु मामकीनम् ॥
ॐमहालक्ष्म्यै नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

गरुडदेवता के आगे धूपादिक देवें—

धूपेन शुद्धमृदुगन्धमयेन सर्वं स्थानं सुपूर्णमधुना सुखदं समन्तात् ।
तुष्टा च सर्वजनता त्वमपीहदेव तुष्टो भवामृतमयं च कुरु प्रसादम् ॥
ॐ सुपर्णोऽसि० गरुडाय नमः धूपमाघ्राप० ।
दीपैः समुज्वलशिखैरभितः प्रकाशवृष्टिर्नुदेवरचितेयमिह त्वदर्चा ।
पूर्णप्रसन्नमनसा हसितान्तरात्मन् श्रीजानिवाहनरमस्व निनाशय दोषान् ॥
ॐसुपर्णोऽसि० गरुडाय० दीपं दर्शयामि ।
द्राक्षेक्षुखण्डनवदाडिममातुलङ्गान्येतानि देवमधुराणि समाहृतानि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धामयेन मनसा कृपया गृहाण कामैर्निकायमथपूरय भक्तसङ्घम् ॥

ॐसुपर्णोऽसि० । गरुडाय० नैवेद्यं निवेदयामि ।

सौवर्णनिष्क्रयतया विपुलप्रतिष्ठां पूर्तिप्रदां सकलपावनकर्मणाञ्च ।

चन्द्राधिदैवतमयीं रजतप्रणीतां भक्त्याऽर्पये पतगनायकदक्षिणान्ते ॥

ओंसुपर्णोसि० । गरुडाय नमः दक्षिणां समर्पयामि ।

इत्थं त्वदर्चनमिदं विहितं सयत्नं पक्षीन्द्रमाधवपदद्वयपाविताङ्ग ।

न्यूनाधिकत्वपरिहाणसमर्थनीयां पुष्पाञ्जलिं प्रणतिभिः सहितां गृहाण ॥

गरुडाय नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

संकल्प करे—

ततो देशकालौ सङ्कीर्त्य–'जगद्बीजसशक्तिपुरुषोत्तमप्रीत्यर्थं पुरुषसूक्तादिजपं करिष्य' ॥

अस्य पुरुषसूक्तस्य नारायणपुरुषऋषि अनुष्टुप्छन्दः अन्त्यायास्त्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीज-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरुषोदेवता जपे विनियोगः । अस्य लक्ष्मीसूक्तस्यानन्दकर्म चिक्लीतेन्दिराऋषिः श्रीरग्निर्देवता जपे विनियोगः ।

पश्चात् सूक्त न्यास, पंचांगन्यास और सूक्तद्वयेन पूर्व कहे गये, न्यासों को करे तथा पुरुषसूक्त, लक्ष्मीसूक्त का जप करके यथा शक्ति मूलमंत्र का जप करे—

तद्यथा—अस्य श्रीमहाविष्णुमन्त्रस्य नारायणऋषिर्वस्वक्षरं छन्दः श्रीमहालक्ष्मीसहितो महाविष्णुर्देवता श्रीमहालक्ष्मीसहितविष्णुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

नारायणऋषये नमः शिरसि ॥१॥	वस्वक्षरछन्दसे नमः मुखे ॥२॥
लक्ष्मीनारायणदेवतायै नमो हृदि ॥३॥	जपे विनयोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥४॥
नारायणऋषये नमः शिरसि ॥१॥	वस्वक्षरछन्दसे नमः मुखे ॥३॥
ॐनां नमः मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥	ॐरां नमः अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥
ॐयँ नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥	ॐणाय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥

एवं हृदयादि । ततः—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीः कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
वन्दे विष्णुभवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य मालां गृहीत्वा–

'ॐ माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
निर्विघ्नं कुरु मालेऽस्मिन् जपकाले सदा मम' ॥

इस प्रकार माला की पूजा कर यथा शक्ति जप करके पुनर्न्यास, ध्यान, मानस पूजा करके माला को शिर से लगावें ।

'ॐह्रींसिद्ध्यै नमः' । इति मालां संपूज्य यथाशक्तिजपं कृत्वा पुनर्न्यासं ध्यानं मानसपूजां च कृत्वा मालां शिरसि निधाय ।

इस श्लोक का उच्चारण करे—

'ॐगुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादाज्जनार्दन ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

यह पढ़े—

'पूजाजपादियत्कर्म सुकृतं समुपार्जितम् । भगवन् देवदेवेश संगृहाण नमोऽस्तु ते' ॥

यह प्रार्थना कर हाथ में जल लेकर कहें—

मया कृतेन जपेन श्रीलक्ष्मीनारायणौ प्रीयेताम् ।

इति देवता दक्षिणहस्ते जपं निवेद्य मालां स्वस्थाने निधाय—

ओं मम ज्ञानादिसिध्यर्थं श्रीविष्णौ स्थिरभक्तये ।

कर्मार्थसिद्धये देव भुक्तांशिष्टं प्रयच्छ मे ॥

इति प्रसादत्वेन नैवेद्यं गृह्णीयात् । भगवतः पादोदकं च पिबेत् ।

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽनिशं मया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥

ततः—क्षमाप्य स्तोत्रेण स्तुवीत—

ॐ जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन । नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥१॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

नमो हिरण्यगर्भाय प्रधानाध्यक्षरूपिणे । ॐ नमोवासुदेवाय शुद्धज्ञान स्वरूपिणे ॥२॥
देवानां दानवानां च सामान्यमधिदैवत । सर्वदा चरणद्वन्द्वं व्रजामि शरणं तव ॥३॥
एकस्त्वमसिलोकस्य स्रष्टा संहारकस्तथा । अध्यक्षश्चानुमन्ता च गुणमाया समावृतः ॥४॥
संसारसागरं घोरमनन्तक्लेशभाजनम् । त्वामेवशरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः ॥५॥
न ते रूपं न चाकारो नायुधानि न चास्पदम् । तथापि पुरुषाकारो भक्तानां त्वं प्रकाशसे ॥६॥
नैवकिञ्चित्परोक्षं ते प्रत्यक्षोऽपि न कस्य चित् । नैव किञ्चिदसाध्यं ते न च साध्योऽस्य कस्य चित् ॥७॥
नैव किञ्चिदसिद्धं ते न च सिद्धोऽसि पावकः । कार्याणां कारणं पूर्वं वचसां वाक्यमुत्तम ॥८॥
योगिनां परमासिद्धिः परमं ते परं ते परं विदुः । अहं भीतोऽस्मि देवेश संसारेऽस्मिन् भयप्रद । ९॥
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष न जाने परमं पदम् । कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत ॥१०॥
शरीरे जगतो वापि वर्द्धते मे महद्भयम् । त्वत्पादकमलादन्यन्मम जन्मान्तरेष्वपि ॥११॥
विज्ञानं यदिदं प्राप्तं यदिदं स्थानमर्चितम् । जन्मान्तरेऽपि देव माभूदस्य परिग्रहः ॥१२॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुर्गतावपि जातस्य त्वद्गतो मे मनोरथः । यदि नाशं न विन्देय तावदस्मि कृती सदा ॥१३॥

अकालकलुषं चिन्तं मम।ते पादयोः स्थितम् । कामये विष्णुपादौ तु सर्वजन्मसु केवलम् ॥१४॥

इस प्रकार प्रार्थना करे ।

अथाग्निस्थापनम्

त्रिभिः कुशैः प्रागग्रैः प्राक्संस्थमुदक्संस्थं वा भूमिं त्रिः परिसमुह्य, तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य गौमयोदकाभ्यामुदक्संस्थं त्रिरुपलिप्य, साग्निः स्फ्येन निरग्निः श्रुवेण वा षडङ्गुलान्तरालाः प्रादेशमात्राः स्थण्डिलप्रमाणा वा प्रागग्राः त्रिरुल्लिख्य, अनामिकाङ्गुष्ठेनोद्धृत्य-ईशान्यां प्रक्षिप्य च जलेनाभ्युक्ष्य निर्धूममग्निं तासु रेखासु—

अग्निस्थापनमंत्रः—

ॐ अ॒ग्निन्दू॒तं पु॒रोद॑धेहव्य॒ वा॒हमुप॑ब्रुवे ॥ दे॒वाँऽआसदया॒दि॒ह ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अथ ग्रहस्थापनम्

ॐ आकृष्णेनरजंसाव्वर्तमानोनिवेशयंन्नमृतम्मर्त्यंञ्च ॥ हिरण्ययेनसविताग्थे नादेवोयातिभुवनानिपश्यंन् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय० सूर्यम् ।

ॐ इमन्देवाऽअसपत्नꣳसुंवदुध्वम्महतेक्षत्रायंमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानंराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इममुष्यपुत्रमस्यैव्विशऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकंब्राह्मणानाꣳराजा ॥

ॐ भू० यमुनातीरोद्भवआत्रेय गोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहा० सोमाय० सोमम् ।

ॐ अग्निमूर्द्धा दिवःककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम् ॥ अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति ॥

ॐ भू० अवन्तिकापुरोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम इहा० भौमाय० भौमम् ।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवायजमानश्चसीदत ॥

ॐ भू० मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहा० बुधाय० बुधम् ।

ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् ॥

ॐ भू० सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहा० बृहस्पतये० बृहस्पतिम् ।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ॥ ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु ॥

ॐ भू० भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहा० शुक्राय० शुक्रम् ।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॥

ॐ भू० सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनि० इहा० शनये० शनिम् ।

ॐ कयानश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा ॥ कया शचिष्ठया वृता ॥

ॐ भू० राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो इहा० राहवे० राहुम् ।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथाः ॥

ॐ भू० अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो इहा० केतवे केतुम् ।

अथ ग्रहदक्षिणपार्श्वे अधिदेवतास्थापनम्

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ ईश्वराय० ईश्वरम् ।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्म ऽइषाण सर्व्वलोकम्म ऽइषाण ॥ उमायै० उमाम् ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यम्महि जातन्ते ऽअर्व्वन् ॥ स्कन्दाय० स्कन्दम् ॥

ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पा ँ सुरे ॥ विष्णवे० विष्णुम् ॥

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः । सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ब्रह्मणे० ब्रह्माणम् ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ सद्योगा ऽइन्द्रसग्ंणोमरुद्भिःसोमम्पिबवृत्रहाशूरविद्वान् ॥ जहिशत्रूँ १॥ रपमृधोनुदस्वा-
थाभयङ्कृणुहिविश्वतोनः ॥ इन्द्राय० इन्द्रम् ॥

ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहाघर्मायस्वाहाघर्मःपित्रे ॥ यमाय० यमम् ॥

ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्वाक्षित्या ऽउन्नयामि । समापो ऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः ॥
कालाय० कालम् ॥

ॐ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय ॥ चित्रगुप्ताय० चित्रगुप्तम् ॥

अथ ग्रहवामपार्श्वे प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ ऽआसादयादिह ॥ अग्नये० अग्निम् ॥

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ अद्भ्यो० अपः ॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः ॥ पृथिव्यै० पृथिवीम् ॥

ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाꣳसुरे ॥ विष्णवे० विष्णुम् ॥

१— आवाहयामि स्थापयामि इस-वाक्य को प्रतिदेवता में जोड़ना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञःपरऽएतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्ती-नाम्मरुतोयन्त्वग्रम् ॥ इन्द्राय० इन्द्रम् ॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः ॥ पूषासिघर्म्मायदीष्व ॥ इन्द्राण्यै० इन्द्राणीम् ॥

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योव्विश्वारूपाणिपरिताबभूव । यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुव्वयꣳ स्यामपतयोरयीणाम् ॥ प्रजापतये० प्रजापतिम् ॥

ॐ नमोऽस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवी मनु । येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ सर्पेभ्यो० सर्पान् ।

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोव्वेनऽआवः ॥ सबुध्न्याउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ ब्रह्मणे० ब्रह्माणम् ॥

अथ पञ्चलोकपालस्थापनम्

ॐ गणानान्त्वा ॥ गणपतये० गणपतिम् ।

ॐ अम्बेऽअम्बिके ॥ दुर्गायैम्० दुर्गा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ व्यायोषेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागंहि ॥ नियुत्वान्त्सोमंपीतये ॥ वायवे० वायुम् ॥

ॐ घृतं घृतपावानःपिबतुव्वसांव्वसापावानंपिबतान्तरिक्षस्यहविरंसिस्वाहा ॥ दिशंः प्रदिशऽआदिशोव्विदिशंऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ आकाशाय० आकाशम् ॥

ॐ यावाङ्कशामधुमत्यश्विनासूनृतावती ॥ तयायज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ अश्विभ्यां० अश्विनौ० ॥

ॐवास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशोऽ अनमीवो भवानः । यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ वास्तोष्पतये० वास्तोष्पतिम् ॥

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः ॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यंव्वैश्वानरङ्क्षैत्रजित्यायदेवाः ॥ क्षेत्राधिपतये० क्षेत्राधिपतिम् ॥

अथ दशदिक्पालस्थापनम्

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ इन्द्राय० इन्द्रम् ॥

ॐ त्वन्नोऽअग्ने तवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्वश्चवन्द्य ॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषᳬ रक्षमाणस्तवव्रते ॥ अग्नये० अग्निम् ॥

ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्मःपित्रे ॥ यमाय० यमम् ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ निर्ऋतये० निर्ऋतिम् ॥

ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः ॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशᳬसमानऽआयुः प्रमोषीः ॥ वरुणाय० वरुणम् ॥

ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरᳬ सहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् ॥ वायोऽअस्मिन्सवनेमादयस्वयूयम्पातस्वस्तिभिः सदानः ॥ वायवे० वायुम् ॥

ॐ वयᳬसोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ॥ प्रजावन्तःसचेमहि ॥ सोमाय० सोमम् ।

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेवयम् ॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ईशानाय० ईशानानम् ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्व्वतासोवृत्रहत्यभरंहूतौ सजोषाः ॥ य॰श॰संतेस्तुवतेधायिपज्रऽइन्द्रं-ज्येष्ठाऽअस्माँ२ ॥ ऽअवंन्तुदेवाः ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये—ब्रह्मणे॰ ब्रह्माणम् ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नःशर्म्म सुप्रथाः ॥ निर्ऋतिपश्चिम-योर्मध्ये—अनन्ताय॰ अनन्तम् ॥

उपस्थित उपचारों से पूजन कर प्रार्थना करे—

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ॥

गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयोव्व्यन्तो व्विप्रायमतिम् ॥ तेषां व्विशिप्रियाणांव्वोऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्वा जुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम् ॥

असंख्यातरुद्रस्थापनम्

ईशान कोण और प्रधान वेदी के मध्य में कलश का स्थापन कर इस वैदिक मंत्र का उच्चारण कर रुद्र का पूजन करे—

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणिये रुद्राऽअधिभूम्म्याम् ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्मसि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

चतुःषष्टि योगिनीपूजनम्

मण्डपस्याग्नेये हस्तमात्रे हस्तोन्नते प्रादेशोन्नते वा वप्रत्रययुते रक्तवस्त्राच्छादिते पीठे चतुर्धाविभाजिते पश्चिमतो भागत्रये पूर्वापरमुदग्दक्षिणं च नव नव रेखाकरणेन चतुःषष्ठिकोष्ठानि सम्पाद्य तेषु प्रतिकोष्ठमेकैकं त्र्यस्रं सम्पाद्येत्येवं चतुःषष्टित्र्यस्राणि संपादयेत्। तेषु च चतुःषष्टियोगिनीर्वक्ष्यमाणप्रकारेणावाहयेत्। अवशिष्टे पूर्वभागे त्रेधाविभक्ते त्रीणि त्र्यस्राणि प्राङ्मुखानि विलिख्य तेषु स्वस्तिवाचनविधिना मन्त्रावृत्त्या कलशत्रयं संस्थाप्य पूर्णपात्रनिधानान्तं कृत्वा विष्ण्वादिदेवान् समभ्यर्च्य सौवर्णीस्तिस्रः प्रतिमाः कृताग्न्युत्तारणाः संस्थाप्य तासु महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीरुद्क्संस्था आवाह्य पूजयेत्॥ तद्यथा योगिनीवेदेः पश्चादुपविश्य देशकालौ स्मृत्वा—

अस्य विष्णुयज्ञ कर्मणः समृद्धये महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीसहितानां चतुःषष्टियोगिनीनां पूजनं करिष्ये।

१—पूजयित्वा महापीठं ततः सूक्तत्रय जपेत्। रात्रिसूक्त च श्रीसूक्त देवीसूक्त ततः परम्। महामायामय सूक्त केचिदिच्छन्ति साधवः। इतति कथितं ग्राह्य योगिनीगणपूजनम्। कृतेन येन सङ्कल्पाः सिद्धयः स्युः करे स्थिता। अकृत्वा। योगिनीपूजां यः करोति तदाधमः। जपं होम तथा दानं तत्सर्वं निष्फल भवेत्। भस्मीभवति तत्सर्वं योगिनीपूजनं विना। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन योगिनीः पूजयेन्मखेति। ग्रन्थान्तरे।

२—आग्नेय्यां म तृकावेदी वास्तुवेदी च नैर्ऋते। क्षेत्रपालस्य वायव्यामीशान्यां च नवग्रहाः॥ इति कुण्डरत्नावली-कुण्डकल्पद्रुमयोष्टीकायाम्।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इति संकल्प्य महाकाल्यादि-प्रतिमासु योगिनीप्रतिमासु च ।

ॐ अश्मन्नूर्जम्० इत्यनुवाकेनाग्न्युत्तारणं कृत्वा प्रतिमा यथास्थानं संस्थाप्य तास्वावाहनादिकं कुर्यात् । प्रतिमाभावे तण्डुलपुञ्जपूगफलरजतखण्डादावावाहनम् ।

ॐ अम्बे॒ऽ अम्बि॒के॒ऽम्बा॑लिके॒ न मा॑ नयति॒ कश्च॒न । सस॑स्त्यश्व॒कः सुभ॑द्रिकां का॒म्पीलवा॒सिनी॑म् ॥

अयमेव मन्त्रः सर्वेषूपचारेषु महाकालीपूजने आवर्तनीयः । एवं महालक्ष्मी-महासरस्वतीपूजने—

ॐ श्रीश्च॑ ते ल॒क्ष्मीश्च॒ पत्न्या॑वहोरा॒त्रे पा॒र्श्वे नक्ष॑त्राणि रू॒पम॒श्विनौ॒ व्यात्त॑म् । इ॒ष्णन्नि॑षाणा॒मुम्म॑ऽइषाण सर्वलो॒कम्म॑ऽइषाण ॥

ॐ पा॒व॒का नः॒ सर॑स्वती॒ वाजे॑भिर्वा॒जिनी॑वती । य॒ज्ञं व॑ष्टु धि॒याव॑सुः ॥ इति मन्त्रावावर्तनीयौ । ततः—'प्रथमपङ्क्तौ—

१—रुद्रकल्पद्रुमोक्ता योगिन्यः—गजानना सिंहमुखी गृध्रास्या काकतुण्डिका । उष्ट्रग्रीवा हयग्रीवा वाराही शरभानना । उलूकिका शिवारावा मयूरी विकटानना । अष्टवक्त्रा कोटराक्षी कुब्जा विकटलोचना । शुष्कोदरी ललज्जिह्वा श्वदंष्ट्रा वानरानना । ऋक्षाक्षी केकराक्षी च बृहत्तुण्डा सुराप्रिया । कलापहस्ता रक्ताक्षी शुकी श्येनी कपोतिका । पाशहस्ता दण्डहस्ता प्रचण्डा चण्डविक्रमा । शिशुघ्नी पापहन्त्री च काली रुधिरपायिनी । वसाधया गर्भभक्षा शवहस्ताऽन्त्रमालिनी । स्थूलकेशी बृहत्कुक्षिः सर्पास्या प्रेतवाहना । दन्तशूककरा क्रौञ्ची मृगशीर्षा वृषानना । व्यात्तास्या धूमनिश्वासा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहे वयम् ॥ पूषानो यथा वेदसामसद्वृधेरक्षिता-पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ गजाननायै० गजाननामा० १

व्योमैकचरणोर्ध्वदृक् । तापनी शोषणीदृष्टिः कोटरी स्थूलनासिका । विद्युत्प्रभा बलाकास्या मार्जारी कटपूतना । अट्टाट्टहासा कामाक्षी मृगाक्षी मृगलोचना चतुःषष्टि तु योगिन्यः पूजनीयाः प्रयत्नतः । इति ।

अथ शान्ति शान्तिसारायुक्ताः—जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता । दिव्ययोगी महायोगी गणेश्वरी । प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्रिस्तथैव च । टङ्कक्षी रौद्रवेताली हुङ्कारी ऊर्ध्वकेशिनी । विरूपाक्षी च शुष्काङ्गी नरभोजनिका तथा । फट्कारी वीरभद्रा च धूम्राक्षी कलह-प्रिया । राक्षसी घोररक्ताक्षी विश्वरूपी भयङ्करी । चण्डमारी च चण्डी च वाराही मुण्डधारिणी । भैरवी च तथोर्ध्वाक्षी दुर्मुखी प्रेतवाहिनी । खट्वांगी चैव लम्बोष्ठी मालिनी मन्त्रयोगिनि । काली रक्ता च कङ्काली तथा च भुवनेश्वरी । त्रोटकी च महामारी यमदूती करालिनी । केशिनी मेदिनी चैव रोमगंगाप्रवाहिनी । विडाली कामुं कालाक्षी जया चाधोमुखी तथा । मुण्डाग्रधारिणी व्याघ्री काङ्क्षिणो प्रेतभक्षिणी । धूर्जटी विकटी घोरी कपाली विषलङ्घिनी ।

अथाग्नेयोक्ताः अ० ५२ श्लो० १—८ योगिन्यष्टकं वक्ष्ये ऐन्द्रादीशान्तः क्रमात् । अक्षोभ्यां रूक्षकर्णी च राक्षसी कृपणाक्षया १ पिङ्गाक्षी चाक्षया क्षेमा इलानी लालया तथा । लोलाऽलक्ता बलाकेसी लालसा विमला पुनः २ हुताशा च विशालाक्षी हुङ्कारा बडवामुखी । महाक्रूरा क्रोधना तु भयङ्करी महानना ३ सर्वज्ञा तरलातारा ऋग्वेदा तु हयानना । साराख्या रुद्रसंग्राही शम्बरा तालजंघिका ४ रक्ताक्षी सुप्रसिद्धा तु विद्युज्जिह्वा करङ्किणी । मेघनादा प्रचण्डोग्रा कालकर्णी वरप्रना ५ चन्द्रा चन्द्रावली चैव प्रपञ्चा प्रलयान्तिका । शिशुवक्त्रा पिशाची च पिशिताशा च लोलुपा ६ धमनी तापनी चैव रागिणी विकृतानना । वायुवेगा बृहत्कुक्षिर्विकृता विश्वरूपिका ७ यमजिह्वा जयन्ती च दुर्जया च जयन्तिका । विडली रेवती चैव पूतना विजयान्तिका ८ अष्टहस्ताश्चतुर्हस्ता इच्छास्त सर्वसिद्धिदा इति ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्न्यः शूरऽ इषव्व्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य

अथ प्रतिष्ठातिलकोक्तः—अघोरा घोररूपा च चण्डा चण्डप्रभा तथा। विद्युन्माला सुवर्णाक्षी भीमा भीमपराक्रमा १ रेवती यक्षिणी दुर्गा कर्ममोटी च चण्डिका। विडाली विजया चान्या क्रोधाऽक्रोधा महासुरा २ भद्रकाली च रक्ताक्षी चक्षुषा। पद्मवक्षुषा। आनन्दा शुभदानन्दा अमृतामृदमालिनी ३ यशो यशोवती लक्ष्मी मेधा कान्ता कला शुभा। वृद्धिर्मायाऽपि चाल्हादी व्यापिनी व्योकमातरः ४ घना च घर्घरा रौद्रा कामकाली सनन्दिनी। ऋद्धिर्ज्येष्ठा पराशान्ता भूमाता मननायका ५ प्रतिष्ठा मेघनादा च चक्रवारा शुचिक्रिया। भारती वीरहा सौम्या विज्ञाता ज्ञानदायिनी ६ चण्डाक्षी वामना दीर्घा सर्वंगा सर्वतोमुखी। कृमिकीटपतंगादि सर्वस्थानेषु वासिनी ७ चतु षष्टिमयाऽऽख्याताः शान्तिकाले प्रपूजयेदिति।

"दिव्ययोगी महायोगी सिद्धयोगी गणेश्वरी। प्रेताक्षी डाकिनी कालरात्री निशाचरी। हुङ्कारी सिद्धवैताली ह्रीङ्कारी भूतडामरी। उर्ध्वकेशी विशालाक्षी शुष्कांगी नरभोजिनी। फेत्कारी वीरभद्रा च धूम्राक्षी कलहप्रिया। राक्षसी घोररक्ताक्षी (कारी च) विरूपा श्री भयंकरी। वीरा कौमारिका चैव वाराही मुण्डधारिणी। भैरवी चक्रिणी क्रोधी दुर्मुखी प्रेतवासिनी। कसवयेन्द्री प्रलम्बोष्ठी मालिनी मन्त्रयोगिनी। कालाग्नी मोहिनी चक्री हुङ्कारी भुवनेश्वरी। कुण्डला बालकौमारी यमदूती कपालिनी। विशाला कालिका व्याघ्री रक्षणी प्रेतभक्षिणी। दुर्जया विकटा घोरा कपाली विषलङ्घिनी। महिषाशी चन्द्रहन्त्री आकाशी गिरिनायका। इति। दिव्ययोगी तमीशानमाब्रह्मन्महायोगिनी। यो नः पिता सिद्धयोगीमहाइन्द्रो गणेश्वरी। प्रेताशीमादित्यगर्भं स्वर्णघर्मेति शाकिनाम्। सत्यं च मेति कालीं च जिह्वा मे कालरात्रिका। निशाचरी मयैदार्वा हुङ्कारी हंसः शुचिसत्। अग्निस्तिग्मेन सिद्धिञ्च पूष वैतालिकां यजेत्। विदद्वदीति ह्रिङ्कारी अयमग्निर्भूतडामरीम्। ऊर्ध्वकेशीमिमं मेति विशालाक्षी यमाय च। गन्धर्वस्त्वेति शुष्काङ्गी मित्रो न नरभोजिनीम्। अग्ने ब्रह्म च फेत्कारी वीरभद्रा भग प्रणे। धूम्राक्षीं तु पितृभ्यश्च वरुणस्योत कालिप्रियाम्। राक्षसीं च सुपर्णोसि घोरां वरुणः प्राविता। इदं सख्च विरूपाक्षीं सुसन्दृशं च ह्रीकारीम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

व्वीरो जायतान्निकामेनिकामेनः पर्ज्जन्योव्वर्षत फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्ताञ्ञोगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ सिंहमुख्यै० सिंहमुखीमा० ॥ २ ॥

ॐ महाँ२ऽ इन्द्रो व्वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु ॥ हन्तु पाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि । उपयामगृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्म्महेन्द्राय त्वा ॥ गृध्रास्यायै० गृध्रास्यामा० ॥ ३ ॥

ॐ सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्द्देवानामभवत्पुरोगाः । अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य व्वाचि स्वाहा कृतं ह्विरदन्तु देवाः ॥ काकतुण्डिकायै नमः काकतुण्डिकामा० ॥ ४ ॥

ॐ आदित्यङ्गर्भम्पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां व्विश्वरूपम् । परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमंस्थाः शतायुषङ्कृणुहि चीयमानः ॥ उष्ट्रग्रीवायै० उष्ट्रग्रीवामा० ॥ ५ ॥

ॐ स्वर्णघर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्क्कः स्वाहा स्वर्णशुक्रः स्वाहा स्वर्णज्ज्योतिः स्वाहा स्वर्णसूर्य्यः स्वाहा ॥ हयग्रीवायै० हयग्रीवामा० ॥ ६ ॥

ॐ सत्यञ्च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनञ्च मे व्विश्वञ्च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ वाराह्यै० वाराहीमावा० ॥७॥

ॐ भायैंदार्व्वाहारम्प्रभायाऽ अग्न्येधम्ब्रध्नस्यं व्विष्टपायाभिषेक्तारं व्वर्षिष्ठाय नाकाय पृ०

वि० परिवेष्टारन्देवलोकायं पेशितारम्मनुष्यलोकायं प्प्रकरितार६ सर्व्वेभ्यो लोकेभ्यं ऽउपसेक्तारमवंऽऋत्यै-

व्वधायौपमन्थितारम्मेधायव्वासः पल्पूलीम्प्रंकामायंरजयित्रीम् ।। शरभाननायै० शरभाननामा० ।। ८ ।।

अथ द्वितीयपङ्क्तौ—

२८६ ॐ जिह्वामेभद्द्रं व्वाङ्माहो मनो मन्न्युः स्वराड्भामः ।। मोदाः प्प्रमोदाऽअङ्गुलीरङ्गानिमि-

त्त्रम्मेसहः । उलूकिकायै० उलूकिकामा० ।। १ ।।

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽ वक्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा

प्प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा

व्वल्गते स्वाहासीनायस्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय

२५ स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सᳪहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा २६

प्प्रायणाय स्वाहा ।। शिवारावायै० शिवारावामा० ।। २ ।।

ॐ अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ मयूरायै० मयूरामा० ॥ ३ ॥

ॐ पूषन्तव व्रते वयन्न रिष्येम कदाचन ॥ स्तोतारस्त इह स्मसि ॥ विकटाननायै० विकटाननामा० ॥ ४ ॥

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ॥ यूनेन यूपऽआप्यते प्रणीतोऽअग्निरग्निना ॥ अष्टवक्त्रायै० अष्टवक्त्रामा० ॥ ५ ॥

ॐ अयमग्निः सहस्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः ॥ मूर्द्धा कवी रयीणाम् ॥ कोटराक्ष्यै० कोटराक्षीमा० ॥ ६ ॥

ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ कुब्जायै० कुब्जामा० ॥ ७ ॥

ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्यस्यत्वा तपसे ॥ देवस्त्वा सविता मद्ध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳ स्पृशस्पाहि ॥ अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥ विकटलोचनायै० विकटलोचना० ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अथ तृतीयपंक्तौ—

ॐ यमेनदत्तं त्रितऽएंन मायुनगिन्द्रऽएनं प्रथमोऽअध्यंतिष्ठत् ।। गन्धर्वोऽअस्य रशनामं-गृभ्णात्सूरादश्वं व्वसवो निरतष्ट ।। शुष्कोदर्यै० शुष्कोदरीमा० ।। १ ।।

ॐ मित्रस्यंचर्षणीधृतोवों देवस्यंसानसि ।। द्युम्नञ्चित्रश्रवंस्तमम् ।। ललज्जिह्वायै० ललज्जिह्वामा० ।। २ ।।

ॐ अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणंमस्यन्तरिक्षन्दृर्ठ० हब्रह्मवनित्वाक्षत्रवनि सजातवन्युपंद-धामिभ्रातृव्यस्यव्वधायं ।। धर्त्रमसि दिवंदृ०हब्रह्मवनित्वाक्षत्रवनि सजातवन्युपंदधामिभ्रातृव्यस्य-व्वधायं ।। व्विश्श्वाभ्यंस्त्वाशाभ्यऽउपंदधामिचितंस्त्थोर्ध्व चितो भृगूणामङ्गिरसान्तपसातप्प्यध्वम् ।। श्वदंष्ट्रायै० श्वदंष्ट्रामा० ।। ३ ।।

ॐ भगप्प्रणेतर्भगसत्यंराधोभगो मान्धियमुदवाददन्नः ।। भगप्प्रनोंजनयगोभिरश्श्वैर्भगप्प्रनृभि-र्न्नृवन्तःस्याम ।। वानराननायै० वानराननामा० ।। ४ ।।

ॐसुपर्णोसि गरुत्माँस्त्रिवृतेशिरो गायत्त्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरेपक्षौ ।। स्तोमऽ आत्माछन्दांऽ-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्यङ्गानिगरुंषिनाम ॥ साम ते तनूर्व्वामदेव्व्यं यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोऽसि गुरुत्मान्दिवङ्गच्छस्वःपत ॥ ऋक्षाद्यै० ऋक्षाक्षीमा० ॥ ५ ॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ केकराद्यै० केकराक्षीमा० ॥ ६ ॥

ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरा पापकाशिनी । तयानस्तन्वा सन्तमयागिरिसन्ताभिचाकशीहि ॥ बृहत्तुण्डायै० बृहत्तुण्डामा० ॥ ७ ॥

ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रोव्विश्वाभिरूतिभिः ॥ करतान्नः सुराधसः ॥ सुरप्रियायै० सुरप्रियामा० ॥ ८ ॥

अथ चतुर्थपङ्क्तौ—

ॐ हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोताव्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा-गोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम्बृहत् ॥ कपालहस्तायै० कपालहस्ता० ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ सुसन्दृशन्त्वाव्वयमघवन्वन्दिषीमहि । प्रनूनम्पूर्णवन्धुरस्तुतोयासिव्वशाँ२ऽ अनुयोजान्विन्द्रते हरी ॥ रक्ताख्यै० रक्ताक्षीमा० ॥ २ ॥

ॐ प्रतिपदसिप्रतिपदेत्वानुपदस्यनुपदेत्वासम्पदसिसम्पदेत्वातेजोसितेजसेत्वा ॥ शुष्कायै० शुष्कीमा० ॥ ३ ॥

ॐ देवीरापोऽअपान्नपाद्योवऽऊर्म्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः । तन्देवेभ्योदेवत्रादत्तशुक्रपेभ्योयेषाम्भागस्थस्वाहा ॥ श्येन्यै० शेनीमा० ॥ ४ ॥

ॐ देवीरापोऽअपान्नपाद्योवऽऊर्म्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः । तन्देवेभ्योदेवत्रादत्तशुक्रपेभ्यो येषाम्भागस्थ स्वाहा ॥ कपोतिकायै० कपोतिका० ॥ ५ ॥

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण- सर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ पाशहस्तायै० पाशहस्ता० ॥ ६ ॥

ॐभुवोयज्ञस्यरजसश्चनेतायत्रानियुद्भिः सचसेशिवाभिः ॥ दिविमूर्द्धानन्दधिषेस्वर्षाजिह्वामग्नेचकृषेहव्यवाहम् ॥ दण्डहस्तायै० दण्ड हस्तामा० ॥ ७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ कुदाचुनस्तुरीरंसिनेन्द्रंसश्चसिदाशुषे ॥ उपोपेन्नुमंघवुन्भूय ऽइन्नुतेदानंन्दवस्यंपृच्यते ॥ प्रचण्डायै० प्रचण्डमा० ॥ ८ ॥

अथ पञ्चमपंक्तौ—

ॐ भद्द्रङ्कर्णैभिः शृणुयामदेवाभुद्द्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬसंस्तुनूभिर्व्यशेमहिदेवहितुंयदायुः ॥ चण्डविक्रमायै० चण्डविक्रमा० ॥ १ ॥

ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वांव्वायवंस्थदेवोवंःसविताप्रार्प्पयतुश्रेष्ठंतमायकर्म्मणऽआप्यायदध्वमग्घ्न्याऽइन्द्रायभागम्प्रजावंतीरनमीवाऽअंयुक्ष्मामावंस्तेनऽईशतुमाघशंᳬसोद्ध्रुवाऽअस्मिन्गोपंतौस्यातबह्वीर्य्यजंमानस्यपुशून्पाहि ॥ शिशुघ्न्यै० शिशुघ्नीमा० ॥ २ ॥

ॐ देवीद्यावापृथिवीमुखस्यं वामुद्यशिरोराद्ध्यासन्देवयजनेपृथिव्याः ॥ मुखायत्वामुखस्यत्वाशीर्ष्णे । पापहन्त्र्यै० पापहन्त्रीमा० ॥ ३ ॥

ॐविश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरांसुव ॥ यद्भुद्रन्तन्नुऽआसुंव ॥ काल्यै न० कालीमा० ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ असुंन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्कंरस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छसातं-ऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यंमस्तु ॥ रुधिरपायिन्यै० रुधिरपायिनी० ॥ ५ ॥

ॐ अग्निश्चंमऽआपश्चमे वीरुधश्चमऽओषधयश्चमेकृष्टपच्याश्चंमेकृष्टपच्याश्चंमेग्राम्याश्चं-मेपशवंऽआरण्याश्चंवित्तञ्चमेवित्तिश्चमे भूतञ्चमेभूतिश्चयज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ वसाधयायै० वसाधयामा० ॥ ६ ॥

ॐ बह्वीनांपिताबहुरस्यंपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमंनावगत्यं ।। इषुधिःसङ्काःपृतनाश्चसर्वाः पृष्ठेनिनंद्धोजयतिप्रसूतः ॥ गर्भभक्षायै० गर्भक्षामा० ॥ ७ ॥

ॐ नमंस्तेरुद्रमन्यवंऽउतोतऽइषंवेनमंः ॥ बाहुभ्यामुतते नमंः ॥ शवहस्तायै० शव-हस्तामा० ॥ ८ ॥

अथ षष्ठपङ्क्तौ—

ॐ ऋतञ्चंमेमृतञ्चमेऽयक्ष्मञ्चमेनामयच्चमेजीवातुश्चमेदीर्घायुत्वञ्चंमेनमित्रञ्चमेभंयञ्चमेसुखञ्चंमेशयं-नञ्चमेसुषाश्चंमेसुदिनंञ्चमेयज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ आन्त्रमालिन्यै० आन्त्रमालिनीमा० ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ तेऽआचरन्तीसमनेवयोषामातेवपुत्रम्बिभृतामुपस्थे ।। अपशत्रून्विध्यताᳬसम्बिदानेऽआर्त्नीऽइमेविष्फुरन्तीऽअमित्रान् ।। स्थूलकेश्यै० स्थूलकेशीमा० ।। २ ।।

ॐ वेद्यावेदिःसमाप्यतेबर्हिषाबर्हिरिन्द्रियम् ।। यूपेनयूपऽआप्यते प्रणीतोऽअग्निरग्निना ।। ॐ बृहत्कुक्ष्यै० बृहत्कुक्षीमा० ।। ३ ।।

ॐ पावकानःसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञंवष्टुधियावसुः ।। ॐ सर्पास्यायै० सर्पास्यास्यमा० ।। ४ ।।

ॐ अस्कन्नमद्यदेवेभ्यऽ आज्यᳬसम्भ्रियासमङ्घ्रिणाविष्णोमात्वावक्रमिषंवसुमतीमग्नेतेच्छायामुपस्थेषंविष्णोस्थानमसीतऽइन्द्रोवीर्यमकृणोदूर्ध्वोध्वरऽआस्थात् ।। ॐ प्रेतवाहन्यै० प्रेतवा० ।। ५ ।।

ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वतेवृषपाणयोश्वारथेभिःसहवाजयन्तः । अवक्रामन्तःप्रपदैरमित्रान्क्षिणन्तिशत्रू१।। रनपव्ययन्तः ।। ॐ दन्तशूककरायै० दन्तशूककरामा० ।। ६ ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ मही॒द्यौः पृ॑थि॒वी च॑ न॒ऽ इ॒मं य॒ज्ञं मि॑मिक्षताम् । पि॒पृ॒तान्नो॒ भरी॑मभिः ॥ ॐ क्रौञ्च्यै० क्रौञ्चीमा० ॥ ७ ॥

ॐ उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि सा॒वि॒त्रो॑ऽसि चनो॒धश्च॑नो॒धा ऽअ॑सि॒ चनो॒ मयि॑ धेहि । जिन्व॑ य॒ज्ञं जिन्व॑ य॒ज्ञप॑तिं॒ भगा॑य दे॒वाय॑ त्वा सवि॒त्रे ॥ ॐ मृगशीर्षायै० मृगशीर्षामा० ॥ ८ ॥

अथ सप्तमपंक्तौ—

ॐ आप्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वतः॑ सोम॒ वृष्ण्य॑म् । भवा॒ वाज॑स्य सङ्ग॒थे ॥ ॐ वृषवाहिन्यै० वृषवाहिनीमा० ॥ १ ॥

ॐ का॒र्षि॒र॑सि समु॒द्रस्य॒ त्वा क्षि॑त्या॒ ऽउन्न॑यामि । समापो॑ ऽअ॒द्भिर॑ग्मत॒ समोष॑धीभि॒रोष॑धीः ॥ व्यात्तास्यायै० व्यात्तास्यामा० ॥ २ ॥

ॐ त्र्य॑म्बकं यजामहे सु॒ग॒न्धिं पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नम् । उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्मु॑क्षीय॒ माऽमृता॑त् । त्र्य॑म्बकं यजामहे सुग॒न्धिं प॑ति॒वेद॑नम् । उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नादि॒तो मु॑क्षीय॒ मामुतः॑ ॥ ॐ धूम्रश्वासायै० धूम्रश्वासामा० ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ अम्बे ऽ अम्बिकेम्बालिकेनमानयुतिकश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्कांपीलवासिनीम् ॥ ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे० व्योमैकचरणोर्ध्वशमा० ॥ ४ ॥

ॐ विष्णोरराटमसिव्विष्णोः श्नप्त्रेस्थोव्विष्णोःस्यूरसिव्विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि-विष्णवेत्वा ॥ ॐ तापिन्यै० तापिनीमा० ॥ ५ ॥

ॐ ब्राह्मणमद्यव्विदेयम्पितृमन्तम्पैतृमत्यमृषिमार्षेयर्ठ०सुधातुदक्षिणम् । अस्मद्रातादेवत्रा-गच्छतप्रदातारमाविशत ॥ ॐ शोषणीदृष्ट्यै० शोषणीदृष्टिमा० ॥ ६ ॥

ॐ भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳫंसस्तनूभिर्व्यशे-महिदेवहितंयदायुः ॥ ॐ कोटर्यै नमः कोटरीमावा० ॥ ७ ॥

ॐ एकाचमेतिस्रश्चमेतिस्रश्चमेपञ्चचमेपञ्चचमेसप्तचमेसप्तचमेनवचमऽ एकादशचमऽ एकादश-चमेत्रयोदशचमेत्रयोदशचमेपञ्चदशचमेपञ्चदशचमेसप्तदशचमेनवदशचमेनवदशचमऽएकविꣳशति-श्चमेत्रयोविꣳशतिश्चमेत्रयोविꣳशतिश्चमेपञ्चविꣳशतिश्चमेपञ्चविꣳशतिश्चमेसप्तविꣳशतिश्चमेसप्तविꣳशतिश्चमेनवविꣳशतिश्चमेनवविꣳशतिश्चमऽएकत्रिꣳशच्चमऽएकत्रिꣳश०

शत्रमेत्रयंस्त्रिर्ट॰शत्रमेयुज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ॐ स्थूलनासिकायै॰ स्थूलनासिका॰ ॥ ८ ॥

अथाष्टमपंक्तौ—

ॐ ब्रह्माणिमेमुतयःशर्ठ॰सुतासःशुष्मंऽइयर्त्तिप्रभृंतो मेऽअद्रिः। आशासतेप्रतिहर्यन्त्युक्थे-माहरीवहतस्तानोऽअच्छ ॥ ॐ विद्युत्प्रभायै॰ विद्युतप्रभामा॰ ॥ १ ॥

ॐ असंख्याताुसहस्राणिश्रेरुद्राऽअधिभूम्याम् । तेषा॑ᳬसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ॐ बलाकास्यायै॰ बलाकास्यामा॰ ॥ २ ॥

ॐ अहिंरिवभोगैःपर्य्येतिबाहूज्ज्यायाहेतिम्परिबाधमानः । हस्तघ्नोविश्वावयुनानिविद्वा-न्पुमान्पुमा॑ᳬसम्परिपातुविश्वतः ॥ ॐ मार्जायै॰ मार्जारीमा॰ ॥ ३ ॥

ॐ तिस्त्रस्त्रेधासरस्वत्यश्विनाभारतीडा । तीव्रंपरिस्त्रुतासोममिन्द्रायसुषुवुर्मदम् ॥ ॐ कट-पूतनायै॰ कटपूतनामा॰ ॥ ४ ॥

ॐ सरस्वतीयोन्याङ्गर्भमन्तरश्विभ्यांपत्नी सुकृतंबिभर्ति । अपा॑ᳬरसेनवरुणोनसाम्ने-न्द्रर्ठ॰श्रियैजनयन्नप्सुराजा ॥ अट्टाट्टहासायै॰ अट्टाट्टहासामा॰ ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाᳬंसुरे ॥ ॐ कामाक्ष्यै० कामाक्षीमा० ॥६॥

ॐ वृष्णं ऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृष्णऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसे-नोसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ॥ ॐ मृगाक्ष्यै० मृगाक्षीमा० ॥७॥

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावतऽआजगन्था परस्याः। सृकᳬ संᳬशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताढि वि मृधो नुदस्व ॥ ॐ मृगलोचनायै० मृगलोचनामा० ॥ ८ ॥

तत :—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञᳬ समिमन्दधातु ॥ विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामों २ प्रतिष्ठ ॥

प्रार्थना करे —

ॐ सम्पूजित मया देव्यो योगिन्यः सगणाः शुभाः।
मम यज्ञन्तु निर्विघ्नं कुर्वन्तु गणक्षेत्रपैः ॥

ततः "साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः दिव्यादिचतुः षष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु"।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः षोडशोपचारैः पूजयेत्—

स्मरामि चित्ते सततं सुरम्याः सुयोगिनीर्वोऽत्रगजाननाद्याः ।
देवीश्चतुःषष्टिसुधांशुशुभ्राः स्वच्छं धरामण्डलमाशुकार्यम् ॥
योगिनीदेवताभ्यो नमः ध्यायामि ॥ १ ॥

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशने प्राप्तगुणाः सुभव्याः ।
गजाननाद्याः वितनोमि देव्य आवाहनं वोऽत्र समागताः स्युः ॥
योगिनी दे॰ आवाहयामि ॥ २ ॥

दत्तं चतुष्षष्टि गजाननाद्या योगिन्य आरादिदमासनं च ।
शुभप्रदाः सौख्यकरा भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सुवेषाः ॥
योगिनीदे॰ आसनं स॰ ॥ ३ ॥

योगिन्य आशुपरमानिगमप्रसिद्धाः प्रक्षालनायपदपङ्कजयोरुदारम् ।
स्वच्छं सुशीतलमिदं भयकाहृतं च गृह्णन्त्वशेषमिदमिष्टकरं च वारि ॥
योगिनीदे॰ पाद्यं स॰ ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सौजन्यसौख्यजननीजनानां यासां कृपैव वसुधा वसुधारिणी मे ।
ताः सर्वदैवगुरुगौरवधारिदेहा अर्घ्यं च गृह्णतमुदाऽऽशु गजाननाद्याः ॥
योगिनीदे० अर्घ्यं स० ॥ ५ ॥

कङ्कोलपत्रहरिचन्दनपुष्पयुक्तमेलालवङ्गलवलीघनसारसारम् ।
दत्तं सदैव हृदये करुणाशयेस्मिन्देव्यो भजन्तु शुभमाचमनीयमम्भः ॥
योगिनी दे० आचमनीयं स० ॥ ६ ॥

गङ्गाजलेन सहितेन पयः सिताज्यैर्दध्नाऽमलेन मधुना तुलसीदलैश्च ।
पञ्चामृतेन वरवेशगजाननाद्याः स्नानं मुदा कुरुत योगरतावरेण्याः ॥
योगिनीदे० पञ्चामृ० ॥ ७ ॥

जलेऽमलेमञ्जुविचित्र पुष्पाण्यच्छानि चानीय निपातितानि ।
स्नानं विधेयं हि गजाननाद्या आगत्य युष्माभिरिहाङ्गणे ते ॥
योगिनीदे० शुद्धोदक० ॥ ८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनर्घरत्नैरतिशोभमानं शुभं श्रियं मङ्गलकारकं च ।
मयार्पितं वस्त्रमिदं विचित्रं कृते भवेद्वै वरयोगिनीनाम् ॥
योगिनीदे० वस्त्रं स० ॥ ९ ॥

त्रिविधतापविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम् ।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना ॥
योगिनीदे० उपवस्त्रं स० ॥ १० ॥

योगिन्य आशु वनजातसुगन्धराशिं सप्रेम गृह्णत सुशीतलमच्छशोभम् ।
सन्तापविस्तृतिहरं परमं पवित्रं प्रागर्पितं मम मनोरथदा भवेतु: ॥
योगिनीदे० गन्धं स० ॥ ११ ॥

योगिन्य एतान् सुगन्धि... भक्त्या मया मोदसमर्पितांश्च ।
गृह्णन्तु देव्यो द्रुतमक्षतान्मे समग्रविघ्नात् विनिवारयन्तु ॥
योगिनीदे० अक्षतान् स० ॥ १२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम् ।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयनाञ्चलैः ॥
योगिनीदे० पुष्पाणि स० ॥ १३ ॥

धूपादिकेनातिसुवासितानि शोणश्रियानन्दविवर्धितानि ।
श्रीरक्तचूर्णानि मनोहराणि गजाननाद्या मनसाऽर्पयामि ॥
योगिनीदे० रक्तचूर्णं स० ॥ १४ ॥

लवङ्गपाटीरकचूर्णवर्धितं नरासुराणामपि सौख्यदायकम् ।
गजाननाद्याः सुरभिप्रसारकं गृह्णन्तु धूपं सुखदं सुदेव्यः ॥
योगिनीदे० धूपं स० ॥ १५ ॥

सद्वर्तिकां ज्ञानविवर्धिकामिमां निपात्यदीपं विनिवेदितं मया ।
प्रज्वालितं ध्वान्तविनाशकं च भवन्तु देव्यः सततं शिवाय ॥
योगिनीदे० दीपं स० ॥ १६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

सिद्धान्तकर्पूरविराजितं च द्राक्सौरभ्यसान्द्रेणि वभूषितं च ।
नैवेद्यमेतद्रुचिरं सुगन्धि स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु ॥
योगिनीदे० नैवेद्यं नि० ॥ १७ ॥

योगिन्य आशु गृहमेत्य शुभं मदीयं भक्त्यार्पितं परमगन्धयुतं सुरम्यम् ।
एलालवङ्गबहुलं क्रमकादियुक्तं ताम्बूलमद्य मम गृह्णत मञ्जुहासाः ॥
योगिनी दे० ताम्बूलं स० ॥ १८ ॥

देवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रणीयमानाः सततं सहासाः ।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां च गजाननाद्याः सुखदाभवन्तु ॥
योगिनीदेवता० दक्षिणां स० ॥ १६ ॥

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारानपि दूरयन्ती ।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानवस्य ॥
योगिनीदे० नीराजनां स० ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रदक्षिणाः सन्ति गजाननाद्याः पदे पदे दुःखविनाशिका अपि ।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य ॥
योगिनीदे० प्रदक्षिणां स० ॥ २१ ॥

गजाननाद्यारचितं मदीयं गृह्णन्तु पुष्पाञ्जलिमत्र देव्यः ।
योगिन्य आशूद्धटशङ्काश्च भवन्तु भूपालनतत्पराश्च ॥
योगिनीदे० पुष्पाञ्जलिं स० ॥ २२ ॥

जानामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं विनिपातयन्त्यः ।
योगिन्य आशु मम मङ्गलमातनुध्वं कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितात्समस्तात् ॥
योगिनीदे० स्तुतिं स० ॥ २३ ॥

इति संपूज्य "अनया पूजया चतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम् । ततः ब्राह्मणद्वारासप्तशतीं पाठयेत् इति रुद्रकल्पद्रुमे ॥

॥ इति योगिनीपूजनम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ वायव्यकोणे क्षेत्रपालपूजनम्

मण्डपस्य वायव्यां दिशि श्वेतवस्त्राच्छादिते पीठे चतुरस्रं विलिख्य तिर्यङ्मान्यां च सूत्रद्वन्द्वं समानान्तरं दद्यात् । एवं समानि नवकोष्ठानि भवन्ति । पूर्वादिकोष्ठेषु षट्सु षट् दलानि सम्पाद्य उत्तरेशानयोः कोष्ठयोस्तु सप्तसप्तदलानि कुर्यात् । ततः सपत्नीको यजमानः स्वासने उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य—

देशकालौ स्मृत्वा—"अस्मिन् विष्णुयागकर्मणि क्षेत्रपालपूजनं करिष्ये" इति सङ्कल्प्य पूर्वकोष्ठे षट्सु दलेषु—स्थापनपूजनं कुर्यात् ।

तद्यथा—ॐ इमौतेंपक्षावजरौपतत्त्रिणौयाभ्याᳫं रक्षाᳫंस्य पहᳫस्यंग्ने । ताभ्याम्पतेम सुकृतामुलोकंयत्र ऽऋषयोजग्मुःᳫंप्रथमजाःपुराणाः ॥ ॐ अजराय न० अजरमा० ॥१॥

ॐ प्रथमावाᳫंसरथिनासुवर्णादेवौपश्यन्तौभुवनानिविश्श्वा । अपिप्रयञ्चोदनावाम्मिमानाहोताराज्ज्योतिः प्रदिशादिशन्ता ॥ ॐ व्यापकाय न० व्यापकमा० ॥ २ ॥

वि०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ इन्द्रस्यव्वज्रोमरुतामनीकंमित्रस्यगर्भोव्वरुणस्यनाभिं ।
५० सेमान्नोहव्व्यदातिञ्जुषाणो देवरथप्रतिहव्व्या गृ ाय ।। ॐइन्द्रचौराय० इन्द्रचौरमा०।।३।। म०
ॐ एवेदिन्द्रंव्वृषणंव्वज्रवाहुं व्वसिष्ठासोऽअब्भ्यर्चत्यर्कैः । सनंस्तुतोव्वीरवद्धातुगोम-
१०८ द्युयम्पातस्वस्तिभिः सदा नः ।। ॐ इन्द्रमूर्तये० इन्द्रमूर्ति० ।। ४ ।।
ॐ उक्षासमुद्रोऽअरुणः सुपर्ण्णःपूर्वस्ययोनिम्पितुराविवेश । मद्ध्येदिवोनिहितःपृश्निरश्म्मा-
व्विचक्रमेरजसस्पात्यन्तौ ॐ उद्दणे नमः० उद्दणमा० ।। ५ ।।
ॐ यद्देवा देवहेडनन्देवासश्चकृमाव्वयम् । अग्निर्मा तस्म्मादेनसोव्विश्श्वान्मुञ्चत्वᳬहसः ।।
ॐ कूष्माण्डाय० कूष्माण्डमा० ।। ६ ।।
आग्नेये षट्सु दलेषु—
ॐ सनऽइन्द्रायययज्ज्यवे व्वरुणायमरुद्भ्यः । व्वरिवोवित्परिस्रव ।। ॐ वरुणाय० १०
वरुणमा० ।। ७ ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ सन्ऽइन्द्राय यज्ज्यवे व्वरुणाय मुरुद्भ्यः। व्वरिवोवित्परिस्स्रव ॥ ॐ वरुणाय० वरुणमा ।.७।।

ॐ ब्बाहूमेबलमिन्द्रियꣳ हस्तौमेकर्म्मव्वीर्य्यम् । आत्माक्षत्रमुरोमम ॥ ॐ बटुकाय न० बटुकमा० ॥ ८ ॥

ॐ मुञ्चन्तुमाशपथ्यादथोव्वरुण्यादुत । अथोयमस्यपड्वीशात्सर्व्वस्म्माद्देवकिल्विषात् ॥ ॐ विमुक्ताय० विमुक्तमा० ॥ ९ ॥

ॐ कुर्व्वन्नेवेहकर्म्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः। एवन्त्वयिनान्न्यथेतोस्तिनकर्म्मलिप्प्यतेनरे ॥ ॐ लिप्तकाय० लिप्तकमा० ॥ १० ॥

ॐ सन्नःसिन्धुरवभृथायोद्यतःसमुद्रोभ्यवह्रियमाणःसलिलःप्रप्लुतो ययोरोजसास्कभितारजाꣳसिव्वीर्य्येभिर्व्वीरतमाशविष्ठा । यापत्त्येतेऽअप्प्रतीतासहोभिर्व्विष्णूऽअगन्न्वरुणापूर्व्वहूतौ ॥ ॐ लीलालोका० लीलालोकमा० ॥ ११ ॥

ॐ नमोगणेभ्योगणपतिभ्यश्चवोनमोव्व्रातेभ्योव्व्रातपतिभ्यश्चवोनमोनमो गृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्विरूपेभ्योव्विश्श्वरूपेभ्यश्चवोनमः ॥ ॐ एकदंष्ट्रमा० ॥ १२ ॥

दक्षिणषट्के—

ॐ अम्भेभ्यो हस्तिपञ्जरायाश्वम्पुष्ट्यै गोपालं वीर्य्यायाविपालन्तेजसेजपालमिरायकीनाशं-
कीलालायसुराकारम्भद्रायगृहपꣳश्रेयसेवित्तधमाध्यंद्ययायानुक्षत्तारम् ॥ ॐ ऐरावताय०
ऐरावतमा० ॥ १३ ॥

ॐ या ऽओषधीः पूर्व्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा । मनैनुबभ्रूणामहꣳशतंधामानिसप्तचं ॥
ॐ ओषधीघ्नाय० ओषधीघ्नमा० ॥ १४ ॥

ॐ त्र्यम्बकंयजामहे० ॐ बन्धनाय० ॐ बन्धनमावा० ॥ १५ ॥

ॐ देवंसवितः प्रसुव यज्ञम्पतिम्भगाय । दिव्योगन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातुव्वाचस्पतिर्व्वाचन्नः
स्वदतु ॥ ॐ दिव्यकरणाय० दिव्यकरणमा० ॥ १६ ॥

ॐ सीसेनतन्त्रम्मनसामनीषिण ऽऊर्णासूत्रेणकवयोव्वयन्ति । अश्विनायज्ञꣳसवितासर-
स्वतीन्द्रस्यरूपंव्वरुणोभिषज्यन् ॥ ॐ कंबलाय० कम्बलमावा० १७ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ आशुःशिशानोवृषभोनभीमोघनाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम् । सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरः शतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ ॐ भीषणाय० भीषणमा० ॥ १८ ॥

नैर्ऋत्यषट्के—ॐ इमꣳसाहस्रꣳशतधारमुत्सं व्यच्यमानꣳ सरिरस्यमध्ये । घृतन्दुहानामदितिञ्जनायाग्नेमाहिꣳसीःपरमेव्योमन् । गवयमारण्यमनुतेदिशामितेनचिन्वानस्तन्वोनिषीद । गवयन्तेशुगृच्छतुयन्द्विष्मस्तन्तेशुगृच्छतु ॥ ॐ गवयाय न० गवयमा० ॥ १९ ॥

ॐ कुम्भोवनिष्टुर्जनिताशचीभिर्यस्मिन्नग्रेयोन्यांगर्भोऽअन्तः । प्लाशिर्व्यक्तःशतधारऽउत्सोदुहेनकुम्भीस्वधाम्पितृभ्यः ॥ ॐ घण्टाय० घण्टामा० ॥ २० ॥

ॐ आक्रन्दयबलमोजोनऽआधानिष्टनिहिदुरितावाधमानः । अपप्रोथदुन्दुभेदुच्छुनाऽइतऽइन्द्रस्यमुष्टिरसिवीडयस्व ॥ ॐ व्यालाय० व्यालमा० ॥ २१ ॥

ॐ इन्द्रायाहितूतुजानऽउपब्रह्माणिहरिवः । सुतेदधिष्वनश्चनः ॥ ॐ अंशवे न० अंशुमावा० ॥ २२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरासुपर्णोधावतेद्दिवि । रयिम्पिशङ्गम्बहुलम्पुरस्पृहर्ठ० हरिरेतिकनिक्रदत् ॥

ॐ चन्द्रवारुणाय० चन्द्रवारुणमा० ॥ २३ ॥

ॐ गणानान्त्वा ॐ घटाटोपाय० घटाटोपं० ॥ २४ ॥

पश्चिमे षट्सु दलेषु—ॐ उग्रँल्लोहितेनमित्त्रर्ठ० सौव्रत्येनरुद्द्रन्दौर्व्वत्त्येनेन्द्रम्प्रक्रीडेनमरुतो-बलेनसाद्ध्यान्प्रमुदा । भवस्यकण्ठ्यर्ठ० रुद्द्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्ययकृच्छर्व्वस्यवनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ॐ जटिलाय० जटिलमा० ॥ २५ ॥

ॐ पवित्रेणपुनीहिमाशुक्रेणदेवदीद्यत् । अग्नेक्रत्वाक्रतूँ१रनु ॥ ॐ क्रतवे० क्रतुमा० ॥२६॥

ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वा० ॥ ॐ घण्टेश्वराय० घण्टेश्वरमा० ॥ २७ ॥

ॐ व्वायोशुक्रोऽअयामितेमद्ध्वोऽअग्ग्रन्दिविष्टिषु । आयाहिसोमपीतयेस्पार्होदेवनियुत्वता ॥

ॐ विटकाय० विटकमा० ॥ २८ ॥

ॐ दैव्व्याहोताराऽऊर्द्ध्वमद्ध्वरन्नोग्नेर्ज्जिह्वामभिगृणीतम् । कृणुतन्नःस्विष्टिम् ॥ ॐ मणिमा-नाय० मणिमानमावा० ॥ २९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ त्रीणितऽआहुर्द्दिविबन्धनानित्रीण्यन्तःसंमुद्द्रे । उतेवंम्मे रुमणश्छन्न्स्यर्व्वन्न्यत्रातऽआहुः
पंरमञ्जनित्रम् ॥ ॐ गणबन्धाय० गणबन्धमा ॥ ३० ॥
वि० वायव्यादिकोष्ठे षट्सु दलेषु क्रमेण——
ॐ प्रतिश्रुत्काया ऽअर्तनङ्घोषाय भषमन्तायबहुवादिनं मनन्तायमूकठ० शब्दायाडम्बराघातम्मह-
११३ सेव्वीणावादङ्क्रोशायतूणवध्मंमवरस्थरायशंखध्मंव्वनायव्वनपमन्न्यतोरण्यायदावपम् ॥ ॐ
मुण्डाय० मुण्डमा० ॥ ३१ ॥
ॐ शुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्द्रायपशुपतयेक-
र्णायामाऽअवलिप्तारौद्द्रानभोरूपाःपार्ज्जन्न्याः ॥ ॐ वर्वूकराय० वर्वूकरमा० ॥३२॥
ॐ व्वनस्पतेव्वीडुवङ्गोहिभूयाऽअस्म्मत्सखाप्प्रतरणःसुवीरः । गोभिःसन्नद्धोऽअसिव्वीडय-
स्वास्थातातेजयतुजेत्वानि ॥ ॐ सुधापाय० सुधापमा० ॥ ३३ ॥
२७ ॐ सुपर्ण्णंव्वस्तेमृगोऽअस्यादन्तोगोभिःसन्नद्धापततिप्रसूता । यत्रानरःसञ्चविचद्द्रवन्तितत्-
त्रास्म्भ्यमिषवःशर्म्मयंसठ०सन् ॥ ॐ वैनाय० वैनमा० ॥ ३४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ अग्ने ऽअच्छावदेह नः प्रति नः सुमना भव । प्र नो यच्छ सहस्रजित्वꣳ हि धनदा असि स्वाहा ॥ ॐ पवनाय० पवनमा० ॥३५॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम० ढुण्ढकरणाय० ढुण्ढकरणमा० ॥३६॥

ॐ अपाम्फेनेन नमुचेः शिर ऽइन्द्रोदवर्त्तयः । विश्वा यदजय स्पृधः ॥ ॐ स्थविराय० स्थवि ॥३७॥

ॐ वातम्प्राणेनापानेन नासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तरमनूकाशेन बाह्यं निवेष्यम्मूर्ध्ना स्तनयित्नुन्निर्बाधेनाशनिम्मस्तिष्केण विद्युतङ्कनीनकाभ्यां कर्णाभ्याꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्राभ्याङ्कर्णौ तेदनीमधरकण्ठेनापः शुष्ककण्ठेन चित्तम्मन्याभिरदितिꣳ शीर्ष्णा निर्ऋतिन्निर्जर्जल्येन शीर्ष्णा संक्रोशैः प्राणान्रेष्माणꣳ स्तुपेन ॥ ॐ उत्तरादिकोष्ठे सप्तसु दलेषु—ॐ दन्तुरा० दन्तुरमा० ॥३८॥

ॐ इदꣳ हविः प्रजननम्मे ऽअस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

पशुसनिलोकुसन्न्यंभयुसनि । अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मेकरोत्वन्नम्पयोरेतो ऽअस्म्मासुधत्त ॥ ॐ धनदाय० धनदमा० ॥३९॥

ॐ खड्गोव्वैश्वदेवः श्वाकृष्णः कुर्णोगर्दभस्तरक्षुस्तेरक्षसामिन्द्रायसूकरः । सिर्ठ०होमारुतः कृकलासः पिप्पकाशकुनिस्तेशरव्यायैविश्वेषान्देवानाम्पृषतः॥ ॐनागकर्णाय०नागकर्णमा०॥४०॥

ॐ मृगोनभीमःकुचरोगिरिष्ठाः परावतऽआजगन्थापरस्याः । सृकर्ठ॰ सर्ठ॰शायंपविमिन्द्र-तिग्मंविशत्रून्ताडिविमृधोनुदस्व ॥ महाबलाय० महाबलमा० ॥४१॥

ॐ इन्द्रुर्दक्षःश्येन ऽऋतावाहिरण्यपक्षःशकुनोभुरण्युः । महान्त्सधस्थेध्रुवऽआनिषत्तो-ऽनमस्तेऽअस्तुमामाहिर्ठ॰सीः ॥ ॐ फेत्काराय न० फेत्कारमा० ॥४२॥

ॐ जीमूतस्येवभवतिप्रतीकंयद्वर्मीयातिसमदामुपस्थे ॥ अनाविद्धयान्तन्वाजयत्वर्ठ॰सत्वा-व्वर्म्मणोमहिमापिपर्त्तु ॥ वीरकाय० वीरकामा० ॥४३॥

ईशानदिकोष्ठे सहस्रु दलेषु क्रमेण—

ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वतेवृषपाणयोश्वारथेभिःसहवाजयन्तः ॥ अवक्रामन्तःप्रपदैरमित्रा-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न्निक्षणान्तिशत्रूँ रनंपव्व्ययन्तः ॥ सिंहाय० सिंहमा० ॥४४॥

ॐअग्निन्दूतंपरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ ऽआसादयादिह ॥ मृगाय० मृगमा० ॥४५॥

ॐ अदित्यास्त्वापृष्ठेसादयाम्यन्तरिक्षस्यधर्त्रीं व्विष्टम्भनीन्दिशामधिपत्नीम्भुवनानाम् ॥ ऊर्मिर्द्रप्सो ऽअपामसि व्विश्वकर्म्मात ऽऋषिरश्विनाद्ध्वर्य्यूसादयतामिहत्वा ॥ यक्षाय० यक्षमा० ॥४६॥

ॐ द्यौस्तेपृथिव्व्यन्तरिक्षंव्वायुश्छिद्रंपृणातुते ॥ सूर्य्यस्तेनक्षत्रैःसहलोकङ्कृणोतुसाधुया ॥ मेघवाहनाय० मेघवाहनमा० ॥४७॥

ॐ सम्बर्हिरङ्क्ताᳬहविषाघृतेनसमादित्यैर्व्वसुभिः सम्मरुद्भिः । समिन्द्रोविश्वदेवेभिरङ्क्ता-न्दिव्व्यन्नभोगच्छतुयत्स्वाहा ॥ तीक्ष्णाय० तीक्ष्णमा० ॥४८॥

ॐ पवमानःसोऽअद्यनः पवित्रेणव्विचर्षणिः ॥ यःपोतासपुनातुमा ॥ अमलाय नमः अमलमा० ॥४९॥

ॐअभ्यर्षत सुष्टुतिङ्गव्व्यमाजिमस्म्मासुभद्राद्द्रविणानिधत्त ॥ इमंयज्ञन्नयतदेवतानोघृतस्य-धारा मधुमत्पवन्ते ॥ शुक्राय० शुक्रमा० ॥५०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः—ॐ मनोजूति० इति अजरादिक्षेत्रपालाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु, ततः षोडशोपचारैः पूजयेत् । तद्यथा—

श्रीक्षेत्रपालान्सुरपुष्पमालान्सर्वान्तरायाशु विनाशकालान् ।
दत्ताखिलाभीप्सितवर्गजालान्ध्यायेऽधुना चन्दनलिप्तभालान् ॥

ॐसाङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सशक्तिकेभ्यः सवाहनेभ्यः सायुधेभ्यः क्षेत्रपालेभ्यो नमः ध्यायामि ॥१॥

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशने प्राप्तगुणाः सुभव्याः ।
आवाहनं क्षेत्रसुपालकाः वः करोम्यहं भव्यकरा भवन्तु ॥

साङ्गे० सपरि० सशक्ति० सवाहने० सा० क्षेत्रपालेभ्यो० आवाहनं सम० ॥२॥

चित्रप्रभाभासुरमञ्जुभक्त्यार्पितं मया साम्प्रतमासनञ्च ।
श्रीक्षेत्रपालाः सुतरां भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सहान्नः ।

साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० आसनं स० ॥३॥

सुराश्च विबुधानिगमप्रसिद्धाः प्रक्षालनाय पदपङ्कजयोरुदारम् ।
स्वच्छं सुशीतलमिदं मयकाहृतं च गृह्णन्त्वशेषमिदमिष्टकरं च वारि ।
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० पाद्यं स० ॥४॥

सौजन्यसौख्यजननी जननी जनानां येषां कृपैव वसुधा वसुधारिणी वै ।
ते सर्वदेवगुरुगौरवधारिदेहा अर्घ्यं मुदा हि त्र सुरा मम धारयन्तु ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० अर्घ्यं स० ॥५॥

कङ्कोलपत्रैरिचन्दनपुष्पयुक्तमेलालवङ्गलवलीघनसारसारम् ।
दत्तं सदैव हृदये करुणाशयेऽस्मिन्देवा भजन्तु शुभमाचमनीयमम्भः ॥
साङ्गेभ्यः क्षेत्र० आचमनीयं स० ॥६॥

विमलगाङ्गजलेन युतं पयोघृतसितादधिसर्पिसमन्वितम् ।
प्रियतरं भवतां परिगृह्णत यदि कृपाप्रभवो मयि सेवके ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० पञ्चामृतस्नानं स० ॥७॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जले समादाय विचित्रपुष्पाण्यच्छानि चानीय निपातितानि ।
स्नानं विधेयं विबुधाः समन्तादागत्य युष्माभिरिहाङ्गणे मे ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० शुद्धोदकस्नानं स० ॥८॥

अनर्घ्यरत्नैरतिभासितं शुभं सदा प्रियं मङ्गलकारकं वरम् ।
स्वच्छं च वस्त्रं विनिवेदितं मया प्रमोददं वै भवतां कृते भवेत् ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० वस्त्रं स० ॥९॥

कौशेयसूत्रविहितं विमलं सुचारु वेदोक्तरीतिविहितं परिपावनञ्च ।
क्षेत्राधिपाः सुमनसः सुनिवेदितं च यज्ञोपवीतमुररीक्रियतां सुदेवाः ॥
साङ्गेभ्यः० यज्ञोपवीतं स० ॥१०॥

विविधतापविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम् ।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० उपवस्त्रं स० ॥११॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षेत्राधिपा मलयजातसुगन्धराशिं सप्रेम गृह्णत सुशीतलमच्छशोभम् ।
सन्तापसन्ततिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथपूरकाः स्युः ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० गन्धं स० ॥१२॥

विमलगाङ्गजलैः परिमार्जितं सुरभिकुङ्कुमरागसुरञ्जितम् ।
सततमक्षतमादरचेतसा सकलसौम्यमयं शुभकारकम् ॥
साङ्ग० क्षेत्र० अक्षतान् ॥ १३ ॥

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम् ।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयनाञ्चलैः ॥
साङ्गे० क्षेत्र० पुष्पाणि स० ॥१४॥

धूपादिकेनातिसुवासितानि शोणश्रियानन्दविवर्द्धकानि ।
सुरक्तचूर्णानि मनोहराणि क्षेत्राधिपा वो मनसाऽर्पयामि ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० रक्तचूर्णं स० ॥१५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

लवङ्गपाटीवरचूर्णवर्द्धितं सर्वासुराणामपि सौख्यकारि ।
लोकत्रये गन्धकरं प्रशस्तं क्षेत्राधिपा जिघ्रत धूपगन्धम् ॥
साङ्गेभ्यः क्षेत्र० धूपमा० ॥१६॥

सद्वर्त्तिकां ज्ञानविवर्द्धिकां परां निर्वाणदीपं विनिवेदितं मुदा ।
प्रज्वालितं ध्वान्तविनाशकारकं गृह्णन्तु ज्ञानस्य विशालरूपम् ॥
साङ्गेभ्यः क्षेत्र० दीपं दर्शं० ॥१७॥

सिद्धान्नकर्पूरविराजितं पुरः सौरसाभ्यन्द्रेण विवर्धितं तथा ।
नैवेद्यमेतद्रुचिरं सुगन्धितं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० नैवेद्यं स० ॥१८॥

श्रीक्षेत्रपालविबुधाः सदने मदीये भक्त्यार्पितं परमगन्धमयं मनोज्ञम् ।
एलालवङ्गलसितं क्रमुकादिकान्तं ताम्बूलमद्य मम गृह्णत हे सुरेन्द्राः ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० ताम्बूलं स० ॥१९॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगायमानाः प्रभवः पुराणाः ।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां मे ध्यानेन भक्ते लघु वर्तितव्यम् ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० दक्षिणां स० ॥२०॥

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारादपि दूरकर्त्री ।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानसस्य ॥
साङ्गेभ्यः क्षेत्र० नीराजनां स० ॥२१॥

प्रदक्षिणाः सन्ति प्रदक्षिणा अपि पदे पदे दुःखविनाशिकास्तथा ।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० प्रदक्षिणां स० ॥२२॥

क्षेत्राधिपा विमलपुष्पदराञ्जलिं मे भक्त्यार्पितं सरसमञ्छरसैप्रपूर्णम् ।
दीने विधाय करुणां मयि हे सुरेन्द्राः स्वीकृत्य दीनजनवत्सलतां किरन्तु ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० पुष्पाञ्जलिं स० ॥२३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जानामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं हरतारमेव ।
क्षेत्राधिपालविबुधाः सुखमाकिरन्तु कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितात्समस्तात् ॥
साङ्गेभ्यः० क्षेत्र० स्तुतिं सम० ॥२४॥

इति पूजनं कृत्वा ततः मध्ये अष्टदलं विलिख्य तत्र कलशं संस्थाप्य कृताग्न्युत्तारणं सौवर्णं क्षेत्रपालं । ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो०" इत्यावाह्य स्थापयेत ।

॥ इति क्षेत्रपालपूजनं समाप्तम् ॥

❀ अथ कुशकण्डिका ❀

अग्निदेव के दक्षिण दिशा की तरफ ब्रह्मदेव का कुशासन रहे । अग्नि के उत्तर दिशा में प्रणीतापात्र के लिये दो आसन रखे ।

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम् । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम् । ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम् । यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव । 'भवामि' इति पठित्वा तत्रोपवेशनम् । 'भवामि' इति

ब्रह्मा के आसन पर ब्रह्मा को बैठा दे, कहे—हे ब्रह्मन्, जब तक कर्म की समाप्ति न हो तब तक आप ब्रह्मा पद पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आसीन हों। ब्रह्मा—मैं होता हूँ—यों कहकर पूर्व स्थापित आसनपर बैठे। तदनन्तर—ब्रह्मा मौन हो जाय। फिर प्रणीता पात्र को बायें हाथ में धारण कर दाहिने हाथ से ग्रहण किये हुए, जलपात्र से उस प्रणीतापात्र में जल को भर के पहले से बिछी हुई कुशाओं पर दाहिने हाथ से रखकर कुशों द्वारा आच्छादन कर उस पात्र को स्पर्श कर ब्रह्मदेव के मुख को देखकर ईक्षणमात्र से ब्रह्मा की आज्ञा लेकर उत्तर दिशा की तरफ बिछी हुई कुशाओं पर रख दे। तदनन्तर बारह परिस्तरण

ब्रह्मणः प्रत्युक्तिः। ब्रह्मा वाग्यतश्च भवेत्। ततः प्रणीतापात्रं सव्यहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तगृहीतेनोदकपात्रेण तत्र जलं सम्पूर्य पश्चादास्तीर्णकुशेषु दक्षिणहस्तेन निधाय (कुशैराच्छाद्य तत्पात्रमालभ्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्य ईक्षणमात्रेण ब्रह्मणाऽनुज्ञातः उत्तरत आस्तीर्णेषु कुशेषु निदध्यात्। ततो द्वादशानां परिस्तरणकुशानां चतुरो भागान् वामहस्ते कृत्वा एकैकभागेन आग्नेयादीशानान्तम्, ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्, अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। इतरथावृत्तिः। तत उत्तरतः स्तीर्णकुशेषुद्विशः पात्राणि यथासम्भवं न्युब्जानि उदक्संस्थानि प्राक्संस्थानि वा आसादयेत्।

कुशाओंके चार भागों को बायें हाथ में रखे उसमें से एक एक भाग से परिस्तरण अग्निकोण से ईशानादि में करें। तदनन्तर—पश्चिम दिशा से उत्तर दिशा की तरफ बिछी कुशाओं पर दो दो पात्रों को यथासंभव न्युब्ज उदक् संस्थ या प्राक्संस्थ आसादन करे। दो पवित्र छेदन करनेके लिए कुशा, प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जनकुशा पांच,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपयमनकुशा सात, तीन समिधा, स्रुव, घृत, चावल, पूर्णपात्र, आदि रखे। सूर्यादि ग्रहों के अनेकवर्ण के वस्त्र, अधिदेवता आदि के लिये सफेद वस्त्र, सूर्यादिग्रहोंके लिए अनेक प्रकार के चन्दन, तत्-तत् वर्णके ग्रहों की धूप, ग्रहों के नैवेद्य, फल, दक्षिणा, वितान, सूर्यादि की समिधा, यव, तिल, पूर्णाहुत्यर्थ नारिकेल तथा वस्त्र का आसादन करे। तदनन्तर—पवित्र

१२५ पवित्रे छेदनकुशाः। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। संमार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुव। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानि—तत्तद्ग्रहवस्त्राणि। अधिदेवताद्यर्थं श्वेतानि। तत्तद्ग्रहचन्दनानि। अक्षतास्तद्ग्रहवर्णाः। तत्तद्ग्रहपुष्पाणि। तत्तद्ग्रहधूपाः। तत्तद्ग्रहनैवेद्यानि। फलानि। दक्षिणाः। वितानम्। अर्कादिसमिधः। सयवतिलाः। पूर्णाहुत्यर्थं नारिकेलवस्त्रादि। ततः पवित्रकरणम्। तद्यथाआसादितं कुशपत्र द्वयं स्थौल्येन समं मध्यशल्यरहितं वामहस्ते कृत्वा अग्रतः प्रादेशमात्रं परिमाय मूले तयोरुपरि कुशात्रयमुदगग्रं निधाय तत्कुशात्रयं तयोर्मूलभागेन प्रादक्षिण्येन परिवेष्ट्य तयोः प्रादेशपरिमिणामग्रभागं

१८ बनावे। जैसे—स्थापित मध्य (बीच कुशा से रहित) शल्य रहित दो कुशपत्र द्वय को बराबर नाप कर बायें हाथ में कर कुशा के अग्रभाग से प्रादेश मात्र नापकर उसके मूल पर उन दोनों कुशा के ऊपर तीन कुशाओं को उदगग्र रखकर उन कुशाओं को उस दो कुशा के मूल भाग से प्रादक्षिण्यक्रम से वेष्टन कर उन दो कुशपत्रों को प्रादेश मात्र परिमाण के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्रभाग को बायें हाथ में कर बचे हुए मूलभाग को और तीन कुशाओं को दाहिने हाथ से तोड़ दे और त्याग दें, शिष्टपत्रद्वय ही पवित्र है। उस पत्रद्वय में अविश्लेषण के लिए गाँठ दे। तदनन्तर प्रागग्र प्रोक्षणीपात्र को प्रणीता के समीप रख वहाँ से सपवित्र पात्रान्तर हाथ से प्रणीता पात्रके जल को तीन बार आसेचन कर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में

वामहस्ते कृत्वा अवशिष्टं मूलभागं कुशत्रयं च दक्षिणहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन त्रोटयेत् परित्यजेच्च। शिष्टं पत्रद्वयं पवित्रम्। तस्मिन्पत्रद्वयेऽविश्लेषाय ग्रन्थिं कुर्यात्। ततः प्रागग्रं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र सपवित्रेण पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकं त्रिरासिच्य प्रोक्षणीपात्रं सव्ये कृत्वा दक्षिणेन वामहस्तधृतमेव कर्णसमुत्थाय नीचः कृत्वा प्रणीतोदकेन पवित्रानीतेनोत्तान हस्तेन प्रोक्षणीः प्रोक्षयेत्। ततः प्रोक्षणीजलेन आज्यस्थालीं प्रोक्षणम्। चरुस्थालीं प्रोक्षणम्। संमार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। ततस्ते पवित्रे प्रोक्षणीपात्रे संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्र-

कर दाहिने सेबायें हाथ से धारण किये हुए ही कान की तरफ उठाकर नीचे की तरफ कर प्रणीता पात्र के जल से पवित्र द्वारा ग्रहण किये हुए उत्तान हाथ से प्रोक्षणी पात्र का प्रोक्षण करे। फिर प्रोक्षणी जल से आज्यस्थाली का प्रोक्षण करे। चरुस्थाली का प्रोक्षण करे। संमार्जन कुशाओं का प्रोक्षण करे। उपयमन कुशाओं का, समिधा का, स्रुवका, आज्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

का और पूर्णपात्र का प्रोक्षण करे। तदनन्तर उन दोनों पवित्रों का प्रोक्षणी पात्र में स्थापन कर उस प्रोक्षणी पात्र को अग्नि और प्रणीतीपात्र के मध्य में रख दे। फिर अग्नि के पीछे आज्यस्थाली रख उसमें आज्य का प्रक्षेप करे। इसी प्रकार अग्निके पश्चिम चरुस्थाली रख सपवित्रवाली उसमें तीनबार धोये हुए चावलों को छोड़ प्रणीतापात्र के जल से आसेचन कर उपयुक्त जल को उसमें छोड़कर ब्रह्मा के दक्षिण तरफ घी को आचार्य उत्तरदिशा से अदग्ध अश्रावित पक्व

मग्नि णीतयोर्मध्ये निदध्यात्। ततोऽग्नेः पश्चादाज्यस्थालीं निधाय तत्राज्यं प्रक्षिपेत्। एवं चरुस्थालीमग्नेः पश्चिमगतो निधाय तत्र सपवित्रायां त्रिःप्रक्षालितान् तण्डुलान् प्रक्षिप्य प्रणीतोदकमासिच्योपयुक्तं जलं पात्रे निनीय ब्रह्मदक्षिणत आज्यम् आचार्य उत्तरतश्चरुमदग्धमस्रावितमण्डपन्तरूष्मपक्वं सुशृतं पचेत्। (केवलाज्ये तु उत्तराश्रितामाज्यस्थालीमग्नावारोपयेत)। ततोऽग्नेर्ज्वलदुल्मुकमादाय ईशानादिप्रदक्षिणमोशानपर्यन्तमग्निमाज्यचर्वोः परितं भ्रामयित्वोल्मुकमग्नौ प्रक्षिप्य

चरु को पका दे। तदनन्तर अग्निकुण्ड या स्थण्डिल से जलते हुए उल्मुक को लेकर ईशानकोण आदि से प्रदक्षिण ईशानकोण पर्यन्त अग्निस्थित आज्य और चरु के चारों तरफ घुमकर उस उल्मुक को अग्नि में छोड़ दे। फिर अप्रदक्षिण क्रम से अपने हाथ को ईशानकोण पर्यन्त घुमा दे। चरुके आधे पक जाने पर स्रुव को हाथ में ग्रहण कर उस स्रुव के बिल को नीचे की तरफ कर एक बार अग्नि में तपाकर संमार्जन कुशाओं के अग्रभाग से भीतर की तरफ से और मूलभाग से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरंभकर अग्रभाग पर्यन्त पूर्व की तरफ संमार्जन कर कुश मूलों से बाहर और नीचे के हिस्से में अग्रभाग से आरंभ कर छुड़कर संमार्जनकुशाओं को अग्नि में फेककर प्रणीता जल से स्रुव का अभ्युक्षण तथा स्रुव का प्रतपन कर दक्षिणादिशा की तरफ उस स्रुवको रख दे।

तदनन्तर पके हुए चरुमें स्रुव के द्वारा घी को छोड़ आज्यस्थाली को चरुके पूर्व से ले आकर उत्तरदिशाकी

अप्रदक्षिणं हस्तमीशानकोणपर्यन्तं पर्यावर्तयेत्। अर्द्धश्रिते चरौ स्रुव गृहीत्वाऽधोबिलं सकृत् प्रतप्य समार्जनकुशानाममग्रैरन्तरतः—उपरि मूलादारभ्याग्रपर्यन्तं प्राञ्चं संमृज्य कुशमूलैर्बहिरधः प्रदेशे अग्रादारभ्य प्रत्यञ्चं सम्मृज्य संमार्जनकुशानग्नौ प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनः स्रुवं प्रतप्य दक्षिणस्यां दिशि तं स्थापयेत्। ततः शृतं चरुं स्रुवेण गृहीतेनाज्येनाभिधार्य आज्यस्थालीं चरोः पूर्वेणानीयोत्तरत उद्वास्याग्नेः पश्चिमतः स्थापयेत्। ततश्चरुमादाय उत्तरत उद्वास्य आज्यस्य पूर्वेणानीय आज्यस्योत्तरतः स्थापयेत्। ततो दक्षिणहस्तस्याङ्गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं

तरफ रख फिर अग्नि के पश्चिमदिशाकी तरफ स्थापन करे। फिर चरुको लेकर उत्तरदिशासे उतारे हुए घी के पूर्व से ले आकर घी के उत्तर की तरफ स्थापन करे।

तदनन्तर—दाहिने हाथ के अँगूठे और अनामिका से उस दोनों कुशाओं (पवित्र) के अग्रभाग को पकड़कर ऊपर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अग्रभाग को नम्र बनाकर धारण करते हुए ही आज्य (घी) में प्रक्षेपकर आज्य को उत्पवन करे। (अर्थात्—उछाले) फिर घी को देखकर उसमें अपद्रव्य हो तो उसे निकाल दे। तदनन्तर फिर पवित्रों को ग्रहण कर प्रोक्षणीस्थित जलका उत्पवन करे। फिर बायें हाथ में उपयमनकुशा को लेकर दाहिने हाथ में प्रादेशप्रमाण की तीन समिधाओं को घी में

सङ्गृह्य वामहस्तस्याङ्गुष्ठानामिकाभ्यां तयोरग्रं सङ्गृह्य ऊर्ध्वाग्रेऽनम्रीकृत्य धारयन्नेवाज्ये प्रक्षिप्याज्यस्योत्पवनं कुर्यादुच्छालयेत्। तत आज्यमवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरस्येत्। ततः पूर्ववत्पवित्रे गृहीत्वा प्रोक्षणीनामपामुत्पवनं कुर्यात्। ततो वामहस्ते उपयमनादाय दक्षिणेन प्रादेशमात्राः पालाशीस्तिस्रः समिधो घृताक्ता द्व्यङ्गुलादूर्ध्वं मध्यमानामिकाङ्गुष्ठैर्मूलभागे धृतास्तर्जन्यग्रवत्स्थूलास्तन्त्रेणाग्नौ तूष्णीं प्रक्षिप्य सपवित्रेण प्रोक्षण्युदकेन चुलुकगृहीतेन ईशानादि प्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं पर्युक्ष्य अप्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं हस्तं पर्यावर्तयेत्। ततः पवित्रे प्रणीतासु निधाय

भिगोकर दो अँगुल ऊपर मध्यमा अनामिका अँगूठे के मूलभाग में धारण की हुई तर्जनी की तरह मोटी समिधा को एक साथ चुपचाप अग्नि में प्रक्षेप कर सपवित्र वाली प्रोक्षणीपात्रके जलसे चुल्लू द्वारा ग्रहण कर ईशानकोण से प्रक्षेप कर फिर ईशानपर्यन्त प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण कर अप्रदक्षिणक्रम से ईशानकोणपर्यन्त अपने दाहिने हाथ को केवल घुमा दे। तदनन्तर उन पवित्र को प्रणीतापात्र में रख अपने दाहिने जानु को मोड़कर ब्रह्मा से कुशों द्वारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्वारब्ध (स्पर्श) कर उपयमनकुशा के सहित अपने हाथ की अँगुलियों को फैला कर उस हाथ को हृदय में लगा कर दाहिने हाथ से स्रुव के मूल से चार अँगुल छोड़कर 'शंखमुद्रा' से स्रुव को ग्रहणकर प्रदीप्त अग्निमें वायव्यकोणसे प्रारंभकर अग्निकोण पर्यन्त या पूर्वदिशाकी तरफ निरन्तर घी की धारा द्वारा प्रजापति का मन से ध्यान कर स्रुव से

दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः उपयमनकुशसहितं प्रसारिताङ्गुलिहस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरङ्गुलं त्यक्त्वा शङ्खसन्निभमुद्रया स्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौ वायव्य-कोणादारभ्याग्निकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा सन्ततघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् स्रुवेण तूष्णीं सशेषं मौनी जुहुयात् । नात्र स्वाहाकारः । इदं प्रजापतये न मम इति यजमानेन त्यागः कर्तव्यः । होमत्यागानन्तरं स्रुवावशिष्टस्याज्यस्य सर्वत्र प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः । ततो निर्ऋतिकोणादार-भ्येशानकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा—ॐ इन्द्राय स्वाहा इति जुहुयात् । इदमिन्द्राय न मम—इति त्यजेत् ।

चुपचाप शेषके सहित हवन करे । इसमें स्वाहाकार नहीं है । 'इदं प्रजापतये न मम' इस वाक्य का यजमान त्याग करे । होमत्याग के बाद स्रुवस्थित आज्य का सर्वत्र प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे ।

तदनन्तर—निर्ऋतिकोण से आरम्भकर ईशानकोणपर्यन्त या पूर्व की तरफ 'इन्द्राय स्वाहा' इससे हवन करे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

'इदमिन्द्राय न मम' इससे त्याग करे। फिर उत्तर-पूर्वार्धमें 'अग्नये स्वाहा' से हवन करे। दक्षिणपूर्वार्धं में सोमाय स्वाहा—से हवन करे। तदनन्तर यजमान त्याग करे। क्यों कि बहुकर्तृक हवन में यथासमय प्रति आहुति के बाद प्रोक्षणीपात्र में त्याग करना असंभव है। अतः सब हवनीयद्रव्य तथा देवताओं को मनसे ध्यान कर 'इदमुप-

तत उत्तरपूर्वार्द्धे—ॐ अग्नये स्वाहा–इदमग्नये न मम इति हुत्वा दक्षिणपूर्वार्द्धे—ॐ सोमाय स्वाहा–इदं सोमाय न मम इति जुहुयात्। ततो यजमानः द्रव्यत्यागं कुर्यात्। तत्र च बहुकर्तृके होमे यथाकालं प्रत्याहुतित्यागस्य कर्तुमशक्यत्वात्सर्वं हवनीयं द्रव्यं देवताश्च मनसा ध्यात्वा त्यजेत्। तच्चैवम्–इदमुपकल्पितं समित्तिलादिद्रव्यं (यथासम्पादितम्) या या यक्ष्यमाणदेवता-स्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न ममेति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत्। यथादैवतमस्तु।

कल्पितं समित्तिलादिद्रव्यं या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्त न मम' इस वाक्यको पढ़कर जल सहित अक्षत को भूमि में प्रक्षेप करे। 'यथादैवतमस्तु' ये कहे।

॥ इति कुशकण्डिका: ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* अथ ग्रहादि होमः *

आचार्य सहित यज्ञ स्थल पर उपस्थित ब्रह्मा सहित सभी ब्राह्मण 'गणानांत्वा से स्योना पृथिवी तक के निम्न वैदिक मंत्रों का क्रमानुसार उच्चारण करते हुए, प्रत्येक मंत्र से ग्रहों के लिए एक-एक आहुति देवें—

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा ॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाँ काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा।

ॐ इमं देवा ऽअसपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा स्वाहा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपाᳬं रेताᳬंसि जिन्वति स्वाहा।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳬंसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा।

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳬं शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभिस्रवन्तु नः स्वाहा।

ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्व्वलोकं म इषाण स्वाहा।

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्व्वन् स्वाहा।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा।

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा।

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ २॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा ।

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि । समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा ।

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा ।

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ२॥ ऽआसादयादिह स्वाहा ।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे स्वाहा ।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः स्वाहा ।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाᳬं सुरे स्वाहा ।

ॐ इन्द्र ऽआसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् स्वाहा ।

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः । पूषासि घर्म्माय दीष्व स्वाहा ।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ऽअस्त्वयममुष्यं पितासावस्य पिता व्वयᳬस्याम पतयो रयीणाᳬस्वाहा ।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा ।

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः । स बुध्न्या ऽउपमा व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः स्वाहा ।

ॐ गणानां त्वा गणपतिᳬ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिᳬ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिᳬ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा ।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ।

ॐ व्वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये स्वाहा ।

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश ऽआदिशो व्विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् स्वाहा ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवा नः । यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः स्वाहा ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा ॥

ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य । त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा ॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा ॥

२९ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा ॥ २३७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳस मा न ऽआयुः प्रमोषीः स्वाहा ॥

ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा ।

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि स्वाहा ।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः यः शꣳस शंते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा ऽअस्माँ२॥ऽअवन्तु देवाः स्वाहा ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनि । यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः स्वाहाः ।

॥ इति ग्रहादि होमः ॥

ततो होमे प्रारब्धे होमसमाप्तिं यावत् प्रात्यहिकं कर्मोच्यते । यजमानादयः सर्वे यथा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थानमुपविश्याचम्यं प्राणानायम्य शान्तिसूक्तं पठित्वा ।

संकल्प–

यजमाना देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्मा (वर्मा, गुप्तः) 'अस्मिन् सनवग्रहमखविष्णु (महाविष्णु, अतिविष्णु) यागकर्मणि गणेशाम्बिकयोः वरुणस्य सगणपानां षोडशानां मातृणां घृतमातृणां वास्तुपीठस्थदेवानां मण्डपदेवानां सर्वतोभद्रपीठदेवानां प्रधानस्य सपरिवारस्य मेखलादेवानां अग्नेः शान्तिकलशदेवस्य नवग्रहाणां सपरिवाराणां योगिनीनां क्षेत्रपालनाम-आचार्यादृत्विजां च पूजनं करिष्ये' ।

इसप्रकार संकल्प करके सभी विधि करें ।

ततो यजमानः प्रधानवेदेः पश्चादुपविश्य सर्वान् ऋत्विजः समुपवेश्य—

आचमन–प्राणायाम–शान्तिपाठपुरुषसूक्तलक्ष्मीसूक्तादिकं पठित्वा ।

संकल्प–

देशकालौ सङ्कीर्त्य "श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं सनवग्रहमखेऽस्मिन् विष्णुयागकर्मणि नित्यपूजाङ्गभूतं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरुषसूक्तेन लक्ष्मीसूक्तेन च मार्जनमघमर्षणमुपस्थानं तिलकधारणमाशनविधिं छन्दःपुरुषन्यासं पुरुषसूक्तन्यासं पञ्चाङ्गन्यासं लक्ष्मीसूक्तन्यासं पञ्चाङ्गन्यासं च करिष्ये"

ब्राह्मणस्तु—यजमानेनामुकशर्मणा वृतोऽहं तत्सङ्कल्पितसनवग्रहमखविष्णुयागकर्मणि तिलकधारणं तुलसीमालाधारण आसनविधि छन्दःपुरुषन्यासं, पुरुषसूक्तलक्ष्मीसूक्तन्यासं च करिष्ये–इति सङ्कल्पेयुः ।

अनुतिष्ठेयुश्च । पुनर्यजमानो देशकालौ सङ्कीर्त्य—

गोत्र शर्मा अस्मिन् विष्णुयागकर्मणि प्रात्यहिकप्रधानपूजापूर्वाङ्गत्वेन विहितं स्वात्मनि भगवतः पूजनं, सर्वतोभद्रदेवतापूजनं, कलशस्थापनं, शङ्खघण्टार्चनम्, नारायणमूर्ति पुरुषसूक्तेन न्यासद्वयम्, लक्ष्मीमूर्तौ लक्ष्मीसूक्तेन न्यासद्वयम्, आसनादिनमस्कारान्तपूजनम्, आवरणदेवपूजनम्, पुनर्गन्धादिपुष्पाञ्जल्यन्तपूजनम्, न्याससयुतपुरुषसूक्तलक्ष्मीसूक्तद्वादशाक्षरमन्त्रजपं 'जितं त, इति स्तवनं पुरुषसूक्तलक्ष्मीसूक्ताभ्यां स्तवनं चतुः चतुरो नमस्कारान् पूजानिवेदनं च करिष्ये' इति सङ्कल्प्य सर्वं कुर्यात् । प्रतिदिनं होमान्ते षोडशोपचारपूजनं षोडश-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

कमलपुष्पाणां पुरुषसूक्तेनार्पणम्, जितं त इति स्तवनमारार्तिकं पुष्पाञ्जलिं च कुर्यात्।

ततः प्रधान होमः—तद्यथा अग्न्यायतनस्य चतुर्दिक्षु ब्राह्मणोपवेशनम्। यजमास्य चोपवेशनम्। आचमनम्। प्राणायामः। पवित्रधारणम्। शान्तिपाठः यजमानो ब्राह्मणाश्च।
ततो देशकालौ सङ्कीर्त्य—अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (अमुकगोत्रेण अमुकशर्मणा यजमानेन वृतोऽहम्) तत्सङ्कल्पितसनवग्रहमखविष्णुयागस्य पूर्वाङ्गत्वेन विहितं तिलकधारणं तुलसीमालाधारणं आसनविधिं छन्दः पुरुषन्यासं पुरुषसूक्तन्यासं लक्ष्मीसूक्तन्यास करिष्ये। तत्रादौ गणपतिस्मरणं करिष्ये इति सङ्कल्प्य।

'गणानान्त्वा' इति मन्त्रेण गणपतिं स्मृत्वा (सतिसम्भवे शान्तिपाठं पुरुषसूक्तं लक्ष्मीसूक्तं च पठित्वा)।

"ॐ कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं,
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुःकरे कङ्कणम्।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावलिं,
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ॥''

इति मूलमन्त्रेण च तिलकं कृत्वा वैदिकमूल मन्त्राभ्यां तुलसीमालां धारयेत् । ततः—

'ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भोजने । तिष्ठदेविशिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते ॥

इति शिखाग्रन्थिकरणम् । सहस्राणीत्यस्य परमेष्ठीऋषिः अनुष्टुप्छन्दः एको रुद्रा देवता महीप्रार्थने विनियोगः ।

ॐ सहस्राणि सहस्रयो व्वाह्वोसावहेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखाकृधि ॥

यएतावन्तश्चेत्यस्य परमेष्ठी ऋ० अनुष्टुप्छ० बहवो रुद्रादे० ककुभां प्रार्थने विनियोगः ।

ॐ य एतावन्तश्च भूयाᳬसश्च दिशो रुद्राव्वितस्थिरे । तेषाᳬस० सहस्रयोजनेऽविधन्वानितन्मसि ॥

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋ० सुतलं छ० कूर्मोदे० आसने वि० । ॐ पृथ्वि त्वया० ।

'अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust: Funding IKS-MoE-Grant-2

ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् ।

सर्वेषामविरोधेन हवनं च समारभे ॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो । विशिखासः कपर्दिनः । तेषाठं० सहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥

इति दिग्बन्धं कृत्वा छन्दःपुरुषन्यासं कुर्यात् ।

तद्यथा—

ॐ तिर्यग्बिलाय छन्दः पुरुषायोर्ध्वबुध्नाय छन्दः पुरुषाय नमः शिरसि ॥१॥

ॐ गौतमभरद्वाजाभ्यां नमः नेत्रयोः ॥२॥ ॐ विश्वामित्रजमदग्निभ्यां नमः श्रोत्रयोः ॥ ३ ॥

ॐ वसिष्ठकश्यपाभ्यां नमः नासापुटयोः ॥४॥ ॐ अत्रये नमः वाचि ॥५॥

ॐ गायत्र्यै छन्दसे नमः अग्नये नमः शिरसि ॥६॥ ॐउष्णिहे छन्दसे नमः सवित्रे नमः ग्रीवायाम् ॥७॥

ॐ बृहत्यै छन्दसे नमः बृहस्पतये नमः अनूके ॥८॥ ॐबृहद्रथन्तराभ्यां नमः द्यावापृथिवीभ्यां नमः ॥९॥

ॐ त्रिष्टुभे छन्दसे नमः इन्द्राय नमः मध्ये ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ जगत्यै छन्दसे नमः आदित्याय नमः श्रोण्योः ॥११॥
ॐ अतिछन्दसे नमः प्रजापतये नमः लिङ्गे ॥१२॥
ॐ यज्ञायज्ञियाय छन्दसे नमः वैश्वानराय नमः गुदे ॥१३॥
उदकोपस्पर्शः ।
ॐ अनुष्टुभै छन्दसे नमः विश्वेभ्यो नमः ऊर्वोः ॥१४॥
ॐ पङ्क्त्यै छन्दसे नमः मरुद्भ्यो नमः जान्वोः ॥१५॥
ॐ द्विपदायै छन्दसे नमः विष्णवे नमः पादयोः ॥१६॥
ॐ विच्छन्दसे नमः वायवे नमः नासापुटस्थप्राणेषु ॥१७॥
ॐ न्यूनाक्षराय छन्दसे नमः अद्भ्यो नमः इतिहस्तद्वयविपर्यासेन मस्तकादिपादान्तम् ॥१८॥

पुरुषसूक्तन्यास—

ॐ सहस्रशीर्षा० वामकरे १ ॐ पुरुष एव० दक्षिणकरे २ ॐ एतावानस्य० वामपादे ३ ॐ त्रिपादूर्ध्वं० दक्षिणपादे ४ ॐ ततो विराट्० वामजानौ ५ ॐ तस्माद्य० त० सं० दक्षिण-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

जानौ ६ ॐ तस्माद्य त० ऋ० वामकट्याम् ७ ॐ तस्मादश्वा० दक्षिणकट्याम् ८ ॐ तं यज्ञम्० नाभौ ६ ॐ यत्पुरुषं० हृदि १० ॐ ब्राह्मणोऽस्य० कण्ठे ११ ॐ चन्द्रमा म० वामबाहौ १२ ॐ नाभ्याऽआसी० दक्षिणबाहौ १३ ॐ यत्पुरुषेण० मुखे १४ ॐ सप्तास्या० नेत्रयोः १५ ॐ यज्ञेन० मूर्द्धि १६ ॐ चन्द्रमा० हृदयाय नमः १ ॐ नाभ्या० शिरसे स्वाहा २ ॐ यत्पुरुषेण० शिखायैवषट् ३ ॐ सप्तास्या० कवचाय हुम् ४ ॐ यज्ञेन० अस्त्राय फट् ५ ।

लक्ष्मीसूक्तन्यासः—

ॐ हिरण्यवर्णां० मूर्ध्नि १ ॐ ताम्म आवह० नेत्रयोः २ ॐ अश्वपूर्वां० कर्णयाः ३ ॐ कांसोस्मिताम्० नासिकायम् ४ ॐ चन्द्रांप्रभासां० मुखे ५ ॐ आदित्यवर्णो० कण्ठे ६ ॐ उपैतुमां बाह्वोः ७ ॐ क्षुत्पिपासा० हृदये ८ ॐ गन्धद्वाराम्० नाभौ ६ ॐ मनसः काम० गुह्ये १० ॐ कर्दमेन प्र० अपाने ११ ॐ आपः स्रजन्तु० ऊर्वोः १२ ॐ आर्द्रां पुष्करणीं० जान्वोः १३ ॐ आर्द्राः यः कारिणीम्० जंघयोः १४ ॐ तांम आवह० पादयोः १५ यः शुचि प्र० सर्वांगे १६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

पञ्चाङ्गन्यासः—ॐ आपः स्रजन्तु० हृदयाय नमः १ ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं० शिरसे स्वाहा २ ॐ आर्द्रां यष्करिणी० शिखायै वषट् ३ ॐ ताम्म आवह० कवचाय हूम् ४ ॐ यः शुचिः० अस्त्राय फट् ५ ।

ततः—

ॐ ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान्किरीटीहारीहिरण्मयवपुर्धृतिशङ्खचक्रः ।।
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीःकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरां शुभगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूति प्रसीद मह्यम् ।।
पद्मानने पद्मनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं हृदि सं निधत्स्व ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इदं तिलकधारणादिध्यायान्तं कर्म सर्त्विग्यजमानस्य प्रत्यहं भवति ।

ततो होमः—

१ ॐ सहस्रशीर्षा० नारायणाय स्वाहा	२ ॐ पुरुषएवेदं० नारायणाय स्वाहा
३ ॐ एतावानस्य० नारायणाय०	४ ॐ त्रिपादूर्ध्व० नारायणाय०
५ ॐ ततो व्विराड० नारायणाय स्वाहा	६ ॐ तस्माद्यज्ञात्० नारायणाय०
७ ॐ तस्माद्यात्सर्वहुतऋ० नारायणाय०	८ ॐ तस्मादश्वा० नारायणाय०
९ ॐ तंयज्ञं० नारायणाय०	१० ॐ यत्पुर्षं व्यदधुः नारायणाय०
११ ॐ ब्राह्मणोस्य० नारायणाय०	१२ ॐ चन्द्रमा० नारायणाय०
१३ ॐ नाभ्याआ० नारायणाय०	१४ ॐ यत्पुरुषेण० नारायणाय०
१५ ॐ सप्तास्यासन्० नारायणाय०	१६ ॐ यज्ञेनयज्ञ० नारायणाय०

एवं पुरुषसूक्तहोमं समाप्य ततः विष्णुसहस्रनामभिः होमः कर्तव्यः तद्यथा—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णुसहस्रनामावली होमः

१ ॐ विश्वस्मै स्वाहा	११ ॐ परमात्मने स्वाहा	२१ ॐ नारसिंहवपुषे स्वाहा
२ ॐ विष्णवे स्वाहा	१२ ॐ मुक्तानांपरमागतये स्वाहा	२२ ॐ श्रीपतये स्वाहा
३ ॐ वषट्काराय स्वाहा	१३ ॐ अव्ययाय स्वाहा	२३ ॐ केशवाय स्वाहा
४ ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे स्वाहा	१४ ॐ पुरुषाय स्वाहा	२४ ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा
५ ॐ भूतकृते स्वाहा	१५ ॐ साक्षिणे स्वाहा	२५ ॐ सर्वस्मै स्वाहा
६ ॐ भूतभृते स्वाहा	१६ ॐ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा	२६ ॐ शर्वाय स्वाहा
७ ॐ भावाय स्वाहा	१७ ॐ अक्षराय स्वाहा	२७ ॐ शिवाय स्वाहा
८ ॐ भूतात्मने स्वाहा	१८ ॐ योगाय स्वाहा	२८ ॐ स्थाणवे स्वाहा
९ ॐ भूतभावनाय स्वाहा	१९ ॐ योगविदां नेत्रे स्वाहा	२९ ॐ भूतादये स्वाहा
१० ॐ पूतात्मने स्वाहा	२० ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय स्वाहा	३० ॐ निधिपाय स्वाहा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

३१ ॐ सम्भवाय स्वाहा
३२ ॐ भावनाय स्वाहा
३३ ॐ भर्त्रे स्वाहा
३४ ॐ प्रभवाय स्वाहा
३५ ॐ प्रभवे स्वाहा
३६ ॐ ईश्वराय स्वाहा
३७ ॐ स्वयम्भुवे स्वाहा
३८ ॐ शम्भवे स्वाहा
३९ ॐ आदित्याय स्वाहा
४० ॐ पुष्कराक्षाय स्वाहा
४१ ॐ महास्वनाय स्वाहा
४२ ॐ अनादिनिधनाय स्वाहा

४३ ॐ धात्रे स्वाहा
४४ ॐ विधात्रे स्वाहा
४५ ॐ धातुरुत्तमाय स्वाहा
४६ ॐ अप्रमेयाय स्वाहा
४७ ॐ हृषीकेशाय स्वाहा
४८ ॐ पद्मनाभाय स्वाहा
४९ ॐ अमरप्रभवे स्वाहा
५० ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा
५१ ॐ मनवे स्वाहा
५२ ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा
५३ ॐ स्थविष्ठाय स्वाहा
५४ ॐ स्थविरोध्रुवाहा स्वाहा

५५ ॐ अग्राह्याय स्वाहा
५६ ॐ शाश्वताय स्वाहा
५७ ॐ कृष्णाय स्वाहा
५८ ॐ लोहिताक्षाय स्वाहा
५९ ॐ प्रतर्दनाय स्वाहा
६० ॐ प्रभूताय स्वाहा
६१ ॐ त्रिककुब्धाम्ने स्वाहा
६२ ॐ पवित्राय स्वाहा
६३ ॐ मङ्गलपराय स्वाहा
६४ ॐ ईशानाय स्वाहा
६५ ॐ प्राणदाय स्वाहा
६६ ॐ प्राणाय स्वाहा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

६७ ॐ ज्येष्ठाय स्वाहा
६८ ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा
६९ ॐ प्रजापतये स्वाहा
७० ॐ हिरण्यगर्भाय स्वाहा
७१ ॐ भूगर्भाय स्वाहा
७२ ॐ माधवाय स्वाहा
७३ ॐ मधुसूदनाय स्वाहा
७४ ॐ ईश्वराय स्वाहा
७५ ॐ विक्रमिणे स्वाहा
७६ ॐ धन्विने स्वाहा
७७ ॐ मेधाविने स्वाहा
७८ ॐ विक्रमाय स्वाहा

७९ ॐ क्रमाय स्वाहा
८० ॐ अनुत्तमाय स्वाहा
८१ ॐ दुराधर्षाय स्वाहा
८२ ॐ कृतज्ञाय स्वाहा
८३ ॐ कृतये स्वाहा
८४ ॐ आत्मवते स्वाहा
८५ ॐ सुरेशाय स्वाहा
८६ ॐ शरणाय स्वाहा
८७ ॐ शर्मणे स्वाहा
८८ ॐ विश्वरेतसे स्वाहा
८९ ॐ प्रजाभवाय स्वाहा
९० ॐ अहये स्वाहा

९१ ॐ संवत्सराय स्वाहा
९२ ॐ व्यालाय स्वाहा
९३ ॐ प्रत्ययाय स्वाहा
९४ ॐ सर्वदर्शनाय स्वाहा
९५ ॐ अधाय स्वाहा
९६ ॐ सर्वेश्वराय स्वाहा
९७ ॐ सिद्धाय स्वाहा
९८ ॐ सिद्धये स्वाहा
९९ ॐ सर्वादये स्वाहा
१०० ॐ अच्युताय स्वाहा
१०१ ॐ वृषाकपये स्वाहा
१०२ ॐ अमेयात्मने स्वाहा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

१०३ ॐ सर्वयोगविनिःसृता०
१०४ ॐ वसवे स्वाहा
१०५ ॐ वसुमनसे स्वाहा
१०६ ॐ सत्याय स्वाहा
१०७ ॐ समात्मने स्वाहा
१०८ ॐ संमिताय स्वाहा
१०९ ॐ समाय स्वाहा
११० ॐ अमोघाय स्वाहा
१११ ॐ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा
११२ ॐ वृषकर्मणे स्वाहा
११३ ॐ वृषाकृतये स्वाहा
११४ ॐ रुद्राय स्वाहा

११५ ॐ बहुशिरसे स्वाहा
११६ ॐ बभ्रवे स्वाहा
११७ ॐ विश्वयोनये स्वाहा
११८ ॐ शुचिश्रवसे स्वाहा
११९ ॐ अमृताय स्वाहा
१२० ॐ शाश्वतस्थाणवे
१२१ ॐ वरारोहाय स्वाहा
१२२ ॐ महातपसे स्वाहा
१२३ ॐ सर्वगाय स्वाहा
१२४ ॐ सर्वविद्भानवे स्वाहा
१२५ ॐ विष्वक्सेनाय स्वाहा
१२६ ॐ जनार्दनाय स्वाहा

१२७ ॐ वेदाय स्वाहा
१२८ ॐ वेदविदे स्वाहा
१२९ ॐ अव्यङ्गाय स्वाहा
१३० ॐ वेदाङ्गाय स्वाहा
१३१ ॐ वेदविदे स्वाहा
१३२ ॐ कवये स्वाहा
१३३ ॐ लोकाध्यक्षाय स्वाहा
१३४ ॐ सुराध्यक्षाय स्वाहा
१३५ ॐ धर्माध्यक्षाय स्वाहा
१३६ ॐ कृताऽकृताय स्वाहा
१३७ ॐ चतुरात्मने स्वाहा
१३८ ॐ चतुर्व्यूहाय स्वाहा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

१३९	ॐ चतुर्दंष्ट्राय	स्वाहा	१५१	ॐ उपेन्द्राय	स्वाहा	१६३	ॐ वेद्याय	स्वाहा
१४०	ॐ चतुर्भुजाय	,,	१५२	ॐ वामनाय	,,	१६४	ॐ वैद्याय	,,
१४१	ॐ भ्रांजष्णवे	,,	१५३	ॐ प्रांशवे	,,	१६५	ॐ सदायोगिने	,,
१४२	ॐ भोजनाय	,,	१५४	ॐ अमोघाय	,,	१६६	ॐ वीरघ्ने	,,
१४३	ॐ भोक्त्रे	,,	१५५	ॐ शुचये	,,	१६७	ॐ माधवाय	,,
१४४	ॐ सहिष्णवे	,,	१५६	ॐ दुर्जिताय	,,	१६८	ॐ मधवे	,,
१४५	ॐ जगदादिजाय	,,	१५७	ॐ अतीन्द्रियाय	,,	१६९	ॐ अतीन्द्रियाय	,,
१४६	ॐ अवघ्नाय	,,	१५८	ॐ संग्रहाय	,,	१७०	ॐ महामायाय	,,
१४७	ॐ विजयाय	,,	१५९	ॐ सर्गाय	,,	१७१	ॐ महोत्साहाय	,,
१४८	ॐ जेत्रे	,,	१६०	ॐ धृतात्मने	,,	१७२	ॐ महाबलाय	,,
१४९	ॐ विश्वयोनये	,,	१६१	ॐ नियमाय	,,	१७३	ॐ महाबुद्धये	,,
१५०	ॐ पुनर्वसवै	,,	१६२	ॐ यमाय	,,	१७४	ॐ महावीर्याय	,,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

१७५ ॐ महाशक्तये स्वाहा
१७६ ॐ महाद्युतये ,,
१७७ ॐ अनिर्देश्यवपुषे ,,
१७८ ॐ श्रीमते ,,
१७९ ॐ अप्रमेयात्मने ,,
१८० ॐ महाद्रिधृषे ,,
१८१ ॐ महेष्वाशाय ,,
१८२ ॐ महीभर्त्रे ,,
१८३ ॐ श्रीनिवासाय ,,
१८४ ॐ सतां गतये ,,
१८५ ॐ अनिरुद्धाय ,,
१८६ ॐ यशोदानन्दाय ,,

१८७ ॐ गोविन्दाय स्वाहा
१८८ ॐ गोविदां पतये ,,
१८९ ॐ मरीचये ,,
१९० ॐ दमनाय ,,
१९१ ॐ हंसाय ,,
१९२ ॐ सुपर्णाय ,,
१९३ ॐ भुजगोत्तमाय ,,
१९४ ॐ हिरण्यनाभाय ,,
१९५ ॐ सुतेजसे ,,
१९६ ॐ पद्मनाभाय ,,
१९७ ॐ प्रजापतये ,,
१९८ ॐ अमृत्यवे ,,

१९९ ॐ सर्वदृशे स्वाहा
२०० ॐ सिंहाय ,,
२०१ ॐ सन्धात्रे ,,
२०२ ॐ सन्धिमते ,,
२०३ ॐ स्थिराय ,,
२०४ ॐ अजाय ,,
२०५ ॐ दुर्मर्षणाय ,,
२०६ ॐ शास्त्रे ,,
२०७ ॐ विश्रुतात्मने ,,
२०८ ॐ सुरारिघ्ने ,,
२०९ ॐ गुरवे ,,
२१० ॐ गुरुत्तमाय ,,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२११ ॐ धाम्ने स्वाहा	२२३ ॐ समीरणाय स्वाहा	२३५ ॐ धरणीधराय स्वाहा
२१२ ॐ सत्याय स्वाहा	२२४ ॐ सहस्रमूर्ध्ने स्वाहा	२३६ ॐ सुप्रसादाय ,,
२१३ ॐ सत्यपराक्रमाय स्वाहा	२२५ ॐ विश्वात्मने स्वाहा	२३७ ॐ प्रसन्नात्मने ,,
२१४ ॐ निमिषाय स्वाहा	२२६ ॐ सहस्राक्षाय स्वाहा	२३८ ॐ विश्वधृषे ,,
२१५ ॐ अनिमिषाय स्वाहा	२२७ ॐ सहस्रपदे स्वाहा	२३९ ॐ विश्वभुजे ,,
२१६ ॐ स्रग्विणे स्वाहा	२२८ ॐ आवर्तनाय स्वाहा	२४० ॐ विभवे ,,
२१७ ॐ वाचस्पतिरुदारधिये०	२२९ ॐ निवृत्तात्मने स्वाहा	२४१ ॐ सत्कर्त्रे ,,
२१८ ॐ अग्रण्ये स्वाहा	२३० ॐ संवृताय स्वाहा	२४२ ॐ सत्कृताय ,,
२१९ ॐ ग्रामण्ये स्वाहा	२३१ ॐ सम्मर्दनाय स्वाहा	२४३ ॐ साधवे ,,
२२० ॐ श्रीमते स्वाहा	२३२ ॐ अहःसंवर्तकाय स्वाहा	२४४ ॐ जह्नवे ,,
२२१ ॐ न्यायाय स्वाहा	२३३ ॐ वह्नये स्वाहा	२४५ ॐ नारायणाय ,,
२२२ ॐ नेत्रे स्वाहा	२३४ ॐ अनिलाय स्वाहा	२४६ ॐ नराय ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

२४७ ॐ असंख्येयाय स्वाहा
२४८ ॐ अप्रमेयात्मने "
२४९ ॐ विशिष्टाय "
२५० ॐ शिष्टकृते "
२५१ ॐ शुचये "
२५२ ॐ सिद्धार्थाय "
२५३ ॐ सिद्धसंकल्पाय "
२५४ ॐ सिद्धिदाय "
२५५ ॐ सिद्धिसाधनाय "
२५६ ॐ वृषाहिणे "
२५७ ॐ वृषभाय "
२५८ ॐ विष्णवे स्वाहा "

२५९ ॐ वृषपर्वणे स्वाहा
२६० ॐ वृषोदराय "
२६१ ॐ वर्द्धनाय "
२६२ ॐ वर्द्धमानाय "
२६३ ॐ विविक्ताय स्वाहा "
२६४ ॐ श्रुतिसागराय "
२६५ ॐ सुभुजाय "
२६६ ॐ दुर्धराय "
२६७ ॐ वाग्मिने "
२६८ ॐ महेन्द्राय "
२६९ ॐ वसुदाय "
२७० ॐ वसवे "

२७१ ॐ नैकरूपाय स्वाहा
२७२ ॐ बृहद्रूपाय "
२७३ ॐ शिपिविष्टाय "
२७४ ॐ प्रकाशनाय "
२७५ ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय
२७६ ॐ प्रकाशात्मने स्वाहा
२७७ ॐ घृतायनाय "
२७८ ॐ ऋद्धाय "
२७९ ॐ स्पष्टाक्षराय "
२८० ॐ मन्त्राय "
२८१ ॐ चन्द्रांशवे "
२८२ ॐ भास्करद्युतये "

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

२८३ ॐ अमृतांशूद्भवाय स्वाहा
२८४ ॐ भानवे स्वाहा
२८५ ॐ शशबिन्दवे स्वाहा
२८६ ॐ सुरेश्वराय स्वाहा
२८७ ॐ औषधाय स्वाहा
२८८ ॐ जगतः सेतवे स्वाहा
२८९ ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय०
२९० ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय०
२९१ ॐ पवनाय स्वाहा
२९२ ॐ पावनाय स्वाहा
२९३ ॐ अनलाय स्वाहा
२९४ ॐ कामघ्ने स्वाहा
२९५ ॐ कामकृते स्वाहा
२९६ ॐ कान्ताय स्वाहा
२९७ ॐ कामाय स्वाहा
२९८ ॐ कामप्रदाय स्वाहा
२९९ ॐ प्रभवे स्वाहा
३०० ॐ युगादिकृते स्वाहा
३०१ ॐ युगावर्त्ताय स्वाहा
३०२ ॐ नैकमायाय स्वाहा
३०३ ॐ महाशनाय स्वाहा
३०४ ॐ अदृश्याय स्वाहा
३०५ ॐ व्यक्तरूपाय स्वाहा
३०६ ॐ सहस्रजिते स्वाहा
३०७ ॐ अनन्तजिते स्वाहा
३०८ ॐ इष्टाय स्वाहा
३०९ ॐ विशिष्टाय स्वाहा
३१० ॐ शिष्टेष्टाय स्वाहा
३११ ॐ शिखण्डिने स्वाहा
३१२ ॐ नहुषाय स्वाहा
३१३ ॐ वृषाय स्वाहा
३१४ ॐ क्रोधघ्ने स्वाहा
३१५ ॐ क्रोधकर्त्रे स्वाहा
३१६ ॐ विश्वबाहवे स्वाहा
३१७ ॐ महीधराय स्वाहा
३१८ ॐ अच्युताय स्वाहा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

वि०

३५

३१९ ॐ प्रथिताय स्वाहा
३२० ॐ प्राणाय स्वाहा
३२१ ॐ प्राणदाय स्वाहा
३२२ ॐ वासवानुजाय स्वाहा
३२३ ॐ अपांनिधये स्वाहा
३२४ ॐ अधिष्ठानाय स्वाहा
३२५ ॐ अप्रमत्ताय स्वाहा
३२६ ॐ प्रतिष्ठिताय स्वाहा
३२७ ॐ स्कन्दाय स्वाहा
३२८ ॐ स्कन्दधराय स्वाहा
३२९ ॐ धुर्याय स्वाहा
३३० ॐ वरदाय स्वाहा

३३१ ॐ वायुवाहनाय स्वाहा
३३२ ॐ वासुदेवाय स्वाहा
३३३ ॐ बृहद्भानवे स्वाहा
३३४ ॐ आदिदेवाय स्वाहा
३३५ ॐ पुरन्दराय स्वाहा
३३६ ॐ अशोकाय स्वाहा
३३७ ॐ तारणाय स्वाहा
३३८ ॐ ताराय स्वाहा
३३९ ॐ शूराय स्वाहा
३४० ॐ शौरये स्वाहा
३४१ ॐ जनेश्वराय स्वाहा
३४२ ॐ अनुकूलाय स्वाहा

३४३ ॐ शतावर्ताय स्वाहा
३४४ ॐ पद्मिने ,,
३४५ ॐ पद्मनिभेक्षणाय ,,
३४६ ॐ पद्मनाभाय ,,
३४७ ॐ अरविन्दाक्षाय ,,
३४८ ॐ पद्मगर्भाय ,,
३४९ ॐ शरीरभृते ,,
३५० ॐ महर्द्धये ,,
३५१ ॐ ऋद्धाय ,,
३५२ ॐ वृद्धात्मने ,,
३५३ ॐ महाक्षाय ,,
३५४ ॐ गरुडध्वजाय ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३५५ ॐ अतुलाय स्वाहा
३५६ ॐ शरभाय स्वाहा
३५७ ॐ भीमाय स्वाहा
३५८ ॐ समयज्ञाय स्वाहा
३५९ ॐ हविर्हरते स्वाहा
३६० ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय०
३६१ ॐ लक्ष्मीवते स्वाहा
३६० ॐ समितिञ्जयाय स्वाहा
३६३ ॐ विमत्सराय स्वाहा
३६४ ॐ रोहिताय स्वाहा
३६५ ॐ मार्गाय स्वाहा
३६६ ॐ हेतवे स्वाहा

३६७ ॐ दामोदराय स्वाहा
३६८ ॐ सहाय स्वाहा
३६९ ॐ महीधराय स्वाहा
३७० ॐ महाभागाय स्वाहा
३७१ ॐ वेगवते स्वाहा
३७२ ॐ अमिताशनाय स्वाहा
३७३ ॐ उद्भवाय स्वाहा
३७४ ॐ क्षोभणाय स्वाहा
३७५ ॐ देवाय स्वाहा
३७६ ॐ श्रीगर्भाय स्वाहा
३७७ ॐ परमेश्वराय स्वाहा
३७८ ॐ करणाय स्वाहा

३७९ ॐ कारणाय स्वाहा
३८० ॐ कर्त्रे स्वाहा
३८१ ॐ विकर्त्रे स्वाहा
३८२ ॐ गहनाय स्वाहा
३८३ ॐ गुहाय स्वाहा
३८४ ॐ व्यवसाय स्वाहा
३८५ ॐ व्यवस्थानाय स्वाहा
३८६ ॐ संस्थानाय स्वाहा
३८७ ॐ स्थानदाय स्वाहा
३८८ ॐ ध्रुवाय स्वाहा
३८९ ॐ परर्द्धये स्वाहा
३९० ॐ परमस्पष्टाय स्वाहा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

३९१ ॐ तुष्टाय स्वाहा
३९२ ॐ पुष्टाय स्वाहा
३९३ ॐ शुभेक्षणाय स्वाहा
३९४ ॐ रामाय स्वाहा
३९५ ॐ विरामाय स्वाहा
३९६ ॐ विरजसे स्वाहा
३९७ ॐ मार्गाय स्वाहा
३९८ ॐ नेयाय स्वाहा
३९९ ॐ नयाय स्वाहा
४०० ॐ अनयाय स्वाहा
४०१ ॐ वीराय स्वाहा
४०२ ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय०
४०३ ॐ धर्माय स्वाहा
४०४ ॐ धर्मविदुत्तमाय स्वाहा
४०५ ॐ वैकुण्ठाय स्वाहा
४०६ ॐ पुरुषाय स्वाहा
४०७ ॐ प्राणाय स्वाहा
४०८ ॐ प्राणदाय स्वाहा
४०९ ॐ प्रणवाय स्वाहा
४१० ॐ पृथवे स्वाहा
४११ ॐ हिरण्यगर्भाय स्वाहा
४१२ ॐ शत्रुघ्नाय स्वाहा
४१३ ॐ व्याप्ताय स्वाहा
४१४ ॐ वायवे स्वाहा
४१५ ॐ अधोक्षजाय स्वाहा
४१६ ॐ ऋतवे स्वाहा
४१७ ॐ सुदर्शनाय स्वाहा
४१८ ॐ कालाय स्वाहा
४१९ ॐ परमेष्ठेने स्वाहा
४२० ॐ परिग्रहाय स्वाहा
४२१ ॐ उग्राय स्वाहा
४२२ ॐ संवत्सराय स्वाहा
४२३ ॐ दक्षाय स्वाहा
४२४ ॐ विश्रामाय स्वाहा
४२५ ॐ वि॰ दक्षिणाय स्वाहा
४२६ ॐ विस्ताराय स्वाहा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वि० १६०

४२७ ॐ स्थावरस्थाणवे स्वाहा
४२८ ॐ प्रमाणाय ,,
४२९ ॐ बीजाव्ययाय ,,
४३० ॐ अर्थाय ,,
४३१ ॐ अनर्थाय ,,
४३२ ॐ महाकोशाय ,,
४३३ ॐ महाभोगाय ,,
४३४ ॐ महाधनाय ,,
४३५ ॐ अनिर्विण्णाय ,,
४३६ ॐ स्थविष्ठाय ,,
४३७ ॐ अभुवे स्वाहा ,,
४३८ ॐ धर्मयूपाय ,,

४३९ ॐ महामखाय स्वाहा
४४० ॐ नक्षत्रनेमिनये ,,
४४१ ॐ नक्षत्रिणे ,,
४४२ ॐ क्षमाय ,,
४४३ ॐ क्षामाय ,,
४४४ ॐ समीहनाय ,,
४४५ ॐ यज्ञाय ,,
४४६ ॐ ईज्याय ,,
४४७ ॐ महेज्याय ,,
४४८ ॐ ऋतवे ,,
४४९ ॐ सत्राय ,,
४५० ॐ सतांगतये ,,

४५१ ॐ सर्वदर्शिने स्वाहा
४५२ ॐ विमुक्तात्मने ,,
४५३ ॐ सर्वज्ञाय ,,
४५४ ॐ ज्ञानमुत्तमाय ,,
४५५ ॐ सुव्रताय ,,
४५६ ॐ सुमुखाय ,,
४५७ ॐ सूक्ष्माय ,,
४५८ ॐ सुघोषाय ,,
४५९ ॐ सुखदाय ,,
४६० ॐ सुहृदे ,,
४६१ ॐ मनोहराय ,,
४६२ ॐ जितक्रोधाय ,,

प्र० ३६०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४६३ ॐ वीरबाहवे स्वाहा
४६४ ॐ विदारणाय स्वाहा
४६५ ॐ स्वापनाय स्वाहा
४६६ ॐ स्ववशाय स्वाहा
४६७ ॐ व्यापिने स्वाहा
४६८ ॐ नैकात्मने स्वाहा
४६९ ॐ नैककर्मकृते स्वाहा
४७० ॐ वत्सलाय स्वाहा
४७१ ॐ वत्सिने स्वाहा
४७२ ॐ रत्नगर्भाय स्वाहा
४७३ ॐ धनेश्वराय स्वाहा
४७४ ॐ धर्मगुप्तये स्वाहा

४७५ ॐ धर्मकृते स्वाहा
४७६ ॐ धर्मिणे स्वाहा
४७७ ॐ सते स्वाहा
४७८ ॐ असते स्वाहा
४७९ ॐ क्षराय स्वाहा
४८० ॐ अक्षराय स्वाहा
४८१ ॐ अविज्ञात्रे स्वाहा
४८२ ॐ सहस्रांशवे स्वाहा
४८३ ॐ विधात्रे स्वाहा
४८४ ॐ कृतलक्षणाय स्वाहा
४८५ ॐ गर्भस्तिनेमये स्वाहा
४८६ ॐ सत्त्वस्थाय स्वाहा

४८७ ॐ सिंहाय स्वाहा
४८८ ॐ भूतमहेश्वराय स्वाहा
४८९ ॐ आदिदेवाय स्वाहा
४९० ॐ महादेवाय स्वाहा
४९१ ॐ देवेशाय स्वाहा
४९२ ॐ देवभृद्गुरवे स्वाहा
४९३ ॐ उत्तराय स्वाहा
४९४ ॐ गोपतये स्वाहा
४९५ ॐ गोप्त्रे स्वाहा
४९६ ॐ ज्ञानगम्याय स्वाहा
४९७ ॐ पुरातनाय स्वाहा
४९८ ॐ शरीरभूतभृते स्वाहा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४९९ ॐ भोक्त्रे स्वाहा
५०० ॐ कपीन्द्राय स्वाहा
५०१ ॐ भूरिदक्षिणाय स्वाहा
५०२ ॐ सोमपाय स्वाहा
५०३ ॐ अमृतपाय स्वाहा
५०४ ॐ सोमाय स्वाहा
५०५ ॐ पुरुजिते स्वाहा
५०६ ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा
५०७ ॐ विनयाय स्वाहा
५०८ ॐ जयाय स्वाहा
५०९ ॐ सत्यसन्धाय स्वाहा
५१० ॐ दाशार्हाय स्वाहा
५११ ॐ सात्वतां पतये स्वाहा
५१२ ॐ जीवाय स्वाहा
५१३ ॐ विनयितांसाक्षिणेस्वाहा
५१४ ॐ मुकुन्दाय स्वाहा
५१५ ॐ अमितविक्रमायस्वाहा
५१६ ॐ अम्भोनिधये स्वाहा
५१७ ॐ अनन्तात्मने स्वाहा
५१८ ॐ महोदधिशयायस्वाहा
५१९ ॐ अन्तकाय स्वाहा
५२० ॐ अजाय स्वाहा
५२१ ॐ महार्हाय स्वाहा
५२२ ॐ स्वाभाव्याय स्वाहा
५२३ ॐ जितामित्राय स्वाहा
५२४ ॐ प्रमोदनाय स्वाहा
५२५ ॐ आनन्दाय स्वाहा
५२६ ॐ नन्दनाय स्वाहा
५२७ ॐ नन्दाय स्वाहा
५२८ ॐ सत्यधर्मिणे स्वाहा
५२९ ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा
५३० ॐ महर्षिकपिलाचार्याय०
५३१ ॐ कृतज्ञाय स्वाहा
५३२ ॐ मेदिनीपतये स्वाहा
५३३ ॐ त्रिपदाय स्वाहा
५३४ ॐ त्रिदशाध्यक्षाय स्वाहा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५३५ ॐ महाशृङ्गाय स्वाहा
५३६ ॐ कृतान्तकृते स्वाहा
५३७ ॐ महावराहाय स्वाहा
५३८ ॐ गोविन्दाय स्वाहा
५३९ ॐ सुषेणाय स्वाहा
५४० ॐ कनकाङ्गदिने स्वाहा
५४१ ॐ गुह्याय स्वाहा
५४२ ॐ गम्भीराय स्वाहा
५४३ ॐ गहनाय स्वाहा
५४४ ॐ गुप्ताय स्वाहा
५४५ ॐ चक्रगदाधराय स्वाहा
५४६ ॐ वेधसे स्वाहा

५४७ ॐ स्वाङ्गाय स्वाहा
५४८ ॐ अजिताय स्वाहा
५४९ ॐ कृष्णाय स्वाहा
५५० ॐ दृढाय स्वाहा
५५१ ॐ सङ्कर्षणाच्युताय स्वाहा
५५२ ॐ वरुणाय स्वाहा
५५३ ॐ वारुणाय स्वाहा
५५४ ॐ वृक्षाय स्वाहा
५५५ ॐ पुष्कराक्षाय स्वाहा
५५६ ॐ महामनसे स्वाहा
५५७ ॐ भगवते स्वाहा
५५८ ॐ भगघ्ने स्वाहा

५५९ ॐ आनन्दिने स्वाहा
५६० ॐ वनमालिने स्वाहा
५६१ ॐ हलायुधाय स्वाहा
५६२ ॐ आदित्याय स्वाहा
५६३ ॐ ज्योतिरादित्याय स्वाहा
५६४ ॐ सहिष्णवे स्वाहा
५६५ ॐ गतिसत्तमाय स्वाहा
५६६ ॐ सुधन्वने स्वाहा
५६७ ॐ खण्डपरशवे स्वाहा
५६८ ॐ दारुणाय स्वाहा
५६९ ॐ द्रविणप्रदाय स्वाहा
५७० ॐ दिवस्पृशे स्वाहा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

वि०

५७१ ॐ सर्वदृग्व्यासाय स्वाहा
५७२ ॐ वाचस्पतियोनिजाय०
५७३ ॐ त्रिसाम्ने स्वाहा
५७४ ॐ सामगाय स्वाहा
५७५ ॐ साम्ने स्वाहा
५७६ ॐ निर्वाणाय स्वाहा
५७७ ॐ भेषजाय स्वाहा
५७८ ॐ भिषजे स्वाहा
५७९ ॐ संन्यासकृते स्वाहा
५८० ॐ शमाय स्वाहा
५८१ ॐ शान्ताय स्वाहा
५८२ ॐ निष्ठायै स्वाहा

५८३ ॐ शान्त्यै स्वाहा
५८४ ॐ परायणाय स्वाहा
५८५ ॐ शुभाङ्गाय स्वाहा
५८६ ॐ शान्तिदाय स्वाहा
५८७ ॐ स्रष्ट्रे स्वाहा
५८८ ॐ कुमुदाय स्वाहा
५८९ ॐ कुवलेशाय स्वाहा
५९० ॐ गोहिताय स्वाहा
५९१ ॐ गोपतये स्वाहा
५९२ ॐ गोप्त्रे स्वाहा
५९३ ॐ वृषभाक्षाय स्वाहा
५९४ ॐ वृषप्रियाय स्वाहा

५९५ ॐ अनिवर्तिने स्वाहा
५९६ ॐ निवृत्तात्मने स्वाहा
५९७ ॐ संक्षेप्त्रे स्वाहा
५९८ ॐ क्षेमकृते स्वाहा
५९९ ॐ शिवाय स्वाहा
६०० ॐ श्रीवत्सवक्षसे स्वाहा
६०१ ॐ श्रीवासाय स्वाहा
६०२ ॐ श्रीपतये स्वाहा
६०३ ॐ श्रीमतां वराय स्वाहा
६०४ ॐ श्रीदाय स्वाहा
६०५ ॐ श्रीशाय स्वाहा
६०६ ॐ श्रीनिवासाय स्वाहा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६०७ ॐ श्रीनिधये स्वाहा
६०८ ॐ श्रीविभावनाय „
६०९ ॐ श्रीधराय „
६१० ॐ श्रीकराय „
६११ ॐ श्रेयसे „
६१२ ॐ श्रीमते „
६१३ ॐ लोकत्रयाश्रयाय „
६१४ ॐ स्वक्षाय स्वाहा
६१५ ॐ स्वाङ्गाय „
६१६ ॐ शतानन्दाय „
६१७ ॐ नन्दिने „
६१८ ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय०

६१९ ॐ विजितात्मने स्वाहा
६२० ॐ विधेयात्मने „
६२१ ॐ सत्कीर्तये „
६२२ ॐ छिन्नसंशयाय „
६२३ ॐ उदीर्णाय „
६२४ ॐ सर्वतश्चक्षुषे „
६२५ ॐ अनीशाय „
६२६ ॐ शाश्वतस्थिराय „
६२७ ॐ भूशयाय स्वाहा
६२८ ॐ भूषणाय „
६२९ ॐ भूतये „
६३० ॐ विशोकाय „

६३१ ॐ शोकनाशनाय स्वाहा
६३२ ॐ अर्चिष्मते „
६३३ ॐ अर्चिताय „
६३४ ॐ कुम्भाय „
६३५ ॐ विशुद्धात्मने „
६३६ ॐ विशोधनाय „
६३७ ॐ अनिरुद्धाय „
६३८ ॐ अप्रतिरथाय „
६३९ ॐ प्रद्युम्नाय „
६४० ॐ अमितविक्रमाय „
६४१ ॐ कालनेमिनिघ्ने „
६४२ ॐ वीराय „

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६४३ ॐ शौरये स्वाहा
६४४ ॐ शूरजनेश्वराय ,,
६४५ ॐ त्रिलोकात्मने ,,
६४६ ॐ त्रिलोकेशाय ,,
६४७ ॐ केशवाय ,,
६४८ ॐ केशिघ्ने ,,
६४९ ॐ हरये ,,
६५० ॐ कामदेवाय ,,
६५१ ॐ कामपालाय ,,
६५२ ॐ कामिने ,,
६५३ ॐ कान्ताय ,,
६५४ ॐ कृतागमाय ,,

६५५ ॐ अनिर्देश्यवपुषे स्वाहा
६५६ ॐ विष्णवे ,,
६५७ ॐ वीराय ,,
६५८ ॐ अनन्ताय ,,
६५९ ॐ धनञ्जयाय ,,
६६० ॐ ब्रह्मण्याय ,,
६६१ ॐ ब्रह्मकृते ,,
६६२ ॐ ब्राह्मिणे ,,
६६३ ॐ ब्रह्मणे ,,
६६४ ॐ ब्रह्मविवर्द्धनाय ,,
६६५ ॐ ब्रह्मविदे ,,
६६६ ॐ ब्राह्मणाय ,,

६६७ ॐ ब्रह्मिणे स्वाहा
६६८ ॐ ब्रह्मज्ञाय ,,
६६९ ॐ ब्राह्मणप्रियाय ,,
६७० ॐ महाक्रमाय ,,
६७१ ॐ महाकर्मणे ,,
६७२ ॐ महातेजसे ,,
६७३ ॐ महोरगाय ,,
६७४ ॐ महाक्रतवे ,,
६७५ ॐ महायज्वने ,,
६७६ ॐ महायज्ञाय ,,
६७७ ॐ महाहविषे ,,
६७८ ॐ स्तव्याय ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

६७९	ॐ स्तवप्रियाय	स्वाहा	६९१	ॐ वसुरेतसे	स्वाहा	७०३	ॐ सत्परायणाय	स्वाहा
६८०	ॐ स्तोत्राय	,,	६९२	ॐ वसुप्रियाय	,,	७०४	ॐ शूरसेनाय	,,
६८१	ॐ स्तुतये	,,	६९३	ॐ वसुप्रदाय	,,	७०५	ॐ यदुश्रेष्ठाय	,,
६८२	ॐ स्तोत्रे	,,	६९४	ॐ वासुदेवाय	,,	७०६	ॐ सन्नीवासाय	,,
६८३	ॐ रणप्रियाय	,,	६९५	ॐ वसवे	,,	७०७	ॐ सुयामुनाय	,,
६८४	ॐ पूर्णाय	,,	६९६	ॐ वसुमनसे	,,	७०८	ॐ भूतावासाय	,,
६८५	ॐ पूरयित्रे	,,	६९७	ॐ हविषे	,,	७०९	ॐ वासुदेवाय	,,
६८६	ॐ पुण्याय	,,	६९८	ॐ सद्गतये	,,	७१०	ॐ सर्वासुनिलयाय	,,
६८७	ॐ पुण्यकीर्तये	,,	६९९	ॐ सत्कृतये	,,	७११	ॐ अनलाय	,,
६८८	ॐ अनामयाय	,,	७००	ॐ सत्तायै	,,	७१२	ॐ दर्पघ्ने	,,
६८९	ॐ मनोजवाय	,,	७०१	ॐ सत्तायै	,,	७१३	ॐ दर्पदाय	,,
६९०	ॐ तीर्थकराय	,,	७०२	ॐ सद्भूतये	,,	७१४	ॐ दृप्ताय	,,

७१५ ॐ दुर्द्धरार स्वाहा
७१६ ॐ अपराजिताय ,,
७१७ ॐ विश्वमूर्तये ,,
७१८ ॐ महामूर्तये ,,
७१९ ॐ दीप्तमूर्तये ,,
७२० ॐ अमूर्त्तिमते ,,
७२१ ॐ अनेकमूर्तये ,,
७२२ ॐ अव्यक्ताय ,,
७२३ ॐ शतमूर्तये ,,
७२४ ॐ शताननाय ,,
७२५ ॐ एकाय ,,
७२६ ॐ नैकाय ,,

७२७ ॐ सर्वाय स्वाहा
७२८ ॐ काय ,,
७२९ ॐ कस्मै ,,
७३० ॐ यस्मै ,,
७३१ ॐ तस्मै ,,
७३२ ॐ पदमनुत्तमाय ,,
७३३ ॐ लोकबन्धवे ,,
७३४ ॐ लोकनाथाय ,,
७३५ ॐ माधवाय ,,
७३६ ॐ भक्तवत्सलाय ,,
७३७ ॐ सुवर्णवर्णाय ,,
७३८ ॐ हेमाङ्गाय ,,

७३९ ॐ वराङ्गाय स्वाहा
७४० ॐ चन्दनाङ्गदिने स्वाहा
७४१ ॐ वीरघ्ने स्वाहा
७४२ ॐ विषमाय स्वाहा
७४३ ॐ शून्याय स्वाहा
७४४ ॐ घृताशिषे स्वाहा
७४५ ॐ अचलाय स्वाहा
७४६ ॐ चलाय स्वाहा
७४७ ॐ अमानिने स्वाहा
७४८ ॐ मानदाय स्वाहा
७४९ ॐ मान्याय स्वाहा
७५० ॐ लोकस्वामिने स्वाहा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

७५१ ॐ त्रिलोकधृषे स्वाहा
७५२ ॐ सुमेधसे स्वाहा
७५३ ॐ मेधजाय स्वाहा
७५४ ॐ धन्याय स्वाहा
७५५ ॐ सत्यमेधसे स्वाहा
७५६ ॐ धराधराय स्वाहा
७५७ ॐ तेजोवृषाय स्वाहा
७५८ ॐ द्युतिधराय स्वाहा
७५९ ॐ सर्वशस्त्रभृतां वराय०
७६० ॐ प्रग्रहाय स्वाहा
७६१ ॐ निग्रहाय स्वाहा
७६२ ॐ व्यग्रहाय स्वाहा

७६३ ॐ नैकश्रृङ्गाय स्वाहा
७६४ ॐ गदाग्रजाय स्वाहा
७६५ ॐ चतुर्मूर्त्तये स्वाहा
७६६ ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा
७६७ ॐ चतुर्व्यूहाय स्वाहा
७६८ ॐ चतुर्गतये स्वाहा
७६९ ॐ चतुरात्मने स्वाहा
७७० ॐ चतुर्भावाय स्वाहा
७७१ ॐ चतुर्वेदविदे स्वाहा
७७२ ॐ एकपदे स्वाहा
७७३ ॐ समावर्ताय स्वाहा
७७४ ॐ अनिवृत्तात्मने स्वाहा

७७५ ॐ दुर्जयाय स्वाहा
७७६ ॐ दुरतिक्रमाय स्वाहा
७७७ ॐ दुर्लभाय स्वाहा
७७८ ॐ दुर्गमाय स्वाहा
७७९ ॐ दुर्गाय स्वाहा
७८० ॐ दुरावासाय स्वाहा
७८१ ॐ दुरारिघ्ने स्वाहा
७८२ ॐ शुभाङ्गाय स्वाहा
७८३ ॐ लोकशारङ्गाय स्वाहा
७८४ ॐ सुतन्तवे स्वाहा
७८५ ॐ तन्तुवर्धनाय स्वाहा
७८६ ॐ इन्द्रकर्मणे स्वाहा

७८७ ॐ महाकर्मणे स्वाहा
७८८ ॐ कृतकर्मणे स्वाहा
७८९ ॐ कृतागमाय स्वाहा
७९० ॐ उद्भवाय स्वाहा
७९१ ॐ सुन्दराय स्वाहा
७९२ ॐ सुन्दाय स्वाहा
७९३ ॐ रत्ननाभाय स्वाहा
७९४ ॐ सुलोचनाय स्वाहा
७९५ ॐ अर्काय स्वाहा
७९६ ॐ वाजसनाय स्वाहा
७९७ ॐ शृङ्गिणे स्वाहा
७९८ ॐ जयन्ताय स्वाहा

७९९ ॐ सर्वविज्जयिने स्वाहा
८०० ॐ सुवर्णविन्दवे स्वाहा
८०१ ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा
८०२ ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय०
८०३ ॐ महाह्रदाय स्वाहा
८०४ ॐ महागर्ताय स्वाहा
८०५ ॐ महाभूताय स्वाहा
८०६ ॐ महानिधये स्वाहा
८०७ ॐ कुमुदाय स्वाहा
८०८ ॐ कुन्दराय स्वाहा
८०९ ॐ कुन्दाय स्वाहा
८१० ॐ पर्जन्याय स्वाहा

८११ ॐ पवनाय स्वाहा
८१२ ॐ अनिलाय स्वाहा
८१३ ॐ अमृतांशाय स्वाहा
८१४ ॐ अमृतवपुषे स्वाहा
८१५ ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
८१६ ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा
८१७ ॐ सुलभाय स्वाहा
८१८ ॐ सुव्रताय स्वाहा
८१९ ॐ सिद्धाय स्वाहा
८२० ॐ शत्रुजिते स्वाहा
८२१ ॐ शत्रुतापनाय स्वाहा
८२२ ॐ न्यग्रोधाय स्वाहा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८२३ ॐ उदुम्बराय स्वाहा
८२४ ॐ अश्वत्थाय स्वाहा
८२५ ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय०
८२६ ॐ सहस्रार्चिषे स्वाहा
८२७ ॐ सप्तजिह्वाय स्वाहा
८२८ ॐ सप्तैधसे स्वाहा
८२९ ॐ सप्तवाहनाय स्वाहा
८३० ॐ अमूर्त्तये स्वाहा
८३१ ॐ अनघाय स्वाहा
८३२ ॐ अचिन्त्याय स्वाहा
८३३ ॐ भयकृते स्वाहा
८३४ ॐ भयनाशनाय स्वाहा

८३४ ॐ अणवे स्वाहा
८३५ ॐ बृहते स्वाहा
८३७ ॐ कृशाय स्वाहा
८३८ ॐ स्थूलाय स्वाहा
८३९ ॐ गुणभृते स्वाहा
८४० ॐ निर्गुणाय स्वाहा
८४१ ॐ महते स्वाहा
८४२ ॐ अधृताय स्वाहा
८४३ ॐ स्वधृताय स्वाहा
८४४ ॐ स्वास्याय स्वाहा
८४५ ॐ प्राग्वंशाय स्वाहा
८४६ ॐ वंशवर्द्धनाय स्वाहा

८४७ ॐ भारभृते स्वाहा
८४८ ॐ कथिताय स्वाहा
८४९ ॐ योगिने स्वाहा
८५० ॐ योगिशाय स्वाहा
८५१ ॐ सर्वकामदाय स्वाहा
८५२ ॐ आश्रमाय स्वाहा
८५३ ॐ श्रमणाय स्वाहा
८५४ ॐ क्षामाय स्वहा
८५५ ॐ सुपर्णाय स्वाहा
८५६ ॐ वायुवाहनाय स्वाहा
८५७ ॐ धनुर्धराय स्वाहा
८५८ ॐ धनुर्वेदाय स्वाहा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

८५९	ॐ दण्डाय	स्वाहा	८७१	ॐ अभिप्रायाय	स्वाहा	८८३	ॐ सूर्याय	स्वाहा
८६०	ॐ दमयित्रे	”	८७२	ॐ प्रियार्हाय	”	८८४	ॐ सवित्रे	”
८६१	ॐ दमाय	”	८७३	ॐ अर्हाय	”	८८५	ॐ रविलोचनाय	”
८६२	ॐ अपराजिताय	”	८७४	ॐ प्रियंकृते	”	८८६	ॐ अनन्ताय	”
८६३	ॐ सर्वसहाय	”	८७५	ॐ प्रीतिवर्द्धनाय	”	८८७	ॐ हुतभुजे	”
८६४	ॐ नियन्त्रे	”	८७६	ॐ विहायसगतये	”	८८८	ॐ भोक्त्रे	”
८६५	ॐ नियमाय	”	८७७	ॐ ज्योतिषे	”	८८९	ॐ सुखदाय	”
८६६	ॐ यमाय	”	८७८	ॐ सुरुचये	”	८९०	ॐ नैकजाय	”
८६७	ॐ सत्त्ववते	”	८७९	ॐ हुतभुजे	”	८९१	ॐ अग्रजाय	”
८६८	ॐ सात्त्विकाय	”	८८०	ॐ विभवे	”	८९२	ॐ अनिर्विण्णाय	”
८६९	ॐ सत्याय	”	८८१	ॐ रवये	”	८९३	ॐ सदामर्षिणे	”
८७०	ॐ सत्यधर्मपरायणाय०		८८२	ॐ विरोचनाय	”	८९४	ॐ लोकाधिष्ठानाय	”

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रि०

८९५ ॐ अद्भुताय स्वाहा
८९६ ॐ सनाते स्वाहा
८९७ ॐ सनातनतमाय स्वाहा
८९८ ॐ कपिलाय स्वाहा
८९९ ॐ कपये स्वाहा
९०० ॐ अव्ययाय स्वाहा
९०१ ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा
९०२ ॐ स्वस्तिकृते स्वाहा
९०३ ॐ स्वस्तिने स्वाहा
९०४ ॐ स्वस्तिभुजे स्वाहा
९०५ ॐ स्वस्तिदक्षिणाय स्वाहा
९०६ ॐ अरौद्राय स्वाहा

९०७ ॐ कुण्डलिने स्वाहा
९०८ ॐ चक्रिणे स्वाहा
९०९ ॐ विक्रमिणे स्वाहा
९१० ॐ ऊर्जितशासनाय स्वाहा
९११ ॐ शब्दातिगाय स्वाहा
९१२ ॐ शब्दसहाय स्वाहा
९१३ ॐ शिशिराय स्वाहा
९१४ ॐ शर्वरीकराय स्वाहा
९१५ ॐ अक्रूराय स्वाहा
९१६ ॐ पेशलाय स्वाहा
९१७ ॐ दक्षाय स्वाहा
९१८ ॐ दक्षिणाय स्वाहा

९१९ ॐ क्षमिणावराय स्वाहा
९२० ॐ विद्वत्तमाय स्वाहा
९२१ ॐ वीतभयाय स्वाहा
९२२ ॐ पुण्यश्रवणकीर्त्तनाय०
९२३ ॐ उत्तारणाय स्वाहा
९२४ ॐ दुष्कृतिघ्ने स्वाहा
९२५ ॐ पुण्याय स्वाहा
९२६ ॐ दुःस्वप्नाशनाय स्वाहा
९२७ ॐ वीरघ्ने स्वाहा
९२८ ॐ रक्षणाय स्वाहा
९२९ ॐ सन्तः स्वाहा
९३० ॐ जीवनाय स्वाहा

Kirikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६३१ ॐ पर्यवस्थिताय स्वाहा
६३२ ॐ अनन्तरूपाय स्वाहा
६३३ ॐ अनन्तश्रिये स्वाहा
६३४ ॐ जितसन्धवे स्वाहा
६३५ ॐ भयापहाय स्वाहा
६३६ ॐ चतुरस्राय स्वाहा
६३७ ॐ गभीरात्मने स्वाहा
६३८ ॐ विदिशाय स्वाहा
६३९ ॐ व्यादिशाय स्वाहा
६४० ॐ दिशाय स्वाहा
६४१ ॐ अनादये स्वाहा
६४२ ॐ भुवे स्वाहा

६४३ ॐ भुवो लक्ष्म्यै स्वाहा
६४४ ॐ सुवीराय स्वाहा
६४५ ॐ रुचिराङ्गदाय स्वाहा
६४६ ॐ जननाय स्वाहा
६४७ ॐ जनजन्मादये स्वाहा
९४८ ॐ भीमाय स्वाहा
६४९ ॐ भीमपराक्रमाय स्वाहा
६५० ॐ आधारनिलयाय स्वहा
६५१ ॐ धात्रे स्वाहा
६५२ ॐ पुष्पहासाय स्वाहा
६५३ ॐ प्रजागराय स्वाहा
६५४ ॐ ऊर्ध्वगाय स्वाहा

६५५ ॐ सत्पथाचाराय स्वाहा
६५६ ॐ प्राणदाय स्वाहा
६५७ ॐ प्रणवाय स्वाहा
६५८ ॐ पणाय स्वाहा
६५९ ॐ प्रमाणाय स्वाहा
६६० ॐ प्राणनिलयाय स्वाहा
६६१ ॐ प्राणभृते स्वाहा
६६२ ॐ प्राणजीवनाय स्वाहा
६६३ ॐ तत्त्वाय स्वाहा
६६४ ॐ तत्त्वविदे स्वाहा
६६५ ॐ एकात्मने स्वाहा
६६६ ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

९६७ ॐ भूर्भुवःस्वस्तरवे स्वाहा	९७८ ॐ यज्ञिने स्वाहा	९८९ ॐ देवकीनन्दनाय स्वाहा
९६८ ॐ ताराय स्वाहा	९७९ ॐ यज्ञभुजे स्वाहा	९९० ॐ स्रष्ट्रे स्वाहा
९६९ ॐ सुपित्रे स्वाहा	९८० ॐ यज्ञसाधनाय स्वाहा	९९१ ॐ क्षितीशाय स्वाहा
९७० ॐ सुपितामहाय स्वाहा	९८१ ॐ यज्ञान्तकृते स्वाहा	९९२ ॐ पापनाशाय स्वाहा
९७१ ॐ यज्ञाय स्वाहा	९८२ ॐ यज्ञगुह्याय स्वाहा	९९३ ॐ शङ्खभृते स्वाहा
९७२ ॐ यज्ञवाहनाय स्वाहा	९८३ ॐ अन्नाय स्वाहा	९९४ ॐ नन्दकिने स्वाहा
९७३ ॐ यज्वने स्वाहा	९८४ ॐ अन्नदाय स्वाहा	९९५ ॐ चक्रिणे स्वाहा
९७४ ॐ यज्ञाङ्गाय स्वाहा	९८५ ॐ आत्मयोनये स्वाहा	९९६ ॐ शार्ङ्गधन्वने स्वाहा
९७५ ॐ यवाहताय स्वाहा	९८६ ॐ स्वयञ्जाताय स्वाहा	९९७ ॐ गदाधराय स्वाहा
९७६ ॐ यज्ञभृते स्वाहा	९८७ ॐ वैखानाय स्वाहा	९९८ ॐ रथाङ्गपाणये स्वाहा
९७७ ॐ यज्ञकृते स्वाहा	९८८ ॐ सामगायनाय स्वाहा	९९९ ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा
		१००० ॐ सर्वप्रहरणायुधाय०

॥ इति विष्णु सहस्रनामावली होम समाप्तः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः प्रतिष्ठाप्रभु पद्धत्यनुसारेण गणपत्यम्बिका वरुण स गणेश षोडशमातृका घृतमातृका वास्तुपीठदेवता (मण्डपदेवता) सर्वतोभद्रदेवता चतुःषष्ठीयोगिनी क्षेत्रपालदेवताभ्यः सकृत्-सकृत् मूलमंत्रेण चाष्टोत्तर सहस्रमष्टोत्तरशतं वाऽऽआज्येन जुहुयात् । तिलादिनेति जीर्णसम्प्रदायः ।

अग्निपूजनम्—ॐ अग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒येऽअ॒स्मान्विश्वा॑नि देव व॒युना॑नि वि॒द्वान् । यु॒यो॒ध्य॒स्मज्जु॑हुरा॒णमेनो॒ भूयि॑ष्ठां ते॒ नम॑ऽउक्तिं विधेम ।

स्विष्टकृत्

खड़े होकर बड़े पात्र में तिलों को ग्रहण कर दाहिने हाथ से घी भरकर स्रुव को लेकर ब्रह्मा से स्पर्श कर इस मन्त्र से स्विष्टकृत् संज्ञक आहुति देवें—ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥

नवाहुतिः

आचार्य व ब्राह्मण बैठकर इन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए नौव्याहृति आदि की आहुति घी से प्रदान करवायें—

ॐ भूः स्वाहा—इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम । ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।

ॐ सत्वन्नो अग्नेवमो भवोतीने दिष्ठोऽअस्या ऽउषसोव्युष्टौ । अवयक्ष्वनो वरुणᳬ रराणोव्वीहिमृडीकᳬ सुहवोनऽएधि स्वाहा ।

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।

ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्यनभि शस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि । अया नो यज्ञं व्वहास्यया नो धेहि भेषजᳬ स्वाहा ॥

इदमग्नये अयसे न मम ।

ॐ ये ते शतं व्वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा व्वितता महान्तः । तेभिर्न्नोऽअद्य सवितो विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा ।

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाश मुस्मदवा धमंव्विमध्यमर्ट० श्रथाय। अथाव्वयमादित्य व्रतते तवानागसोऽआदितयेस्याम स्वाहा।

इदं वरुणायादित्यायादितये न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये न मम।

॥ इति नवाहुति समाप्तः ॥

* अथ बलिदानम् *

संकल्प करे--

ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तः,) 'कृतस्य विष्णु यागकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं बलिदानं करिष्ये'

संकल्प के पश्चात्--

[पृथक् पात्रयोः पक्वौ माषौदनौ मिश्रित्य पत्रावल्यादौ निधाय तन्मध्ये दध्यपि मिश्रित्य अग्न्यायतनस्य दशसु दिक्षु दशसु पात्रेषु दशबलीन् दशदीपांश्च संस्थापयेत्। ततोग्रहवेदेः पुरस्तात्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

एकं ग्रहबलिं तत्समन्तात् चतुस्त्रिंशद्दीपानेकं दीपं वा निधापयेत् ।

अधिदेवता—प्रत्यधिदेवतासहितनव गणपत्यादीनां ससेति पञ्चदशवल्यो वा देयाः । ततः प्रधानवेदेः पुरस्तात् एकस्मिन्महत्पात्रे पायसं माषौदनं बलिं दीपत्रयञ्च संस्थाप्य वास्तुवेदेः पुरस्तात् एकं सदीपं बलिम्, योगिनीवेदेः पुरस्तादेकं बलिं दीपत्रयं च संस्थाप्य क्षेत्रपालवेदेः पुरस्तात् एकं बलिं सदीपं स्थापयेत् ।]

ततोऽग्न्यायतनस्य पुरस्तात् एकस्मिन् महत्पात्रे वंशादिनिर्मिते माषभक्तबलिं सदधि संस्थाप्य तदुपरि मध्ये चतुर्वर्त्तियुतं दीपं च प्रज्वलितं निधाय तत्र सतिसम्भवे एकं कूष्माण्डं मृत्कुम्भं जलपूर्णञ्च निधाय सौभाग्यपरिमलद्रव्येण पुष्पमालादिना बलिं समलङ्कृत्य सङ्कल्पपूर्वकं क्रमेण सर्वान् बलीनुत्सृजेत् ।

तद्यथा— 'ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा उदीच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा' ऊर्ध्वायै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा, इन्द्रादिभ्यो दशभ्यो दिक्पालेभ्यो नमः ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्द्राभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि । भो इन्द्रादयः स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारो वरदा भवत । अनेन बलिदानेन इन्द्रादयो दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् ।

ततः—ॐ ग्रहाऽउर्ज्जा०—

ग्रहपीठस्थेभ्यः सूर्यादिभ्य अधिदेवताप्रत्यधिदेवतापञ्चलोकपालक्रतुसंरक्षकदिक्पालसहितेभ्यो देवेभ्यो नमः । ॐसूर्यादिभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्य इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भोः सूर्यादयो देवाः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारस्तुष्टिकर्तारो वरदा भवत । अनेन बलिदानेन सूर्यादयोग्रहाः प्रीयन्ताम् ।

ततः प्रधानसमीपे—ॐइदं विष्णुर्विचक्र० । ॐ महाविष्णवे नमः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐश्रीश्चतेलक्ष्मीश्च० ॐमहालक्ष्म्यै नमः ।

ॐसुपर्णोऽसिगरुत्माँस्त्रिवृत्तेशिरोगायत्रञ्चक्षुर्बृहन्तरेपक्षौ । स्तोमऽआत्माछन्दाᳪंस्यङ्गानि-यजूᳪंषिनाम । सामतेतनूर्वामदेव्यंयज्ञयज्ञियंपुच्छन्धिष्ण्याःशफाः । सुपर्णोऽसिगरुत्मान्दिवंगच्छ-स्वःपत ।

ॐसुपर्णाय नमः । ॐब्रह्मादिभ्यः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवेभ्यो नमः' इति पठित्वा

ॐमहाविष्णुमहाकाली-सुपर्णेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्त-बलिं समर्पयामि । भोः महाविष्णुमहालक्ष्मीसुपर्णदेवताः इमं दीपत्रययुतं बलिं गृह्णीत मम सकु-टुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदा भवत । अनेन बलिदानेन महाविष्णुमहालक्ष्मीसुपर्णाः सर्वतोभद्रदेवताश्च प्रीयन्ताम् ।

ततो वास्तुपीठे–ॐवास्तोष्पतेप्रति० ॐवास्तोष्पतये नमः ।

शिख्यादिभ्यश्च साङ्गेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि । भोः वास्तोष्पते शिख्यादिदेवताश्च इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यं स्तुष्टिकर्त्र्यो वरदा भवत । अनेन बलिदानेन वास्तोष्पतिः शिख्यादयश्च प्रीयन्ताम् ।

योगिनी के समीप जाकर—

ॐअम्बेऽअम्बिके० ॐमहाकाल्यै नमः । ॐश्रीश्चतेल० ॐमहालक्ष्म्यै नमः ।

ॐपावकानःसरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवती । यज्ञंवष्टु धियावसुः ।। ॐमहासरस्वत्यै नमः ।

ॐ चतुः षष्टियोगिनीभ्यश्च साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदोपद-धिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भोः भोः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यः चतुःषष्टियोगिन्यश्च देवताः अमुं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यस्तुष्टिकर्त्र्यो वरदा भवत । अनेन बलिदानेन महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो योगिन्यश्च प्रीयन्ताम् ।

* अथ क्षेत्रपालबलिदानम् *

वंशादिपात्रे मनुष्याहारपरिमितदध्योदनयुतं जलञ्च मृत्पात्रे निधाय तदुपरि चतुर्मुखं दीपं प्रज्वाल्य हरिद्राकुङ्कुमादिपताकायुतं कृत्वा —

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ नहिस्पश० ॐ क्षेत्रपालायनमः इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

ॐनमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह ।
पूजाबलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥ १ ॥
पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामाँश्च देहि मे ।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥ २ ॥

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगणभैरवराक्षसकूष्माण्डवेताल-भूतप्रेतपिशाचडाकिनीपिशाचिनीगणसहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् ।

अयं बलिं दुर्ब्राह्मणेन शूद्रेन वा अनवेक्षमाणेन सकृद् भ्रामयित्वा चतुष्पथे निक्षिपेत् । यज-मानस्तस्य पृष्ठतः किञ्चिद्गत्वा 'हिङ्कारायेति' मन्त्रेण जलं प्रक्षिप्य पाणिपादं प्रक्षालयेत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❀ पूर्णाहुतिः ❀

पूर्णाहुतिकर्म के लिए यह सङ्कल्प करें ।

विष्णुयाग कर्मणि संपूर्णफल प्राप्त्यर्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि ।

उपरान्त, चार अथवा बारह बार घी को यज्ञीयपात्र स्रुव के द्वारा स्रुचि नामक पात्र में ग्रहण कर शिष्टाचार से उस स्रुचि पर सुपारी, पान, पुष्प, रेशमीवस्त्र से वेष्टितकर पुष्पमाला से सुशोभित तथा सुगन्धद्रव्य, सिन्दूर आदि द्रव्य से सजाकर स्रुचि पर रख आचार्य इस वैदिक मन्त्र से पूजन करावें—

ॐ पूर्णादर्व्विपरापराप्त सुपूर्ण्णा पूनरापत ।
व्वस्नेवविक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳ शतक्रतो ॥

अधोमुख स्रुवको रख स्रुचि को हाथों से यथोचित रूप से पकड़ कर तथा खड़े होकर इन वैदिक मन्त्रों को पढे—

ॐ समुद्द्रादूर्म्मिर्म्मधुमाँ२उदारदुपाꣳशुनासममृतत्वमानट् ॥ घृतस्यनामगुह्यंय्यदस्तिजिह्वा-देवानाममृतस्यनाभिः ॥ १ ॥

व्वयन्नामप्प्रब्ब्रवामाघृतस्यास्मिन्न्यज्ञेधारयामानमोभिः ॥ उपब्ब्रह्माशृणवच्छस्यमानञ्चतुः शृङ्गोवमीद्गौरऽएतत् ॥ २ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

चत्वारि॒शृङ्गा॒त्त्रयो॑ऽअस्य॒पादा॒द्वेशी॒र्षे स॒प्तहस्ता॑सो ऽअस्य ॥ त्रिधा॑ब॒द्धोव्वृ॑ष॒भोरो॑रवीतिम॒हो-
दे॒वोम॑र्त्या॒२ऽआ विवेश ॥ ३ ॥

त्रिधा॑हि॒तंप॒णिभि॑र्गु॒ह्यमा॑नं॒ङ्गवि॑दे॒वासो॑घृतमन्व॑विन्दन् ॥ इन्द्र॒ऽएकु॒ᳪ᳭सूर्य्य॒ऽएकं॑ञ्जजानव्वे॒-
नादेक॑ᳪ᳭स्व॒धया॒निष्ट॑तक्षुः ॥ ४ ॥

एता ऽअ॑र्षन्ति॒हृद्या॑त्समु॒द्राच्छ॒तव्र॑जा॒रि॒पुणा॒नाव॒चक्षे॑ घृ॒तस्य॒धारा॑ऽअ॒भिचा॑कशीमिहि॒र॒ण्ण्य-
यो॒व्वे॒त॒सोम॑ध्यं॑ऽआसाम् ॥ ५ ॥

सम्म्यक्स्र॑वन्तिस॒रितो॒नधेना॑ऽअ॒न्तर्हृ॒दामन॑सापू॒यमा॑नाः ॥ ए॒ते॑ऽअ॑र्षन्त्यू॒र्म्मयो॑घृ॒तस्य॑मृ॒गा-
ऽइ॑वक्षिप॒णोरीष॑माणाः ॥ ६ ॥

सिन्धो॑रिवप्रा॒द्ध्व॒नेशू॒घ॒नासो॒व्वात॑प्रमियः॒पतय॑न्तिय॒ह्व्वाः ॥ घृ॒तस्य॒धारा॑ऽअरु॒षोनव्वा॒जी-
काष्ठा॑भि॒न्दन्नूर्म्मि॑भि॒ पिन्व॑माना॒ः ॥ ७ ॥

अ॒भिप्र॑वन्त॒सम॑नेव॒योषा॑ःकल्या॒ण्ण्यःस्मय॑मानासो॒ऽअ॒ग्निम् ॥ घृ॒तस्य॒धारा॑ःस॒मिधो॑नसन्त॒-
ता॒जु॑षा॒णोह॑र्य्यतिजा॒तवे॑दाः ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्या ऽइव वहतुमेतवा ऽउ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि ॥ यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभितत्पवन्ते ॥ ९ ॥

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ॥ इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥ १० ॥

धामन्ते विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि ॥ अपामनीके समिथे य ऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽऊर्म्मिम् ॥ ११ ॥

पुनस्त्वादित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः ॥ घृतेन त्वन्तन्वं व्वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ १२ ॥

मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिम्पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम् ॥ कविं सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवाः ॥ १३ ॥

पूर्णा दर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ व्वस्नेव व्विक्रीणावहा ऽइषमूर्जं शतक्रतो स्वाहा ॥ १४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

❀ अथ वसोर्द्धारा होमः ❀

आचार्य निम्न संकल्प वसोर्द्धारा होम के निमित्त करावें—

यजमानः गोत्रः शर्मा (वर्मा, गुप्तः) कृतस्य विष्णुयाग कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं वसोर्द्धारा होष्यामि ।

दो स्तम्भों में धारण की हुई उदुंबर की सीधी मनोहरा बाहुमात्र प्रमाण की वसोर्द्धारा को प्रागग्र रख उसके ऊपर शृंखला से परिपूर्ण निर्मल घी से ताम्र आदि द्वारा नीचे यवमात्र छिद्र द्वारा आज्य को छोड़ते हुए अग्नि के ऊपर वसोर्द्धार गिरावें । उसके मुँख में सोने की जिह्वा बाँधे, स्रुचि पात्र द्वारा नाली से अग्नि में गिरती हुई जो धारा है । उसी समय आचार्य सहित सभी ब्राह्मण इन वैदिक मंत्रों का उच्चारण करके हवन करें—

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च । शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यंहाः ॥१॥

ईदृङ् चान्यादृङ् चं सदृङ् च प्रतिसदृङ् च । मितश्च सम्मितश्च सभंराः ॥२॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋतश्च॑ सत्यश्च॑ ध्रुवश्च॑ धरुणश्च । धर्त्ता च॑ विधर्त्ता च॑ विधारयः ॥३॥

ऋतजिच्च॑ सत्यजिच्च॑ सेनजिच्च॑ सुषेणश्च । अन्तिमित्रश्च दूरे ऽअमित्रश्च गणः ॥४॥

ईदृक्षास॑ ऽएतादृक्षास ऽऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽएतन । मितासश्च सम्मितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन् ॥५॥

स्वतवाँश्च प्रघासी च॑ सान्तपनश्च॑ गृहमेधी च॑ । क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥६॥

इन्द्रं दैवीर्विशो॑ मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो॑ मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् । एवमिमं यज॑मानं दैवीश्च विशो॑ मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥७॥

इमꣳ स्तनमूर्ज्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये । उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियꣳसदनमाविशस्व ॥८॥

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम॑ । अनुष्वधमावह मादयस्व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हुव्व्यम्। व्वसौः पवित्रमसि शतधारं व्वसौः अपवित्रमासि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोःपवित्रेणाशतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥६॥

[वाजश्चमे १–२९ तक के मंत्र]

ॐ व्वाजश्चमेप्रसवश्चमेप्रयतिश्चमेप्रसितिश्चमेधीतिश्चमेक्रतुश्चमेस्वरश्चमेश्लोकश्चमेश्रवश्चमे श्रुतिश्चमेज्ज्योतिश्चमेस्वश्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १ ॥

प्राणश्चमेऽपानश्चमेव्व्यानश्च मेसुश्चमेचित्तंचमऽआधीतश्चमेवाक्चमेमनश्चमेचक्षुमेश्रोत्रंच मेदक्षश्चमेबलंश्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २ ॥

ओजश्च। मेसहश्चमेऽआत्माचमेतनूश्चमेशर्म्मचमेव्वर्म्मचमेङ्गानि चमेस्थीनिचमेपरूᳬषिचमे शरीराणिचमऽआयुश्चमेजराचमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ३ ॥

ज्ज्यैष्ठ्यंच। ऽआधिपत्त्यश्चमेमुन्न्युश्चमे भामश्चमेमश्चमेम्भश्चमेजेमाचमेमहिमाचमेव्वरिमाच-

मेप्रथिमाचंमेवर्षिमाचंमेद्राघिमाचंमे वृद्धंश्चमे वृद्धिश्चमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ४ ॥

(न०) सत्यञ्चं । मेश्रद्धाचंमेजगंच्चमेधनंञ्चमेविश्वंञ्चमेमहंश्चमेक्रीडाचंमेमोदंश्चमेजातंञ्चमेजनिष्यमाणञ्चमेसूक्तञ्चंमेसुकृतञ्चं यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ५ ॥

ऋतञ्चं । मेऽमृतंञ्चमेयुक्ष्मञ्चमेनांमयच्चमेजीवातुश्चदीर्घायुत्वञ्चंमेनमित्रञ्चमेऽभंयच्चमेसुखञ्चंमेशयंनञ्चमेसूषाश्चंमेसुदिनंञ्चमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ६ ॥

यन्ताचं । मेधर्ताचंमेक्षेमश्चमेधृतिश्चमेविश्वंञ्चमेमहंश्चमेसंविच्चंमेज्ञात्रंञ्चमेसूश्चंमेप्रसूश्चंमेसीरंञ्चमेलयंश्चमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ७ ॥

शञ्चं । मेमयंश्चमेप्रियञ्चमेऽनुकामश्चमेकामश्चमेसौमनसश्चंमेभगंश्चमेद्रविंणञ्चमेभद्रञ्चंमेश्रेयंश्चमेवसीयश्चमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ८ ॥

(न०) ॥ ऊर्क्चं । मेसूनृता च मेपयंश्चमेरसंश्चमेघृतञ्चंमेमधुंचमेसग्धिश्चमेसपीतिश्च

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेकृषिश्चमे वृष्टिश्चमे जैत्रंश्चमऽऔद्भिद्यश्चमे युज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ९ ॥

र्यिश्चंमे रायंश्चमेपुष्टञ्चंमे पुष्टिश्चमेव्विभुचंमेप्रभुचंमपूर्णञ्चंमेपूर्णतंरञ्चमेकुयंवञ्चमेन्नंञ्च मेक्षुंच्चमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ १० ॥

व्वित्तञ्चंमेव्वेद्यंञ्चमेभूतञ्च मेभाविष्यच्चंमेसुगञ्च मेसुपत्थ्यञ्चमऽऋद्धञ्चमंऽऋद्धिश्चमेक्लृप्तञ्च मेक्लृप्तिश्चमेमतिश्चंमेसुमतिश्चंमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ११ ॥

व्व्रीहयंश्च । मेयवाश्चमेमाषाश्चमेतिलाश्चमेमद्गाश्चंमेखल्ल्वाश्चमेप्रियङ्गवश्च मेणंवश्च मेश्यामाकाश्चमेनीवाराश्च मेगोधूमाश्चमेमसूराश्चमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ १२ ॥

(न०) अश्माच । मेमृत्तिकाचमेगिरयंश्चमेपर्व्वताश्चमेसिकंताश्चमेव्वनस्पतंयश्चमे हिरंण्यञ्चमेऽयंचमेश्यामञ्चंमेलोहञ्चंमेसीसंञ्चमेत्रपुंचमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥१३॥

अग्निश्चंमऽआपंश्चमेव्वीरुधंश्चमऽओषंधयश्चमेकृष्टपच्च्याश्चंमेग्राम्याश्चंमेपशवंऽआरण्या-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

श्चमेव्वित्तञ्चमेव्वित्तिश्चमेभूतञ्चमेभूतिश्चमे य॒ज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १४ ॥

व्वसुंच । मेव्वसतिश्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्चमेर्थश्चमऽएमश्चमऽइत्याचमेगतिश्चमे य॒ज्ञेन- कल्पन्ताम् ॥ १५ ॥

(न०) अ॒ग्निश्च । मऽइन्द्रश्चमेसोमश्चमऽइन्द्रश्चमेसविताचमऽइन्द्रश्चमेसरस्वतीचम- ऽइन्द्रश्चमेपूषाचमऽइन्द्रश्चमेबृहस्पतिश्चमऽइन्द्रश्चमे य॒ज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १६ ॥

मि॒त्रश्च । मऽइन्द्रश्चमेव्वरुणश्चमऽइन्द्रश्च मेधाताचमऽइन्द्रश्चमेत्वष्टाचमऽइन्द्रश्च मेमरुतश्चमऽइन्द्रश्चमेव्विश्वेचमेदेवाऽइन्द्रश्चमे य॒ज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १७ ॥

पृ॒थि॒वीच । मइन्द्रश्चमेन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्चमेद्यौश्चमेऽइन्द्रश्चमेसमाश्चमऽइन्द्रश्चमेन- क्षत्त्राणिचमऽइन्द्रश्चमेदिशश्चमऽइन्द्रश्चमे य॒ज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[न०] ॥ अ॒ꣳशुश्च॑ । मे र॒श्मिश्च॒ मेऽदा॑भ्यश्च॒ मेऽधि॑पतिश्च म उपा॒ꣳशुश्च॑ मेऽन्तर्या॒मश्च॑ म ऐन्द्रवाय॒वश्च॑ मे मैत्रावरु॒णश्च॑ म आश्वि॒नश्च॑ मे प्रतिप्र॒स्थान॑श्च मे शु॒क्रश्च॑ मे म॒न्थी च॑ मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ १९ ॥

आ॒ग्र॒य॒णश्च॑ । मे वैश्वदे॒वश्च॑ मे ध्रु॒वश्च॑ मे वैश्वान॒रश्च॑ म ऐन्द्रा॒ग्नश्च॑ मे म॒हावै॑श्वदेवश्च मे मरुत्व॒तीया॑श्च मे निष्कै॑वल्यश्च मे सावि॒त्रश्च॑ मे सारस्व॒तश्च॑ मे पात्नीव॒तश्च॑ मे हारियोज॒नश्च॑ मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ २० ॥

स्रुच॑श्च । मे चम॒साश्च॑ मे वाय॒व्या॑नि च मे द्रोणकल॒शश्च॑ मे॒ ग्रावा॑णश्च मे धि॒षव॑णे च मे पूत॒भृच्च॑ म आधव॒नीय॑श्च मे॒ वेदि॑श्च बर्हिश्च॑ मे स्वगाका॒रश्च॑ मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ २१ ॥

(न०) अ॒ग्निश्च॑ । मे घ॒र्मश्च॑ मे॒ऽर्कश्च॑ मे॒ सूर्य॑श्च मे प्राणश्च॑ मेऽश्वमे॒धश्च॑ मे पृथि॒वी च॒ मेऽदि॑ति-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्चमे॒दिति॑श्चमे॒ द्यौश्च॑मे॒ ऽङ्गुल॑यः॒ शक्व॑रयो॒ दिश॑श्चमे य॒ज्ञेन॑कल्पन्ताम् ॥ २२ ॥

व्र॒तञ्च॑मऽऋ॒तव॑श्चमे॒ तप॑श्चमेसं॒वत्स॒रश्च॑मेहोरा॒त्रेऽऊर्व्वष्ठीवेबृ॒हद्र॑थन्त॒रेच॑मे य॒ज्ञेन॑कल्प-
न्ताम् ॥ २३ ॥

[न०] एका च । मेति॒स्रश्च॑मेति॒स्रश्च॑मे॒ पञ्च॑ मे॒ पञ्च॑ मेस॒प्तच॑ मे॒ नव॑चमे॒ नव॑चम॒ ऽएका
दशचम॒ ऽ एकादशच मेत्र॒यो॑दशचमे॒ त्र॒यो॑दशचमे॒ पञ्च॑दशचमे॒ पञ्च॑दशचमेस॒प्तद॑शचमेस॒-
प्तद॑शचमे॒ नव॑दशचमेनव॑दशचम॒ ऽएक॑वि॒ꣳशति॑श्चम॒ ऽएक॑वि॒ꣳशति॑श्चमे॒त्र॒यो॑वि॒ꣳशति॑श्चमे॒त्र॒यो॑
वि॒ꣳशति॑श्चमेपञ्च॑वि॒ꣳशति॑श्चमेपञ्च॑वि॒ꣳशति॑श्चमेस॒प्तवि॒ꣳशति॑श्चमेस॒प्तवि॒ꣳशति॑श्चमे॒ नव॑-
वि॒ꣳशति॑श्चमे॒ नव॑वि॒ꣳशति॑श्चमे॒ नव॑वि॒ꣳशति॑श्चम॒ऽएक॑त्रि॒ꣳशच्चम॒ऽएक॑त्रि॒ꣳशच्चमे॒ त्र॒यस्त्रि॒ꣳशच्चमे य॒ज्ञे-
न॑कल्पन्ताम् ॥ २४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(न०) चतस्रश्च । मे ऽष्टौ च मे ऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विꣳशतिश्च मे विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मेऽष्टाचत्वारिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २५ ॥ (न०)

त्र्यविश्च । मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २६ ॥

पष्ठवाट् च । मे पष्ठौही च म ऽउक्षा च मे वशा च म ऽऋषभश्च मे वेहच्च मे ऽनड्वाꣳश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २७ ॥

(न०) वाजाय स्वाहा । प्रसवाय स्वाहा ऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाऽहर्पतये-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

स्वाहान्ग्हैमुग्ग्धायस्वाहामुग्ग्धायंव्वैनꣳशिनायस्वाहाव्विन ꣳशिनं ऽआन्त्यायनायस्वाहान्त्याय-
भौवनायस्वाहाभुवंनस्यपतयेस्वाहाधिपतयेस्वाहाप्प्रजापतयेस्वाहा ॥ इयन्तेराण्मित्त्रायंयन्तासियम-
मंनऽऊर्ज्जेत्वाव्वृष्ट्यैत्वा प्प्रजानान्त्वाधिपत्याय ॥ २८ ॥

आयुर्य्यज्ञेनंकल्पतांम्प्राणोयज्ञेनंकल्पतांञ्चक्षुर्य्यज्ञेनंकल्पताꣳ श्रोत्रंय्यज्ञेनंकल्पताम्व्वाग्यज्ञेनं
कल्पतांम्मनोयज्ञेनंकल्पतामात्मायज्ञेनंकल्पताम्ब्रह्मायज्ञेनंकल्पताञ्ज्योतिर्य्यज्ञेनंकल्पता ꣳ
स्वर्य्यज्ञेनंकल्पताम्पृष्ठंय्यज्ञेनंकल्पतांय्यज्ञोयज्ञेनंकल्पताम् ॥ स्तोमश्च्चयजुश्च्चऽऋक्चसामंच-
वृहच्चरथन्तरञ्च । स्वर्द्देवाऽअगन्मामृताऽअभूमप्प्रजापतेःप्प्रजाऽअभूमव्वेट्स्वाहा ॥ २९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[नमस्ते १–१६ तक के मन्त्र]

ॐनमस्तेरुद्रमुन्न्यवंऽउतोतुऽइषंवेनमः॥
बाहुब्भ्यामततेनमः ॥ १ ॥

यातेरुद्रशिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
तयानस्तन्न्वाशन्तं मयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ २ ॥

यामिषुंगिरिशन्त हस्तेबिभर्ष्यस्तवे ।
शिवांगिरित्रताङ्कुरु माहिंसीःपुरुषञ्जगत् ॥ ३ ॥

शिवेनव्वचसात्त्वा-गिरिशाच्छाव्वदामसि ।
यथानःसर्व्वमिज्जगदयक्ष्मःसुमनाऽअसत् ॥ ४ ॥

अध्यवोचदधिवक्ता-प्प्रथमोदैव्व्योभिषक् ।
अहींश्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्चयातुधान्न्योधराचीःपरासुव ॥ ५ ॥

Kirikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असौयस्ताम्रोऽअरुणऽउतबभ्रुःसुमङ्गलः ।
येचैनꣳरुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताःसहस्रशोवैषाꣳ हेडऽईमहे ॥ ६ ॥
असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोव्विलोहितः ।
उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः ॥ ७ ॥
नमोस्तुनीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षायमीढुषे ।
अथोयेऽअस्यसत्त्वानोहन्तेभ्योकरन्नमः ॥ ८ ॥
प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम् ।
याश्चतेहस्तऽइषवःपराताभगवोव्वप ॥ ९ ॥
व्विज्ज्यन्धनुःकपर्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ २ऽउत ।
अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥ १० ॥
यातेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवते धनुः ।
तयास्म्मान्न्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज ॥ ११ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परितेधन्वनोहेतिरस्मान्वृणक्तुविश्वतः ।
अथोय इषुधिस्तवारे ऽअस्मन्निधेहितम् ॥ १२ ॥

अवतत्यधनुष्ट्वं सहस्राक्षशतेषुधे ।
निशीर्य्यशल्यानामुखाशिवोनःसुमनाभव ॥ १३ ॥

नमस्त ऽआयुधायानाततायधृष्णवे ।
उभाभ्यामुततेनमोबाहुभ्यान्तवधन्वने ॥ १४ ॥

मानो महान्तमुतमानो ऽअर्भकम्मान ऽउक्षन्तमुतमान ऽउक्षितम् ।
मानोव्वधीःपितरम्मोतमातरम्मानःप्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः ॥ १५ ॥

मानस्तोकेतनयेमान ऽआयुषिमानोगोषुमानो ऽ अश्वेषुरीरिषः ।
मानोव्वीरान्रुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे ॥ १६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ समास्त्वाग्न ऽऋतवो वर्द्धयन्तु संव्वत्सरा ऽऋषयो यानि सत्या ।
सन्दिव्येन दीदिहि रोचनेन व्विश्वा ऽआभाहि प्रदिशश्चतस्रः ॥ १ ॥
सञ्चेद्ध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय ।
मा च रिषदुपसत्ता ते ऽअग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये ॥ २ ॥
त्वामग्ने व्वृणते ब्राह्मणा ऽइमे शिवो ऽअग्ने संव्वरणे भवा नः ।
सपत्नहा नो ऽअभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् ॥ ३ ॥
इहैवाग्ने ऽअधि धारया रयिम्मा त्वा नि क्रन् पूर्व्वचितो निकारिणः ।
क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्द्धतान्ते ऽअनिष्टृतः ॥ ४ ॥
क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सꣳ रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व ।
सजातानाम्मध्यमस्था ऽएधि राज्ञामग्ने व्विहव्यो दीदिहीह ॥ ५ ॥

त्रि० ५०

अ० ४००

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतिनिहो अतिस्रिधोत्यचित्तिं मत्यरातिमग्ग्ने ।
विश्वाह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्म्मब्भ्यं सहवीरा ँ रयिन्द्राः ॥ ६ ॥

अना धृष्ष्यो जातवेदाऽनिष्टृतो व्विराडग्ने क्षत्त्रभृद्दीदिह ।
विश्वा ऽऽआशाः प्रमुञ्चन्मानुषीर्भियः शिवेभिरद्य परिपाहिनोव्वृधे ॥ ७ ॥

बृहस्पते सवितर्बोधयैनः स शितश्चित्सन्तराँ सः शिशाधि ।
व्वर्द्धयैनम्महते सौभगाय व्विश्वेऽ एन मनुमदन्तु देवाः ॥ ८ ॥

अमुत्त्रभूया दध यद्यमस्य बृहस्तेऽअभिव्वास्तेरमुञ्चः ।
प्रत्यौहतामश्विनामृत्युमस्म्माद्देवानामग्नेभिषजाशचीभिः ॥ ९ ॥

यजुर्वेद संहिता अध्याय—५

व्विष्णोर्न्नुकंव्वीर्य्याणिप्रवोचंयःपार्थिवानिव्विममेरजाँसियोऽ-
अस्कभायदुत्तरं सधस्त्थंव्विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायोव्विष्णवेत्त्वा ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

दि॒वो वा॑ विष्ण॒ ऽउ॒त वा॑ पृथि॒व्या म॒हो वा॑ विष्ण॒ ऽउ॒रोर॒न्तरि॑क्षात् ।
उ॒भा हि हस्ता॒ वसु॑ना पृ॒णस्वा प्रय॑च्छ॒ दक्षि॑णा॒दोत स॒व्याद्वि॑ष्णवे त्वा ॥ २ ॥
प्र तद्विष्णु॑ स्तवते वी॒र्ये॒ण मृ॒गो न भी॒मः कु॑च॒रो गि॑रि॒ष्ठाः ।
यस्यो॒रुषु॑ त्रि॒षु वि॒क्रम॑णेष्वधिक्षि॒यन्ति॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑ ॥ ३ ॥
विष्णो॑ र॒राट॑मसि॒ विष्णोः॑ श्न॒प्त्रे स्थो॒ विष्णोः॒ स्यूर॑सि॒ विष्णो॑र्ध्रु॒वो॑ऽसि ।
वै॒ष्ण॒वम॑सि॒ विष्ण॑वे त्वा ॥ ४ ॥
दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम् ।
आद॑दे॒ नार्य॑सी॒दम॒हꣳ रक्ष॑सां ग्री॒वा ऽअपि॑कृन्तामि ।
बृ॒हन्न॑सि बृ॒हद्र॑वा बृह॒ती मिन्द्रा॑य॒ वाचं॑ वद ॥ ५ ॥

सहस्रशीर्षा १–१६

हरिः ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात् ।
स भूमि॑ꣳ स॒र्वत॑ स्पृ॒त्वात्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kritikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरु॑ष ऽए॒वेद॒ꣳ सर्व्वं॒ यद्भू॒तं यच्च॒ भाव्य॑म् ।
उ॒तामृ॑त॒त्वस्येशा॑नो॒ यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति ॥ २ ॥
ए॒तावा॑नस्य महि॒मातो॒ ज्याया॑ँश्च॒ पूरु॑षः ।
पादो॑ ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑ त्रि॒पाद॑स्या॒मृतं॑ दि॒वि ॥ ३ ॥
त्रि॒पादू॒र्ध्व ऽउदै॒त्पुरु॑षः॒ पादो॑ऽस्ये॒हाभ॑व॒त्पुनः॑ ।
ततो॒ विष्व॒ङ् व्य॑क्रामत्साशनानश॒ने ऽअ॒भि ॥ ४ ॥
ततो॑ वि॒राड॑जायत वि॒राजो॒ ऽअधि॒ पूरु॑षः ।
स जा॒तो ऽअत्य॑रिच्यत प॒श्चाद्भूमि॒मथो॑ पु॒रः ॥ ५ ॥
तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हुतः॒ सम्भृ॑तं पृषदा॒ज्यम् ।
प॒शूँस्ताँश्च॑क्रे वाय॒व्यानार॒ण्या ग्रा॒म्याश्च॒ ये ॥ ६ ॥
तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हुत॒ ऽऋचः॒ सामा॑नि जज्ञिरे ।
छन्दा॑ꣳसि जज्ञिरे॒ तस्मा॒द्यजु॒स्तस्मा॑दजायत ॥ ७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

तस्मा॒दश्वा॑ ऽअजायन्त॒ ये के चो॑भ॒याद॑तः ।
गावो॑ ह जज्ञिरे॒ तस्मा॒त्तस्मा॑ज्जा॒ता ऽअ॑जा॒वयः॑ ॥ ८ ॥
तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॒ प्रौक्ष॒न्पुरु॑षं जा॒तम॑ग्र॒तः ।
तेन॑ दे॒वा ऽअ॑यजन्त सा॒ध्या ऽऋष॑यश्च॒ ये ॥ ९ ॥
यत्पुरु॑षं॒ व्यद॑धुः कति॒धा व्य॑कल्पयन् ।
मुखं॒ किम॑स्यासी॒त्किं बा॒हू किमू॒रू पादा॑ ऽउच्येते ॥ १० ॥
ब्रा॒ह्म॒णो॒ऽस्य॒ मुख॑मासीद्बा॒हू रा॑ज॒न्यः॑ कृ॒तः ।
ऊ॒रू तद॑स्य॒ यद्वैश्यः॑ प॒द्भ्याꣳ शू॒द्रो ऽअ॑जायत ॥ ११ ॥
च॒न्द्रमा॒ मन॑सो जा॒तश्चक्षोः॒ सूर्यो॑ ऽअजायत ।
श्रोत्रा॑द्वा॒युश्च॑ प्रा॒णश्च॒ मुखा॑द॒ग्निर॑जायत ॥ १२ ॥
नाभ्या॑ ऽआसीद॒न्तरि॑क्षꣳ शी॒र्ष्णो द्यौः सम॑वर्तत ।
प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्रा॒त्तथा॑ लो॒काँ२ ऽअ॑कल्पयन् ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑ दे॒वा य॒ज्ञमत॑न्वत ।
व॒स॒न्तो॑ऽस्यासी॒दाज्यं॑ ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः ॥१४॥

स॒प्तास्या॑सन्परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः ।
दे॒वा य॒द्य॒ज्ञं त॑न्वा॒ना अब॑ध्न॒न्पुरु॑षं प॒शुम् ॥१५॥

य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वास्तानि॒ धर्मा॑णि प्र॒थमान्या॑सन् ।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्त॒ यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः ॥१६॥

श्रीसूक्तम् १–१६

ॐ हिर॑ण्यवर्णां॒ हरि॑णीं सु॒वर्ण॑रजत॒स्र॑जाम् ।
च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आ व॑ह ॥ १ ॥

तां म॒ आ व॑ह॒ जात॑वेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म् ।
यस्यां॒ हिर॑ण्यं वि॒न्देयं॒ गामश्वं॒ पुरु॑षान॒हम् ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥
कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीꣳ सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनाꣳरूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां (सुवर्णां हेम) पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥
वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र मसि सहस्र ऽधारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥१७॥

इदमग्नये विष्णवे रुद्रेभ्यः सोमाय वैश्वानराय जातवेदसे वसुभ्यः पुरुषाय श्रियै न मम ।
संस्रवस्य शान्ति कलशे प्रक्षेपः । वसोर्द्धाराया अग्नौ प्रक्षेपः ।

॥ इति वसोर्द्धारा होमः समाप्तः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्निप्रदक्षिणा एवं भस्म धारणम्

अग्नि देव की प्रदक्षिणा कर अग्नि के पीछे-पश्चिम देश में पूर्वाभिमुख बैठ स्रुव के द्वारा कुण्ड से भस्म लेकर निम्न चार मन्त्रों से यजमान क्रमानुसार ललाट-गले-दाहिने बाहु और हृदय में भस्म लगावें :—

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः—ललाट पर इस मन्त्र से लगावे।

ॐ कश्यपस्यत्र्यायुषम्—गले पर इस मन्त्र से लगावे।

ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषम्—दाहिने बाहु पर इस मन्त्र से लगावे।

ॐ तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्—हृदय पर इस मन्त्र से लगावे।

तत्पश्चात् प्रोक्षणी में स्थित घृत का प्राशन करे। पुनः प्रणीता में स्थित पवित्री ग्रन्थि को अलग कर उन पवित्रियों से प्रणीताजल को अपने सिर पर छिड़क कर उन दोनों पवित्रियों को अग्नि में फेक दे।

इति अग्निःदक्षिणा एवं भस्म धारणम्

पूर्णपात्रदानम्

आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावे :—

अथ कृतस्य विष्णुयाग कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यै तत्सम्पूर्ण फलप्राप्तये च इदं ब्रह्मणे पूर्णपात्रं

१. नारदपुराणे—अकृते पूर्णपात्रे तु यज्ञंच्छिद्रं समुद्भवेत्। तस्मिन्पूर्णीकृते विप्रयज्ञ संपूर्णतांभवेत्॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदक्षिणं तुभ्यमहं संप्रददे ।

पश्चात् अग्नि के पीछे जलयुक्त पात्रको लेकर रख दे, फिर उसे उलट दे, फिर उससे निम्न मंत्र 'उपयमन कुशा' द्वारा आचार्य (यजमान-पत्नी-एवं पुत्र) एवं परिवार के अन्य लोगों के सिरपर सेचन करें--

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ।।

उपर्युक्त कर्म के पश्चात् 'उपयमनकुशाको' अग्नि में फेक दें ।

अथश्रेयोदानादिकर्मः

आचार्य 'विष्णुयाग' कर्म के लिए श्रेयोदान करे । स्वयं आचार्य अपने दाहिने हाथ में जल-अक्षत-सुपारी लेकर यह संकल्प करें:—

अथ 'विष्णुयाग' कर्मणः श्रेयोदानं करिष्ये ।

तत्रादौ—ॐ शिवा आपः सन्तु ! सौमनस्यस्तु ! अक्षतं चारि ं चास्तु । दीर्घमायुः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ।

इन वाक्यों का उच्चारण करते हुए क्रमानुसार जल पुष्प अक्षत-सुपारी नारिकेल आदि लेकर निम्नवाक्यका उच्चारण करते हुए फल आदि सभी वस्तुएँ यजमान को देवें:—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

श्री महाविष्णु ! प्रीत्यर्थं कृतो यो होम स्तदुपन्नं यच्छ्रे यस्तुभ्यहं संप्रददे तेन श्रेयसा त्वं त्वं श्रेयोवानभवः ।

यह कह कर आचार्य फलादिक वस्तुओं यजमान को देवै, यजमान उसे गुप्त स्थान पर रखें तथा अवसर मिलने पर भक्षण करे ।

पश्चात्—

आचार्य मात्र कतृके श्रेयोदाने तु भवन्नियोगेन मया एभिर्ब्राह्मणैः सह कृतं यदाचार्यत्वं, ब्रह्मत्वंऽसादस्यं, गाणपत्यत्वं, उपद्रष्टृत्वं, जपहोमादिकं च तदुत्पन्नं यच्छ्रेयस्तदमुना फलादिनां तुभ्यमहं संप्रददे ।।

ततो यजमानः गन्ध वस्त्रालङ्कारादिभिर्यथा विभवं आचार्यान् पूजयेत् ।

संकल्पः—

ॐ तत्सदद्य 'मयाऽऽचरितस्य विष्णुयागस्य साङ्गता सिद्धये आचार्यादीन् पूजयित्ये ।

ॐ विष्णोर्‌रराटमसि०—विष्णुरूपः आचार्य एतते पाद्यम्, इमे वाससो, एषते गन्धः, इमानि पुष्पाणि, धूपः दीपः, नैवेद्य ताम्बूलमित्येवं सम्पूज्य—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकल्प :—

कृतस्य विष्णुयाग कर्मण समृद्धत्यर्थमाचार्याय विष्णुरूपाय दक्षिणां संप्रददे॥

उपरोक्त संकल्प करके दक्षिणा देवे।

आचार्यश्च—

'ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रति गृह्णातु'

ॐ देवस्यत्वासवितु॰ प्रति गृह्णामि।

ॐ कोदात्कस्मा ऽअदात्कामोदात्कामायादात्। कामोदाता कामं ÷ प्रतीग्रहीताकामैततें॥

स्वस्ति-इति ब्रूयात्। एव मन्यान्यपिः सम्पूज्य संकल्प पूर्वक दक्षिणां दद्यात्।

कृतस्य विष्णुयाग कर्मणः इदं वृष निष्क्रय भूतं द्रव्य ममुक गोत्रायामुक शर्मणे ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ स्वस्ति

इन संकल्पों को करे—

कृतस्य विष्णुयाग कर्मणः इदं सदस्याय अश्व निष्क्रयभूतं द्रव्य ममुक गोत्रायमुक शर्मणे सदस्याय तुभ्यं मह सम्प्रददे ।

कृतस्य विष्णुयाग कर्मणः इदं ऋत्विग्भ्यः सुवर्ण निष्क्रय भूतं द्रव्यं यथा-यथा नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातु मह मुत्सृज्ये ।

अथवा—कृतस्य विष्णुयाग कर्मणः साङ्गता सिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्तये च आचार्यादिभ्यो, महार्त्विग्भ्यः सुक्तजापकेभ्यो, मंत्रजापकेभ्यो, हवनकर्तृभ्यो, ऽन्येभ्यो देवयजन मागतेभ्यश्च दक्षिणां दातु महमुत्सृज्ये ।

इत्येक एव संल्प्योऽनुष्ठेयः

१—स्मृतौ-यज्ञे विवाहे याऽर्थां तथा पुस्तक वाचने । श्रवणे चेति हास्स्य रात्रौ दानं प्रशस्यते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथाभिषेकः

ततः आचार्यादयः सर्वे ऋत्विजस्तिष्ठन्त उदङ्मुखा वरुणकलश वास्तुकलश ग्रहपीठ समीपस्थ रुद्रकलश-प्रधानकलश-योगिनी क्षेत्रपालकलश द्वारकलश द्वारकलशे रुदकमानीय पत्नि सपरिवारश्च वामतः कृत्वा यजमानभिषिञ्चेयुयेभिर्मन्त्रैः—

[अयमभिषेकोगीतवाद्यादिपुरः सरभिति साम्प्रदायिकाः]

ॐ आपोहिष्ठा० ३ ॐ त्रातारमिन्द्र० १ वरुणस्यो० १ समुद्रायत्वा० १ भग प्रणेतः १ इदमापः प्र० १ पुनन्तुमादे० ६ आप्यायस्व स० १ पंचनद्यः स० १ शिरोमे० ५ सोमस्यत्वा० द्यौः शांतिर० १

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥

सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रियै दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ १ ॥

देवस्य त्वा० । सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुयन्तुयन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवस्य त्वा० । अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन ।
वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥

ॐ शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि ।
राजा मे प्राणो ऽअमृतꣳ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥ ४ ॥
जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्युः स्वराड् भामः ॥ ५ ॥
मोदाः प्रमोदा ऽअङ्गुलीरङ्गानि मित्त्रं, मे सहः ॥ ५ ॥
बाहू मे बलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म वीर्य्यम् ।
आत्मा क्षत्त्रमुरो मम ॥ ६ ॥
पृष्टीर्म्मे राष्ट्रमुदरमꣳसौ ग्रीवाश्च श्रोणी ।
ऊरू ऽअरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्व्वतः ॥ ७ ॥
नाभिर्म्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः ।
जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः ॥ ८ ॥
प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु ।
प्रत्यङ्गेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन् प्रति प्राणेषु प्रति तिष्ठामि ।
पुष्टे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे ॥ ९ ॥
त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिꣳशाः सुराधसः ।
बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवितुः सवे । देवा देवैरवन्तु मा ॥१०॥
प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजूꣳषि
सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोऽनुवाक्याभिः पुरोऽनुवाक्या याज्याभिर्याज्या
वषट्कारैर्वषट्काराऽआहुतिभिराहुतयो मे कामान्त्समर्द्धयन्तु भूः स्वाहा ॥ ११ ॥
ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

सचेतसो व्विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥ १२ ॥
ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄः पाहि शृणुधी गिरः ।
रक्षा तोकमुतत्मना ॥ १३ ॥
ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऽऊर्ज्जे दधातन ।
महे रणाय चक्षसे ॥ १४ ॥
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
उशतीरिव मातरः ॥ १५ ॥
तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च नः ॥
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा
शान्तिरेधि ॥ १७ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु ।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ १८ ॥
ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ १९ ॥
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ।
भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ २० ॥
ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥ २१ ॥
ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न ऽआ सुव ॥ २२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

पुराणमन्त्रैरभिषेकः

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥ १ ॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥ ३ ॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४ ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सितार्कजाः ॥ ५ ॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष–राक्षस–पन्नगाः ॥ ६ ॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥
अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ते ॥ ८ ॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥
अमृताभिषेकोऽस्तु । उदकोस्पर्श

संकल्प—

कृतस्याभिषेक कर्मणः साङ्गफल प्राप्तये अभिषेक कर्तृभ्यः दक्षिणां ददे ।

यह सङ्कल्प करके दक्षिणा देवे ।

ततो मंगल स्नान । स्नान वस्त्र त्यागः । वस्त्रान्तरपरिधानम् । तिलकादिकरणम् । माल्यादि-धारणम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथोत्तर-पूजनम्

उत्तरपूजन के निमित्त यह संकल्प करें—

ॐ अद्य कृतस्य विष्णुयाग कर्मणः साङ्गत्वासिद्धये आवाहितदेवानामुत्तरपूजां करिष्ये ।

इसप्रकार सङ्कल्प करके गणपत्यादि देवताओं व सभी वास्तु, ग्रह, प्रधान, योगिनी, क्षेत्रपाल, पीठ देवताओं की पूजाकर पुष्पाञ्जलि देवें ।

ॐ जितन्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥ १ ॥
देवानां दानवानां च सामान्यमधिदैवतम् ।
सर्वदा चरणद्वन्द्वं व्रजामि शरणं तव ॥ २ ॥
एकस्त्वमसि लोकस्य स्रष्टा संहारकस्तथा ।
अव्यक्तश्चानुमन्ता च गुणमायासमावृतः ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0: In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संसारसागरं घोरमनन्तक्लेशभाजनम् ।
त्वामेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः ॥ ४ ॥
न ते रूपं न चाकारो नायुधानि न चास्पदम् ।
तथापि पुरुषाकारो भक्तानां त्वं प्रकाशसे ॥ ५ ॥
नैव किञ्चित्परोक्षन्ते प्रत्यक्षोऽसि न कस्य चित् ।
नैव किञ्चिदसाध्यन्ते न च साध्योऽसि कस्य चित् ॥ ६ ॥
कार्याणां कारणं पूर्वं वचसां वाच्यमुत्तमम् ।
योगिनां परमासिद्धिः परमं ते परं विदुः ॥ ७ ॥
अहं भीतोस्मि देवेश संसारेस्मिन्महाभये ।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष न जाने परमं पदम् ॥ ८ ॥
कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत ।
शरीरे च गतप्राये वर्तते मे महद्भयम् ॥ ९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विज्ञानं यदिदं प्राप्य यदिदं स्थानमर्जितम् ।
जन्मान्तरेऽपि मे देव माभूदस्य परिक्षयः ॥१०॥
दुर्गतावपि जातस्य त्वद्गतो मे मनोरथः ।
यदि नाशं न विन्देत तस्मिन्कर्ता सदा भव ॥११॥
कामये विष्णुपादौ तु सर्वजन्मसु केवलम् ।
पुरुषस्य हरेः सूक्तं स्वर्ग्यं धन्यं यशस्करम् ॥१२॥

इति सम्प्रार्थ्य साष्टाङ्गं प्रणिपत्य च—

ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥

इति पीठपञ्चकदेवताभिः क्षम संप्रार्थ्य—

ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पतेदेवुतन्तंस्त्वेमहे । उपुप्रयन्तुमरुतः सुदानंवुऽइन्द्रंप्राशूर्भवासचा ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ यान्तुदेवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकाम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ २ ॥

इन मंत्रों से पुष्प-अक्षत चढ़ाकर सब पीठ और देवताओं पर चढ़ी हुई, सब वस्तुएँ तथा सभी पीठ इस यज्ञ के आचार्य को प्रदान करे—

ॐ अद्य कृतस्य विष्णुयागकर्मणः समृद्ध्यर्थमिमं प्रधानपीठं वास्तुपीठं ग्रहपीठं योगिनीपीठं क्षेत्रपालपीठं शान्तिकलश ञ्च सोपस्करमाचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे ।

कृतैतत् पीठदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति दक्षिणामाचार्याय संप्रददे ।

कृतैतत् विष्णुयागकर्मणः साङ्गत्वसिद्धये इमां विष्णुप्रतिमां लक्ष्मीप्रतिमां गरुडप्रतिमामाचार्याय तुभ्यं सम्प्रददे ।

कृतैतत् प्रतिमादानसाङ्गतासिद्धये इमां दक्षिणामाचार्याय संप्रददे ।

ॐ यज्ञं यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा । एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ २ ॥

इत्यग्निं पुष्पाक्षतप्रक्षेपेण विसृज्य—

'ॐ यान्तुदेवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकीम् ।
ईष्टकाम-समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥

इस प्रकार सब मण्डप देवता व द्वार देवताओं का विसर्जन कर ब्राह्मण लोग यजमान व यजमान पत्नी सहित मण्डप के बाहर आ जायें।

फिर यजमान मण्डप के पश्चिम द्वार की देहली को स्पर्श करते हुए निम्न संकल्प पढ़े—

कृतस्य विष्णु यागस्य समृद्ध्यर्थममुं मण्डपं ध्वजापताकाद्युपस्करयुतमाचार्याय संप्रददे ।

कृतस्य मण्डपदानस्य साङ्गतासिद्ध्ये यथाशक्तिद्रव्यमाचार्याय संप्रददे ।

कृतस्य विष्णुयागकर्मणः समृद्ध्ये इमानि यज्ञपात्राणि यज्ञपूजोपकरणानि चाचार्याय तुभ्यं संप्रददे' इति दद्यात् ।

'कृतस्य विष्णुयागकर्मणः समृद्ध्ये यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'कृतेऽस्मिन् विष्णुयागकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये' इति दद्यात् ।

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ॥ १ ॥

ॐ अपराधसहस्राणि क्रियतेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥

चतुर्भिश्च-चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च ।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥ ३ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथ्वी शस्यशालिनी ।
देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ॥ ४ ॥

सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ६ ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ७ ॥

जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञकर्मणि ।
सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥ ८ ॥

प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ ९ ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्देत मच्युतम् ॥ १० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ६ ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ७ ॥

जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञकर्मणि ।
सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥ ८ ॥

प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ ९ ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्देत मच्युतम् ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kritikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्टभागः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्निमंथन के मंत्र

अथ शुक्लयजुर्वेद संहिता तृतीयोऽध्यायः

ॐ 'समिधाग्निन्दुवस्यतघृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिंन्हव्याजुंहोतन ॥ १ ॥

सुसमिद्धायशोचिषे । घृतन्तीव्रञ्जुंहोतन । अग्नयेंजातवेंदसे ॥ २ ॥

तन्त्वासमिद्भिरङ्गिरोघृतेनंव्वर्द्धयामसि । बृहच्छोचायविष्ठय ॥ ३ ॥

उपंत्वाग्नेहविष्मंतीघृताचीर्यन्तुहर्य्यत । जुषस्वंसमिधोमर्म ॥ ४ ॥

भूर्भुवःस्वर्द्यौरिवभूम्नापृथिवीवंव्वरिम्णा । तस्यास्तेपृथिविदेवजनिपृष्ठेग्निमंन्नादमन्नाद्यायादधे ॥ ५ ॥

आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसंदन्मातरंम्पुरः । पितरंञ्चप्रयन्त्स्वः ॥ ६ ॥

अन्तश्चरतिरोचनास्यप्राणादंपानती । व्व्यंक्ख्यन्महिषोदिवम् ॥ ७ ॥

त्रिंशद्धामविराजतिव्वाक्पतङ्गायंधीयते । प्रतिवस्तोरहद्युभिः ॥ ८ ॥

टिप्पणी—१—'चलुर्नोकास्फुटोदण्डी स्वस्तिकोमुष्टिकाकृतिः । एते वै हस्तदोषाः स्युः परशुश्चैव सप्तमः' (या० शि० ४४)
परशुः—पश्वकारः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा ।
अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ।
ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ९ ॥
सजूर्द्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या । जुषाणो ऽअग्निर्वेतु स्वाहा ॥
सजूर्द्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्य्यो वेतु स्वाहा ॥ १० ॥
उपप्रयन्तो ऽअद्ध्वरम्मन्त्रं वोचेमाग्नये । आरे ऽअस्मे च शृण्वते ॥ ११ ॥
अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् । अपां रेतांसि जिन्वति ॥ १२ ॥
उभा वामिन्द्राग्नी ऽआहुवध्या ऽउभा राधसः सह मादयध्यै । उभा दाताराविषां रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम् ॥ १३ ॥
अयन्ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो ऽअरोचथाः । तञ्जानन्नग्न ऽआरोहाथा नो वर्द्धया रयिम् ॥ १४ ॥
अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो ऽअद्ध्वरेष्वीड्यः । यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्व्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे ॥ १५ ॥

द्वि० ३३२

अस्यप्यत्क्नामनुद्द्युतंꣳशुक्रन्दुंदुन्हेऽअन्हयः । पर्य्यंꣳसहस्रमामृषिम् ॥१६॥

तनूपाऽअग्नेसितन्न्वम्मेपाह्यषतायुर्दाऽअग्नेस्यायुम्मेंदेहिव्वर्चोदाऽअग्नेसिव्वर्चोमेदेहि ।
अग्नेयन्न्मेंतन्न्वाऽऊनन्तन्नमऽआपृण ॥१७॥

इन्धानास्त्वाशतꣳहिमाद्युमन्तꣳसमिधीमहि । व्वयंस्वन्तोव्वयस्कृतꣳसहस्वन्तꣳसहस्कृतम् ॥
अग्नेसपत्क्नदम्भंनमदब्धासोऽअदाब्भ्यम् । चित्रावसोस्स्तितेपारमशीय ॥१८॥

सन्त्वमग्ग्नेसूर्य्यस्यव्वर्च्चसागथाःसमृषीणाꣳस्तुतेनं । सम्प्रियेणधाम्न्नासमहमायुषासंव्वर्च्च-
सासम्प्रजयासꣳरायस्पोषेणग्मिषीय ॥१९॥

अन्धस्स्थान्धोवोभक्षीयमहस्स्थमहोवोभक्षीयोर्ज्जस्स्थोर्ज्जंवोभक्षीयरायस्पोषस्स्थरायस्पोषस्स्थ-
रायस्पोषंव्वोभक्षीय ॥२०॥

रेवतीरमद्ध्वमस्मिन्न्योनावस्मिन्न्गोष्ठेस्मिल्लोकेस्मिन्न्क्षये । इहैवस्तमापगात ॥२१॥

प्र० ४३२

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सꣳहितासिव्विश्वरूप्यूर्ज्जामाविशगौपत्येन । उपत्वाग्नेदिवेदोषावस्तर्द्धियाव्वयम् । नमोभरन्तऽएमसि ॥२२॥

राजन्तमद्ध्वराणाङ्गोपामृतस्यदीदिविम् । व्वर्द्धमानꣳस्वेदमे ॥२३॥

सनःपितेवसूनवेग्नेसूपायनोभव । सचस्वानःस्वस्तये ॥२४॥

अग्नेत्वन्नोअन्तमऽउतत्त्राताशिवोभवाव्वरूत्थ्यः ॥ व्वसुरग्गिर्व्वसुश्श्रवाऽअच्छानक्षिद्द्युमत्तमꣳरयिन्दाः ॥२५॥

तन्त्वाशोचिष्ठदीदिवःसुम्नायनूनमीमहेसखिब्भ्यः ॥ सनोबोधिश्श्रुधीहवमुरुष्याणोऽअघायतस्समस्मात् ॥२६॥

इडएह्यदितऽएहिकाम्म्याऽएत । मयिवःकामधरणम्भूयात् ॥२७॥

सोमानꣳस्वरणङ्कृणुहिब्ब्रह्मणस्पते । कक्षीवन्तंयऽऔशिजः ॥२८॥

योरेवान्योऽअमीवहाव्वसुवित्पुष्टिवर्द्धन । सनःसिषक्तुयस्तुरः ॥२९॥

मानःशर्ठ०सो ऽररुषोधूर्तिःप्रणङ्मर्त्यस्य । रक्षाणोब्रह्मणस्पते ॥३०॥

महित्रीणामवोस्तुद्युक्षम्मित्रस्यार्य्यम्णः । दुराधर्षंव्वरुणस्य ॥३१॥

नहितेषाममाचनननाद्ध्व सुत्तारणेषु । ईशेरिपुरघशंठ०सः ॥३२॥

तेहिपुत्रासो ऽअदितेःप्रजीवसेमर्त्याय । ज्योतिर्य्यच्छन्त्यजस्रम् ॥३३॥

कदाचनस्तरीरसिनेन्द्रसश्चसिदाशुषे । उपोपेन्नुमघव्वन्भूय ऽइन्नुतेदानंदेवस्यपृच्च्यते ॥३४॥

तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि । धियोयोनःप्रचोदयात् ॥३५॥

परितेदूडभोरथोस्मॉं२ अश्नोतुविश्वतः । येनरक्षसिदाशुषः ॥३६॥

भूर्भुवःस्वःसुप्रजाःप्रजाभिःस्याठंसुवीरोव्वीरैःसुपोषःपोषैः । नर्य्यप्रजाम्मेपाहिशठंस्य-
पशून्मेपाहृथर्य्यपितुम्मेपाहि ॥ ३७ ॥

आगन्मव्विश्ववेदसमस्मभ्यंव्वसुवित्तमम्। आग्नेसम्राडभिद्युम्नमभिसहऽआयच्छस्व ॥३८॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अयम॒ग्निर्गृ॒हप॑तिर्गार्हपत्यः प्र॒जाया॑ वसु॒वित्त॑मः । अग्ने॑ गृहपते॒ऽभि द्यु॒म्नम॒भि सह॒ऽआय॑च्छस्व ॥ ३९ ॥

अयम॒ग्निः पु॑री॒ष्यो॑ र॒यिमा॒न्पुष्टि॒वर्द्ध॑नः । अग्ने॑ पुरीष्या॒भि द्यु॒म्नम॒भि सह॒ऽआय॑च्छस्व ॥४०॥

गृहा॒ मा बि॑भीत॒ मा वे॑पध्व॒मूर्जं॒ बिभ्र॑त॒ऽएम॑सि । ऊर्जं॒ बिभ्र॑द्वः सु॒मनाः॑ सु॒मे॒धा गृ॒हानैमि॒ मन॑सा॒ मोद॑मानः ॥ ४१ ॥

येषा॑म॒ध्येति॑ प्र॒वस॒न्येषु॑ सौमन॒सो ब॒हुः । गृ॒हानुप॑ ह्वयामहे॒ ते नो॑ जानन्तु जान॒तः ॥४२॥

उप॑हूता॒ऽइ॒ह गाव॒ऽउप॑हूताऽअजा॒वयः॑ । अथो॒ऽअन्न॑स्य की॒लाल॒ऽउप॑हूतो गृ॒हेषु॑ नः । क्षेमा॑य वः॒ शान्त्यै॒ प्रप॑द्ये शि॒वꣳ श॒ग्मꣳ शं॒योः शं॒योः ॥ ४३ ॥

प्र॒घा॒सिनो॑ हवामहे म॒रुत॑श्च रि॒शाद॑सः । क॒र॒म्भेण॑ स॒जोष॑सः ॥ ४४ ॥

यद्ग्रामे॒ यदर॑ण्ये॒ यत्स॒भायां॒ यदि॑न्द्रि॒ये । यदेन॑श्चकृ॒मा व॒यमि॒दं तदव॑यजामहे॒ स्वाहा॑ ॥ ४५ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding JKS-MoE-Grant-2

मोषूणंऽइन्द्रात्रपृत्सुदेवैरस्तिहिष्मातेशुष्मिन्नवृयाः । मुहश्चिद्दस्यमीढुषोयव्व्याहृविष्मं-
तोमुरुतोव्वन्दंतेगीः ॥ ४६ ॥

अक्रन्न्कम्मैकर्म्मकृतंः सहव्वाचामयोभुवा । देवेभ्यःकम्मैकृत्त्वास्तम्प्रेतसचाभुवः ॥ ४७ ॥

अवभृथनिचुम्पुणनिचेरुर'सिनिचुम्पुण । अवदेवैर्देवकृतमेनोयासिषमवमर्त्यै र्म्मर्त्यकृतम्पुरु-
राव्णोदेवरिषस्पाहि ॥ ४८ ॥

पूर्णादर्व्वि परापतसुपूर्णापुनरापंत । व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्ज्जंशतक्रतो ॥४९॥

देहिमेददामितेनमेधेहिनितेदधे । निहारञ्चहरासिमेनिहारन्निहराणितेस्वाहा ॥ ५० ॥

अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया ऽअधूषत । अस्तोषतस्वभानवोव्विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते-
हरी ॥ ५१ ॥

सुसन्दृशन्त्वाव्वयम्मघवन्वन्दिषीमहि । प्रनूनम्पूर्णबन्धुरस्तुतोयासिव्वशाँ२ऽअनुयोजान्विन्द्रते-
हरी ॥ ५२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनोन्न्वाह्व्वामहेनाराशठं॰सेनस्तोमेन । पितृणाञ्चमन्मभिः ॥ ५३ ॥

आनंऽएतुमनः पुनःक्क्रत्त्वेदक्षायजवसे । ज्योक्कूचसूर्य्यन्दृशे ॥ ५४ ॥

पुनंर्न्नःपितरोमनोददातुदैव्व्योजनः । जीवंव्व्रातंठं॰सचेमहि ॥ ५५ ॥

व्वयठं॰सोमव्व्रतेतवमनंस्तनूषुबिब्भ्रंतः । प्रजावंन्तःसचेमहि ॥ ५६ ॥

एषतेरुद्द्रभागःसहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्वाहैषतेरुद्द्रभागऽआखुस्तेपशुः ॥ ५७ ॥

अवंरुद्द्रमंदीमंदीमह्यवंदेवन्त्र्यम्बकम् । यथानोव्वस्यंसस्करद्यथानःश्श्रेयंसस्करद्यथानो-
व्व्यवसाययात् ॥ ५८ ॥

भेषजमंसिभेषजङ्गवेश्श्वायपुरुषायभेषजम् । सुखम्मेषाय मेष्ष्यै ॥५९॥

१—'तथयोः सम' शु॰ प्रा॰ ३।८ तकारथकारयोः परयोः विसर्जनीयः सकारमापद्यते । तकारे—'आखुः ते पशुः' इत्यत्र विसर्गस्य सकारो भवति । एवम्—'नमः ते रुद्र' १६।१। इत्यादिषु । संहितायां विसर्जनीयसन्धिस्तु न विद्यते अतो रूपोदारणं दीयते । कः थकारः कस्थकारः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् । त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् । उर्व्वारुकमिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुतः ॥ ६० ॥

एतत्तेरुद्द्रावसन्तेनपरोमूजवतोतीहि । अवततधन्न्वापिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहिᳫंसन्नः शिवोतीहि ॥ ६१ ॥

त्र्यायुषञ्जमदग्ग्नेः कश्यपस्यत्र्यायुषम् । यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् ॥ ६२ ॥

शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिᳫंसीः । निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्यायप्प्रजननायरायस्प्पोषायसुप्प्रजास्त्वायसुवीर्य्याय ॥ ६३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अरणी-मंथन सहित

'कुण्ड पूजन पूर्वक अग्नि मंथन'

ब्रह्मा द्वारा कुंड में पंचभूसंस्कार किये जाने के पश्चात् यजमान एवं यजमान की पत्नी कुंड के पश्चिम भाग में पूर्वाभिमुख बैठ कर कुण्ड का पूजन प्रारम्भ करे।

सर्व प्रथम कुंड के ऊपर वाली मेखला में अक्षतपुंज पर सुपाड़ी रखवाकर इस वैदिक मंत्र का आचार्य उच्चारण करे—

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाँसुरे स्वाहा॥

उपरांत इस वाक्य का उच्चारण कर विष्णु का आवाहन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नम, विष्णुं आवाहयामि।

पश्चात् क्रमानुसार मंत्रों का उच्चारण कर आवाहन करे—

मध्य मेखला में—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः। सबुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस वाक्य का उच्चारण कर, ब्रह्मा का आवाहन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणं आवाहयामि ।

कृष्ण वर्ण तृतीय मेखला में—

नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो त ऽइषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥

इस वाक्य का उच्चारण कर, रुद्र का आवाहन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रं आवाहयामि ।

योनि में—

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

इस वाक्य का उच्चारण कर गौरी का आवाहन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीं आवाहयामि ।

पश्चात् इस वैदिक मंत्र का उच्चारण कर नाभि में पूजन करे—

ॐ नाभिर्म्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्म्मेऽपचितिर्भसत् । आनन्दनन्दा वाण्डौ मे भगः सौभाग्यं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पसं÷ ।। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशराजाप्रतिष्ठितः ।।

उपरांत इस मंत्र और वाक्य का उच्चारण कर वास्तु देवता का भी आवाहन करे—

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवाभवो नः । यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः, वास्तु पुरुषं आवाहयामि ।

इस मंत्र से कुण्ड में विश्वकर्मा का भी आवाहन करे—

ॐ विश्वं कर्म्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम् । तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणं आवाहयामि ।

पश्चात् यथोपचारों से आवाहित सभी देवताओं का विधिवत् पूजन करके, कुंड में स्वर्णखंड छोड़ करके कुंड को 'एक वस्त्र', से ढक दे, तत्पश्चात् आचार्य यजमान को अरणी देते हुए कहे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्नि साधन भूते योनि रूपे, इमे अरणी आवाभ्याम् प्रतिगृहाण, इयं अधरा इयं उत्तरा ।

पश्चात् ब्रह्मा कहें—

इदं पात्र, इदं ओविली, इदं नेत्रं, इमानि श्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृहाण ।

पश्चात् यजमान ब्रह्मा से इनको लेकर इन पात्रों में से अधर-अरणी अपनी धर्म पत्नी को दे, यजमान पत्नी अधर-अरणी को अपनी गोद में रखे, तथा यजमान व यजमान पत्नी इन अरणीयों का पूजन करे—

कुछ लोगों के मत से—

एक कम्बल पर मृग चर्म पूर्व की ओर मुख बिछाकर उस पर अरणी रखकर पूजन (करते) है ।

उपरांत 'अधरा अरणी' को कम्बल व मृग चर्म पर रख कर, ओवली में रस्सी को तीन लपेटा देकर यजमान पत्नी उसे चलावे, तथा यजमान ऊपर से जोर देकर 'मन्था' दबाये रहें, जब तक अग्नि प्रज्वलित न हो, तब तक 'अग्नि मंथन करते रहें ।

यदि यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी थक जाएँ, अग्नि प्रज्वलित न हो, उस अवस्था में यज्ञ स्थल से ही पवित्र ब्राह्मण के द्वारा 'अग्नि-मंथन' कर्म को करावें ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह क्रम जब तक होता रहेगा, जब तक पूर्ण रूप से 'अग्नि-प्रज्वलित न हो जाएँ। अग्नि मंथन के प्रारंभ होते ही अन्य विद्वान् पुरुषसूक्त, रुद्रसूक्त, श्रीसूक्त, यजुर्वेद संहिता के तृतीय अध्याय तथा अन्य अग्नि-स्तुति परक मंत्रों का पाठ (उच्चारण) करते रहें।

अग्नि के प्रज्वलित होने पर, एक थाली में नारियल की जटा, रूई, कपूर में प्रज्वलित अग्नि को रख कर 'अग्निदेव' की जय घोष करते हुए विशेष रूप से प्रज्वलित कर ले, पश्चात् कुंड में गोहरी एवं लकड़ी के छिलकों में—

ॐ अ॒ग्निं दू॒तं पु॒रो द॑धे हव्य॒वाह॒मुप॑ ब्रुवे। दे॒वाँ२॥ आ॒सा॑दया॒दि॒ह॥

इस वैदिक मंत्र से अग्नि स्थापन करें, फिर यजमान संक्षिप्त पुण्याहवाचन एवं गौदान पूर्वक, ब्राह्मण को दक्षिणा देवें।

नोट—अरणी-मंथन से अग्नि स्थापित करने की यही उचित शास्त्र सम्मत क्रिया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

विष्ण्वादिप्रतिष्ठादौमूर्तिन्यासः

अथ वेद्यामुदङ्मुखः प्राङ्मुखो वा भूत्वा 'अस्मिन् अमुकदेवार्चाधिवासकर्मणि देवकलासान्निध्यार्थं प्रणवादिन्यासान् करिष्ये' इति सङ्कल्प्य । करे पुष्पं गृहीत्वा न्यासाः कार्याः—

प्रणवन्यासः—सर्वदेवसाधारणः

ॐ अं नमः पादयोर्न्यसामि'

ॐ उं नमः हृदये

ॐ मं नमः ललाटे

व्याहृतिन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ भूः नमः पादयोः

ॐ भुवः नमः हृदये

ॐ स्वः नमः ललाटे

मातृकान्यासः—सर्वदेवसाधारणः

ॐ अं नमः शिरसि

ॐ आं नमः मुखे

ॐ इं नमः दक्षिणनेत्रे

ॐ ईं नमः वामनेत्रे

ॐ उं नमः दक्षिणश्रवणे

ॐ ऊं नमः वामश्रवणे

ॐ ऋं नमः दक्षिणगण्डे

ॐ ॠं नमः वामगण्डे

ॐ लृं नमः दक्षिणनासापुटे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ ॡं नमः	वामनासापुटे	ॐ शं नमः	श्रोत्रयोः
ॐ एं नमः	ऊर्ध्वदशनेषु	ॐ षं नमः	उदरे
ॐ ऐं नमः	अधोदशनेषु	ॐ सं नमः	कटिदेशे
ॐ ओं नमः	ऊर्ध्वोष्ठे	ॐ हं नमः	हृदये
ॐ औं नमः	अधरोष्ठे	ॐ क्षं नमः	नाभौ
ॐ अं नमः	ललाटे	ॐ ळं नमः	लिङ्गे
ॐ अः नमः	जिह्वायाम्	ॐ पं फं बं भं मं	दक्षिणबाहौ
ॐ यं नमः	त्वचि	ॐ तं थं दं धं नं	वामबाहौ
ॐ रं नमः	चक्षुषोः	ॐ टं ठं डं ढं णं	दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ लं नमः	नासिकायाम्	ॐ चं छं जं झं ञं	वामजङ्घायाम्
ॐ वं नमः	दशनेषु	ॐ कं खं गं घं ङं	सर्वाङ्गुलिषु

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ ऋक्षन्यासः—सर्वदेवसाधारणः

ॐ रविचन्द्राभ्यां नेत्रयोः
ॐ भौमाय हृदये
ॐ बुधाय स्कन्धे
ॐ बृहस्पतये जिह्वायाम्
ॐ शुक्राय लिङ्गे
ॐ शनैश्चराय ललाटे
ॐ राहवे पादयोः
ॐ केतुभ्यो केशेषु
ॐ रोहिणीभ्यो हृदये
ॐ मृगशिरसे शिरसि
ॐ आर्द्रायै केशेषु
ॐ पुनर्वसुभ्यां ललाटे
ॐ पुष्पाय मुखे
ॐ आश्लेषाभ्यो नासिकायाम्
ॐ मघाभ्यो दन्तेषु
ॐ पूर्वाफाल्गुनीभ्यो दक्षिणश्रवणे
ॐ उत्तराफल्गुनीभ्यो वामश्रवणे
ॐ हस्ताय हस्तयोः
ॐ चित्रायै दक्षिणभुजे
ॐ स्वात्यै वामभुजे
ॐ विशाखाभ्यां हृदि
ॐ अनुराधाभ्यो स्तनयोः
ॐ ज्येष्ठाभ्यो दक्षिणकुक्षौ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ मूलाय वामकुक्षौ
ॐ पूर्वाषाढाभ्यो कटिपार्श्वयोः
ॐ उत्तराषाढाभ्यो लिङ्गे
ॐ श्रवणधनिष्ठाभ्यो वृषणयोः
ॐ शतभिषाभ्यो नेत्रे
ॐ पूर्वाभाद्रपदाभ्यो दक्षिणोरौ
ॐ उत्तराभाद्रपदाभ्यो वामोरौ
ॐ रेवतीभ्यो दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ अश्विनीभ्यां वामजङ्घायाम्
ॐ भरणीभ्यो दक्षिणपादे
ॐ कृत्तिकाभ्यो वामपादे
ॐ ध्रुवाय नाभ्याम्

ॐ सप्तर्षिभ्यो कण्ठे
ॐ मातृमण्डलाय कटिदेशे
ॐ विष्णुपदेभ्यो पादयोः
ॐ नागवीथ्यै } वनमालादेशे
ॐ अजवीथ्यै }
ॐ ताराभ्यो रोमकूपेषु
ॐ अगस्त्याय कौस्तुभदेशे
ॐ अथ कालन्यास–सर्वदेवसाधारणः
ॐ चैत्राय शिरसि
ॐ वैशाखाय मुखे
ॐ ज्येष्ठाय हृदये
ॐ आषाढाय दक्षिणहस्ते

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ श्रावणाय	वामस्तने
ॐ भाद्रपदाय	उदरे
ॐ आश्विनाय	कट्याम्
ॐ कार्तिकाय	दक्षिणोरौ
ॐ मार्गशीर्षाय	वामोरौ
ॐ पौषाय	दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ माघाय	वामजङ्घायाम्
ॐ फाल्गुनाय	पादयोः
ॐ संवत्सराय	दक्षिणोर्ध्वबाहौ
ॐ परिवत्सराय	दक्षिणाधोबाहौ
ॐ इद्वत्सराय	वामाधोबाहौ
ॐ अनुवत्सराय	वामोर्ध्वबाहौ

ॐ पर्वभ्यो	सन्धिषु
ॐ ऋतुभ्यो	लिङ्गे
ॐ अहोरात्रेभ्यो	अस्थिषु
ॐ क्षणाय	रोमसु
ॐ लवाय	रोमसु
ॐ काष्ठायै	रोमसु
ॐ कलायै	रोमसु
ॐ कृतयुगाय	मुखे
ॐ त्रेतायुगाय	हृदये
ॐ द्वापराय	नितम्बे
ॐ कलियुगाय	पादयोः
ॐ चतुर्दशमन्वन्तरेभ्यो	बाह्वोः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kritikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ पराय
ॐ परार्द्धाय } जङ्घयोः
ॐ महाकल्पाय शरीरे
ॐ उदगयनाय
ॐ दक्षिणाय } पादयोः
ॐ विषुवद्भ्यो सर्वाङ्गुलिषु

वर्णन्यास —सर्वदेवसाधारणः

ॐ ब्राह्मणाय मुखे
ॐ क्षत्रियाय बाह्वौ
ॐ वैश्याय उर्वो
ॐ शूद्राय पादयोः
ॐ सङ्करजेभ्यो पादाग्रे

ॐ अनुलोमजेभ्यो सर्वाङ्गसन्धिषु
ॐ गोभ्यो मुखे
ॐ अजाभ्यो
ॐ आविकाभ्यो } हस्तयोः
ॐ ग्राम्यपशुभ्यो
ॐ आरण्यपशुभ्यो } ऊर्वोः

अथ स्तोयन्यास सर्वदेवसाधारणः

ॐ मेघेभ्यो केशेषु
ॐ अभ्रेभ्यो रोमसु
ॐ नदीभ्यो सर्वगात्रेषु
ॐ समुद्रेभ्यो कुक्षिदेशे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अथ वेदन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ ऋग्वेदाय शिरसि

ॐ यजुर्वेदाय दक्षिणभुजे

ॐ सामवेदाय वामभुजे

ॐ सर्वोपनिषद्भ्यो हृदये

ॐ इतिहासपुराणेभ्यो जङ्घयोः

ॐ अथर्वाङ्गिरसेभ्यो नाभौ

ॐ कल्पसूत्रेभ्यो पादयोः

ॐ व्याकरणेभ्यो वक्त्रे

ॐ तर्केभ्यो कण्ठे

ॐ मीमांसायै
ॐ निरुक्ताय } हृदये

ॐ छन्दः शास्त्रेभ्यो
ॐ ज्योतिः शास्त्रेभ्य } नेत्रयोः

ॐ गीताशास्त्रेभ्यो
ॐ भूतशास्त्रेभ्यो } श्रोत्रयोः

ॐ आयुर्वेदाय दक्षिणभुजे

ॐ धनुर्वेदाय वामभुजे

ॐ योगशास्त्रेभ्यो हृदये

ॐ नीतिशास्त्रेभ्यो पादयोः

ॐ वश्यतन्त्राय ओष्ठयोः

अथ वैराजन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ दिवे नमः मूर्ध्नि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ सूर्यलोकाय: }
ॐ चन्द्रलोकाय: } नेत्रयो:
ॐ अनिललोकाय घ्राणे
ॐ व्योम्ने नाभौ
ॐ समुद्रेभ्यो वस्तिदेशे
ॐ पृथिव्यै पादयो:

अथ देवतान्यास: सर्वदेवसाधारण:

ॐ हिरण्यगर्भाय शिरसि
ॐ कृष्णाय केशेषु
ॐ रुद्राय ललाटे
ॐ यमाय भ्रुकुट्याम्
ॐ अश्विभ्यां कर्णयो:

ॐ वैश्वानराय मुखे
ॐ मरुद्भ्यो घ्राणे
ॐ वसुभ्यो कण्ठे
ॐ रुद्रेभ्यो दन्तेषु
ॐ सरस्वत्यै जिह्वायाम्
ॐ इन्द्राय दक्षिणभुजे
ॐ बलये वामभुजे
ॐ प्रह्लादाय दक्षिणस्तने
ॐ विश्वकर्मणे वामस्तने
ॐ नारदाय दक्षिणकुक्षौ
ॐ अनन्तादिभ्यो वामकुक्षौ
ॐ वरुणाय हस्तयो:

Kartikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ मित्राय	पादयोः
ॐ विश्वेभ्यो-देवेभ्यो	ऊर्वोः
ॐ पितृभ्यो	जान्वोः
ॐ यक्षेभ्यो	जङ्घयोः
ॐ राक्षसेभ्यो	गुल्फयोः
ॐ पिशाचेभ्यो	पादयोः
ॐ असुरेभ्यो	पदाङ्गुलिषु
ॐ विद्याधरेभ्यो	पार्ष्ण्योः
ॐ ग्रहेभ्यो	पादतलयोः
ॐ गुह्यकेभ्यो	गुह्ये
ॐ पूतनादिभ्यो	नखेषु
ॐ गन्धर्वेभ्यो	ओष्ठयोः

ॐ कार्तिकेयाय	दक्षिणपार्श्वे
ॐ गणेशाय	वामपार्श्वे
ॐ मत्स्याय	मूर्ध्नि
ॐ कूर्माय	पादयोः
ॐ नृसिंहाय	ललाटे
ॐ वराहाय	जङ्घयोः
ॐ वामनाय	मुखे
ॐ परशुरामाय	हृदये
ॐ रामाय	बाहुषु
ॐ कृष्णाय	नाभौ
ॐ बोधाय	बुद्धौ
ॐ कल्किने	जानुदश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ केशवाय	शिरसि
ॐ नारायणाय	मुखे
ॐ माधवाय	ग्रीवायाम्
ॐ गोविन्दाय	बाह्वोः
ॐ विष्णवे	हृदये
ॐ मधुसूदनाय	पृष्ठे
ॐ त्रिविक्रमाय	कठ्योः
ॐ वामनाय	जठरे
ॐ श्रीधराय	दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ हृषीकेशाय	वामजङ्घायाम्
ॐ पद्मनाभाय०	गुल्फयोः
ॐ दामोदराय	पादयोः

अयमेव 'मूर्तिन्यासः' 'देवयोनिन्यासः' इति चोच्यते ।

अथ क्रतुन्यासः—सर्वदेवसाधारण

ॐ अश्वमेधाय	मूर्ध्नि
ॐ नरमेधाय	ललाटे
ॐ राजसूयाय	मुखे
ॐ गोसेवाय	कण्ठे
ॐ द्वादशाहाय	हृदि
ॐ अहीनेभ्यो	नाभौ
ॐ सर्वजिद्भ्यो	दक्षिणकट्याम्
ॐ सर्वमेधाय	वामकट्याम्
ॐ अग्निष्टोमाय	लिङ्गे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ अतिरात्राय	वृषणयोः	ॐ पञ्चमहायज्ञेभ्यो	पादाङ्गुलीषु
ॐ आप्तोर्यामाय	ऊर्वोः	ॐ आहवनीयाय	मुखे
ॐ षोडशिने	जान्वोः	ॐ दक्षिणाग्नये	हृदये
ॐ उक्थ्याय	दक्षिणजङ्घायाम्	ॐ गार्हपत्याय	नाभौ
ॐ वाजपेयाय	वामजङ्घायाम्	ॐ वेद्यै	उदरे
ॐ अत्यग्निष्टोमाय	दक्षिणबाहौ	ॐ प्रवर्ग्याय	भूषणेषु
ॐ चातुर्मास्याय	वामबाहौ	ॐ सवनेभ्यो	पादयोः
ॐ सौत्रामणये	हस्ते	ॐ इध्मेभ्यो	बाहुषु
ॐ पशिवष्टिभ्यो	अङ्गुलीषु	ॐ दर्भेभ्यो	केशेषु
ॐ दर्शपूर्णमासाभ्यां	नेत्रयो	अथ गुणन्यासः सर्वदेवसाधारणः—	
ॐ सर्वेष्टिभ्यो	रोमकूपेषु	ॐ धर्माय	मूर्ध्नि
ॐ स्वाहाकाराय }	स्तनयोः	ॐ ज्ञानाय	हृदि
ॐ वषट्काराय }		ॐ वैराग्याय	गुह्ये

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ ऐश्वर्याय पादयोः
अथायुधन्यासो विष्णुप्रतिष्ठा-मात्रविषयः
ॐ खड्गाय शिरसि
ॐ शार्ङ्गाय मस्तके
ॐ मुसलाय दक्षिणभुजे
ॐ हलाय वामभुजे
ॐ चक्राय नाभि-जठर-पृष्ठेषु
ॐ शङ्खाय लिङ्गे वृषण योश्च
ॐ गदायै जङ्घयोर्जानुनोश्च
ॐ पद्माय गुल्फयोः पादयोश्च
अथायुधन्यासः—शिवप्रतिष्ठा मात्रविषयः
ॐ वज्राय शिरसि

ॐ शक्तये मस्तके
ॐ दण्डाय दक्षिणभुजे
ॐ खड्गाय वामभुजे
ॐ पाशाय जठर-नाभि-पृष्ठदेशेषु
ॐ अंकुशाय लिङ्गे-वृषणयोश्च
ॐ त्रिशूलाय जान्वोः
ॐ ध्वजाय जङ्घयोः
ॐ चक्राय गुल्फयोः
ॐ पद्माय पादयोः
शक्तिन्यासः— सर्वदेवसाधारणः
ॐ लक्ष्म्यै ललाटे
ॐ सरस्वत्यै मुखे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ रत्यै	गुह्ये
ॐ प्रीत्यै	कण्ठे
ॐ कीर्त्यै	दिक्षु
ॐ शान्त्यै	हृदि
ॐ तुष्ट्यै	जठरे
ॐ पुष्ट्यै	सर्वाङ्गे

अथाङ्गमन्त्रन्यासविष्णुप्रतिष्ठामात्राविषयः—

ॐ हृदयाय नमः	हृदये
ॐ शिरसे स्वाहा	शिरसि
ॐ शिखायै वषट्	शिखायाम्
ॐ कवचाय हुँ	सर्वाङ्गेषु
ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्	नेत्रयोः

ॐ अस्त्राय फट	करयोः
ॐ ॐ नमः	हृदये
ॐ नं नमः	शिरसि
ॐ भगवते	शिखायाम्
ॐ वासुदेवाय	कवचे
ॐ नमो भागवते वासुदेवाय	अस्त्रम्
ॐ श्रीवत्साय	स्तनयोः
ॐ कौस्तुभाय	उरसि
ॐ वनमालायै	कण्ठे
ॐ ॐ नमः	पादयोः
ॐ नं नमः	जानुनोः
ॐ मों नमः	गुह्ये

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ भं नमः	नाभ्याम्	ॐ इषेत्वोर्ज्जे	गुल्फयोः
ॐ गं नमः	हृदये	ॐ अग्न आयाहि	जङ्घयोः
ॐ वं नमः	कण्ठे	ॐ शन्नोदेवी	जान्वोः
ॐ तें नमः	मुखे	ॐ एका च	ऊर्वोः
ॐ वां नमः	नेत्रयोः	ॐ स्वस्तिन इन्द्रो	जठरे
ॐ सु नमः	भाले	ॐ दीर्घायुस्त ओ	हृदये
ॐ दें नमः	मूर्ध्नि	ॐ विश्वतश्चक्षु	कण्ठे
ॐ वां नमः	दक्षिणपार्श्वे	ॐ त्रातारमिन्द्र	वक्त्रे
ॐ यं नमः	वामपार्श्वे	ॐ त्र्यम्बकं यजा	स्तनयोर्नेत्रयोश्च
एवमेव तत्तद्देवताया अङ्गमन्त्रन्यासकल्पना कार्या।		ॐ मूर्द्धानं दिवो	मूर्ध्नि

अथ मन्त्रन्यासः—सर्वदेव साधारणः

ॐ अग्निमीले — पादयोः

अथ नारायणमूर्तौ द्वादशाक्षरमन्त्रेण न्यासः

ॐ केशवाय — शिरसि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ नं नारायणाय मुखे
ॐ मों माधवाय ग्रीवायाम्
ॐ भं गोविन्दाय कण्ठे
ॐ गं विष्णवे पृष्ठे
ॐ वं मधुसूदनाय कुक्षौ
ॐ तें त्रिविक्रमाय कटिदेशे
ॐ वां वामनाय जङ्घयोः
ॐ सुं श्रीधराय वामगुल्फे
ॐ दें हृषीकेशाय दक्षिणगुल्फे
ॐ वां पद्मनाभाय वामपादे
ॐ यं दामोदराय दक्षिणपादे
ॐ अथ नारायणमूर्तौ विष्ण्वष्टाङ्ग-मन्त्र-न्यासः—

ॐ हुं हृदयाय हृदये
ॐ विष्णवे शिरसि
ॐ ब्रह्मणे शिखायाम्
ॐ ध्रुवाय कवचे
ॐ चक्रिणे अस्त्रायफट् अस्त्र हस्तयोः
ॐ नमःशम्भवाय गायत्रीं दक्षिणनेत्रे
ॐ विजयाय सावित्रीं वामनेत्रे
ॐ चक्रशूलाय पिङ्गलाक्षं दिक्षु
अथ नारायणमूर्तौ पुरुषसूक्तन्यासः—
ॐ सहस्रशीर्षा पादयोः
ॐ पुरुष एव जङ्घयोः
ॐ एतावानस्य जान्वोः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ 'त्रिपादूर्ध्व	ऊर्वोः
ॐ ततो विराड	वृषणदेशे
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सं—	कट्योः
ॐ तस्माद्यज्ञात्० ऋचः सा	नाभौ
ॐ तस्मादश्वा	हृदि
ॐ तं यज्ञं ब	स्तनयोः
ॐ यत्पुरुषं	बाह्वोः
ॐ ब्राह्मणोस्य	मुखे
ॐ चन्द्रमा मनसो	चक्षुषो
ॐ नाभ्या आसी	कर्णयोः
ॐ यत्पुरुषेण	भ्रुवोः
ॐ सप्तास्या	भाले

ॐ यज्ञेन यज्ञ	शिरसि

अथोत्तरनारायणन्यासः—

ॐ अद्भ्यः सम्भृ	हृदये
ॐ वेदाहमे तं	शिरसि
ॐ प्रजापतिश्च	शिखायाम्
ॐ यो देवेभ्य आ	कवचे
ॐ रुचं ब्राह्मं	नेत्रयोः
ॐ श्रीश्चते	अस्त्राय फट्

अथ गायत्रीन्यासः सूर्यस्य—

ॐ तकारं	पादाङ्गुष्ठयोः
ॐ त्सकारं	गुल्फयोः
ॐ विकार	जङ्घयोः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ तुः कार	जानुनोः	ॐ ह्रिङ्कारं	नासिकायाम्
ॐ वकारं	ऊर्वोः	ॐ धीकारं	चक्षुषोः
ॐ रेकारं	गुह्ये	ॐ योकारं	भ्रूमध्ये
ॐ णिकारं	वृषणयोः	ॐ योकारं	ललाटे
ॐ यंकारं	कटिदेशे	ॐ नःकारं	पूर्वशिरसि
ॐ भकारं	नाभौ	ॐ प्रकारं	दक्षिणशिरसि
ॐ गोकारं	जठरे	ॐ चोकारं	पश्चिमशिरसि
ॐ देकारं	स्तनयोः	ॐ दकारं	उत्तरशिरसि
ॐ वकारं	हृदये	ॐ याकारं	मूर्ध्नि
ॐ स्यकारं	कण्ठे	ॐ तकारं	सर्वत्र
ॐ धीकारं	वदने	ॐ तत्सवितुः	हृदये
ॐ मकारं	तालुदेशे	ॐ वरेण्यं	शिरसि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ भर्गोदेवस्य शिखायाम्
ॐ धीमहि कवचे
ॐ धियोयोनः नेत्रयोः
ॐ प्रचोदयात् अस्त्रे

अथ देवमूर्त्तौ निवृत्तिन्यासः-

ॐ ह्रीं अं निवृत्यै शिरसि
ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै मुखे
ॐ ह्रीं इं विद्यायै दक्षिणनेत्रे
ॐ ह्रीं ईं शान्त्यै वामनेत्रे
ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै दक्षिणश्रोत्रे
ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै वामश्रोत्रे
ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै—दक्षिणनासापुटे

ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै—वामनासापुटे
ॐ ह्रीं लृं परायै दक्षकपाले
ॐ ह्रीं ॡं सूक्ष्मायै वामकपोले
ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै—ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ
ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै—अधोदन्तपङ्क्तौ
ॐ ह्रीं ओं सावित्र्यै ऊर्ध्वोष्ठे
ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै अधरोष्ठे
ॐ ह्रीं अं सुरूपायै जिह्वायाम्
ॐ ह्रीं अः अनन्तायै कण्ठे
ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै दक्षबाहुमूले
ॐ ह्रीं खं ऋध्यै दक्षकूर्परे
ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै दक्षमणिबन्धे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ ह्रीं तं कामिन्यै	वामपादमूले
ॐ ह्रीं थं रदायै	वामजानुनि
ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै	वामगुल्फे
ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै	वामपादाङ्गुलिमूले
ॐ ह्रीं नं दीर्घायै	वामपादाङ्गुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै	दक्षिणकुक्षौ
ॐ ह्रीं फं सुप्त्यै	वामकुक्षौ
ॐ ह्रीं बं अभयायै	पृष्ठे
ॐ ह्रीं भं निद्रायै	नाभौ
ॐ मं मात्रै	उदरे
ॐ ह्रीं यं शुद्धायै	हृदि
ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै	कण्ठे

ॐ ह्रीं घं मेधायै	दक्षकराङ्गुलिमूले
ॐ ह्रीं ङं कान्त्यै	दक्षाङ्गुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै	वामबाहुमूले
ॐ ह्रीं छं द्युत्यै	वामकूपरे
ॐ ह्रीं जं स्थिरायै	वाममणिबन्धे
ॐ ह्रीं झं स्थित्यै	वामाङ्गुलिमूल
ॐ ह्रीं ञं सिद्धयै	वामामाङ्गुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं टं जरायै	दक्षपादमूले
ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै	दक्षजानुनि
ॐ डं शान्त्यै	दक्षगुल्फे
ॐ ढ ऐश्वर्यै	वामपादाङ्गुल्यग्रेषु
ॐ णं रत्यै	वामपादाङ्गुल्यग्रेषु

ॐ ह्रीं लं कृपायै	ककुदि	ॐ ह्रीं सं अरुणायै	दक्षिणपादे
ॐ ह्रीं वं उल्कायै	स्कन्धयोः	ॐ ह्रीं हं अरुणायै	वामपादे
ॐ ह्रीं शं मृत्यवे	दक्षिणकरे	ॐ ह्रीं त्रं असितायै	मूर्द्धादिपादान्तम्
ॐ ह्रीं षं पोतायै	वामकरे	ॐ ह्रीं क्षं	सर्वसिद्धिगौर्यैपादादिमूर्धा०

देवीमूर्तौ वशिन्यादिन्यासः—

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ओं औं अं अः क्लृं वशिनीवाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ललाटे। ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये। ॐ टं ठं डं ढं णं ब्ल्यूं विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे। ॐ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः हृदि। ॐ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः नाभौ। ॐ यं रं लं वं हस्ल्यूं—सर्वेश्वरीवाग्देवतायै आधारे। ॐ शं षं सं हं क्षं क्ष्मीं—कौलिनीवाग्देवतायै सर्वाङ्गे। ॐ मं जीवात्मने नमः। ॐ भं प्राणात्मने नमः। देवशरीरे व्यापकं। ॐ बं बुद्ध्यात्मने० ॐ फं अहङ्कारात्मने०।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ पं मन आत्मने	हृदि
ॐ नं शब्दतन्मात्रात्मने	शिरसि
ॐ धं स्पर्शतन्मात्रात्मने	मुखे
ॐ दं रूपतन्मात्रात्मने	हृदये
ॐ थं रसतन्मात्रात्मने	हस्तयोः
ॐ तं गन्धतन्मात्रात्मने	पादयोः
ॐ णं श्रोत्रात्मने	श्रोत्रयोः
ॐ ढं त्वगात्मने	त्वचि
ॐ ड चक्षुरात्मने	नेत्रयोः
ॐ ठं जिह्वात्मने	जिह्वायाम्
ॐ टं घ्राणात्मने	घ्राणे
ॐ ञं वागात्मने	वाचि

ॐ झं पाण्यात्मने	पाण्योः
ॐ जं पदात्मने	पादयोः
ॐ छं पाय्वात्मने	पायौ
ॐ चं उपस्थात्मने	उपस्थे
ॐ ङं पृथिव्यात्मने	पादयोः
ॐ घं अबात्मने	बस्तौ
ॐ घं तेज आत्मने	हृदि
ॐ खं प्राणात्मने	घ्राणे
ॐ कं आकाशात्मने	शिरसि
ॐ पं सूर्यात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये
ॐ सं सोमात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये
ॐ वं वह्न्यात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स यथा स्वहृत्पद्मात् ऐश्वर्यं तेजः पुञ्जवामनाड्या निः सार्य, ब्रह्म रन्ध्रेण प्रतिमाया बुद्धि-कर्मेन्द्रियाणि मनः सहितानि यथास्थानं हृत्पद्मे पुरुषं न्यसेत् ।

ततः अर्चाबीजं स्वाभिमतं मूर्त्या स्वमन्त्रेण संयोज्य विशेषबीजाद्यनुपलब्धौ तु देवतानाम्नः आद्यमक्षरं सानुस्वारं चतुर्थ्यन्तं तत्तद्देवतानाम्ना संयोज्य, तद्यथा—

ॐ शिं शिवात्मने—ॐ वि विष्णवात्मने नमः । ॐ रां रामात्मने नमः इत्यादिप्रकारेण दे भावयित्वा । ॐ यं सर्वात्मने—इति सार्वसाक्षिणं भावयित्वा ॐ गं सर्वात्मने-इति देवं सर्वतो-मुख भावयित्वा ॐ वः अनुग्राहकात्मने—इत्यनुग्राहकं भावयित्वा ॐ सर्वभूतात्मने—इति सर्वभूत कारणं भावयित्वा ॐ लं सर्वसंहाप्मने—इति सर्वसंहारात्मकं भावयित्वा ॐ क्षं कोपात्मने—इति सर्वक्षयकारकं ध्यात्वा तत्वत्रयं न्यसेत् । ॐ आत्मतत्वाय । ॐ आत्मतत्वाधिपतये ब्रह्मणे । ॐ विद्यातत्वाय । ॐ विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे हृदये । ॐ शिवतत्वाय । ॐ शिवतत्वाधि-ॐ पतये रुद्राय-शिरसि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE-Grant-2

अथ शिवस्य महान्यासः		ॐ अघोराय	शिखायाम्
ॐ ईशानाय	अङ्गुष्ठयोः	ॐ तत्पुरुषाय	कवचे
ॐ तत्पुरुषाय	तर्जन्योः	ॐ ईशानाय	अस्त्रे
ॐ अघोरेभ्यो	मध्यमयोः	ॐ हृदयाय	कनिष्ठिकयोः
ॐ वामदेवाय	अनामियोः	ॐ शिरसे स्वाहा	अनामिकयोः
ॐ सद्योजाताय	कनिष्ठिकयोः	ॐ शिखायै वषट्	मध्यमयोः
ॐ सद्योजाताय	हृदि	ॐ कवचाय हुम्	तर्जन्योः
ॐ वामदेवाय	शिरसि	ॐ अस्त्राय फट	अङ्गुष्ठयोः

एवं विन्यस्य, परेण तेजसा संयोज्य, कवचेनावगुण्ठ्य, सर्वकमसु नियोजयेत्। आचमनं सर्वत्र। इत्थं देवस्य करन्यासं कृत्वा 'लिङ्गमुद्रां' बध्वा ॐ ईशानः सर्वविद्यानां॰ सदा शिवोम्' इति मन्त्रेण ईशान (नाम्नी) मुष्टिं बध्नीयात्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ बलाय क्षयां दक्षिणस्फिचि
ॐ प्रमथनाय क्रियां वामस्फिचि
ॐ सर्वभूतदमनाय-भ्रामणीं कट्याम्
ॐ मनो शोषिणीं दक्षिणपार्श्वे
ॐ उन्मनाय ज्वरां वामपार्श्वे

अथ सद्योजातकलान्यासः

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सिद्धिंदक्षिणपादे
ॐ सद्योजाताय वै नमो ऋद्धिं वामपादे
ॐ भवे दितिं दक्षिणपाणौ
ॐ भवे लक्ष्मीं वामपाणौ
ॐ नातिभवे मेधां नासायाम्
ॐ भवस्व मां कान्तिं शिरसि
ॐ भव स्वधां दक्षिणबाहौ
ॐ उद्भवाय प्रभां वामबाहौ

ततः 'तमाद्याः कला अत्र विशन्तु' इति मन्त्रेणावशिष्टकलान्तरन्यासभावनां कुर्यात् । इत्थं न्यासकरणेन विद्यादेवं हंसं भावयित्वा 'ॐ हंस हंस' इति मन्त्रेण हृदयादिन्यासं कुर्यात् । तद्यथा—ॐ हं सां हृदयाय नमः । ॐ हं सीं शिरसे स्वाहा । ॐ हं सूं शिखायै वषट् । ॐ हं सैं कवचाय हुम् । ॐ हं सौं अस्त्राय फट् ।

न्ृसिंहमूर्तौ तु 'नारं हृदयादिन्यासः किन्तु 'ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल स्वाहा' इति मन्त्रेण षडावृत्तेन षडङ्गन्यासः कार्यः। न्यासनन्तरं बलिश्च नृसिंहाय देव हिति व शेषः। नारसिंही यदा स्थाप्या अधिवास्य निशागमे। कृत्रिमं वाऽथ साक्षाद्वा पशुं दत्वा बलिं हरेत्— इति वचनात्। एवं न्यासविधिं कृत्वा निद्राकलशे निद्रामावाहयेत्॥ इति॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णुयाग में कुण्ड-विधान

विष्णुयज्ञ में एक, पाँच सात और नव कुण्ड का विधान शास्त्रों में प्राप्त होता है। 'नारद पञ्चरात्र' सात कुण्ड का विधान भी लिखा है। विष्णुयाग में पाँच कुण्ड एक-एक हाथ के लम्बे और चौड़े होते हैं। महाविष्णुयज्ञ में पाँच कुण्ड दो-दो हाथ के लम्बे और चौड़े होते हैं। अति विष्णुयाग में पाँच पाँच कुण्ड चार-चार हाथ के लम्बे और चौड़े होते हैं।

विष्णुयाग में प्रधानवेदी निर्णय

१—विष्णुयागादि में प्रधानवेदी दक्षिणदिशा में होगी।

२—कोटिहोमात्मकविष्णुयाग में ईशानकोण में ग्रहवेदी उसके दक्षिण में प्रधानवेदी होगी।

विशेष—विष्णु आदि प्रतिष्ठा में प्रधानवेदी मध्य दिशा में बनेगी।

आहुति विचार

१—विष्णुयाग में—पुरुषसूक्त की प्रति ऋचा से एक लाख साठ हजार आहुति होती है।

२—महाविष्णुयाग में—तीन लाख बीस हजार आहुति का विधान मिलता है।

३—अति विष्णुयाग में—चार लाख अस्सी हजार आहुति का विधान उपलब्ध है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हवनीय-सामग्री

विष्णु यज्ञ		महाविष्णु यज्ञ		अतिविष्णु यज्ञ	
तिल	छह मन	तिल	बारह मन	तिल	चौबीस मन
चीनी	एक ,,	चीनी	दो ,,	चीनी	चार ,,
चावल	तीन ,,	चावल	छह ,,	चावल	बारह ,,
घृत	दो ,,	घृत	चार ,,	घृत	आठ ,,
यव	दो ,,	यव	चार ,,	यव	आठ ,,
आम की लकड़ी	बीस ,,	आम की लकड़ी	चालीस ,,	आम की लकड़ी	अस्सी ,,
चंदन चूरा	दो सेर	चंदन चूरा	चार सेर	चंदन	चार सेर
गुग्गुल	एक सेर	गुग्गुल	दो सेर	गुग्गुल	चार सेर
कमलगट्टा	एक सेर	कमलगट्टा	दो सेर	कमलगट्टा	चार सेर
पंचमेवा	एक सेर	पंचमेवा	दो सेर	पंचमेवा	चार सेर
भोजपत्र	दो पाव	भोजपत्र	चार पाव	भोजपत्र	आठ पाव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णुयज्ञ-सामग्री

रोली एक पाव	पंचमेवा डेढ़ सेर	कच्चा सूत एक पाव	पञ्च-पल्लव
मौली एक पाव	मिश्री डेढ़ सेर	पुष्पमाला दो दर्जन प्रतिदिन	आम्रपत्र
धूपवत्ती चार पैकेट	इलायची छोटी दो तोला	पुष्प फुटकर प्रतिदिन	गूलरपत्र
केसर छह मासा	लवंग दो तोला	तुलसी प्रतिदिन	पाकरपत्र
कपूर चार तोला	जावित्री दो तोला	दूर्वा प्रतिदिन	वटपत्र
अबीर (गुलाल)	जायफल पन्द्रह	बिल्वपत्र प्रतिदिन	पीपलपत्र
बुक्का (अभ्रक)	अतंर की शीशी एक	कुशा	सर्वोषिधि
सिन्दूर	गुलाबजल की शीशी एक	नारियल जटादार पच्चीस	एक रुपये का मुरा
पीसी हल्दी एक पाव	कस्तूरी की शीशी एक	गिरिके गोले ११	,, ,, जटामासी
यज्ञोपवीत पचास	दुग्ध दो पाव प्रतिदिन	चन्दन का मुट्ठा एक	,, ,, वच
रुई एक पाव	दही एक पाव प्रतिदिन	हरसा एक	,, ,, कूट
चावल	चीनी एक पाव प्रतिदिन	रुद्राक्ष की माला एक	,, ,, शिलाजीत
सुपारी पाँच सेर	गो घृत	एक रुपये का लालरंग	,, ,, आंवाहलदी और
पान पचास प्रतिदिन	सहत एक पाव	,, ,, हरारंग	दारूहलदी
पेड़ा एक सेर प्रतिदिन	गोबर	,, ,, पीलारंग	,, ,, सठी (कचूर)
ऋतुफल एक दरजन प्रतिदिन	गोमूत्र	,, ,, काला रंग	,, ,, चंपा
बतासा डेढ़ सेर	पीली सरसों	पंचरत्न की पुड़िया सात	,, ,, नागरमोथा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सप्त-मृत्तिका—
हाथी के स्थानकी मिट्टी
घोड़ेके स्थान की मिट्टी
बिल (दीमक) की मिट्टी
नदी संगम की मिट्टी
तालाबकी मिट्टी
राजद्वार (चतुष्पथ) की मिट्टी
सप्तधान्य—
यव डेढ़ सेर
गेहूँ डेढ़ सेर
धान डेढ़ सेर
तिल डेढ़ सेर
ककुनी एक पाव
आवाँ दो पाव
चना डेढ़ सेर
नवग्रह की लकड़ी—
मदार की लकड़ी एक सौ आठ
पलाशकी लकड़ी ,, ,,
खैरकी लकड़ी ,, ,,

अपामार्ग की लकड़ी,, ,,
पीपलकी लकड़ी ,, ,,
गूलरकी लकड़ी ,, ,,
शमीकी लकड़ी ,, ,,
दूर्वा ,, ,,
कुशा ,, ,,
मृगचर्म नवीन एक
कवल नवीन एक
सूतकी डोरी मोटी दस हाथकी
रूई एक पाव
लोहे की कटिया चार
तांबेका तार पचीस हाथ
काष्ठकी चौकी नूतन दो
काष्ठका पीढ़ा नूतन चार
काला उड़द डेढ़ सेर
यज्ञपात्र—
प्रणीता
प्रोक्षणी
स्रुवा

स्रुची
स्फ्य
वसोर्धारा
अरणि-मन्था
शंख एक
घण्टा एक
घड़ौल एक
आरती दानी एक
प्रधान कलश चाँदीका अथवा
ताम्र का एक
वास्तु कलश ताम्र का एक
क्षेत्रपाल कलश ताम्रका एक
योगिनी कलश ताम्रका तीन
अथवा एक
रुद्र कलश ताम्रका एक
प्रवेश कलश ताम्रका एक
कलश ताम्रके अठारह
पुण्याहवाचन कलश-कमण्डलुएक
पूर्णपात्र(बधोना)ब्रह्माकेलिएएक

प्रधान कुण्डका ताम्रका एक
कलश
थाली मुरादाबादी चार
परांत बड़ी एक
आज्यस्थाली (कटोरा बड़ा)
हवनार्थ एक
चरुस्थाली (बधोना) एक
अभिषेक पात्र एक
कांसेकी थाली एक
कड़छुल पीतल एक
सड़सी पीतल एक
चिमटा पीतल एक
छायापात्र (काँसेकी कटोरी)दो
कटोरी पूजनार्थ ग्यारह
बाल्टी पीतल एक
गंगासागर एक
देवताओंको चढ़ाने के वस्त्र—
भगवान् के लिए रेशमी
पीतांबर एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रेशमी जनानी साड़ी एक
कब्जा जनाना एक
रेशमी चुदड़ी एक
सौभाग्य पिटारी एक
शृङ्गारदान एक
दुशाला अथवा ऊनी चादरएक
धोती पन्द्रह अथवा ग्यारह
डुपट्टा ,, अथवा ,,
अँगोछा ,, ,, ,,
ध्वजा-पताका तथा वेदी आदि के लिये वस्त्र—
सफेद कपड़ा पचीस गज
लाल कपड़ा पन्द्रह गज
हरा कपड़ा पन्द्रह गज
काला कपड़ा ,, गज
पीला कपड़ा ,, गज
चँदवा पचरंगा बड़ा एक
चँदवा छोटे पाँच
मण्डपाच्छादनार्थं वस्त्र सफेद-थान दो
देवताओंकी तस्वीर बड़ी सोलह
शीशा बड़ा एक
घुँघरू पीतल के पचास
विष्णुकी प्रतिमा सुवर्ण की ४ तोलेकी अथवा १। तोलेकी१
प्रधान देवी की प्रतिमा सुवर्ण की १। तोलेकी एक
भगवान्‌केलियेसुवर्णकीएकमाला
वास्तुकी प्रतिमा सुवर्णकी छह मासे की एक
क्षेत्रपालकी प्रतिमा सुवर्णकी ६ मासेकी एक
योगिनीकी प्रतिमा सुवर्णकी ६ मासेकी एक
नवग्रहकी प्रतिमा सुवर्णकी ६ मासेकी एक
रुद्रकी प्रतिमा सुवर्णकी ६ मासेकी एक
सुवर्णकीशलाका३ मासेकी एक
सुवर्णकी जिह्वा३ मासेकी एक
सुवर्ण खण्ड इक्यावन
गरुणकी प्रतिमा चाँदीकी एक
नन्दीकी प्रतिमा चाँदीकी एक
चाँदीका सिंहासन एक
चाँदीका छत्र ,,
चाँदीका चँवर ,,
चाँदीकी थाली ,,
चाँदीकी कटोरी दो
चाँदीका गिलास एक
चाँदीकी तस्तरी ,,
चाँदीका पंचपात्र ,,
चाँदीकी आचमनी ,,
चाँदीका अर्घा ,,
चाँदीकी तष्टा ,,
चाँदीकी धूपदानी ,,
चाँदीकी आरती दानी ,,
चाँदीका चौकोरपत्र (१६अंगुल लंबा और चौड़ा) एक

वरण-सामग्री—
धोती रेशमी सूती
दुपट्टा ऊनी-रेशमी अथवा सूती
अगोछा
लोटा
गिलास
पंचपात्र
आचमनी
गोमुखीमाला
खड़ाऊँ
यज्ञोपवीत
आसन
अंगूठीसुवर्णकी

आचार्य-वरणसामग्री—
पीताम्बर रेशमी एक
दुशाला एक
शिल्क रेशमी एक
अंगोछा एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोटा चाँदीका एक
गिलास चाँदीका एक
पंचपात्र चाँदीका एक
आचमनी चाँदीकी एक
अर्घा चाँदीका एक
तष्टा चाँदीका ,,
सुवर्णकी अँगूठी,,
सुवर्णकी माला ,,
रुद्राक्षकी माला,,
ऊनी गलीचे का अतरदान
गोमुखी माला एक
खड़ाऊँ एक जोड़ा
यज्ञोपवीत एक

शय्यादान-सामग्री—

पलंग नेवारका एक
दरी एक
रूईका गद्दा एक
चाँदनी
चदरा एक
सुजनी एक
मसहरी एक
रजाई एक
कंबल एक
तकिया दो
धोती एक
दुशाला एक

शिल्क एक
पीतांबर एक
जनानी साड़ी एक
कमीज एक
साफा (पगड़ी) एक
छाता एक
जूता (स्वदेशी) एक जोड़ा
घड़ी एक
पानदान ,,
पीकदान ,,
अतरदान ,,
भोजनके पात्र पन्द्रह या ग्यारह
लालटेन एक

सभी प्रकारके अन्न
गोघृत टीन एक
शीशा बड़ा एक
सौभाग्यपिटारी एक
शृंगारदान एक
अंगूठी सुवर्ण की एक
सिकड़ा सुवर्ण की एक
कण्ठी सुवर्ण की एक
चाँदीके बर्तन पाँच
गीताकी पुस्तक एक
वेद और पुराणकी पुस्तकें
एक-एक

—:०:—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगिनि चक्र

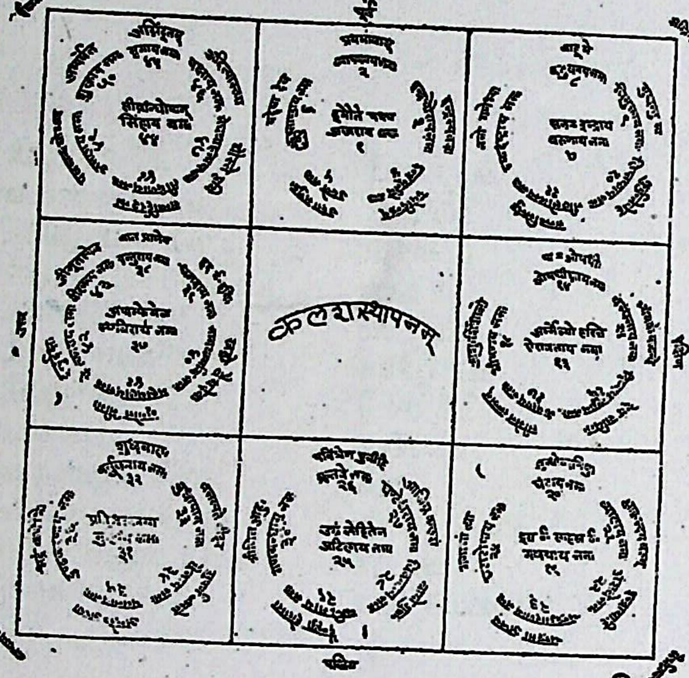

नवग्रह चक्र

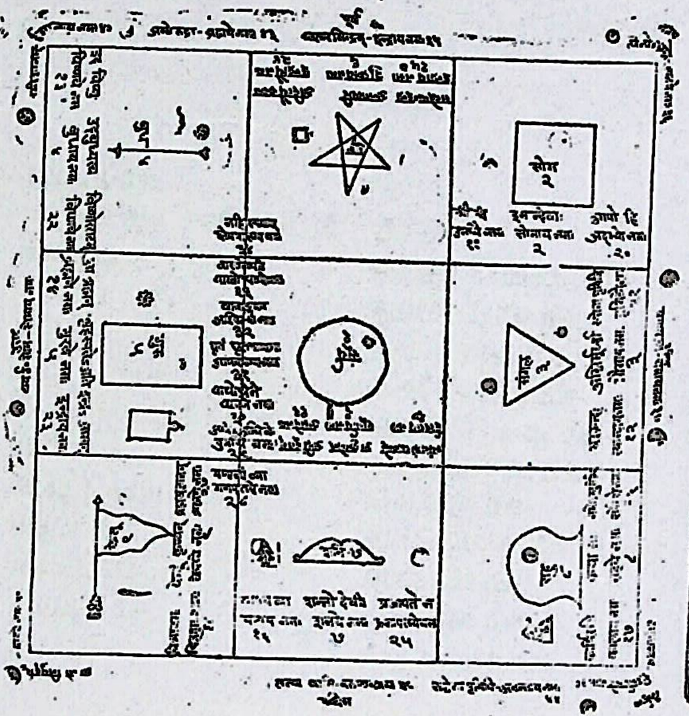

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

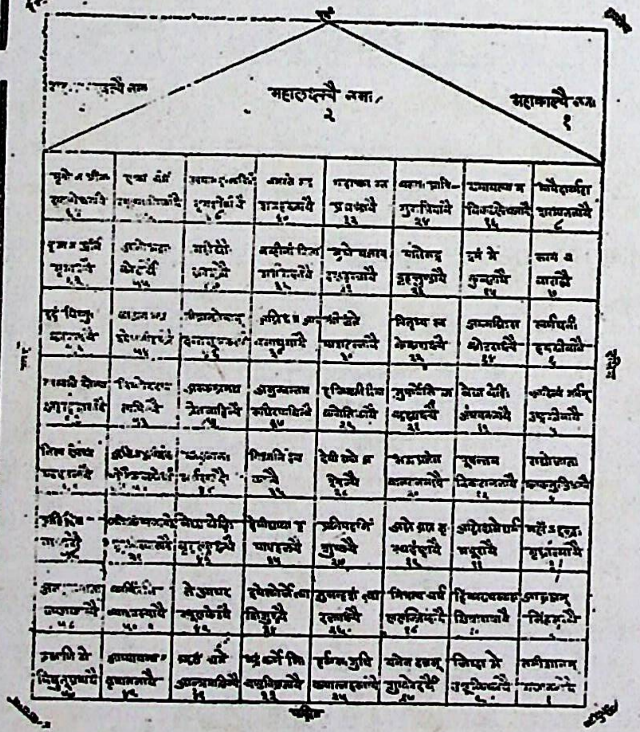

घृतमातृकाचक्रम्

॥ श्रीः ॥

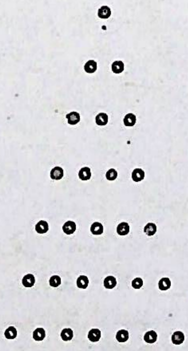

कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥ १ ॥

॥ इति वसोर्धारा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

हमारे यहाँ की धार्मिक पुस्तकें एक बार अवश्य मँगाकर लाभ उठावें ।

श्री सूक्त पुरुषसूक्त भाषा-टीका ३)००
सूक्त-संग्रह मूल देव्यपराध-क्षमापन स्तोत्र सहित २)५०
शिवपुराण भाषा बड़ा ५०)४०
भर्तृहरिशतक भा० टी० ५)००
रामायण मूल दोहा चौपाई बड़ा ३२)००
वाल्मीकीय रामायण
सुन्दर काण्ड मूल गुटका १०)००
आनन्द रामायण भाषा नवो काण्ड ६०)००
सुखसागर भाषा १२ स्कन्ध सम्पूर्ण ६०)००
दुर्गार्चन-पद्धति भा. टी. ३०)००

दुर्गासप्तशती भा० टी सजिल्द मोटे अक्षरों में १५)००
दुर्गा रामायण ३)००
मंत्रसागर भाषा टीका २५)००
वाञ्छाकल्पलता १०)००
बगलोपासनपद्धति (बगला-रहस्य) भा.टी. १०)००
दत्तात्रेयतन्त्र भा०-टी० ५)००
उड्डीशतन्त्र भाषा-टीका ५)००
रसराजमहोदधि ५भाग ५०)००
विश्वकर्मा प्रकाश (वास्तुशास्त्र) भा०टी० २०)००
बृहद्पाराशरहोराशास्त्र भा० टी० ७५)००
मानसागरी भा० टी० ३०)००

जातकाभरण भा० टी० २०)००
बृहज्ज्यौतिषसार भा० टी० २२)००
कर्मविपाकसंहिता भा० टी० २०)००
भावकुतूहल भा० टी० २०)००
मूहूर्तचिन्तामणि भा.टी. १५)००
लग्नचन्द्रिका भा०टी० १०)००
घाघभड्डरी की कहावतें ५)००
स्त्री जातक भा० टी० ४)००
चमत्कार चिन्तामणि २)००
जन्मपत्र प्रबोध भा०टी० २)००
शीघ्रबोध भा० टी० ५)००
शिवस्वरोदय भा०टी० ३)००
विष्णुयाग पद्धति ६०)००

यज्ञ-मन्त्र-संग्रह ४०)००
विधान प्रकाश ४०)००
ग्रहशान्ति(ग्रहप्रयोग) ३०)००
धनिष्ठादि पंचक शान्ति भा० टी० ४)००
कुण्ड निर्माण स्वाहाकार पद्धति २०)००
कुम्भ विवाह प्रयोग १)५०
पञ्चरत्न-विवाह पद्धति ६)००
गणपति प्रतिष्ठा पद्धति ६)००
सत्यनारायण व्रत कथा ५ अध्याय भा० टी० २)००
संकष्टी गणेश चौथ व्रत-कथा भा० टी० १२ महिने का सम्पूर्ण १०)००

सर्व-विध पुस्तक-प्राप्ति-स्थान—

ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी--२२१००१

मुद्रक—विष्णु प्रेस, कतुआपुर, वाराणसी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh